श्री पञ्चकल्पभाष्य चूर्णि

• प्रकाशक •

श्री जिनशासन आराधना ट्रस्ट

|| श्री शंखेश्वर - पार्श्वनाथाय नमः ||

* श्री प्रेमसूरीश्वर गुरुभ्यो नमः *

पंच कल्प भाष्य चूर्णि

टीप्पणकृत् सम्पादकश्च

श्री सिद्धान्तमहोदधि प. पू. स्व. आचार्य श्रीमद्विजयप्रेमसूरीश्वराणां शिष्यलवः

पं. श्री कुलचन्द्रविजय गणि म. सा.

सहसम्पादकश्च

प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय हेमचन्द्र सूरीश्वराणां शिष्याणुः

मुनि श्री कल्याणबोधिविजय म. सा.

:- प्रकाशक :-

श्री जिनशासन आराधना ट्रस्ट मुंबइ

પ્રકાશકીય *

"શ્રી પંચકલ્પ ભાષ્ય ની ચૂર્ણિ" નામક એક મહાન ગ્રંથ છે. જે આજ સુધી અપ્રગટ અવસ્થામાં હતો, જેને પૂજ્યપાદ પ્રશાંતમૂર્તિ શ્રી ફુલચંદ્રવિજયજી ગણિવર તથા મુનિ શ્રી કલ્યાણબોધિ વિજયજી મહારાજે જે પરિશ્રમ લઈ સંશોધિત-સંપાદિત કર્યો છે, તેને પ્રગટ કરતાં આજે અમો અત્યંત આનંદ અનુભવીએ છીએ.

આ ગ્રંથ એક ગૂઢ રહસ્યભર્યો છે... છેદગ્રંથમાં જેનો સમાવેશ થાય છે....

ગુર્વાજ્ઞા પ્રાપ્ત યોગોદ્વાહિ પરિણત ગીતાર્થ ગુરૂ ભગવંતો જ આના અધ્યયન - અધ્યાપનના અધિકારી છે.

તેથી જ આ ગ્રંથનું મુદ્રણ ન કરાવતાં જૂજ નકલોની નકલ કરાવી ગીતાર્થ ગુરૂ ભગવંતોના કરકમલમાં સમર્પિત કરીએ છીએ.

આ ગ્રંથના સર્વ હક્ક સંપાદકને - પ્રકાશકને આધીન છે. તેમની લેખીત સંમતિ રૂપ રજા સિવાય આ ગ્રંથ કે તેના બૃહદ્ અંશોને મુદ્રણ કરાવી શકાશે નહિ.

ગીતાર્થ ગુરૂ ભગવંતો આ ગ્રંથના ગુઢ રહસ્યો પ્રાપ્ત કરી પ્રાયશ્ચિતના પ્રદાનાદિ સમ્યગ્ પ્રવૃત્તિ દ્વારા સ્વ પરનું કલ્યાણ કરનારા બનો, એ જ અંતરની અભિલાષા.

લિ.

શ્રી જિનશાસન આરાધના ટ્રસ્ટ, મુંબઈ.

❀ ટ્રસ્ટીઓ ❀

* ચંદ્રકુમારભાઈ ઝરીવાલા
* લલિતભાઈ આર. કોઠારી
* નવીનભાઈ બી. શાહ
* પુંડરીકભાઈ એ. શાહ

॥ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः ॥
॥ श्री सिद्धान्तमहोदधि प्रेमसूरीश्वर गुरुभ्यो नमः ॥

❀ पंच कल्प भाष्य चूर्णि ❀

आमुख

साधुजीवनके आचार विषयक द्रव्यादि आपत्ति से विस्तार पाने हेतु आश्रयणीय अपवादोका आश्रय, अपवादोंके सेवनमें यतना एवं स्खलनाकी शुध्दि के लिए प्रायश्चित्तादि का निरूपण करने वाले शास्त्रोंको छेदसूत्र कहते हैं।

(१) दशाश्रुतस्कन्ध, (२) बृहत्कल्पसूत्र, (३) व्यवहारसूत्र, (४) निशीथसूत्र, (५) महानिशीथसूत्र और (६) पंचकल्पसूत्र ये छः छेद-सूत्र हैं। वीरनिर्वाणकी दूसरी शतीमें चतुर्दशपूर्वधर श्री भद्रबाहुस्वामी ने महानिशीथके सिवाय अधिकांश इन सूत्रोंका नवमपूर्व से उध्दार किया। कहा भी है —

वंदामि भद्दबाहुं पाईणं चरिमसयलसूयनाणिं।
सुत्तस्स कारगमिसिं दसासु कप्पे य ववहारे ॥१॥
(दशाश्रुतस्कन्ध एवं पंचकल्पभाष्यके प्रारम्भमें)

तथा

"तेण भगवता आयारप्पकप्पो दसा-कप्प-ववहारा य नवमपुव्वनी-संदभूता निज्जूढा" (देखें प्रस्तुत चूर्णि ग्रन्थ पृष्ठ-२)

तत्पश्चात् वैक्रमीय चौथी अथवा पांचवी शतीमें तीन पूर्वके ज्ञाता क्षमाश्रमण श्री संघदास गणि ने इन्हीं छेदसूत्रोंकी विवेचना रूप लघु भाष्योंकी रचना की (देखें-"*जैन परंपरानो इतिहास-भाग-१ ४३०*)। बादमें वैक्रमीय सातवी शतीमें श्री जिनभद्रक्षमाश्रमण ने बृहद्भाष्योंकी रचना की। वर्तमानमें उपलब्ध प्रकाशित पंचकल्पभाष्य ग्रन्थमें लघु और बृहद्भाष्यके समावेश की बहुत संभावना है। भाष्यरचनाओके बाद विक्रमकी पांचवी या छठी शती के पूर्वार्धमें श्री जिनदासगणी महत्तर ने चूर्णि ग्रन्थों को लिखा। तत्पश्चात् कतिपय संस्कृत टीकाओं की भी रचना हुई।

प्रस्तुत चूर्णि ग्रन्थ लघु भाष्य पर रचा हो ऐसी पूरी संभावना है। इस विषयकी विचारणा आगे की जायगी। चूर्णिग्रन्थके रचयिता का नाम निर्देश यद्यपि कहीं नही दीखता है फिर भी चूर्णिकार श्री जिनदासगणी महत्तर ही होने चाहिए क्योंकि स्थान-२ पर बृहद्कल्प-

चूर्णि एवं निशीथचूर्णि का अतिदेश किया है। भाषाकी प्रौढता, अस्खलित निरूपणशैली तथा पदार्थोंका रहस्योद्घाटन ये सब बातें प्रस्तुत ग्रन्थके रचयिता की हैसियतसे इन्ही महापुरुषको मानने के लिए विवश करती हैं।

चूर्णिकार के सामने बृहद्भाष्य नहीं रहा इस हकीकतको सिद्ध करने के लिए कुछ स्थल देखेंगे जहां भाष्यकार एवं चूर्णिकार की विलक्षणता दृष्टिगोचर होती हैं।

(१) भाष्यगाथाङ्क ५९५ - ६९५ - ६९७ में क्रमशः शेषा, आख्याता और स्वयंबुध्दा प्रव्रज्या के भेदोमें क्रमशः दृष्टांत चंडकृष्ण, जंबूप्रभव एवं तीर्थंकर भगवन्तके दिये हैं जब कि चूर्णिकार ने खंडकर्ण, श्रमण भगवान् महावीर - सुदर्शन - श्रेष्ठी एवं भरत महाराजा के दृष्टान्त दिये हैं।

(२) भाष्य गाथाङ्क ७५३ से ७५९ में वैद्यपुत्री का दृष्टान्त है, उसका चूर्णिकारने नाम भी नहीं लिया है।

(३) भाष्य गाथाङ्क २०९६ - ९७ सिर्फ दो द्वार गाथाएँ हैं। आचार्य साध्वीजी के उपाश्रय में कुछ कारणों से जा सके, जब कि चूर्णिकार ने विशद विवेचन किया है। देखें पृष्ठ - १५१ - ५४

(४) भाष्य गाथाङ्क ७४८ भोजनविधि की है जब कि चूर्णिकारने "रूक्षशरीरे स्निग्ध" इत्यादि गाथा का उल्लेख किया है। देखे - पृ - २८।

(५) भाष्यगाथा - ७६८ की विवेचना में भाष्यकार पिंडनिर्युक्ति का अतिदेश करते है जब कि चूर्णिकार ने सप्रायश्चित्त उद्गमादि दोषों का निरूपण किया है। (देखें पृ. ३० - ३१ - ३२)

(६) भाष्यगाथाङ्क ७९५ - ७९६, ११६० - ६१ - ६२, इन गाथाओं की बातें चूर्णि ग्रन्थ में कहीं दृष्टिगोचर नहीं होती है। एसी विलक्षणता और भी दीखाई देती हैं।

अतः यह स्वीकारना चाहिए कि चूर्णिकार के सामने वर्तमान में प्रकाशित भाष्य ग्रन्थ नहीं रहा किन्तु अन्य ही ग्रन्थ रहा होगा जिसे लघुभाष्य ग्रन्थ कह सकते हैं। इस लघुभाष्य के प्रमाण विषयमें दो उल्लेख प्राप्त हैं—

१. अयोग्य विषयक भाष्य गाथाङ्क १८१७ - १८ - १९ सिर्फ तीन गाथाएँ है जब कि चूर्णि में विस्तृत विवेचन है। देखें पृ - १२६ - १२७। प्रायश्चित का उल्लेख भाष्यकार ने कहीं कहीं किया है जब कि चूर्णिकार ने स्थान २ पर किया है। ग्लान विषयक विवेचना भी चूर्णि में विशदता से है। आचार्य के भिक्षाटन से प्राप्त दोषों की भाष्यगाथाङ्क १९८१ की विवेचना भाष्यकार ने व्यवहारसूत्र के

दुसरे उद्देशेमें विस्तार से करने का कहा है जबकि चूर्णिकारने विस्तारसे विवेचना कर दी है। देखें पृष्ठ-१४१-४२-४३। षड्विधकल्प के अन्तर्गत चारित्रकल्प की विवेचना में भाष्यकार ने "जह भणिय णिसीहणाममि" भा.गा. १२६५ उत्तरार्ध से निशीथभाष्य का अतिदेश कर दिया है जब कि चूर्णिकारने विशद विवेचन किया है। देखें पृष्ठ-५३ से पृष्ठ-५५ तक। शय्यातरपिंड एवं राजपिंड के विषय में भी उक्त रीति अपनाई गई है। देखें भा.गा. १२९८-९९-१३०० एवं भा.गा. १३०२-१३०४ तथा चूर्णि पृष्ठ-६४-६५ एवं पृष्ठ ६५ से पृ-६७ तक। संभोगकल्पमें भी यही बात है। देखें भा.गा. १४८७ से १५०७ एवं चूर्णि पृ. ८५ से पृ. ९९ तक। इससे विपरीत भाष्यकारने कृति कर्म के विषयमें भा.गा. १३०६ से १३३३ तक विस्तार किया है जब कि चूर्णिकारने सिर्फ स्थान पूर्ति की है।

"जैन परंपरानो इतिहास" के अनुसार लघुभाष्य ग्रन्थ का गाथा-प्रमाण ११३३ गाथाओं का है। देखें भाग 1 पृष्ठ १९२। यह प्रमाण समुचित लगता है।

मुद्रित पञ्चकल्प भाष्य के प्रस्तावना लेखकश्रीने १८४ गाथा प्रमाणका जो उल्लेख किया है वह युक्ति युक्त नहीं लगता हैं क्योंकि -

(१) उक्त प्रमाणोपेत ग्रन्थ शृङ्खलाबध्द न होने से संपूर्ण होनेकी क्षमता को खो देता है।

(२) दृष्टांतके तौर पर कही जाने वाली लघुभाष्य गाथाङ्क ६० के स्थान पर मुद्रित भाष्यकी गाथाङ्क ९६८ है। किन्तु ९६८ से संलग्न गाथाङ्क ९६९-९७०-९७१-९७२ चार गाथाओं के विषय का लघु भाष्य में कोई उल्लेख नहीं है।

(३) इसी तरह ल.भा. गाथाङ्क ६७ के स्थान पर मुद्रित भाष्यकी गा--थाङ्क ९८४ है किन्तु इससे संबध्द गाथाङ्क ९८५ का लघुभाष्य में कोई उल्लेख नहीं है।

(४) एवं ल.भा.गा. ७१ के स्थान पर मुद्रित भा.गा. ११११ "तम्हा......" इत्यादि से आरब्ध है जो स्वयं संबन्ध के अभाव को सूचित करती है।

(५) इसी प्रकार से लभा.गा. ९७-९८ के स्थान पर मुद्रित भा.गा. १४०९-१४१० हैं जिनका संबन्ध पुर्व की अनेक गाथाओं के साथ होना अनिवार्य है। कोई उल्लेख लघु भाष्यमें नहीं है।

विशृङ्खलाकी अनेक बातें आगे आगे दीखाई देती हैं। अत: १८४ गाथा प्रमाण लघु भाष्य को कहना उचित नहीं लग रहा है।

मुद्रित भाष्य ग्रन्थका प्रमाण २६६४ गाथा है जबकि ग्रन्थके अन्त में द्विचरमगाथा के पूर्वार्ध "गादग्गेण पंचवीससयाइं चउहत्तराइं" से २५७४ गाथा प्रमाण है। इस प्रकार ९० गाथाएँ बढ जाती है। इसका समाधान यह है कि अन्य ग्रन्थोंकी गाथाएँ व्याख्याकी सुकरता हेतु प्रक्षिप्त हुई हो। देखें भा. गा. ५६० "पल्लि सूरा....." इत्यादि को चूर्णिकार ने संग्रहणी की गाथा बताई है[1]। देखें पृ. २७ तथा भा. गा. ५० आवश्यक निर्युक्ति की गाथा १३९० है।

प्रसङ्गसे कुछ लिखने की लालचको रोक नहीं सकता हूँ। "पंचकल्पसूत्र" स्वतंत्र नहीं है किन्तु बृहत्कल्पसूत्र का ही एक अंश है, -एसा बृहत्कल्पसूत्र की टीका के प्रस्तावना लेखकश्री ने लिखा है वह विचारणीय है क्योंकि,

(१) पंचकल्प जिसे हम छठा छेदसूत्र कहते हैं इसीसे स्वतन्त्र तौर पर सूत्रकी सत्ता प्राप्त होती है। तथा

(२) विक्रम की तेरहवी-चौदहवी शतीके युगपुरुष आचार्य श्री धर्मघोष सूरिजी के अनुसार युगप्रधान रेवतीमित्र एवं आचार्य श्री धर्मसूरिजी के समयमें अर्थात् वि. स. ४३३ में पंचकल्पसूत्र का विच्छेद हुआ। देखें "जैन परंपरानो इतिहास भाग-१" पृष्ठ-१९२।

(३) यदि कोई सूत्र ही न होता तो क्षमाश्रमण श्री संघदासगणी भाष्यकी रचना किस आधार पर कर सकते थे? जिस पर प्रस्तुत चूर्णि ग्रन्थ की रचना हुई हो।

अतः पंचकल्पसूत्र को भी स्वतंत्र छेद ग्रन्थ मानना उचित लगता है।

दूसरी उल्लेखनीय हकीकत यह है कि कुछ अर्वाचीन लोग अपने आपको पण्डित मानने वाले कुछ निजी कारणों से निर्युक्तिग्रन्थों को चतुर्दशपूर्वधर श्री भद्रबाहुस्वामी रचित मानने में झीझकते हैं। तथा कपोलकल्पित वराहमिहिर के भ्राता भद्रबाहु (नैमित्तिक) को निर्युक्तिग्रंथके रचयिता मानते हैं। यह ठीक नहीं है क्योंकि —

(१) वराहमिहिरकी ग्रन्थ रचना पंचसिद्धान्तिका है। उसके अन्तमें रचना काल शक सं. ४२७ तदनुसार विक्रम सं. ५६२ है। जबकि वैक्रमीय दूसरी या तीसरी शतीके आचार्य श्री अगस्त्यसिंहसूरि ने दशवैकालिक सूत्र की निर्युक्ति पर चूर्णि की रचना की है जो मुद्रित भी उपलब्ध है। जरा मध्यस्थ भावसे सोचें कि

---

1. भा. गा. ८१४ को चूर्णिकारने ओघनिर्युक्ति की गाथाङ्क ३८८ कहा है। देखें पृ. ३६।

वैक्रमीय छठी शती के आचार्य की निर्युक्ती पर वैक्रमीय दूसरी तीसरी शतीमें चूर्णि कैसे रची जा सकती है ?

(२) कालान्तर से निर्युक्ति गाथाओ के साथ भाष्य गाथाएँ मिश्रित हो गई है जिनका पृथक्करण अशक्य है | इसी कारण ये लोग असद्-भूत दोषों का उद्भावन कर अपने आपको गुम-राह किये हुए हैं, किन्तु इन्हें यह खयाल क्यों नहीं आता कि वैक्रमीय ग्यारहवी शतीके वादि वैताल आचार्य श्री शान्तिसूरिजी ने श्री उत्तराध्ययन सूत्र की बृहद्वृत्ति में अनेक स्थलों पर "भाष्यगाथा वैता इति" इत्यादि शब्दों से उक्त हकीकत को स्पष्ट कर दिया है |

(३) निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि और टीका रूप रत्नकरण्डकों के अभाव में तथा संप्रदाय के अभाव में सूत्रार्थ की प्राप्ति के विषयमें दरिद्रता की सीमा कल्पनातीत रह जाती है |

अतः ये लोग सत्य की गवेषणा करें और पूर्व के महापुरुषों को यथार्थरूप से स्वीकारें | इतना ही नहीं उनके अनुपम ग्रन्थों के अध्ययन अध्यापन द्वारा इन महापुरुषों की आराधना भी करें | इनके लिए ही नहीं अपितु सर्वसामान्य यह बात है कि तलस्पर्शी अधिकृत अभ्यासियों को तत्तद्विषयक प्राप्त निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि एवं टीका सभी ग्रन्थों का अध्ययन अवश्य करना चाहिए |

ये बाते प्रसङ्ग से हुई | प्रस्तुत ग्रन्थ अधिकारी साधकों के करकमलों में प्रेषित करने पूर्व ग्रन्थ का नामादि परिचय देना भी उचित होगा |

नाम और विषय – ग्रन्थ का नाम "पंचकल्प भाष्य-चूर्णि" है | कल्प शब्द अनेकार्थी है फिर भी यहाँ आचार अर्थ का द्योतक है | ज्ञानादि पांच आचार हमारे यहाँ अतीव प्रसिध्द है ही तथापि इनको अलग अलग पांच प्रकार से प्रस्तुत ग्रन्थमें रख्खा है | देखें (१) भा.गा. १८० अनुसार नामादि छः प्रकारसे, (२) भा.गा. १२६७ मुजब स्थित अस्थित विगेरह सात प्रकार से, (३) भा.गा. १५१३ से निर्दिष्ट कल्प, प्रकल्प, विकल्प प्रभृति दश प्रकार से, (४) भा.गा. १६६९-७०-७१ से उल्लिखित पुनः नाम, स्थापनादि बीस प्रकार से तथा (५) भा.गा. २१६१-६२-६३-६४ अनुसार द्रव्य, भाव विगैरह बयालीस प्रकार से कल्पों का निरूपण है | अतः सूत्र का नाम पंचकल्प सार्थक है | इस पर भाष्य रचना की एवं प्रस्तुत चूर्णि ग्रन्थ की बात हो चुकी है |

विशेषता – छेदग्रन्थ रहस्य ग्रन्थ ही कहलाते हैं | आज भी किसी गीतार्थ साधक के मुखकमल से आपत्कालमें यदि कोई मध्यस्थ सर्वोच्च

न्यायालय के न्यायाधीश श्रवण मात्र करें तो भी श्री जिन शासन के प्रति फीदा फीदा हो जायें। कैसे अद्भुत रहस्य, द्रव्यक्षेत्र काल भाव आपद्, कितने सुन्दर इनके निस्तरणोपाय, कहाँ २ सूक्ष्म अपराधों की शक्यता, शुद्धि के प्रकार इत्यादि। ऐसी विशेषताओं से भरपूर प्रस्तुत ग्रन्थ है। स्थान २ पर विषम पदों के पाद-टीप्पण देकर ग्रन्थको सुबोध बनाने का प्रयास किया है, फिर भी पारिभाषिक एवं सांकेतिक शब्दार्थ का बोध पुस्तक पढने मात्र से होना मुश्किल है। यह तो गुरुकृपासाध्य है। अतः तत्त्व-जिज्ञासु अपने आपमें गुरुसेवा और गुर्वाज्ञा की योग्यता को हासिल करें।

ग्रन्थमें चूर्णिकारने विवेचना के पूर्व बहुधा गाथाओं के कुछ अवयव प्रतीक रूप से लिये हैं। इन प्रतीकों से आरम्भ होने वाली सभी गाथाएँ मुद्रित भाष्य पुस्तक से न मिल सकी। अतः निशीथ भाष्य, बृहत्क-ल्पभाष्य, आवश्यक निर्युक्ति भाष्यादि ग्रन्थों से भी जो गाथाएँ मिली उन-को प्रस्तुत ग्रन्थमें उल्लेखपूर्वक स्थान दिया है। फिर भी कुछ गाथाएँ मिल ही न पाई। अतः स्थान शून्य न रह जाये इस हेतुसे चूर्णिकार की विवेचना से संगत नई रचना कर उल्लेखपूर्वक उन गाथाओं को स्थान दिया है। इस विषय में पाठकों से अनुरोध है कि ज्ञातव्य अवश्य ज्ञात करायें ताकि दूसरी आवृत्ति में सम्मार्जन हो सके।

आभार – इस कार्य में अविस्मरणीय सहयोग प्राचीन लिपि के ज्ञाता मुनिपुंगव श्री कल्याणबोधि विजयजी का प्राप्त हुआ। उनके सहयोग के बिना शायद प्रस्तुत ग्रन्थ के संपादन की कल्पना अधुरी ही रह पाती।

सुन्दर मोती के दानें जैसे अक्षरों में इस ग्रन्थ को लिपिबध्द करने वाले श्री नरेशचंद्र कान्तिलाल सोनी को भी कैसे भूल सकता हूँ!

अन्तमें इस चूर्णि ग्रन्थकी भिन्न भिन्न प्रतियों के संपादन में जिनका हाथ रहा है वे सभी धन्यवादार्ह हैं। प्रतियों जहाँ से प्राप्त हुई उनके नाम एवं पादटीप्पण में संकेतचिह्न निम्न प्रकार से हैं —

(१) श्री शान्तिनाथ ताडपत्रीय भण्डार, खंभात।
(२) पगथीया (संवेगी) उपाश्रय ज्ञानभण्डार, हाजपटेल पोल, अहमदाबाद।
(३) श्री लालभाई दलपतभाई ज्ञान संग्रह, अहमदाबाद।
(४) श्री जैन संघ ज्ञान भण्डार, लीमडी।
(५) श्री जैन संघ ज्ञान संग्रह, जैसलमेर।
(६) श्री मुक्ताबाई ज्ञानभण्डार, डभोई।
(७) श्री ज्ञानभंडार, सुरत।
(८) श्री ज्ञानभण्डार, पाटण।

अन्तमें गीतार्थ महापुरुषों से नम्र निवेदन है कि मत्सर का त्याग कर छाद्मस्थ दोष से संपादन एवं टीप्पण में कहीं क्षति रह गई हो उसे सुधार कर पढें।

श्री शंखेश्वर तीर्थ
वि.सं. २०५१ चैत्र. शु. ४

पं. कुलचन्द्र. वि.

*** લાભ લેનાર ***

પ્રસ્તુત ગ્રંથના પ્રકાશનના ખર્ચનો સંપૂર્ણ લાભ સિદ્ધાંતમહોદધિ આચાર્ય દેવ શ્રીમદ્ વિજય પ્રેમસૂરીશ્વરજી મહારાજાના વિદ્વાન શિષ્ય પન્યાસજી શ્રી કુલચંદ્ર વિજયજી ગણિવર્યશ્રીના ઉપદેશથી "શ્રી સાબરમતી રામનગર શ્વે. મૂ. જૈન સંઘ"ના જ્ઞાન નિધિમાંથી લેવામાં આવેલ છે.
તેઓનો સાદર આભાર માનીએ છીએ.

લિ. શ્રી જિનશાસન આરાધના ટ્રસ્ટ, મુંબઈ.

॥ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः ॥

मंगलादीणि सत्थाणि, पूर्वाभिहितानि मंगलानि, पूर्वता च अस्मिन् तंत्रे कल्पाख्ये ओघनिष्पन्ननिक्षेपे। भगवन्तः तीर्थकरा ऋषभाद्याः कृतार्थाः कृतकृत्या इति कृत्वा तेषां नमस्कारः कृतः। अधुनाऽस्मिन्नामनिष्पन्ने निक्षेपे पञ्चकल्पसंज्ञके येनेदं दशाकल्पव्यवहारसूत्रं प्रवचनहितार्थाय पूर्वादाहृतं तस्य नमस्कारं करोमि प्रत्येकशः। गाहा य सूत्रकर्तुः। तत्राद्या गाथा (भा.गा.२०५)

वंदामि भद्दबाहुं पाईणं चरिमसगलसुयनाणीं।
सुत्तस्स कारगमिसिं दसाण कप्पे य ववहारे ॥१॥ भा.गा.

वंदामि वदि स्तुत्यभिवादनयोः, वंदनं अर्चनं प्रणिपात इत्यर्थः। निर्देशं करोति- भद्दबाहुं प्राचीनमिति प्राचीनजनपदः। चरमः पश्चिम इत्यर्थः। सकलसुयनाणी सकलं कृत्स्नं निरवशेषमित्यर्थः, तानि चतुर्दश-पूर्वाणि। ततस्तेन पूर्वभगवता पूर्वधारकेण नवमात् पूर्वात् प्रत्याख्याननाम-धेयादाहृतानि, यदुत दसाकप्पववहाराणि पवयणुवग्गहकराणि भविस्संतीति कट्टु तेन भगवता निज्जूढाणि, तेन कारणेण कार्यवदुपचार इतिकृत्वा स एव भगवान प्रवचनोपग्रहकर्ता, तेन महता भत्तीय भुज्जोवि नमोक्कारं तस्सेव करेमि, [भा.गा. ६-१२] 'वंदे तं भगवंतं' गाहा-

वंदे तं भगवंतं बहुभद्द सुभद्द सव्वओभद्द।
पवयणहियसुयकेउं सुयणाणपभावगं धीरं ॥१३॥ भा.गा.

भगवंतं इति यशस आख्या, भगवंतः यशोवन्तः इत्यर्थः अथवा भगवंत इति यस्मात् ससुरासुरनरोरगतिर्यग्योनिजीवलोकः कामभोगरतितृषितः गृद्धमूर्च्छिताऽध्युपपन्नः स तेन भगवता वान्त इत्यतो भगवन्त इति। बहुभद्द इति 'भदि कल्याणे सुखे च' बहुसुखं साद्यपर्यवसितं निर्वाणं तस्यासौ साधनार्थमभ्युद्यत इत्यतो बहुभद्रः। बहुं च तद् भद्रं च निर्वाणं बहुभद्रसंज्ञकः शोभनं चेत्यतः सुभद्रः। सर्वतोभद्र इति सर्वतः सर्वावस्थं एष्यं निरुपद्रवं चैतद् इत्यतः सर्वतोभद्र। प्रवचनमिति द्वादशाङ्गं अथवा श्रमणसंघः, तस्य हितः। सुयकेतुः[१] केतु उच्छ्रये। कस्मादसौ केतुभूतः? यस्मात्तेन श्रुतज्ञानं दशा-कल्प- ववहार - निशीथ- महाकल्प- सूत्राद्याः प्रवचनाभिहिता निर्यूढा इत्यर्थः। श्रुतज्ञानप्रभावकमित्युपपत्तेः। 'श्रु' श्रवणे, 'ज्ञाऽवबोधने, 'भा' दीप्तौ, "धी' बुद्धिरित्यर्थः। [भा.गा. १४-२२]

गाहा - 'आयारदशा

आयारदसाकप्पो ववहारो णवमपुव्वणीसंदो।
चारित्तरक्खणट्ठा सूयकडस्सूपरि ठविता ॥२३॥ भा.गा.

---

१ 'सुखकेतुरिति ख प्रतौ।

जम्हा तेण भगवया आयारपकप्पो दसाकप्पववहारा य नवमपुव्वनीसंद-भूता निज्जूढा तेनासौ पूजार्हः।

आयारपकप्प इति विधिः, यस्मात्तत्र दशविधोऽप्याचारः ज्ञानदर्शनचारित्रतपोवीर्याचारश्च प्रकल्प्यते ख्याप्यते प्रज्ञाप्यते इत्यर्थः। इत्यत आचार-प्रकल्पः। दशाकल्पव्यवहाराणं पूर्वोक्तं निरुक्तं। चारित्र इति 'चारित्तरक्खणट्ठा' गाहा पच्छद्धं। पञ्च प्रकारं चारित्रं सामायिकाद्यं यथाख्यातपर्यवसानं तस्य रक्षणार्थं, भृति रक्षायां परिपालनार्थमित्यर्थः। सूत्रकृताङ्गस्योपरि व्यवस्थापिता।

आह- किमर्थं सूत्रकृतांगस्योपरि व्यवस्थापिता? अधो किं न व्यवस्थापिता? उच्यते- सूत्रोपदेशादिति, यस्माद् व्यवहारसूत्रे तृतीयोद्देशकेऽप्युक्तम्- त्रिवर्षपर्यायस्य कल्पते आचार प्रकल्प इति तथा व्यवहारस्यैव दशमोद्देशके सूत्रमस्ति त्रिवर्षपर्यायस्य कल्पते सूत्रकृताङ्गमुद्दिष्टुम्। एतदर्थं सूत्रकृताङ्गस्योपरि कृता इति। [भा.गा. २४-२८] [२९ गा. अत्रैवाग्रे]

किं कारणेन तेन भगवत्ता नवमाओ पुव्वाओ नीणिओ? उच्यते- 'ओसप्पिणि समणाणं' गाहा-

ओसप्पिणि समणाणं हाणिं णाऊण आउगबलाणं।
होहिंतुवग्गहकरा पुव्वगतम्मि पहीणम्मि ॥३०॥ भा.गा.

जम्हा ओसप्पिणीदोसेण परिहायंति साहूणं आउयं बलं बुद्धिओ य, एतन्निमित्तं उवग्गहकरा भविस्संति पुव्वगए परिहीणे। किञ्च- 'खेत्तस्स य कालस्स य' गाहा-

खेत्तस्स य कालस्स य परिहाणी गहणधारणाणं च।
बलवीरिए संघयणे सद्धा उच्छाहं ता चेव ॥३१॥ भा.गा.

खेत्ते ताव ओसप्पिणिं चेव पडुच्च परिहाणी गहणधारणाणं च तहा बलवीरियं बलं शारीरम्, वीरियं धैर्यं व्यवसायो वा। तहा संघयण-सद्धा-मेधा- उच्छाहाऽऽउयं च खेत्तदोसेणं परिहायंति। [भा.गा. ३२-३८]

गाहा- 'अणुकंपाऽवोच्छए'

अणुकंपाऽवुच्छेदो कुसुमा भेरी तिगिच्छ पारिच्छा।
कप्पे परिसा य तहा दिट्ठंता आदिसुत्तम्मि ॥२९॥ भा.गा.

उक्तं च सिद्धसेनक्षमाश्रमणगुरुभिः- 'बालाईणऽणुकंपा संखडिकरणंमि' गाहा-

बालाईणणुकंपा संखडिकरणंमि होअगारीणं।
ओमे य बीयभत्तं रण्णा दिन्नं जणवयस्स ॥ ओ.नि.भा.गा. १३॥

वोच्छेयंमि पडुच्च ओमे य बीयभत्तं रण्णा दिण्णं जणवयस्स [भा.गा.४० उत्तरार्धम्]

कुसुमे इति 'तवनियमनाणरुक्खं' गाहा -

तवनियमनाणरुक्खं आरूढो केवली अमियनाणी ।
तो मुयइ नाणवुट्ठिं भवियजणविबोहणट्ठाए ॥आव.नि.गा. ८९॥

भेरी-चंदणकंथा तेइच्छति [भा.गा. ४७-४८] 'बाल गिलाणे' गाहा -

तेण भगवया अणुकंपिएण मा वोच्छिज्जिस्संतीति काउं दुक्खारोह मिव पादवं आरूह्य अप्पणा मालिताणि कुसुमाणि अन्नेसिं च दत्ताणि [भा.गा.४२-४५] तवो दुवालसविहो । नियमो इंदियनोइंदियनियमो निग्रह निरोध इत्यर्थः । इंदियनियमो सोइंदियविसयप्पयारनिरोहो वा सोइंदियपत्तेसु वाऽत्थेसु रागदोसनिग्गहो जाव फासिंदियं । नोइंदियनियमो अकुसलमणनिरोहो वा, कुसलमणउइरण वा, मणसो वा एगत्तीभावकरणं, कोहस्स उदयनिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा विफलीकरणं जाव लोभस्स । तपसा नियमेन ज्ञानेन च संप्रयुक्तो वृक्षः । किञ्च -

सम्यग्दर्शन चारित्र तपो नियमस्तं संयमवृक्षादतः तत्पुरुषसमासः, ज्ञानदर्शन तपश्चारित्रात्मक एव वृक्षः । केवली अमितज्ञानी, 'केवृत् अमिश्रभावे' धातुस्तत्त्वे च भुवादिपरिपठितस्य केवृत् प्रति भू अल प्रत्यये केवलमिति भवति । केवलं कृत्स्नंप्रतिपूर्णं समग्रं साधारणं अनन्तविषयं असंख्येयप्रदेशं तीतानागलवर्तमानभावावभासकमिति पर्यायाः । मा माने केवलं ज्ञानं भावप्रमाणभूतं, जीवादयः पदार्थाः प्रमेयम्, अमितज्ञानीत्यर्थः । ततस्तेन भगवता भद्रबाहुना पूर्वरत्नाकरश्रुतसमुद्रात् प्रयत्नेनाऽऽकृतः उध्दृतमित्यर्थः, न तु स्वेच्छयेत्यर्थः, [भा.गा.४६] तेनाऽसौ श्रुतकर्ता ऋषीत्यपदिश्यते । 'ऋषीत्ययं स्थानार्जवेति ऋषिः, यस्मादसौ भगवान् आर्जवे सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रात्मके निर्वाणमार्गे व्यवस्थितः, ईर्यादिभिश्च समितिभिर्युक्त इत्यतो ऋषिः ।

जो पुण अप्पणो इच्छाए सुत्तं अत्थं वा करेइ तस्स सुत्ते चउलहु, अत्थे चउगुरु, आणाइ य विराहणा । दिट्ठंतो चंदणभेरी वासुदेवस्स असिवप्पसमणी, सा कृता कंथा, पच्छा आहया न प्पसमेइ । एवं सच्छंदविगप्पिअं सुत्तं मोक्खस्स असाधकं भवति । बितिया पसत्था । उप्पत्ती वन्नेयव्वा दोण्ह वि भेरीणं । [भा.गा. ४७-४८]

कप्पववहारा पुण पुरिसं परिक्खिउण दिज्जंति, जहा आई सुए पुरिसा परिक्खिया 'सेल घण कुडग'[1] गाहा -

एवं सुसिस्से दिज्जंति । तत्र शैल घन-छिद्रकुट चालनी-मशकं मार्जा-

---

[1] सेल घण कुडग चालणि परिपूणग हंस महिस मेसेअ ।
मसग जलूग बिराली जाहग गो भेरी आभीरी ॥आ.व.नि.गा. १३९॥

रादयः अनर्हाः। हंस-मेष-जलूकजाहकादयो योग्याः [भा.गा. ४९-५०]

तस्मिन् कल्पे किं वर्ण्यते? वर्णनीयं गमनीयं दर्शनीयमित्यर्थः [भा.गा. ५१-५२] उच्यते "कप्पे य कप्पिए चेव" गाहा—

कप्पे य कप्पिए चेव कप्पणिज्जेत्ति आवरे।
फासुए एसणिज्जे य संजमे त्ति य आवरे ॥५३॥

कल्पो नाम नीतिमर्यादाव्यवस्था आचरणमित्यनर्थान्तरम्। स च जिण-थेर-अहालंद-परिहारविसुद्धियाण य मज्जादा।

कप्पिओ जाणगसरीर-भविअसरीर-वइरित्तो दुवालसविहो वन्नेयव्वो। जहा-

सुत्ते अत्थे तदुभय उवट्ठ वीयार लेव पिंडे य।
सेज्जा वत्थे पादे उग्गहण विहारकप्पे य ॥१॥ [बृ.क.भा.गा. ४०५]

एए ओहनिप्फन्ने निक्खेवे पुव्वं भणिया, इह उ उदीरणमित्तं। [गा. ६१-६२-६३]

तत्थ सुत्तकप्पिओ आवस्सगमाइ जाव सूयकडं जहा ववहारस्स दसमुद्देसे अरुणोववाय गरुलोववाय जाव सुत्ताणुगामी परियागं नाऊणं परिणामं च तहा तहा दिज्जइ सुत्तं। अत्थस्स वि आवस्सगमाइ जाव सूयकडो। दसमाइ परिणामगाण दिज्जइ अत्थो।

उभयकप्पिओ सुत्तत्थतदुभयजोग्गो उवट्ठावणा कप्पो। "अपत्ते अकहित्ता"[२] गाहा—

जइ आवसगमाइ जाव छज्जीवणिया य सुत्ते य अपढिए उवट्ठावेइ चउगुरू दोहिं वि गुरू तवेण कालेण, तवगुरुअं ता अट्ठमदसमदुवालसमा कालगुरू गिम्हकाले। अह सुत्ते पढिए अत्थे अकहिए उवट्ठावेइ चउगुरू तवगुरू कालल‍हुं कालल‍हुं सीतकाले वासासु वा। अह पढिए सुत्ते य अपरिच्छिउं उवट्ठावेइ। अपरिच्छिउं नाम न सद्दहइ पुढविमाईणि चउगुरू कालगुरू तवचउगुरू। तवचउलहुगं च भण्णइ-अणुग्घाइयं पडुच्च गुरुयं। अणुग्घाइयं नाम छट्ठे चउत्थे आयंबिले व कए पारणाए पुरिमड्ढ निव्वीइय एगासणाइ करेइ तेण गुरुयं भवइ। अह पढियसुय अभिगय अपरिच्छिउण उवट्ठावेइ 'किं परिहरइ न परिहरइ उदउल्लादि' चउगुरू दोहिं वि लहु तवकालेण। अणुग्घाइयं पुण एवं बारसविहे वि कप्पे जहा पेढियाए भणिअं।

'कप्पणिज्जेत्ति दुविहं जीवमजीवं च। तत्थ सजीवं कप्पणिज्जम-

---

२ अप्पत्ते अकहित्ता, अणहिगयऽपरिच्छणे य चउगुरुगा।
दोहि गुरू तवगुरुगा, कालगुरू दोहि वि लहुगा ॥बृ.क.भा.गा. ४११॥

कप्पणिज्जं च। तत्थ सजीवमकप्पिअं अट्ठारस पुरिसेसु, वीसं इत्थीसुं, दस नपुंसेसु गाथा बृ.क.भा ४३६५ तव्विवरीयं कप्पियं।

तत्थ अजीवं आहारोवहि जाव दंतसोहणयं उग्गमुप्पायणेसणासुद्धं कप्पिअं अपरिग्गहणेन, तद्विपरीतमकल्पिकं। भा.गा. ६४

'फासुयं' ति- निर्जीवं यत्स्वयं द्रव्यं, मिश्रं नैव च जन्तुभिः। तत्प्रासुकमिति प्रोक्तं, जीवाजीवविशारदैः ॥१॥ अथवा भैक्ष्यं कल्प्यं गर्हितादगर्हिताद्वा। गर्हितं द्रव्यमित्यादि।

तत्र निर्जीवं यथोदनं पिपीलिकादिभिः मिश्रं, सक्तवो घुणादिषु, तक्रं रसजादिभिः, एतदप्यप्रासुकं।

'एसणिज्ज' मिति संकियमक्खियादिदोसवियुक्तं, तव्विवरीयमियरं। [भा.गा. ६५-६६]

'संयम' इति सप्तदसप्रकार व्रतसमितिकषायाणां रक्षणधारणविनिग्रहः सम्यग् त्रिदण्डविरतित्वञ्चेत्यादि, तद्विपरीतोऽसंयमः।

द्विप्रकारमवि तं कंपणिज्जं फासुयं एसणिज्जं साहुजोग्गं। एवं अचित्तादि गिण्हंतो संजओ भवति। [भा.गा. ६७]

कथं वा असंजमो भवति? एएहिं चेव असुद्धेहिं आहाराइहिं। [भा.गा. ६८]

तत्थ जं तं कप्पणिज्जं तं तिविहं- निज्जीवं आहारोवहिसेज्जा। तत्थ ताव उवहिंमि, जहा- वालए वाकए चेव।

वालए वागए चेव चम्मपट्टेति आवरे।
पम्हए किमिए चेव धातुए मसितेति य ॥भा.गा. ५४॥

वालए नाम उण्णिए, उट्टिए, कुतवे, किट्टिसे, मियलोमे। वागए अतसि सण दुगुलाइ। चंमे अत्थुरण तलिम कोसाइ। पट्टे सन्नाह पल्लत्थि पट्टाइ। पम्हए कप्पासाइ। किमिए मलए पट्टे अंसुगाइं। धाउए णाम जहा कम्ही देसे वंसकरिल्लो उट्ठेतो चेव घडएण पिहिज्जइ ताहे सो सुकुमालओ तत्थेव आउंडलीगओ वट्टइ, पच्छा पिच्चए, तओ किच्चइ तं सुत्तं चिज्जइ तं धाउयं।

उवसंपया चरित्तस्स चरित्ते कइविहे इय।
णियंठा कति पण्णत्ता कहं समोतारणा ति य? ॥भा.गा. ५५॥

उवसंपदा चरित्तस्स एवमादिहि सुद्धेहिं उवसंपन्नो सचरित्तो भवइ (भा.गा. ६९-७६)

उप सामीप्ये सं प्रशंसायां अस्तित्वे च उपसंपदा निष्पत्तिः प्रतिपत्तिरित्यर्थः। सा च कस्य? उच्यते- चारित्रस्य चरित्रं नाम अष्टादशशीलांगसहस्रनिष्पत्तिर्या तच्चरित्रं। आह- तच्चरित्रं मूलभेदेन कतिविधं? उच्यते, पंचविधं- सामायिकं छेदोपस्थाप्यं, परिहारविशुद्धिकं, सूक्ष्मसंपरायं,

यथाख्यातं च । [भा.गा. ७७-८२]

'निग्गंथा कइयं ? गाहा –

पंच णियंठा पंचेव संजया होंति मे कमसो ॥भा.गा. ८३ पश्चार्द्ध ॥

पंच निर्ग्रंथा - पुलाक, बकुश, कुशील, निग्रन्थ, स्नातका । [भा.गा. ८३-८४]

समोयारणा पुलाएणं भंते पुलागत्तं जहमाणे किं जहइ किं उवसंपज्जइ ? (भा.गा. १०४) गोयमा पुलागत्तं जहइ, छेओवट्ठावणं वा असंजमं वा उवसंपज्जइ,

एवं पंचानामपि निर्ग्रन्थानां समवतारः, यथा व्याख्याप्रज्ञप्तौ । [भा.गा. ८५ १२६]

गाहा – 'ववहारे कस्स य'

ववहारे कस्स पण्णत्ते कहं पडिसेवणा वि य ?
देसभंगे कहं वुत्ते, सव्वभंगे त्ति यावरे ॥५६॥

आह - कस्य व्यवहारो भवति ? एतदस्माभिर्न ज्ञायते । उच्यते - एषामेव संयतानां निर्ग्रन्थानां च विजहणोवसंपदादियारे ववहारो, अथवा अर्थिप्रत्यर्थिनां सापराधस्य व्यवहारः । अपराधो नाम पडिसेवणा । तेण पडिसेवणा चेव भाणियव्वा । कहं पडिसेवइ ? कइविहा वा पडिसेवणा ? उच्यते - दुविहा पडिसेवणा मूलगुणउत्तरगुणेसु । एक्केक्का दुविहा कारणे निक्कारणे य, जयणाए अजयणाए य । एवं कारणे वि जयणा अजयणा । [भा.गा. १२७-१३१]

कारणे असिवोमोयरियरायदुट्ठादिनाणदरिसणतवचरित्तकुलगणचेयाइ कारणिया । तव्विवरीआ अकारणिया । हेतुरुपदेशो लिंगं निमित्तं प्रमाणं कारणमित्यनर्थान्तरम् ।

निक्कारणपडिसेविए देसभंगो वा सव्वभंगो वा भवइ पायश्चित्तवसेणं । पंचराइंदियादि जाव छेओत्ति एस देसभंगो, तेणं परं सव्वभंगो मूलादि । [भा.गा. १३२-१३३]

गाहा - "पच्छित्ते कइविहे वुत्ते ?"

पच्छित्ते कइविहे वुत्ते ? छट्ठाणे त्ति यावरे ।
पंचट्ठाणे चउट्ठाणे तिट्ठाणे त्ति यावरे ॥भा.गा. ५७॥

आह - अभ्युपगतमस्माभिः प्रायश्चित्तवशात् प्रतिसेवनावशादित्यर्थः देशभंगो सर्वभंगो वेति एतदस्माभिर्न ज्ञायते - तत्र प्रायश्चित्तमेव कतिविधं ? तदुच्यते - 'छट्ठाणे' त्ति यावरे, षड्विधमिति षट्सु महाव्रतेषु । 'पंच' इति इंदियाइं जाव पंचिंदियववरोवणे । 'चउट्ठाणे' नाणवंते, दंसणवंते चरित्तवंते, चियत्तकिच्चे, अहवा अइक्कमे, वइक्कमे, अइयारे, अणायारे अहवा कोह - माण - माया लोभाओ निष्पन्ने कसायपरिणओ पडिसेवइ । 'तिट्ठाणे' त्ति नाणाइयारे, दंसणाइयारे, चरित्ताइयारे, अहवा आलोयणारिहं, पडिक्कमणारिहं, तदुभयारिहं ।

छट्ठाणे दंसणे वुत्ते संजमे त्ति यावरे ।
गाहणा य चरित्तस्स एमेता पडिवत्तीओ ॥५८॥ भा.गा.

'छट्ठाणे' त्ति छज्जीबनिकाये न सद्दहइ अहवा —

नत्थि[1] न निच्चो[2] न कुणइ[3] न कयं[4] वेएइ[5] नत्थि निव्वाणं[6] |
मोक्खोवायो[7] नत्थि, य छ मिच्छत्तस्स ठाणाइ ||१|| सम्मति का. ३ भा. गा. १३४-१४५

'संयम' इति सप्तदशप्रकारः संयमः, जहा ओहनिज्जुत्तीए पडिलेहणाए उवरिं | अवरग्गहणेन असंजमो तव्विवरीयग्गहणे य | गाहा - 'गाहणे' इति चारित्रप्रतिपत्तिः [भा. गा. १४६]

विशुद्धं कथं वा चरित्तं भविष्यति? वेरग्गेण वैराग्यतया शुद्धिर्भवति [भा. गा. १४७-१५१] एव मित्यवधारणे | एता इति प्रतिपत्तयः प्रतिपत्तिरिति व्याक- -रणं प्रकारो वा | एयाणि पंच कप्पे वण्णिज्जंति | [भा. गा. १५२ त: १५८]

गाहा - जो पुव्विं दिट्ठंतो "मूयं[1] हुंकारं च बाढक्कारे" अथवा 'निक्खेवेगट्ठ[2]' |
एएसिं पुण कप्पाणं "सव्वेसिं परुवणा" नवम पुव्वे | [भा. गा. १६३-१६४]

एत्थ[①] गाहा — "सव्वेसिं पुव्वाणं"

सव्वेसिं कप्पाणं पण्णवण परुवणा उ नवमम्मि |
आसज्ज उ सोयारं पुव्वगते वा इहं वावि ||१६३||

पूर्व इति किमुक्तं? प्रपूरणात् पूर्वं | पूर्वमेव पूर्वाऽतीताऽनागतवर्तमानेषु त्रिष्वपि कालेषु अव्यवच्छित्तिनयार्थं | ते च उत्पादपूर्वाद्या बिंदुसारपर्यंता भवंति[②] चेव |

किं पुण भरहेरवयेसु खेत्तेसु कालं प्रतीत्य व्यवच्छेदो भवत्युत्पादो वा महाविदेहं प्रतीत्य व्यवस्थिता एवं इत्यतः पूर्वाः |

"आसज्ज सोयारं" गाहा —

सोतारं पुण आसज्ज होज्ज इह कप्पे अहव णवमम्मि |
धारण गहण समत्थे तहि तं असमत्थे इहइं तु ||भा. गा. १६५||

श्रोतारमासाद्य अस्मिन् वा तत्र श्रूयते | जो गहण धारण- समत्थो सो तहिं चेव सोच्छिज्जइ[③] | जो पुण असमत्थो तस्स कप्पववहारा दिज्जंति, मा य पायच्छित्तस्स बाहिरो होउत्ति |

---

१. मूअं हुंकारं वा, बाढक्कार पडिपुच्छवीमंसा |
तत्तो पसंगपारायण च परिणिट्ठ सत्तमए ||आव. नि. गा. २३||

२. निक्खेवेगट्ठ निरुत्त विहि पवित्ति य केण वा कस्स |
तद्दार भेय लक्खण, तदरिह परिसा य सुत्तत्थो ||बृ. क. भा. गा. १४९||

① एगत्थ गाहा - इति ख. प्रतौ

② 'इति' ख प्रतौ

③ 'सोच्छिहई' ख प्रतौ |

गाहा - " बहुसुए चिरपव्वइए " |

बहुस्सुए चिरपव्वइए, कप्पिए य अचंचले |
अवट्ठिए य मेहावी, अपरिस्सावी य जे विऊ ॥ बृ.क.भा.गा. ४००॥

आह - एवं नाम कल्पव्यवहारो अल्पश्रुतानामपि दीयते ? नेत्युच्यते | बहुसुयस्स चिरपव्वइयस्स जो य सुत्तत्थतदुभयकप्पिओ अचंचलो य | चपलभावश्चापल्यं | अहवा तीठाणादि तरूणे थेरे य गंभीरे अपरिस्सावी य जे विउ | 'विद्' ज्ञाने | गाहा "पत्ते य"-

पत्ते य अणुण्णाते, भावतो परिणामगे |
एयारिसे महाभागे, अणुओगं सोउमरिहइ ॥ बृ.क.भा.गा. ४०१॥

पत्त इति पत्तभूय अहवा सुत्तेण व तेण य पत्तो | अणुन्नाए वा गुरुणा | भावओ परिणामए | उस्सग्गाववाया दव्व-खेत्त-काल-भावेसु एयाणि सद्दहइ सट्ठाणे य आयरइ | एवं गुणसमाउत्तो महाभाग: - 'महानिंति निव्वाणं तस्स भागी भव्य इत्यर्थः | असौ अनुयोगं श्रोतुमर्हति, योग्य इत्यर्थः |

अमीअ अनर्हा - गाहा - प्रस्तुतगाथाऽनुपलब्धेः कल्प्यते - गाथेयम् —

पडिणीय णिधम्मो य उण्णय थद्धो अप्पेण विसुएण |
लुद्धो यावि सुत्तत्थ - तदुभयाण होअऽणाभागी ॥१॥

'पडिणीय' इति प्रत्यनीकभूतः निधर्मश्च, 'उन्नय' माणी, थद्धो-गव्विओ य अप्पेण वि सुएण लुद्धो यावि आहारोवहिसेज्जासु | एवं गुणजाइओ सुत्तत्थतदुभयाणं अणाभागी भवति |

आह - कमर्थमवलंब्य आचार्य भद्रबाहुना कल्पव्यवहारा निर्यूढा इति | [भा.गा. १६६]

तत्थ गाहा 'दव्वे खेत्ते काले'

दव्वे खेत्ते काले उग्गह संघयण धारण गुरूणं |
तंपि बहुमणियव्वं जं एगपदे पदं अत्थि ॥ १६७ भा.गा.॥

दव्वाणि - आहाराईणि परिहायंति, मासकप्पपाउग्गाणि खेत्ताणि नत्थि, कालं[1] च ओमाइदुब्भिक्खबहुल इति भणियं, संघयणाणि परिहायंति, गहणधारणाणि य परिहायंति, गुरुप्पसाया य दुल्लभा उक्तं च—

सीसा वि य तुरंति आयरिया वि हु लहु पसीयंति |
तेण दरसिक्खियाणं, भरितो लोगो पिसायाणं ॥ बृ.क.भा. ३७५॥

---

1. 'कालो य दुब्बलोमाइ' ख प्रतौ

सीसा वि य तुरंति तं पि बहुमणियव्वं जं एक्कंमि सुत्तपए एक्कं अत्थपयं भणणइ। पुव्विं एक्कंमि सुत्तपए आयरिया चउविहंपि वन्नंति। एयनिमित्तं अज्जभद्दबाहुणा निज्जूढाणि कप्पाइं तेण इयाणिं थोलेत्ति न पमाओ कायव्वो, उज्जमियव्वं। [भा.गा. १६८-१७४]

एएसिं वन्निज्जमाणाणं कप्पाणं जस्स विभागो न विदितो सुव्वत्त-जलंधकारो से पाणिय अंधकारो विव, अहवा जल[१] एव अंधकार जलंधकार:। [भा.गा. १७६-१७९] [भा.गा. १७५]

आह- कतरकतमे ते कल्पा येष्वनभिज्ञस्य जलान्धकारो भवति? तत्र गाहा- 'छव्विहे सत्तविहे वा " पञ्चकल्पप्रकारा:

छव्विहे सत्तविहे वा दसविह वीसतिविहे य बायाले।
जस्स तु नत्थि विभागो सुव्वत्त जलंधकारो से ॥भा.गा. १७५॥

आचार्य आह- हे वत्स! अमी ते कल्पा: षड्विधसप्तविधाद्या:। तत्थ आईओ चेव छव्विहो कप्पो। गाहा "नामं ठवणा"

छव्विह कप्पस्सिणमो णिक्खेवा छव्विहो मुणेयव्वो।
णामं ठवणा दविए खेत्ते काले तहेव भावे य ॥भा.गा. १८०॥

आह- किं निमित्तं आदौ जीवद्रव्यकल्पोपदिष्ट:? उच्यते- क्रियावादिनो हि आर्हता क्रियासद्भावमस्तित्वमित्यर्थ:। यस्मादस्मिं जीवपदार्थे तंत्रांतरीया: विप्रतिपन्ना:।

केचिदप्याहु: - शून्या: सर्वभावा:। केचित् सर्वमनित्यमनात्मक-मित्यादि। केषांचित् - सर्वगत:। केषांचित् - सामाकतंदुलमात्र: अंगुष्ठपर्व-मात्र:, आदित्यवर्णमात्र:, हृदयावस्थितेत्येवमादय: तंत्रांतरीया विप्रतिपन्ना आत्मपदार्थे। तद्व्युदासार्थं भगवद्भि: आदौ जीवपदार्थोपदिष्ट:।

षड्विध-कल्प:

आह- अभ्युपगतमस्माभिर्यथा क्रियावादित्वात् आदौ जीवपदार्थोप-दिष्ट:। षड्विध कल्प: किमर्थमादौ उपदिष्ट:? उच्यते- यस्माद्भगवता षड्जी-वनिकाया उपदिष्टा एतदर्थं षड्विधकल्पो आदावेवोपदिष्ट:। अथवा षट् महा-व्रता। अथवा जीवपदार्थ एव नामत: स्थापनात: द्रव्यत: क्षेत्रत: कालतो भाव-तश्च विभाज्य:। आह- अभ्युपगतमस्माभि: यदर्थं षड्विधो जीवकल्पोपदिष्ट:,

---

१ 'जलिय' वि अं. ख प्रतौ

उच्यतां प्रस्तुतं | "तिविहो य दवियकप्पो" गाहा –

सो तिविहो बोधव्वो जीवमजीवे य मीसतो चेव |
एतेसिं तु विभागं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥ भा. गा. १८२॥

सो दवियकप्पो तिविहो सचित्ताचित्तमीसओ | [भा. गा. १८३-१८५]
सचित्तो छव्विहो - पव्वावणाइ |
अचित्तो सोलसविहो आहारादि उपरिष्टाद्वक्ष्यामः | गाहा –

पव्वावण मुंडावण सिक्खावणुवट्ठ भुंजसंवसणा |
एसो तु जीवकप्पो छब्भेदो होति णायव्वो ॥ भा. गा. १८६॥

'प्रव्राजना' इति लोउत्तरिया कुप्पावणिया य | कुप्पावणिया भिच्छुंडाइणं |
लोकोत्तरा हिंसानृतादत्तादानमैथुनपरिग्रहेभ्यो निवृत्तिः प्रव्रज्या |
अथवा अभ्युपगमः परिशुद्धः प्रव्रज्या | [भा. गा. ६८८]
मुंडणा तिविहा - लोइया लोउत्तरिया कुप्पावणिया |
लोइया बाल[1] आइच्च मुंडणा |
कुप्पावणिया शाक्यादीनां मौंड्यं |
लोकोत्तरे द्रव्य - क्षेत्र - काल - भावतश्च |
द्रव्यतः सुवर्णरत्नराशौ प्रशस्तधान्यराशौ वा चैत्यवृक्षे वा |
क्षेत्रतः चैत्यगृह पद्मसर शाल्यादीनां करणेषु इक्षुकरणे वा प्रदक्षिण-जले वा |
कालतः अष्टमीनवमीद्वादशीचतुर्दशी संधिदिवसांश्च व्युदस्य पंचम्येकादशीत्रयोदश्यादिभिः |
भावतः संझागतं रविगतं विड्डेरं संग्गहं विलंबिं च राहुहतं गहभिन्नं च वज्जेउण उच्चट्ठाणगएसु गहेसु तित्थकरगणहरकेवलि चतुर्दशपूर्वधरसन्निधौ वा विभाषा | पूर्वोत्तर दिशाद्यभिग्रहणं वा कृत्वा मुंडणा | अथवा भावमौंड्यं | [भा. गा. ६९९ - ७००] क्रोध-मान-मायालोभानां निग्रहः भावमौंड्यं | अथवा श्रोत्रेंदियादिनामिंद्रियाणां निग्रहो भावमौंड्यं |
शिक्षापना त्रिविधा - लोइया लोउत्तरिया कुप्पावणिया | लोइया ताव व्याकरण-नाटक-इषु-शस्त्रशिक्षादि | कुप्रावचनिका रक्तपटादीनां या शिक्षा त्रिपिटकादिषु द्रव्यशिक्षा |
लोकोत्तरा द्विविधा - ग्रहणशिक्षा आसेवनशिक्षा च |
ग्रहणशिक्षा सुत्तत्थतदुभयाणं |
आसेवना पडिलेहणा पप्फोडणाइ | [भा. गा. ७०१]
उवठावणा - लोइया लोउत्तरिया कुप्पावणिया |

---

१. सूर्योदयसमये इत्यर्थः संभाव्यते |

लोइया रायारायमच्चठवणा।

कुप्पावणिया भिच्छुंडमाइयाणं उवसंपदा।

लोउत्तरा असंयतत्वात् व्रतेषु स्थापना उपस्थापना। [भा.गा. ७०१-७१६]

संभुंजणा तिविहा-लोइया लोउत्तरिया कुप्पावणिया। लोइया सूयग-मयग-रजग-वरुडाइ। पासंडियानामवि त एव।

लोउत्तरा अभुज्जा त एव सुयग-मयग-रजग-वरुडाइ य, सपक्खेवि पासत्थादयो अभोज्जा तथा स्वपक्षे कुष्ठिगुल्माद्या, तथा आवन्नपरिहारिया अणवट्ठ पारंचिया अ। भोज्जा[२] तु सरिकप्पे सरिच्छंदे। [भा.गा. ७१७-७१९]

संवासे त एव लोइया कुप्पावणिया वाउरिअ-वाह-लोद्धियादयो असंवसणिज्जा।

लोउत्तरे पासत्थाइ सपक्खे। परपक्खे समण-माहण-सुसाणाइ। सपक्खे वि कोढियगलंत पारंचिया। [भा.गा. ७२०-७२२]

एष जीवकल्पः षड्विधोप्युपदिष्टः। [संक्षेपतः भा.गा. १८७-१८९]

अधुना प्रव्राजकं प्रव्रज्यायाः अर्हाः अनर्हाश्च वक्ष्यामः। तत्र पूर्वं ताव प्रव्राजकं वक्ष्यामः। केरिसो आयरिओ पव्वावओ? तत्थ गाहा—'सुत्तत्थतदुभय'

सुत्तत्थतदुभयविसायरस्स संगहउवायकुसलस्स।

कप्पति पव्वावेउं संवेगमुवट्ठितमतिस्स ॥भा.गा. ११०॥

सूचनात् सूत्रं। अरणादर्थः। सुत्तं अत्थं च विदंति जानातीत्यर्थः। विशारद इति विशारदः विचक्षण इत्यर्थः। संगहं दव्वओ भावओ य। आहार-उवहि सेज्जासु दव्वओ। भावओ सुत्तत्थतदुभएसु। अहवा गिलाणस्स ओसहभेसज्जेसु। उवायकुसल इति अत्ताणं ताव दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ परिक्खइ।

दव्वओ ताव किमहं वत्थपत्त आहाराईणि उप्पाएउं समत्थो असमत्थो?

खेत्तओ महाजणपाउग्गाणि खेत्ताणि उउबद्धे वासासु वा अत्थि नत्थि?

कालओ सुभिक्ख दुब्भिक्खेहिं समत्थो

असमत्थोऽहं आहाराइ उप्पाएउं?

भावओ सुत्तत्थतदुभयाइं किं मम अत्थि नत्थि? अत्थित्ते वा गाहेउं सक्केमि न सक्केमि? कोहाइणं वा निग्गहं समत्थो काउं न वा? नाणदंसणचरित्तेसुवा किमहं साइयारो निरइयारोत्ति? एवं ताव अप्पाणं परिच्छइ।

जे वि पव्वावेइ ते वि दव्वाइ परिच्छइ-दव्वओ आहाराईणि कयाइ भवंति कयाइ न भवंति, सुक्करुक्खाणि य। कदुफलकाईसु य सेज्जासु भूमीए य सोतव्वं। खेत्तओ अद्धाणाइसु य एक्कंमि य खेत्ते न अच्छियव्वं, अन्नोन्नेसु य अपुव्वदेसेसु विहरियव्वं वसहीसु य जुन्नसडियासु अंधकारासु वसियव्वं। कालओ-सीउण्हपरीसहा सहियव्वा। भावओ-अक्कोसहीलण-

२ 'य' स्व प्रतौ।

निंदणादओ सहियव्वा ।

'कुशल' इति कुत्सितं शलते इति कुशल ।'शल-हल-पन्लृगतौ' कुत्सितात् वा निर्गत: कुशल: कप्पइ पव्वावेउं कप्पइ वट्टइ इत्यर्थ: ।पापाद् व्राजितुं [२]प्रव्राजितुं ।'संवेग' इति द्रव्यसंविग्नो मृग: ।भावसंविग्नो मुनि: सारक्खइ अप्पगं अप्पमत्तो ।अहवा सिद्धी य देवलोगो संवेगो ।उप सामीप्ये ।प्र[१] इत्युपसर्गे ।'ष्ठां' गति निवृत्तौ' ।मति स्मृतिरित्यर्थ: ।केषु ? पूर्वोक्तेषु ।तुर्विशेषणे । किं विशिनष्टि? पुर्वाभिहितेषु उपस्थिता मतिर्यस्य ।अतस्तस्यैवं गुणजातीयस्य साधो: कप्पइ प्रव्राजितुं तव्विवरीयस्स न कप्पइ ।उक्तं येन प्रव्राजितव्यं ।[भा. गा. १९१-१९७]

अधुना प्रव्रज्याया: अर्हान् अनर्हांश्च वक्ष्याम: ।तत्थ गाहा — "पव्वावणा-अरिहा खलु"

पव्वावणा अरिहा खलु जातीकुलरूवविणयसंपण्णा ।
तव्विवरीयगुणा खलु होंति अप्पव्वावणाजोग्गा ॥भा. गा. १९८॥

पापाद् व्रजना प्रव्रजना अर्हा योग्या इत्यर्थ: ।खलु विशेषणे ।यु मिश्रणे । शो तनुकरणे ।जाति बीजं जातिहेतुरित्यर्थ: ।कुलं पेइयं ।माइया जाइ ।रूपणं रूप:, रूप्यते इति रूपं रूपसंपन्न इति निरुपहतेंद्रियेत्यर्थ: ।विनयसंपन्न इति मणाविनयाइसंपन्नो वा अब्भुट्ठाणाइसंपन्नो वा ।तदिति पूर्व प्रकृतापेक्ष: । किं पुन: तत्पूर्वप्रकृत: ? तदेव जात्यादिसंपन्नत्वं ।विवरीय इति जात्यादिगुणहीनत्वं गुणागणसंख्याने ।खलु विशेषणे ।प्रव्रज्याया अयोग्या इत्यर्थ: ।अथवा खलु-शब्दस्यायमर्थ:- न ह्येकान्तेनैव जात्यादिसंपन्नानां प्रव्रज्या तीर्थकरैरनुज्ञाता। कदाचिज्जात्यादिसंपन्नश्च भवति नपुंसकश्च ।कदाचिज्जात्यादिसंपन्नश्च भवति कुष्ठगुल्मचौरराजावकारी क्लीब अचक्षुष्मान् कषायविषयदुष्ट: दासत्वं वा प्राप्तो यदा भवति तदा जात्यादिसंपन्नस्यापि प्रव्रज्या न भवति।

अथवा जात्यादिसंपन्नोऽपि अतिबाल: अतिवृद्ध: गुर्विणी बालवत्सा वा सेहनिप्फेडिका वा उत्सर्गेणं जात्यादिसंपन्नानामिति प्रतिषिद्धा प्रव्रज्या ।[भा. गा. १९९]

आह- उक्तं भवता यथा जात्यादिसंपन्नानां प्रव्रज्या ।तत्रास्माभिर्न ज्ञायते कतरकतमास्ते भगवता सर्वज्ञेन प्रतिषिद्धा: प्रव्रज्याया: अयोग्या इति ।तत्र गाहा — 'बाले वुड्ढे नपुंसे य' ।कयरे पुण ते अनला ? अट्ठारस पुरिसेसु वीसं इत्थिसु, दस नपुंसेसु ।के पुण ते अट्ठारस ? इमे -

बाले वुड्ढे नपुंसे य, जड्डे कीवे य वाइए ।
तेणे रायावकारी य उम्मत्ते य अदंसणे ॥भा. गा. २००॥

---

२. अत्र लुप्तणिजर्थो भाति ।

१. अधिकं भाति ।

दासे दुट्ठे य मूढे य, अणत्ते जुंगिते इय ।
ओबद्धए य भयए सेहनिप्फेडिया इय ॥भा. गा. २०१॥

इत्थीसु एए चेव नवरि गुव्विणी बालवच्छा य अब्भहिया भाणियव्वा [भा. गा. २०२]

तत्थ बालेत्ति पढमं दारं [भा. गा. २०३] बालो तिविहो - उक्कोसो मज्झिमो जहन्नो। तत्थ तिविहे वि बाले गाहा — "एकुणतीसा वीसा य एकुणवीसा य तिविह बालंमि"

अउणत्तीसा[1] वीसा इगुवीसा[2] चेव तिविहबालम्मि ।
तव छेद वीसु पढमे बिति मिस्सा ततिय छेदाइ ॥भा. गा. २१२॥

तत्थ उक्कोसो छवरिस - सत्तवरिसो ।मज्झिमो चउवरिसपंचवरिसो । जहन्नोदुवरिस - तिवरिसो ।

तत्थ उक्कोसं बालं पव्वावेऊण सिरिअज्जखमासमणाणं धम्मगणिखमासमणाणं य वत्तव्वएण एकुणतीसं दिवसे परियट्टेइ मासलहु तवो।अन्नेहिं एकुणतीसाए दिवसेहिं मासगुरू तवो ।एवं चउलहु, चउगुरु तवो, छलहु, छगुरु, एकुणतीसं अमुयंतेण।

मित्तवायगखमासमणाणं वत्तव्वयाए एकुणतीसं दिवसे पव्वावेऊण उक्कोसं बालं सारवेंतस्स मासलहुं।असारवेंतस्स मासगुरु तवो ।एवं एकुणतीसा अमुयंतेण चउलहु -चउगुरु छलहु छगुरु तवो।तहेव सारवणा असारवणा य । एवं छेदो मूल अणवट्ठ पारंची।तहेव सारवणा असारवणा ।

अहवा बिइओ इमो गमो - जाहे छगुरुओ तवो तओ ताहे अन्ने एकुणतीसं दिवसे सिक्खाविंतस्स पंचराइंदिया लहुओ छेदो ।असिक्खाविंतस्स सो चेव गुरुओ छेदो[3]।एएण कमेण दसराइंदिओ लघुगुरुओ ।पन्नरसं वीसं पंचवीसं मासलहुओ छेओ, मासगुरुओ छेओ ।सिक्खा असिक्खा तहेव।चउलहु चउगुरु छलहु छगुरु छेदो मूलं अणवट्ठ पारंची ।सिक्खा असिक्खा ।

इयाणिं मज्झिमं बालं पव्वावेउं वीसं दिवसे सिक्खाविंतस्स मासलहु तवो, असिक्खावेंतस्स मासलहुछेओ ।अन्ने वि वीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स मासगुरू तवो, असिक्खावेंतस्स मासगुरू छेओ ।एवं चउलहु -चउगुरु छलहु छगुरु छेओ मूलं अणवट्ठ पारंची ।वीस दिवसे अमुयंतेण ।

इयाणिं जहन्नयं बालं पव्वावेऊण एकुणवीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स मासलहु छेओ, असिक्खावेंतस्स मासगुरू छेओ ।एवं चउलहु -चउगुरु छल्लहु छग्गुरु छेओ मूलं अणवट्ठ पारंची । एकुणवीसं दिवसे अमुयंतेण ।सिक्खा असिक्खा तहेव ।

---

१. एतदर्थगाथा ३५१७ नि.भा.

२. 'इगुणवीसा' संभाव्यते ।

३. नास्ति (जे.)

अहवा जं चेव दिवसं पव्वावेइ ताहे चेव मूलं। एवं तइए छेदो मूलं वा। आणाइणो य दोसा। विराहणा इमा गिहत्था भणंति अहो इमेसिं बंभयारीणं पच्च-क्खं दीसंति फलाणि। अहवा संका भवेज्जा - किं मन्ने एएहिं चेव जाया। संकाए चउगुरु। णिसंकिया मूलं। अयगोलो व जहा जओ जओ छिवइ तओ तओ डहइ। एवं सो वि कोविओ छक्काए विराहेइ अयगोलसमाणो। सो य रत्तिं असणाइ ओभासइ। जइ भोयणं देंति राइभोयणविराहणा। अह न देंति जं सो पावइ त-न्निप्फन्नं। दिवसे दिवसे चारगपालत्तणं कायव्वं। अंतराइयं जं च वारिज्जइ। पडिबंधेण य तेण न विहरंति। जे निइयवासे दोसा ते पावंति। एवं उग्घायं अणुग्घायं च तवोकम्मलक्खणं छव्विहं। छव्विहं नाम पढमस्स उक्कोसबाल-स्स मासलहुगाइ जाव छग्गुरु। नाऊण जिणेहिं य चोद्दसपुव्विहिं य दिट्ठं एएण सोही।

बिइयपयं - पव्वावेंति जिणा अइमुत्तो कुमारो, चोद्दस पुव्विणो जहा मणओ, अइसेसिएहिं जहा वइरसामी। एए मम अव्ववहारी। गच्छे जहा पव्वा-विज्जइ एयं इच्छामि नाउं इमा विहि गच्छे पव्वावेउं -

कहिंचि विउलं कुलं उवसंतं तहिं च बालओ बालिआ वा अत्थि। ते य भणंति - जइ एयं पव्वावेह अम्हे वि पव्वयामो। ताहे भणंति - नियल्लगाणं तहिं ठवेह त्ति। जाहे न ठवेंति ताहे पव्वाविज्जंति बहुगुणकरं ति। अहवा से णिय-ल्लगा सव्वे उच्छन्ना, तहिं च एक्को बालओ ठिओ। एवं सम्मद्दिट्ठिस्स कप्पट्ठो सेज्जायरस्स वा होज्जा। अज्जाणं केणइ पडिणीएण रागेण अणायारो सेविओ। तत्थ डिंडियबंधो[1] जाओ। तीसे पच्छायणनिमित्तं कप्पट्ठओ घेप्पइ। सिंगणाइय कज्जं वा तहिं च कोइ भणइ - अहं तुज्झं एयं नित्थारामि, एयं नवरि मम बालं पव्वावेह। कंतारे वा कोइ भणेज्जा - अहं तुब्भं पडितप्पामि, एसो बालो निग्गएहिं पव्वावेयव्वो। एवं असिवाइहिं पव्वाविज्जइ।

पव्वाविए इमा जयणा - भत्तपाणं उक्कोस्संग जाइऊण दिज्जइ, रत्तिं पि से ठविज्जइ। ण्हाणुव्वलणं कहिंचि सम्मद्दिट्ठि कुले जत्थ चेडरूवाणि तहिं वा से सेसं तेसिं कप्पेण कीरइ। तेयस्सी य भवइ वड्ढइ य ण्हाणुव्वलणेण। उद्दंसणा अण्णकप्पट्ठेहिंतो[2] न पावइ। सारिज्जइ य जं किंचि करेइ। वारिज्जइ खेलणाईसु। चरणकरणे सुनियुज्जइ। सज्झायं च सव्वपयत्तेणं गाहिज्जइ। एवं पव्वाविओ समाणो जहिं चेव नज्जइ तहिं चेव धरिज्जइ जाव महल्लओ जाओत्ति। जत्थ य अभिमओ सावओ तहिं चेव अच्छाविज्जइ, तहिं से अहाकडं सव्वं होइ। एवं बालेत्ति सम्मत्तं ॥१॥ भा.गा. २१३ : २४१ ॥

इयाणिं वुड्ढो तिविहो उक्कोसाइ। उक्कोसो सट्ठिमारद्धो जाव सत्तरिं।

---

१. गर्भसंभूत इति ।

२. कप्पठितेहिंतो न य। प.पा.ला.लो.ड।

मज्झिमो असीइ वरिसो।नउइ वरिसो जहन्नो।जं चेव बालस्स तं चेव सव्वं भाणियव्वं।नवरि इमा विराहणा आवस्सयं न सक्का गाहेउं जड्डुत्तणेण।छक्काए ण सद्दहइ विराहेइ य।कुसत्थेहिं जो भाविओ इमं भावणं न गेण्हइ।सो य सोयवादी बहुं दवं परिठ्ठवेइ।भिक्खायरियं न हिंडइ।हिंडंतो वा उड्डाहो।बिइयस्स[1] पलिमंथो।'थंडिलं' न सद्दहइ।अहवा जाव पडिलेहेइ ताव से नीइ काइयं वा इयरं वा।पाठे य जड्डो करणे य जड्डो न सक्का गाहेउं।जाहे य गाहिज्जइ ताहे य भणइ-अम्हे लोयस्स अणुग्गहकरा, कोइ अम्हे किंचि वि ण भणइ।जइ य मंडलीए अंते णिवेसाविज्जइ[2] ताहे भणइअम्हेहिं अणिविट्ठेहिं को अण्णो णिवेसइ।

बिइयं पयं जहा बालस्स।इमं नानत्तं-उवहि जत्तियं परियट्टइ जेण य से सीयं न जायइ।वंदणाएण य से अणुकंपा कीरइ।चरणकरणसज्झायं अणुयत्तणायाए आयरियसरिसो वा णं गाहेइ।संथारो उच्चो कीरइ।पाएपुंछणाइं च अहे से दिज्जंति।

वुड्ढजुयलं बालजुयलं[3] च उवउज्जिउं निमित्तेण अहवा जे जाणंति ते पुच्छित्ताण जइ नित्थरंति[4] ताहे पव्वाविज्जइ।अह न नित्थरंति ताहे न पव्वाविज्जइ।जइ वा जुगप्पहाणा भविस्संति दो वि वग्गा ताहे से दिक्खा। एएसिं दोण्हं अट्ठा अहवा अप्पणो अट्ठं साहेंति तेण वा से दिक्खा।वुड्ढोत्ति गयं ॥२॥ [भा.गा. २५०-२८४]

नपुंसएत्ति दारं सो पुण सोलसविहो।तत्थ पढमे पंडओ-दूसी पंडओ, उवघायपंडओ, लक्खणपंडओ भइओ।

कस्सइ गहावलोयणेण पंडयलक्खणा, न पुण पडिसेवओ भवइ, तस्स पुण को विहि? गीयत्थे पव्वावणं।गीयत्थे अपुच्छिऊण वा चउगुरु। छव्विहे दवियकप्पे पव्वावणाइ पुच्छिज्जइ-कोऽसि तुमं? को वा ते निव्वेओ? निरुवहयस्स न पुच्छइ चउगुरु।एवं भणिओ को वि सयमेव साहेज्जमम महइ निव्वेओ, सइ माणुसत्ते जइ मम एरिसो वेदो उइन्नो।मित्ता वा उवाएण पुच्छिज्जंति, ते साहिंति। [भा.गा. २८५-२८८]

अहवा इमेहिं लक्खेहिं नायव्वो।लक्खणगाहाओ-उग्घोसेयव्वाओ-

महिला सहावो सरवण्णभेदो मेंढं महंतं मउया य वाणी।
ससद्दगं मुत्तमफेणगं च एताइं छप्पंडगलक्खणाइं ॥भा.गा. २८९॥

---

१. पियजयस्स (सु.ला.ली.प.पा.)

२. णिवेसविज्जइ जेः निवेसिज्जइ प.पा.ला.ली.ड

३. इत्थि पुरिसा य

४ "पव्वावणा" से तम्हे अत्थि।ख प्रती

गती भवे पच्चवलोइयं च मिउत्तया सीतलगत्तयाय |
धुवं भवे दुक्खरणामधेओ, संकार पच्चंतरिओ ढक्कारो ॥२९०॥

गति हत्थवच्छकडिभमुयभास दिट्ठी य केसलंकारे |
पच्छण्णमज्जणाणि य पच्छण्णतरं च णीहारो ॥भा.गा. २९१॥

पुरिसेसु भीरू महिलासु संकरो पमयकम्मकरणो य |
एवं बाहिरलक्खण णपुंसवेदो भवे अंतो ॥२९५॥ भा.गा [बृ.क.भा.गा.५१४४-५१४७]

तिविहो वेओ तइयभंगो - पुरिसवेदो दवग्गिसमाणो | इत्थिवेओ गुम्मुरग्गिसमाणो | नपुंसगवेओ महानगरदाहसमाणो | अहवा एक्केक्को दुविहो - आसित्तो असित्तो वा | आसित्तो ऊसित्तो वा | आसित्तो जो सावच्चो | ऊसित्तो अणवच्चो |

उवघाय पंडओ दुविहो - वेए उवकरणोवघाए य | वेओवघाए जहा हेमकुमारो | उवकरणोवघाए जहा कविलगोत्ति भंडेण[1] छिन्नेण उवहओ |

पुव्वकम्मोदएणं केसिंचि वेओवघाओ भवइ | उप्पन्ने अ वेए न सक्का अहियासेउं | दिट्ठंतो - गोणो | जहा गोणो पढमपाउसे धाओ[2] हरियतणस्स पुणरवि तं[3] कोटिंबिं अणुसज्जइ | तहा इमोवि वेदुक्कडयाए[4] तं भावं अपडिसेवित्ता धिइं न लभइ |

जो एयं तिविहं पव्वावेइ तस्स मूलं, आणाइ, विराहणा - गहणं च संजयस्स | गहिएण य तहेव आयरियाण आलोएयव्वं | तहेव जो नालोएइ तस्स चउगुरु | अहवा अंतो विरहं अलभमाणो बहिया वियारगयाणं चरित्तसंभेदणिं कहं करेज्जा[5] अहवा केइ पडिसेवेज्जा तत्थ पडिगमणाइ | एक्केक्कंमि आयरियस्स पच्छित्तं अहवा परियारं अलभमाणो गिहत्थे अन्नतित्थिए वा पडिसेवेज्जा गोवालए वा | तत्थ अयसो अकित्ती य तेसिं पि उप्पज्जइ - सव्वे एयारिसा | वियार उब्भाम[6] कयए वा साहू वाहरेज्जा - एह तुब्भे वि करेह सिरिमदिरं[7] | आयाए कोइ तत्थ संतेल्लओ | निच्छूढे समाणे चिंताए[9] दट्ठुमिच्छइ | पंडओत्ति पयं सम्मत्तं ॥१॥

इयाणिं 'कीवय' इति कीवो नाम गुणनिफ्फन्नं नाम | क्लिद्यत इति क्लीबः | निच्चमेव गलइ सागारियं जइ न[10] रोएइ निरुद्दबत्थिओ नपुंसत्ताए परिणमइ |

१. क्षुरेण
२. ध्रातः
३. गायं
४. वेदोत्करतया
५. 'कहेज्जा' पाठान्तरमिति
६. कामकान्
७. पशु क्रीडाम्
८. निलीनः सन्
९. उपस्थ इति संभाव्यते चिंताए स्व प्रतौ |
१०. न सेवते

एयस्स तं चेव पच्छित्तं ।

दिट्ठी कीवो य आलिद्धकीवो य ।

दिट्ठी कीवो नाम पेच्छिऊण अविरइयं सहसादेव गेण्हइ नाहियासेइ सो दिट्ठीकीवो । तारिसयं जइ पव्वावेइ मूलं आणाइ विराहणा ।

आलिद्धकीवो जाहे अवयासिओ भवइ अविरयाए भणिओ वा ताहे नाहियासेइ । तारिसयस्स वि कयाइ दिक्खा भवेज्जा संघाडएण सह हिंडाविज्जइ । जाणि तारिसगाणि कुलाणि ताणि परिहराविज्जइ ॥२॥

वाइओ नाम जाहे से कम्मोदएण कसाइयं भवइ ताहे से न सक्को धरेउं जाव अणेण न कयं जं कायव्वं । तच्चणिएण दिट्ठंतो-रूवे पडिसेविआ उणेण नावाए । जं चेव पंडयस्स तं चेव से ॥३॥

कुंभी दुविहो- जाइकुंभी य वेयकुंभी य । जाइकुंभीयस्स सागारियं वसणा वा से सुणेल्लया । वेयकुंभीस्स अलभंतस्स सुज्जंति[1] जाइकुंभी य भइयव्वो । वेयकुंभी न पव्वाविज्जइ । किं कारणं ? तस्स अलभंतस्स तइओ वेओ परिणमइ ॥४॥

ईसालुओ नाम पडिसेविज्जंतं गावं दट्ठूणं सोऊणं वा तंमि अंतरे जइ न लब्भइ तस्स तइओ वेओ भवइ । तं पव्वावितस्स मूलं ॥५॥

सउणी नाम जो अभिक्खणं २ सेवेइ जहा घरसउणो । सो तंमि निरोहे पडिसेवणं अलभमाणो तइओ से वेत्तो भवइ । पव्वावितस्स मूलं ॥६॥

तक्कम्मपडिसेवी नाम पडिसेविए समाणे ताहे जहा साणो ताहे तं चेव लिहइ । सो वि अलभमाणो तइओ वेओ परिणमइ । तं पव्वावितस्स मूलं ॥७॥

पक्खियापक्खियो नाम एगपक्खे हायइ, एकपक्खे वेदो वड्ढइ । तंमि जइ न लभइ तत्थ पवड्ढइ तो तइओ भवइ । तं पव्वावितस्स मूलं ॥८॥

सोगंधिए नाम पडिसेविए जो सागरियस्स तं गंधं जिंघइ । जाहे न लभइ ताहे तइओ वेओ भवइ । तत्थ मूलं ॥९॥

आसित्तो नाम जो निच्चमेव तत्थ छूढेण अच्छइ, न से भावो उवसमइ । सो अलभंतो तइओ वेओ भवइ । तत्थ मूलं ॥१०॥

वद्धिओ नाम जस्स वसणा अवणीएल्लगा ॥११॥

चिप्पिओ नाम जस्स बालभावे चिप्पिआ वसणा ॥१२॥

मंतेण उवहओ मंतोवहओ ॥१३॥

ओसहीहिं उवहओ ओसहीउवहओ ॥१४॥

इसिणा सत्तो इसिसत्तो ॥१५॥

देवेहिं सत्तो देवसत्तो ॥१६॥

---

१ सेवते

एए[२] छ भयणिज्जा। जइ अपडिसेवगा तो पव्वाविज्जंति सदेसे। अह पडिसेवगा तो न पव्वाविज्जंति। एएसिं छण्हं चउगुरु। दसण्हं हेट्ठिल्लाणं पव्वावेंतस्स मूलं।

चोदको भणइ – जहेव इत्थी इत्थीवेयं उइन्नं धरेइ। पुरिसो य एवं सो वि उदिन्नं धरेइ। को दोसो जं न पव्वाविज्जइ? एवं भणंतस्स चउगुरु। अहवा एएसिं छण्हं वद्दियाईणं को दोसोत्ति भणइ। तत्थ वि चउगुरु। जे वा अपडिसेवगा उवरिल्ला छ तेसिं मंसू न उट्ठेइ। जहिं चेव ते नज्जंति तत्थ चेव विहरियव्वं, अन्नत्थ विहरइ चउगुरु।

भवे कारणं सव्वे वि एए पव्वाविज्जेज्जा, न य पायच्छित्तं भवेज्जा। असिवाई- असिवं उवसामेइ, असिवेण वा गहियाणं भत्तपाणेण पडितप्पइ। एवं सव्वेसु वि पएसु। उत्तिमट्ठं जं तस्स वाचा उग्गं दव्वं देइ। निज्जवए[२] नेइ। सो चेव वा उत्तिमट्ठं पडिवज्जइ। नाणदंसणचरित्तहेउं वा। इत्थीदोसा वा एसणादोसा वा जत्थ देसे तओ निग्गच्छंतस्स अन्नंमि य संजमदेसे वच्चंतस्स भत्तपाणेण पडितप्पइ। भणइ ममंपि पव्वावेहित्ति एएहिं कारणेहिं आगाढेहिं पव्वाविज्जइ। कए पुण कज्जे विगिंचणयाए इमा जयणा।

कडिपट्टए से कीरइ जो पढम पव्वाविज्जइ। अनलो तस्स पढमं कडिपट्टओ कीरइ। छिहली[३] से ठविज्जइ। जइ नेच्छइ कत्तरियाए कीरइ छुरेण वा। जइ नेच्छइ ताहे से लोओ कीरइ।

सिक्खा दुविहा - आसेवणासिक्खा य गहणासिक्खा य। आसेवणासिक्खा न दाइज्जइ। गहणासिक्खा अन्नसिद्धंतं पाढिज्जइ। जाहे नेच्छइ ताहे कहाओ पाढिज्जइ। करगया[3A] तरंगवइमाई। जाहे तं पि नेच्छइ ताहे सुत्तं हेट्ठुपरियं दिज्जइ। अहवा धम्मकहं कहेत्ता सावकवया से दिज्जंति। जइ नेच्छइ सन्नीणं वा अवसारणं निच्छुभइ। रायकुले वा ववहारेण लिंगं मोइज्जइ। अहवा वसहा अन्नलिंगं करेऊणं पन्नवेंति जहा पडिभज्जइ सो बडुवओ। पव्वइओ तस्सन्नलिंगेण वोसिरणं विहीय कालियाए[४] वा छड्डिज्जइ। [भाग़ा. २९६ - ३७९] ॥३॥

जड्डो तिविहो - भासाजड्डो, सरीरजड्डो, करणजड्डो य।
भासाजड्डो तिविहो - जलमूओ, मम्मणमूओ, एलमूओ।
जलमूओ जहा जलनिब्बुड्डो किंचि उल्लावेइ।
एलमूओ जहा एलओ बुब्बुयइ।

---

१. वद्दिओ, चिप्पिओ, मंतोवहो, ओसही उवहओ, इसिसत्तो, देवसत्तो य।
२. निर्यापकानिति।
३. शिखा   ३A हस्तगता:
४. रात्रौ

मम्मणमूओ जहा बोक्कडो चिरेण से वाया नीइ।

जलमूए एलमूए य पव्वावेइ चउगुरु, आणाइदोसा, जं चेव कज्जं तं चेव तस्स नत्थि नाणदंसणचरित्ताणि।

मम्मणो कारणे पव्वाविज्जइ।

सरीरजड्डो जो परिवुढो उवचियमंससोणिओ तं पव्वावेइ चउगुरु आणाइविराहणा। पंथे छड्डिज्जइ। संघंसेणं जं पावेइ सावएहिं तेणेहिं य। भिक्खायरियाए जड्डो जं च उड्डाहो। वंदणयं न तरइ। गिम्हे य से पेल्लिओ अवकच्छा से कुच्छंति, जं तत्थ देससिणाणं वा सव्वसिणाणं करेइ तन्निप्फन्नं। अहवा न करेइ तो गिलाणारोवणा।

करणजड्डो नाम आसेवणसिक्खं जो न गेण्हइ तं पव्वावेइ चउगुरु आणाइ। जो तं गाहेइ तस्स सुत्तत्थपलिमंथो एवमाइ दोसा। तम्हा सो केचिरं परियट्टियव्वो? अप्पणो आयरिओ छम्मासा। अन्नो वि दो छम्मासे जो तं गाहेइ तस्स चेव सो। अह अन्नो नत्थि ताहे अप्पणा अट्ठारस मासे परियट्टित्ता ताहे कुलगणसंघे विगिंचइ [भा. गा. ३८०-३९५] ॥४॥

कीवो दुविहो - अभिभूओ अणभिभूओ य। अभिभूओ दुविहो - निमंतणाए आलिंगणाए य। निमंतणाए नाम निमंतिओ समाणो न तरइ अहियासेउं जहा हि जउघडो अग्गिसंनिकरिसेणं विराई[1] एवं सो वि।

आलिंगणाए नाम हत्थेहिं व कक्खेहिं पओहरेहिं व आलिद्धो तहेव पडिसेवी भवइ।

अणभिभूओ दुविहो - सोऊणं व दट्ठूणं व। सोऊणं नाम जो इत्थीणं भासासद्दं[2] वा भूसणपरियार सद्दं वा सोऊण कंपइ एस तइओ कीवो। इमो चउत्थो, दट्ठूणं वेदो उप्पज्जइ। अह न सेएइ[4] तइओ वेओ भवइ।

एएण न कप्पइ कीवस्स दिक्खा। अह दिक्खेइ मूलं। विराहणा जा जहिं सा भाणिअव्वा [भा. गा. ३९६-४०५] ॥५॥

वाहिओ जो रोगेण वा आयंकेण वा अभिभूओ दिक्खं अभिलसइ। रोगो सोलसविहो। आयंको अट्ठविहो कासाइ। आणाइ छक्कायविराहणा। गेलन्नेणं नाणदंसणचरित्ताणं पलिमंथो। घंसणं पीसणं पयणं च एवमाई दोसा। अह न करेइ जं पावइ तं आवज्जइ। जो तं पव्वावेइ चउगुरु। जाया अणाहसाला समणा वि य दुक्खिया पडियरंता। ते विय पउणा संता होज्ज व समणा ण व होज्जा [भा. गा. ४०६-४०९] ॥६॥

---

१. विलिनाति

२. हाससद्दं वा क्वचित्प्रतौ।

३. दुर्विवृतां।

४ सेवते।

{ दुन्निविट्ठं वा दव्वियट्ठं वा धम्मारहियं वा अणायारं वा सेवंति अहवा मोहग्गिमय अन्नेसंगिम्मिअयाणं वा इत्थिओ दट्ठूण

तेणो चउविहो-दव्व-खेत्त-काल-भावओ (दव्वओ) जो सच्चित्ताचित्त-मीसयाणि दव्वाणि तेणइ सचित्तं दुपयं चउप्पयं वा। दुपयं महिलियाइ। चउप्पयं आसाइ अचित्तं हिरण्णाइ। मीसयं एएसिं चेव संजोएण।

खेत्तओ-जंमि खेत्ते तेणिअं करेइ सदेसे परदेसे वा।

कालओ-दिआ वा रत्तिं वा तेणिअं करेइ।

भावओ-नाणाइ तेणो जहा अज्जगोविंदो।

एयं दिक्खेइ मूलं, आणाइ विराहणा, गिन्हणादओ दोसा हवेज्जा बंधेज्ज वा, उद्दवेज्ज वा, खिंसेज्ज वा, निट्ठुरेहिं आसियावेज्ज वा, सगामाओ निव्विसए वा करेज्जा रुट्ठो नरवरिंदो एगं वा अणेगे वा कुलगणसंघं वा। तम्हा न पव्वावेयव्वो तेणो।

भवे कारणं-मुक्को वा चारगसोहणे, मोइओ वा नीयल्लएहिं, दंडेण वा विसज्जिओ सयं रन्ना, अद्धाणाइसु वा नित्थारेइ, परदेसे वा गयं कोई ण याणइ, उत्तिमट्ठं वा पडिवज्जइ एएहिं दिक्खा ॥७॥ [भा.गा.४१०-४३१]

रायावकारी नाम जेण रन्नो अवकृतं, सचित्तं वा अवहियं आसाइ, अचित्तं आहाराइ, मीसे संजोगो। उद्दविओ दंडिओ वा पुत्तो वा, विरुद्धे वा दूय पेसो कओ। [भा.गा. ४३२-४३७]

अहवा[1] निच्चं अट्टरोद्दाइं झायइ, संजमाइएसु य जोगेसु करणं पडिलेहणाई तं न गेण्हइ, आयाए आहणेज्ज वा मरेज्ज वा किंचि। तम्हा न पव्वावेयव्वो।

भवे कारणं-जक्खाएसाइविमुक्को, असिवाइकारणेसु वा पडितप्पेज्जा। [भा.गा. ४३८-४४०] ॥९॥

इयाणिं अंधेल्लयं जइ दिक्खेइ चउगुरु आणाइ। 'छक्काए ववरोवेइ' गाहा घोसेयव्वा ॥१०॥ [भा.गा. ४४१-४४५]

छक्कायविओरमणता आवडणं खाणुकंटमादीसु।
थंडिल्ल अपडिलेहा अंधस्स ण कप्पती दिक्खा ॥४४४॥ भा.गा.

इयाणिं दासो सो छव्विहो-गब्भदासो, कीएल्लओ वा, अणएण वा पविट्ठो, दुब्भिक्खेण वा पोट्टेण वा अइगओ, अहवा सावराही, रुद्धो वा जह दमिलमालवेसु।

गब्भदासं पव्वावेइ मूलं, सेसेसु चउगुरु, सव्वेसिं वा मूलं आणाइ। कोइ राया रायमच्चो वा वंदेज्ज साहुणो। तं दट्ठूण भणेज्जा सव्वे एयारिसा मन्ने। गिण्हणाइ दोसा।

भवे कारणं मुक्को वा, मत्थओ वा से धोओ। गब्भदासो अन्नंमि

---

१. पाठस्तु त्रुटितो भातियतो नवमोन्मत्तद्वारान्तर्गतमतः परमस्ति।

वि देसे न कप्पइ जे य दासा ते तंमि चेव देसे, कप्पंति मुक्का पव्वावेउं [भा.गा. ४४६ - ४५०] ॥११॥

इयाणिं दुट्ठो दुविहो - कसायदुट्ठो य विसयदुट्ठो य।

कसायदुट्ठो दुविहो - सपक्खे परपक्खे य। अहवा चउभंगो - जो सपक्खे दुट्ठो तत्थ उदाहरणा इमे सासवनालिया समुद्दिट्ठुत्ति मयगस्स दंतभंगं। मुहपोत्तिया न दिन्नत्ति[1] मरणं समगं। संझाए सिव्वतित्ति भणिओ उलुगच्छिहित्ति। भणिओ उलुगच्छिहित्ति कीस? अच्छीणि[2] अन्नेण ढोकिया। मज्जिओ[3] सव्वा समुद्दिट्ठा। तत्थेव उत्तरिऊण अच्छिओ पत्थरं। अन्नेहि निवारिओ। एए लिंगपारंचिया जावज्जीवं सव्वविसएसु। अइसेसिओ परं लिंग देइ।

सपक्खो परपक्खे निक्कारणे लिंगपारंची जहा उदाइस्स मारओ।

परपक्खो सपक्खे उद्दवेइ तत्थ भयणा अइसेसियंमि दिक्खा।

परपक्खो परपक्खे दुट्ठो दंडियाइसु जंमि, तंमि देसे न वाइ। अन्नंमि देसे दिक्खा। जो पागइए तं पव्वावेइ।

विसयदुट्ठो तिविहो - सलिंगे, अन्नलिंगे, गिहत्थलिंगे य।

(१) जो सलिंगेण सलिंगे दुट्ठो सो लिंगपारंची।

(२) जो सलिंगेण अन्नलिंगे दुट्ठो सो भइओ।

(३) जो परलिंगे सो न पव्वाविज्जइ, मा तेणेव वयभंगेण पुणो वि अवरज्झेज्जा।

परपक्खो परपक्खे सदेसे भइओ दंडिकिणीयं[4] ति मूलं। दंडिकिणीय पारंचिओ वा। इयरे पागइएसु चउगुरू। अविरइए विरत्तो पव्वाविज्जइ। बिइयपयं - अइसेसिआ पव्वावेइ ॥१२॥ [भा.गा. ४५१ - ४६३]

इयाणिं मूढो, सो बारसविहो -

दव्व[1] - दिस[2] - खेत्त[3] - काले[4] - गणणा[5] - सारिक्ख[6] - अभिभवे[7] वेद[8]।

वुग्गाहण[9] मण्णाणे[10], कसाय[11] - मत्ते[12] य मूढपया ॥

१. दव्वमूढो जो जं दव्वं न याणइ। दव्वदिट्ठंतो घडियाबोद्धो।

२ दिसामूढो जो दिसाए विवच्चासं न याणइ।

३ इयाणिं खेत्तमूढो जो जंमि खेत्ते मूढो जो वा जं खित्तं न याणइ।

४ कालमूढो जो जं कालं न याणइ। दिट्ठंतो माहिसिओ।

५ गणणामूढो अ उट्टपालो जं विलग्गो तं न गणइ।

६ सारिक्खमूढो जो जंमि सारिक्खे मूढो। दिट्ठंतो कुडुंबियंमि कुलं।

---

१. देतित्ति रव प्रतौ।

२. 'तेणोक्खणियं तेणोक्खिवित्ता च प्रत्यन्तरेषु।

३. शिखरिणी खाद्यविशेषः।

४. राजपत्नीमिति।

७ अभिभवमूढो जो जेण अभिभूओ मुज्झइ।
८ वेदमूढो खत्तियाए राया।
९ वुग्गाहणमूढो दिट्ठंतो दीवजाएण अहवा अंधलका सुवन्नकारो वा।
१० अन्नाणमूढो जो अन्नतित्थिआणं नाणं ति मन्नइ।
११ कसायमूढो जो जेण कसाएणं मूढो किंचिवि न याणइ।
१२ मएणमूढो मज्जाइणा अहवा जो पसन्नाए मूढो।

उच्चारियसरिसाइं ति काऊण उच्चारियाइं। वेयमूढ-दव्वमूढ-वुग्गाहियमूढेहिं अत्थाहिगारो। ते पव्वावेंतस्स चउगुरू, आणाइदोसा, उड्डाहो य, अयसो य, अकित्ती य, न सद्दहंति य। बिइयपयं असिवाइ अन्नदेसेसु व ॥१३॥ [भा.गा. ४६४-४९७]

द्वार १४ इयाणिं अणत्तं-अणं जो धरेइ सच्चित्ताचित्तमीसयं तं दिक्खेइ चउगुरू आणाइ अयसो अकित्ती य, तंमूलाइं पवयणस्स। अणेण पोत्थडो (पोच्च-डो) मइलो इत्यर्थः। झोसाडिया[1] नाम झोडिज्जइ धणिएहिं। सव्वे एयरिसा मन्ने। गेण्हणादि दोसा।

बीइयपए अन्नदेसे [भा.गा. ४९८-५००] ॥१४॥

द्वार १५ इयाणिं जुंगिओ- चउविहो-जाइ जुंगिओ कम्मसिप्प सरीरजुंगिओ।

जाई य पाण-डुंब-किणिओ सोवाओ डुंबा पियलकारका[2]। किणिया वरत्ताओ[3] वलिंति। सोवागा[4] आयासपाणा।

कम्म जुंगिया-पोसगा महिलाओ पोसंति। भत्तसंतुट्ठा वसे ठावेंति। सेसं गेण्हंति। संवरा ण्हाणिया① सोहगा②। नडा दुविहा- लंखका वग्गुरिया य। रयगा③ जे वग्गुरियाहिं जीवंति। केइ वाहा धणुहेहिं जीवंति। सिप्पे य पडगारा परीसह-पंतावगा हेट्ठा ण्हाविया। सरीरे हत्थ पाद ओट्ठ कन्न नास पंतावियया काणा कुंटा वामणाया वडभा पंगुला कोढिया खुज्ज सरीराइसु मूलं। सरीरजुंगीए चउगुरू। अयसो अकित्ती य सव्वे एयारिसा। निच्छुभणा य दोसा। सव्वाणि अम्ह विट्टली कयाणि भायणाणि।

बिइयपए जाहे य माहणेहिं संभुत्ता, जइ कम्मपडिविरया, अद्धाण-परविदेसे दिक्खासे उत्तिमट्ठे वा। [भा.गा. ५०१-५०६] ॥१५॥

१६ इयाणिं ओबद्धओ चउविहो- कम्मं सिप्प मंत जोगे विज्जा।

कम्मं नाम जं अनाचार्यकं कृत्यं तुमे अम्हं कायव्वं गइदुविए-ल्लगं④, तंमि अप्पूणे न कप्पइ।

---

१. ताडना नाम ताड्यते धनिकैः।
२. प्रियकारकाः चाटुकारकाः।
३. रज्जुनिष्पादकाः।
४. आयासयितारश्चाण्डालाः।

① स्नानिकाः।
② रजकाः।
③ 'रायगा' ख प्रतौ।
④ गतः स्थित उपविष्टः सन्।

सिप्पे तुन्नगाइण सिक्खिए एचिरं कायव्वं।
विज्जा बावत्तरी कलाओ।
मंत्रो विषयतंत्रो पढंतस्स न देइ। पढिउं काले य न देइ।
जोगं चुन्नगंधाइसु।
एए पव्वावेइ चउगुरु। आणाइ गेण्हणाइ दोसा।
किह पव्वावेयव्वो बिइयपदे? मुक्को वा मोइओ वा [भा. गा. ५०७-५१३] ॥१६॥

१७ इयाणिं भइओ[५] सो चउव्विहो - दिवसभयओ, जत्ता उव्वत्त कप्पाला।
दिवसभयओ नाम जं तं दिवसं रूवएण वा अद्धेण वा तं दिवसं न कप्पइ।
जत्ताभयओ नाम तुम्भे अम्हं इमा जत्ता कायव्वा।
उव्वत्तभयओ वा एवइयं कालं कायव्वं।
कप्पालो नाम उक्कुरुडिया[६] सोहेयव्वा। उड्डुं[७] वा एवइए खइए इमं नाम दिज्जिहिइ।

जइ मुल्ले गहिए पव्वावेइ चउगुरुयं। मुल्ले अगहिए वा पव्वाविज्जइ। इहरा आणाइ गेण्हणाइ दोसा उड्डाहो। पव्वाविज्ज वा अण्णदेसे वा असिवाइ जं च से गहियं तं दिन्नं। [भा. गा. ५१४-५२२]

१८ इयाणिं सेहनिप्फेडिया करेमाणो तइयं वयं अइयरइ। तेणो लब्भइ अइयरंतो। सेहनिप्फेडियाए चत्तारि विकप्पा। तेण तेणतेणो पडिच्छओ पडिच्छय-पडिच्छओ।

१. जो मायापियरि बालं अव्वत्तं अविदिन्नं अवहरइ सो तेणो ॥१॥
२. सो तं बाहिं गामस्स ठवित्ता भिक्खस्स अइगओ, जो तं विपरिणा-मेइ अवहरेइ य स तेणतेणो ॥२॥
३. सो अन्नस्स पडिच्छओ जो तं पडिच्छइ सो पडिच्छगतेणो ॥३॥
४. जो वि अन्नस्स पडिच्छइ जो तं गेण्हइ सो पडिच्छगतेणतेणो ॥४॥

चउण्हं वि मूलं। एएसिं चउगुरुया सुत्तादेसेण वा। अणवट्ठो आणाइ। तस्स माया पियरो दाऊण विउलं अत्थसारं रायकुले एगे अणेगे वा विराहेज्जा। गिण्हणाई वा। सुयधम्मो परिचत्तो आणालोवं करंतेण। चरित्त-धम्मो परिचत्तो तेणियं करेंतेण। सावयकुलेसु वा समुप्पन्नो तस्स कुलमेव विपरिणामेज्जा - अलाहि एयारिसेहिं चोरेहिं।

भवे कारणं - कोइ अइसेसिओ जाणेज्जा - नत्थि एवमाइ दोसा, अविजुगुप्पहाणो भविस्सइ। अमूढहत्थो एएण दिक्खिओ न पुणो अगारवासं अभिलसइ सो पव्वावेज्जा। [भा. गा. ५२३ - ५४२]

---

५. भृतिक: ख प्रतौ च 'भयए'।
६. कचवरराशिरपनेय इति
७. भूमिखनकास्तान् प्रति एतावता खनितेनामुकं दास्यते।

जे अनलदोसा पुव्ववण्णिया ते सविसेसा। गुव्विणी बालवच्छासु पव्वावेंतस्स मूलं। तं चेव बिइयपयं जं वा बालवुड्ढेसु न दिट्ठा वा जहा ता अंतरवइ पउमावई। ताए बालवच्छाए चउगुरू जं बालस्स तं चेव। अहवा[1] दो बालवुड्ढा, कीवो, अभिभूओ, जड्डो, उम्मत्तो, जुंगिओ सरीरेणं, एएसिं पुव्वपल्ल इयाणं पच्छा एए दोसा जाया। गच्छे पव्वइयाणं संवासो एक्कओ भणिओ एएसिं एक्कलगा ण कयाइ। किं कारणं? ते विद्रांति[2] बालाइ। गच्छे य ते विहीय परियट्टिज्जंति। तेण एक्कओ से संवासो।

जिणवयणे पडिकुट्ठो जो पव्वावेइ लोभदोसेण चरित्तट्ठी तं चेव चरित्तं विराहेइ।

पव्वाविओ य सिआ सेसं च पणयं अणायरणजोग्गं करेइ। अह पुव्वव-न्निया दोसा। जहिं चेव नाओ तहिं चेव विकिंचियव्वो।

अहवा सेहे मुंडिए, पेल्लए[3] मुंडिए, अपेल्लए ससिहे, पिल्लए ससिहे, अहवा पभूपेल्लए अपेल्लए वा। दो पेल्लगा तहेव अणुन्नाया।

केइ पुण मंदधम्मा आलंबणं करेंति - अज्ज रक्खिओ सेहनिप्फेडियाए जीइल्लओ। ते मूलसुत्तं उज्झिऊण साहासु लग्गा, जहा वडो मूले विनट्ठे पाएसु पइट्ठिओ विणस्सइ। एवं ते वि तित्थयराणं[4] मोत्तुं अववादपदे लग्गा - गाहा।

'अब्भुवगम' अब्भुवगम सुद्धत्ति जे य हु सुध्दो पेल्लओ य तत्थेव पव्वा-विज्जइ। पभुविदिन्नो वा सो विसुध्दो अब्भुवगमं प्रति।

अब्भुवगमे असुध्दो:- अप्पभू वा, अविदिन्नो वा पभुणा, पभु वा जो अण-इक्कंतिओ। तत्थ चउगुरू सुत्तादेसेण वा अणवट्ठो। [भा.गा. ५४३-५५६] ॥ द्वार १८ समत्तं ॥

आह - अभ्युपगतमस्माभिः प्रव्रज्यायाः ये अर्हा अनर्हा च। इदमस्माभिर्न ज्ञायते कतिविधा प्रव्रज्या इति। [भा.गा. ५५७] तदुच्यते - ब्रुमः षोडशप्रकारा प्रव्रज्या। तत्थ गाहा - 'छंदा रोसा परिजुण्णा'—

छंदा रोसा परिजुण्णा सुविणा णाण पडिस्सुता।
सारणिया रोगिणिया अणाढिया देवसण्णात्ति ॥ पं.क. भा. ५५८॥
पच्छाणुबंधिया अजणयकण्णिया बहुजणस्स संमुदिया*।
अक्खाता संगारा वेयाकरणा सयंबुध्दा ॥ पं.क. भा. ५५९॥

(१) तत्थ छन्दा नाम - जहा एगो गामो तत्थ कुंडुंबियदारओ, तेण परिणी-यं। अन्नया चोरा पडिया। सा तस्स महिला भणइ - किं महिलाओ न हरइ? एवं जाव छंदेन पव्वइओ।

---

१. स्त्री च पुमांश्च।
२. दूषयन्ति बालादीन्।
३. शिशुः।
४ तीर्थकराज्ञामिति
* 'संमुदिया' संभाव्यते तथा च बहुजनसम्मतेति।

[भा.गा. ५६०-५८१]

(२) रोसाए रन्नो सीसारक्खो सो साहुसगासे धम्मं सोऊण सावओ जाओ। सो तज्जीविओ सो तं असिं उज्झिऊण कट्ठमयं असिं धरेइ। तस्स मित्तो सो तं सारइ[2] एवं जाव रन्नो सिट्ठं-एस कट्ठमयं असिं धरेइ। रन्ना भणियं- पेच्छामो। तेण सम्मद्दिट्ठी देवया आराहिया। नमंसिऊण कड्ढिओ विलक्खो जाओ। सावओ पाएसु पडिओ भणइ-सच्चमेयं। एवं जाव तस्स पुत्तो खंडकन्नो[3] पव्वइओ, जेण बोडिया उप्पाइआ। [भा.गा. ५६१-६०२]

(३) परिजुण्णाए स दमओ सावएण पव्वइओ। धम्मं सुणेहि साहुणसगासे, भइया[4] ते दिज्जइ। [भा.गा. ६०३-६०८]

(४) सुविणाए पुप्फचूलदेवी अक्खाणयं। [भा.गा. ६०९]

(५) पडिसुणयाए उसुयारपवज्जा।[5] [भा.गा. ६१०-६२७]

(६) सारणियाए तेतलि अक्खाणयं। [भा.गा. ६२८]

(७) रोगिणियाए जहा उत्तरज्झयण परीसहेसु मूयस्स पव्वज्जा अंबदोहलो। [भा.गा. ६२९-६८४]

(८) अणाढियाए वासुदेवस्स पव्वज्जा। पुव्वभवे चक्कलुंडा अक्कमणं।

(९) देवसण्णत्तिए उदायणो पभावइए संबोहिओ। [भा.गा. ६८५]

(१०) पच्छाणुबंधियाए मणओ। [भा.गा. ६८६]

(११) अजाणियकन्नियाए जाओ। अजाणियकन्नियका लोयफुसणं जुगप्पहाणो जाओ केसित्ति कुमारसमणो। [भा.गा. ६८६-६९४]

(१२) बहुजणसम्मतियाए जंबु नाम अक्खाणयं। [भा.गा. ६९५]

(१३) अक्खायाए सुदंसणो[6] सेट्ठी सामिणा संबोहिओ।

(१४) संगाराए मल्लीणाए[7]।

(१५) वेयाकरणे सोमिलो माहणो। [भा.गा. ६९६]

(१६) संबुध्दाए[8] भरहो राया। [भा.गा. ६९७]

तत्थ संगहणी-पत्तिल सुरा भइ देवी। एस जीवदवियकप्पो समत्तो। [भा.गा. ६९८-७२२]

अचित्तो सोलसविहो

इयाणिं अजीवदवियकप्पो सो य इमेहिं सोलसहिं दारेहिं अणुगंतव्वो।

आह-उक्तं भवता क्रियावादित्वात् भगवद्भिः अर्हद्भिः आदौ जीवपदार्थोपदिष्टः। तदनन्तरं अजीवपदार्थः किमर्थमपदिश्यते? उच्यते, तदुपकारित्वात् यस्मादजीवा जीवानामुपग्रहे वर्तन्ते। तत्र पुद्गलास्तावदौदारिकवैक्रियाहारकादिशरीरोपकारिणः। उच्छ्वासनिच्छ्वासद्रव्य वस्त्रपात्राद्युपकरणोपकारे वर्तन्ते।

---

२. क्वचित् - 'वारेइ'।
३. चण्डकण्होत्ति भाष्ये गा. ५९५
४. भृतिका ते दास्यते।
५. उत्तराध्ययनेषु ।
६. भाष्ये 'जंबु धम्मं अक्खादिपभवस्स ॥गाहा-६९५॥
७. मल्लीज्ञातमिति।
८. 'सयंबुद्धाए। इति संभाव्यते [भाष्ये सयंबुद्धा तित्थगरा' गा.६९७]

धर्मास्तिकायो गत्युपग्रहे |स्थित्युपग्रहे चाधर्मास्तिकायो |अवगाहे चाकाशमिति |एते च स्वलक्षणतः प्रज्ञापनीया यथा व्याख्याप्रज्ञप्तौ |एतदर्थं जीवाणंतरमजीवा |तत्थादिगाहा – आहारोवहिम्मि य

आहारे उवहिम्मि य उवस्सए तह पस्सवणए य |
सेज्जा णिसेज्ज ठाणे दंडे चम्मे चिलिमिणी य ||भा.गा. ७२३||

अवलेहणिया दंताण धोवणे कण्णसोहणे चेव |
पिप्पलग सूति णखाण छेदणे चेव सोलसमे ||भा.गा. ७२४||

आहारे, उवहि, उवस्समणगं, पस्समणं, सेज्जा, निसेज्जा, मत्ते*, दंडे, चम्मे, चिलिमिलिया, अवलेहणिया, दंतसोहणं, कन्नसोहणं, सूई, पिप्पलओ, नहसोहणं च |एसो सोलसविहो अजीवदवियपिंडो |

तत्थ पढमं पिंडो- सो दुविहो- लोइओ लोउत्तरिओ य |तत्थ एक्केक्कस्स परूवणा कायव्वा |तत्थ लोइओ दव्वपिंडो तिविहो- भायणे, भोयणे, भुंजियव्वे |

तत्थ भायणे सुवण्ण रयए भोज्जं [भा.गा.७२५-७२६] गाहा सिद्धं

सुवण्णरजते भोज्जं मणिसिले विलेवणं |
अविदाही घतमायसे पयं तंबे पाण सुहं च मिम्मत्ते ||भा.गा.७२७||

भोयणे- सूवं, ओदनं, जवागु य तिन्निमंसाणि जलजं, थलजं, खहचरं, तिन्नि गोरसा- गव्वं, माहिसं आजं, जूसो, गुललावणिया, भक्खा, मूलाणि जाणि खज्जंति भिसाइणि, फलाइं- अंबया खज्जुर मुद्दियाइणि, हरितयं- तंदुलेज्जयाईणि, डागोत्ति- हलिद्दाणि कुसणं, पाणगं- मधुमाईणि, पाणियं उदगमेव, पाणयं खंडपाणयाइ, अट्ठारसमं सागप्पयारो |एस निरूवहओ लोइओ भोयणविहि |

दो घयपला, महुपलं, दहिस्स अद्धाढयं, वीस मरियाणि, खंड तुलाए दसभागो एष रसालुत्ति मज्जिया वुच्चइ नरवइजोग्गा, पंचहिं वा रसेहिं जं मिसगं होज्जा |

लोणदव्वसहियं[१] तं पाणगं त्ति वुच्चइ |पाणग रसविवन्नपत्तं[२] वा [भा.गा. ७२८-७३७]

---

*'ठाणे' इति गाथायां परं चूर्णिकारैस्तु 'मत्ते' इत्युक्तं तत्तु मात्रकाणां स्थाने उपयुक्तत्त्वादिति संभाव्यते |

१. 'लोग दव्व सहियं' एव प्रतौ तथापि 'लोंग' इति संभाव्य 'लवंग' इति विचार्यं |

२. रसो विवर्णतां प्राप्तोयस्यतत् पाणकमिति वा |

इयाणिं भोतव्वविहि - तत्थ गाहा - परिसुक्खं

परिसुक्कं दाहिणतो दव्वाणि सव्वाणि वामतो कुज्जा ।
णिद्धमहुराणि पुव्वं मज्झे अंबं दवंताणि ॥ भा. गा. ७३८ ॥

जं परिसुक्खं तं दाहिणपासे, दव्वाइं[३] वाम पासे । निद्धाणि महुराणि य पुव्वं, अंबं मज्झे, दव्वाइं[३] अंते 'अद्धमसणस्स । [भा. गा. ७३९ - ७४०]

गाहा -

अद्धमसणस्स सव्वंजणस्स कुज्जा दवस्स दो भाए ।
वात पवियारणट्ठा छब्भागं ऊणयं कुज्जा ॥ भा. गा. ७४१ ॥
असतामिव संजोगं पण्णा भोयणविहिं उवदिसंति ।
लुक्खं दवावसाणं मज्झविचित्तं महुरमादि ॥ भा. गा. ७४३ ॥

असतामिव[१] लेशतः संजोयणं संजोगः संबंध इत्यर्थः । प्रज्ञावन्तः बुद्धिवन्त इत्यर्थः । विधिः - अनुज्ञा विधानं वा । व्यपदिशंति - प्रज्ञापयन्तीत्यर्थः ।

रूक्षं अवसाने च द्रव्यं, मध्ये विचित्रं, आदौ माधुर्ययुक्तं भोक्तव्यमिति । 'मधुरादि' गाहासिद्धं । तच्च कथं भोक्तव्यं ? तत्थ गाहा — रुक्ष शरीरे स्निग्धं, स्निग्धे च रुक्षमिति ।

शीतकाले उष्णं, उष्णकाले च शीतं भोक्तव्यम् ॥ १ ॥

मा भूदतिप्रसङ्गः शीतकाले अत्युष्णं भोक्ष्यति रुक्षे वा अतिस्निग्धमिति तद्व्युदासार्थमाह 'अच्चुण्हं हणइ रसं' सिद्धमेव

अच्चुण्हं हणइ रसं अतियंबं इंदियाइं उवहणति ।
अतिलोणियं च चक्खुं अतिणिद्धं भंजते गहणिं ॥ भा. गा. ७५० ॥

अत्यर्थं अंबं इन्द्रियोपघातं कुरूते, यच्चातिलवणं तच्चक्षुरुपहन्ति, अतिस्निग्धेन च वर्चभेदो भवति । एवं भुज्यमाने यदि मुत्रपुरीषाणां प्रादुर्भावः स्यादिति विराहणा भवति, यस्मादुक्तं - मुत्रनिरोधे चक्षुरुपघातो भवति, पुरीषनिरोधे च जीवितोपघातः, छर्दिनिरोधे च कुष्ठोत्पत्तिः, शुक्रनिरोधे चापौरुषत्वं स्यादिति । [भा. गा. ७५१ - ७५२] [प्रसङ्गतश्च वैद्यपुत्री दृष्टान्तः । [७५३ तः ७५९]

आह - यद्येवं शुक्रनिरोधे अपुरुषत्वं भवति नन्वेवमनवस्था, यस्मादमी भगवन्तः साधवः पुर्वकोट्यायुष्का अपि ब्रह्मचर्यं धारयन्ति, न च तेषामपुमत्वं भवति । अतः समयविरुद्धं उदाहृतं ।

---

३. 'दवाणि' इति संभाव्यते तक्रादीनि पानकादीनि वा ।

१. दुर्जनमैत्रीवत् गृद्धिपरिहारार्थमप्येवं व्यपदेश इति ।

आचार्य आह-न, सिद्धान्तापरिज्ञानात् |इह सामान्येन सूत्रमभिहितम् |तत्र ये ते शकुनी तत्कर्मसेवी पक्षिका पक्षिक इसालुकाद्याः उत्कटवेदाः तान् प्रतीत्य सूत्रनिपातः, यस्मात् तेषां वेदप्रादुर्भावनिरोहेण नपुंसकत्वमापद्यते ततो न विरोधः |किञ्च अन्यत् - यस्मादायुर्वेदकर्तृणाऽभिहितं -

"त्रयः शल्या महाराज, अस्मिन् देहे प्रतिष्ठिताः |
वायु मूत्र पुरीषाणां, प्राप्तवेगं न धारयेत् ||१||

एवंविधिना भुंजमानस्य यदि श्लेष्मादीनां विकारः स्यादिति तत्रोपयोगः [भा.गा.७६०]

यस्मादुक्तं - "सिंभोवड्डइ" गाहा -

सिंभो वड्डति पच्चुस पदोसे पित्तमड्ढरत्तम्मि |
मज्झंतिए य वाओ वड्डति पुव्वावरण्हे च ||भा.गा. ७६१||

स्याद् विपरीतकाले तत्र चिकित्सा [भा.गा.७६२]

तित्तकडुएहिं सिंभं जिणाहि' गाहासिद्धं

तित्तकडुएहिं सिंभं जिणाहि पित्तं कसायमहुरेहिं |
णिद्धुण्हेहि य वातं सेसा वाही अणसणाते ||भा.गा. ७६३||

उक्तो लौकिकपिंडः || [प्रासङ्गिक भा.गा. ७६४-७६६]

इयाणिं लोउत्तरिओ दवियपिंडो छव्विहो - पुढविमाइ जाव तसपिंडो जहा पिंडनिज्जुत्तीए अट्ठ[1] वि दाराणि फासेयव्वाणि |

इह नवरि पायच्छित्तं -

आहाकम्मियं जस्स कडं तस्स निट्ठियं तत्थ चउगुरु |उद्देसिए जावंतिय उद्देसिए मासलहुं दोहिं वि लहुं |पासंड समुद्देसिए मासलहुं कालगुरु |समणाएसिए मासलहुयं तवगुरू |निग्गंथसमाएसिए मासलहुं दोहिं वि गुरु |जावंतिकडे मासलहुं दोहिं वि लहुं |पासंडकडे मासगुरुं कालगुरुं |समणकडे मासगुरुं तवगुरु |निग्गंथ समादेसकडे मासगुरु दोहिं वि गुरु |जावंतिकम्मे चउलहु दोहिं लहुं |पासंडसमुद्देसकंमे चउगुरू कालगुरु |समणाएसकंमे चउगुरु तवगुरु| निग्गंथसमाएसकंमे चउगुरू दोहिं गुरू |सघरमीसए पासंडमीसए य दोहिं वि गुरु |जावंति य मीसे चउलहु |सुहुमपाहुडियाए पंचराइंदिया |बादर पाहुडियाए ओसक्कण-अइसक्कणे य चउगुरू |सगामाभिहडे मासलहुं | परगामाभिहडे निप्पच्चवाए चउलहुं |सपच्चवाए चउगुरुं |उवगरणपुइयाए मासलहुं |भत्तपाणपुइयाए मासगुरुं |इत्तरठवियाए पंचराइंदिया |चिरठवियाए मासलहुं |

नवरि घाए चउगुरु |संकामणे मासलहुं |पगासकरणे चउलहुं |

आयदव्वकीए आयभावकीए चउलहुं |तिसुवि परभावकीए मासलहुं | पामिच्चे परियट्टिए य लोइए य चउलहुं, लोउत्तरिए मासलहुं |पिहिओभिन्नकवाडे चउलहुं |

---

१. पिंडे उग्गम उप्पायणेसणा जोयणा पमाणेय इंगाल धूम कारण [भा.गा.७६८-७६९]

तिसुवि मुद्दाए मासलहुं |जहन्नमालोहडे मासलहुं | उक्कोसमालोहडे चउलहुं |अच्छिन्ने अणिसट्ठे य चउलहु |जावंतिय-अज्झोयरए मासलहुं |सघरपासंड-अज्झोयरए मासगुरुं ॥ उग्गमे ॥

उप्पायणाए - अतीए निमित्ते चउलहुं | पडुपन्ने अणागए लोभे य चउगुरु |

कोहे माणे चउलहुं |मायाए मासगुरुं |

सुहुमतेइच्छे पंचराइंदिया |बादरतेइच्छे चउलहुं |संथवे मासलहुं| धाईहिं चउलहु |

भोइय[1]-मेहुणिया-संथवे चउगुरु मूलं वा |वयणसंथवे मासलहुं| मूलकम्मे मूलं|सेसेसु चउलहुं ॥उप्पायणा ॥

एसणाए जं संकियं पायच्छित्तं आवज्जइ |ससिणिद्धे ससरक्खे मक्खिए य पंचराइंदिया |मीसए सव्वत्थ मासलहुं |

अणंतउक्कुट्ठे[2] मासगुरुं |

सचित्ते परित्तवणस्सइ काइए चउलहुं |अणंते चउगुरु | पुढविमाइ सचित्ते चउलहुं |

उदउल्ले मासलहुं |पुरेकम्मे पच्छाकम्मे य चउलहुं |अदुगंछियसंसत्ते चउलहुं| सचित्ताणंतरपइट्ठिए चउलहुं |

परंपरपइट्ठिए मासलहुं|

मीसे अणंतरपइट्ठिए मासलहुं, परंपरपइट्ठिए पंचराइंदिया |

पिहिए सचित्तेन चउलहुं, अणंते चउगुरु |

अचित्तगुरुपिहिए चउगुरु| साहारणे[3] चउभंगो-तिसु आइल्लेसु सट्ठाणपच्छित्तं,

बिइय-चउत्थेसु भंगेसु आयविराहणात्तिकाउण चउगुरु| पगलंते चउगुरु |नपुंसके चउलहु |कंतेंती पींजंति मासलहु |लित्ते चउसु भंगेसु जे तिन्नि तेसु सट्ठाणपच्छित्तं|अपरिणए दव्वे मासलहुं चउलहु अह सट्ठाणपच्छित्तं |जत्थ अणेसणा तत्थ चउलहुं |छड्डिए* सट्ठाण पच्छित्तं,चउत्थे जं अणाइन्नं तत्थ चउलहुं |

संजोयणाए अंतो बाहिं च चउगुरु, अहवा बाहिं चउलहु | पमाणाइरित्ते चउलहु | सइंगाले चउगुरु | सधूमे चउलहु | निक्कारणे मासलहु |

॥ एसणा समत्ता ॥

---

१. ग्रामणीस्वस्त्रादिसंस्तवे |

२. अनंतकायचूर्ण इति संभाव्यते, तथा 'अन्नवरउक्कुडे' रव प्रतौ |

३. संहरणे |

* 'संन्निए' रव प्रतौ तथा च संज्ञिते संकेतित इत्यर्थः |

मूलकम्ममिति कोऽर्थः? उच्यते गर्भनिवर्तनं पातनं वा। तन्निमित्तं च यस्मात् मूलछेदं प्राप्नोति तस्मात् मूलकम्ममिति।

तत्र गाहा—

अष्टप्रकारस्यापि कर्मणः यस्मान्मातृकभूतं।
मोहनीयं कर्म तस्योदीरणं ज्ञातव्यं ॥१॥ मूलकम्ममिति ॥

तच्च मूलकर्म द्विविधं- द्रव्यतो भावतश्च। द्रव्ये ताव गंधयुक्तिप्रभृतयः भावतस्तु वेसशिक्षा[△]। श्रमणभावस्स सारभूतं भिक्षाचर्या उद्गमोत्पादनैषणाशुद्धं भगवद्भिः जिनैः प्रज्ञप्तं। अत्र च उद्गमादिषु शुद्धं प्रति ताम्यते यस्तु स विज्ञेयो मंदसंविग्न इति। तथा ज्ञानदर्शनचारित्राणां भिक्षाचर्यापरिशुद्धिरुपग्रहकर्तेति कृत्वा जिनैः प्रणीता। अत्रोद्यमं कुर्वाणः स विज्ञेयो भावसंविग्न इति। किञ्च —

भिक्षाचर्यायां अनभिज्ञः अगीतार्थ इत्यर्थः। एष चोद्गमादिषु शुद्धमशुद्धं वा गृह्णीयात् यस्मादगीतार्थः। किञ्च - पिंडं शोधयतः चारित्रमपि शुध्यते, अत्र संशयो नास्ति। पिंडस्योद्गमादिषु अशुद्धेषु चरित्रभेदं विजानीयात्। "गाहा- उग्गम उप्पायणा।"

उग्गम उप्पायण एसणाए तिण्हं पि तिकरणविसोहिं।
(निशीथ भा. गा. १८३३ पूर्वार्ध)
एताइं सोहिंतो, चरणं सोहेंति संसओ नत्थि।
एतेहिं असुद्धेहिं, चरित्तभेदं वियाण हि ॥१८३८॥ नि. भा. गा.

आह- पिंडस्योद्गमादिशुद्धिः किमर्थं भगवता उद्दिष्टा? उच्यते- चरित्रशुद्ध्यर्थं, यस्मादुक्तं- पिंडशय्योपधि विशोधयतः सचरित्री भवति। किञ्च- एतदर्थमेव आहारोपधिशय्याशुद्धिविशेषाः सर्वभावदर्शिभिः प्रणीताः। सर्वावस्थमपि तथा कार्यं यथा धर्मावश्यकयोगानां वृद्धिर्भवति। धर्मावश्यकयोगा नाम सम्यग्दर्शनज्ञानतपचारित्र संयमादयः। [भा. गा. ७६९ - ७७०]

एत्थाहारविहि - उग्गमाइनिरवसेसं वन्नेयव्वा, नवरं पूइए इमो विसेसो — 'संचय कोदुय'

संचय कोट्ठग दारुय डाए तह गोरसे य लोणे य।
लंबण णेहे हिंगु दालिम तह तित्तए चेव ॥भा. गा. ७७१॥
अगडारामे पुत्ते तुंबे फलही तहेव गाओ य।
एतारिसे समुप्पन्ने गहणं णाणु कस्स केरिसयं ॥भा. गा. ७७२॥

संचयो नाम संघभत्तस्स[1] उक्खेवओ कओ। गोरस- घय - गुल- खंड-

△ वेशभूषासंबधिनी शिक्षा यद्वा वेश्याकर्मसंबंधिनी शिक्षा।

१. साधु साध्वीसंघभक्तायेत्यर्थः

सक्करसमिइ - तंबुलाइ | यदि ततो घयगोरसाइ अवोच्छिन्ने भावे संघभत्तस्स न कप्पइ | अह से भावो वोच्छिन्नो भवइ | अफासुएण[२] अप्पाउत्तयं निबंधइ ताहे ताइं कप्पंति |

कोट्टुएत्ति तंदुला तिच्छडा कया न कप्पंति | अह संजयट्ठाए दुच्छडा कया तं चेव आयट्ठाए तिच्छडा कया | जइ तेहिं तंदुलेहिं किंचि अप्पणो आयाए उवक्खडिज्जइ तं कप्पइ |

एवं दारुगाई वि संघभत्तट्ठाए आणीएहिं आयट्ठाए उवक्खडियं कप्पइ |

दोच्चंगे[३] वा गोरस लोणाइ संजयट्ठाए आणिया आयट्ठाए उवक्खडिए कप्पइ |

लंबणो नाम गुलो[1] संजयट्ठाए कम्मं[2] ता अप्पणो पीलियं तं संजयाणं रसगुलाईणि कप्पंति |

अन्नेण[3] साहूणं संववहारो चेव नत्थि |

एवं कीय-कडे वि- जइ संजयट्ठाए गुलो कीओ, घयतेल्लेहिं गुलमाईणिय, आइग्गहणेण तित्तकडुकसायमाईणि य, पच्छा आयट्ठाए उवक्खडिए तिकडुयाहिं य तं साहूणं कप्पइ |

पाणाए[4] अगडं खणावेज्ज | तओ अयडाओ पाणिएण चाउलोदय- उण्होदयाईणि कयाणि आयट्ठाए कप्पंति |

खाइमे वाइंगणि- बीयपुरग- तपुस - कुंभंड-[5] कालिंगादि आयाए कयाए कप्पंति |

फलाणि माउलिंग-अंब-खज्जूरादि मुद्दिया संजयट्ठाए रोवियाणि वा पच्छा आयट्ठाए, निप्फादियाणि संजयाण कप्पंति | जइ पुण संजयट्ठाए रोवणाइसु याणि निप्फाइयाणि संजयग्गहणपाउग्गाणि कयाणि ताणि न कप्पंति |

पुत्तेत्ति जइ संजयट्ठाए पुत्तं जणेइ आयरिओ मम अपरिवारो इति |[6]

तुंबेत्ति तुंबिओ वावेज्जा जइ आयट्ठाए मुहं करेज्जा तं संजयाण कप्पइ, अहवा आयट्ठाए तुंबिओ वावेइ संजयट्ठाए मुहं करेइ निक्कोरेइ वा |[7]

---

(२) अप्रासुकद्रव्याणि आत्मनः कृते आयुक्तानि निष्ठितानि स्युस्तुर्हि कल्पन्ते | क्वचित् 'घताइं' कप्पंति पाठः स तु चिन्त्यः | (३) दौत्यांगानीव मधुर-तिक्त-कटु भोज्य प्रकाराणि

१. गुड इति |

२. कृषिकर्म संचयकर्म वा संभाव्यते |

३. धान्येनेति

४. पानीयार्थमिति

५. कुष्माण्ड इति

६. 'पव्वावेतुं तु सो कप्पे | इति भा. गा. ७८२

७. तं न कप्पइ त्ति शेषः

वमणीओ संजयट्ठाए वावेइ जाव सुत्तं कयं ति, पच्छा आयट्ठाए वुणावियं तं संजयाण कप्पइ | अह आयट्ठाए विकत्तेइ संजयट्ठाए वुणाविए न कप्पइ इहरा सोहि -चेव नत्थि | आहारदारं गयं ॥ [भा. गा. ७७३-७८७]

इयाणिं उवहित्ति दारं [भा. गा. ७७८] | तत्थ गाहा — उग्गमुप्पायणाइ जाव कारणेत्ति अट्ठ दाराणि |

वत्थे उग्गम उप्पायणेसणा जोयणा पमाणे य |
इंगाल धूम कारण अट्ठ-विहा वत्थणिज्जुत्ती ॥ भा. गा. ७८७ ॥

आहारे विहिविसेसा यावन्त: विस्तरतो व्याख्याता त एव अपरिसेसा वस्त्रपात्रेष्वपि वर्णनीया [भा. गा. ७९०] | उद्गमादयो दोसा अणुगंतव्वा | तत्थोवहि एग्गदुग्ग तिग गाहा —

तत्थोवहि एग दुग, तिग -चउक्क पणगं दुग छक्कए |
दुगसत्तए पंचए, त्ति अज्जाणं पंच पंचया ॥१॥ (गाथा कल्प्यते-)
मूल गाथानुपलब्धे:)

एग इति "सव्वेवि एकदूसेण निग्गया जिनवरा -चउव्वीसं |"
(आवश्यक निर्युक्ति २२७ गाथावयव:)

दुग इति पाणिपडिग्गहियस्स पाउरणवज्जियस्स दुए रयहरणं मुहपोत्तिया य |

तिकेत्ति तस्सेव खोमिए कप्पे |
चउक्केत्ति सोत्तिए उण्णिओ य |
पणगं ति दो सुत्तिया उन्निओ य रयहरणं मुहपोत्तिया एए पंच |

दुगछक्कए त्ति बारस पडिग्गहधारिस्स जिणकप्पियस्स पाउरणसहियस्स |

दुगसत्तए थेरकप्पियाणं ओहोवही -चोद्दसविहो |
पंचएत्ति अज्जाणं पंच पंचया पंचवीसया ओहोवही | वत्थे त्ति गयं ॥

पाए उग्गम उप्पायणेसणा संजोयणा पमाणे य |
इंगाल धूम कारण अट्ठविहा पात्तणिज्जुत्ती ॥ भा. गा. ७८९ ॥
॥ " ७९१ ॥

'तिन्नि विहत्थी' गाहा सिद्धं जाव 'रोहगमाइसु भइयव्वं' विसेस गाहा |

तिण्णि विहत्थी -चउरंगुलं -च भाणस्स मज्झिमपमाणं |
एतो हीण जहण्णं अतिरेगतरं तु उक्कोसं ॥ भा. गा. ७९२ ॥

उक्कोस तिसामासे दुगाउअध्दाणमागतो साहू |
भुंजति एगट्ठाणे एयं किर मत्तगपमाणं ॥ भा. गा. ७९३ ॥
एवं -चेव पमाणं अतिरेगतरं अणुग्गहपवत्तं |
कंतारे दुब्भिक्खे रोहगमादीसु भइयव्वं ॥ ७९४ ॥ भा. गा.

दव्वासइ त्ति पायं चेव नत्थि १, काल ओमोयरियाए २, उग्गमं तओ नत्थि ३ | एवं असती तिविहा [भा. गा. ७९५-७९६-चूर्णीकारेण न स्पृष्टा:]

जुत्तजोइस्स ओहोवही ओवग्गहियं वा | जुत्तजोइ नाम चत्तारि मासा [भा. गा. ८०२-८०४]
अहाकडए जोओ कओ न य लद्धं | अहाकडे असइ, अप्पपरिकम्मं गिह्नइ, तस्सासइ, छेयणभेयणाइ करेंतो सुद्धो | तओ च चत्तारि वि दिसाओ तिखुत्तो अ गवेसिए एवं जोगेजुत्ते अलभंतो छेयणाइ करेइ तत्थ सुद्धो [भा. गा. ८०५-८०८] गाहा -

अहवा असिवोमेहिं रायदुट्ठे व से गुरुणं वा |
सेहे चरित्त सावय भए य तइयं पि गिण्हिज्जा || ८०९ || भा. गा.

असिवादि पुव्वभणिता गुरू व मग्गे गुरू भणिज्जाहइ |
अच्छाहि ताव अज्जो तत्थ तु ते कारण विदंति || ८१० || भा. गा.

असिवे भायणभूमिए पंथे वा असिवं, ओमोयरिया विपंथे वा भायणभूमिए वा, तेणसावयभय वा, रायदुट्ठं वा पंथे वा भायणभूमिए वा, गुरवो वा भणेज्जा अच्छाहि ताव भायणभूमिए, ते चेव तं कारणं जाणंति | सेहा पडुप्पन्ना, तत्थ वा सेहाण सागारियं, चरित्तदोसा वा पंथे वा भायणभूमिए वा, एएहिं कारणेहिं तइयंपि* सपरिकम्मं गेह्णिज्जा अहवा तइयंपि एसणाइ असुद्धंपि गेह्णेज्जा | [भा. गा. ८११-८१२]

इयाणिं एएसिं भायणाणं अपरिकम्माईणं[1] लेवो दायव्वो [भा. गा. ८१३]
तत्थ गाहा — "हरिए बीए" जहा ओहनिज्जुत्तीए |

हरिए बीए चले जुत्ते वच्छे साणे जलट्ठिए |
पुढवी संपाइमा सामा महवाते महियाऽमिए || ३८८ || ओघ. नि. गा.
(महिया हिमे || ८१४ || भा. गा.)

इयाणिं वत्थे उग्गमाइ दारा भाणियव्वा |
'तिविहंमि कालच्छेदे' गाहा —

तिविहम्मि कालछेए, तिविहा पडला उ होंति पायस्स |
गिम्ह - सिसिर - वासासुं, उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना || ३९७३ ||
बृह. कल्प. भा. गा.

तिविहे काले गिम्हे हेमंते वासासु. पुव्ववन्नियं | किं पुण पुरिसजाते?

---

१. आदिपदात् अल्पपरिकर्म सपरिकर्म ग्राह्य भा. गा. ८१३ पूर्वार्ध- तं पुण सपरिकम्मं जयणाए होति लिंपियव्वं तु |

* प्रथमं यथाकृतं, द्वितीयमल्पपरिकर्म, तृतीयं तु सपरिकर्मेति |

हेमंते वुड्ढो दुबल्लो वा | उक्कोसेण दढदुब्बले सत्त वि पंगुरेज्जा [भा.गा. ७९९-८०१]
गाहाओ वुत्तत्थाओ[१] | भा.गा. ८१५-८३०

(३) उवस्सवयणं[२] नाम जत्थ उवविसइ भिसियाइओ[३] (४) |

(४) पासमणायं[४] वा[४A] सावंगयं साऽऽसणं जहा[५] किराडयाणं सिंहासनसंठियं |

(५) सेज्जा सव्वंगिया (६) निसेज्जा रयहरणाइ | (७) मत्ते उच्चारपासवणमत्ताइं | (८) दंडे-दंडे य विदंडाइ पंच[५A] | (९) चम्मे-निज्जवणं[*] तलिया कोसग वज्झाई |[६]

चिलिमिलि[फ] पोत्ता, दारुदंडय, कडय |[७] एक्केक्का य पंचविहा |
(११) अवलेहणिया वासासु वड-उंबर-पिलुक्खमया विहत्थिदीहा, अंगुल विच्छिन्ना, उभओ नहसंठाणा चिक्खललूहणनिमित्तं | रयहरण निसेज्जनिबद्धा धरिज्जइ | [षष्ठे द्वारेऽन्तर्भावः संभाव्यते]

(१२) दंतसोहणं थेराणं पविरलदंताणं उवकारे निमित्तं इयरहा उज्झियं भवइ | (१३)[८] कण्णसोहणं (१४) पिप्पलओ अपरिकम्मअलाबुमुहकरणनिमित्तं अद्धाणे वा पलंबाइ विकिरणनिमित्तं गच्छे उवग्गहकराणि धरिज्जंति तस्स अग्गयं भज्जइ |

कत्तरिया वत्थछेयणनिमित्तं सेहवालफेडणनिमित्तं वा | (यद्यपि ७२३/२४ तमे गाथयोर्नास्ति तथैव — नास्ति — चूर्णीकृन्नामनिर्देशेऽपि तथादि पिप्पलकेऽन्तर्भावोऽस्याः संभाव्यते)
(१५) सूइ सिव्वणनिमित्तं लोहमई वेणुमइया | (१६) नहछेयणं अद्धाणाइसु कंटगफेडणनिमित्तं |

रयहरणनिसेज्जाइ किंनिमित्तं धरिज्जइ ? रयहरणो ताव भावलिंग सारक्खणनिमित्तं दव्वलिंगे पाणभूयपिवीलियाइणं सारक्खणनिमित्तं दिज्जइ | गाहा- "पुरिसे पुढवी"

---

१. भा.गा. ८१५-८३० यदि वा बृ.क.भा.गा ३९७४-७५-७६
२. उवेसणयं' इति भा.गा. ८३१
३. आसन विशेषो वा
४.A. अधिकं भाति
५. अनार्याणां
५.A दण्डको, विदण्डको, यष्टि र्वियष्टिर्नालिका चेति |
* निर्यापणतलिका
६. आदि शब्दात् पुस्तक कृत्ति ग्रहणमिति |
७. दण्डादि प्रत्येकं पञ्चविधम्
फ सूत्रमयी, रज्जुमयी, वल्कमयी, दण्डकमयी, कटकमयीति पञ्चविधा |
८. चूर्णिकारेण नोल्लिखितम्

पुरिसे पुढविसरक्खे पच्छाकम्मे तहेव अचियत्ते ।
बाउसपरिहरणाए संथारणिसेज्जणुण्णाता ॥ भा.गा. ८३७॥

पुरिसो वा राया वा रायमच्चो वा पव्वइओ तस्स धूलीए ससरक्खाए उवेसणं दिज्जइ, इयरहा विपरिणमइ ।

उत्तरनिसेज्जा पुण सुकुमारनिमित्तं, उण्णाया फरुसा निसेज्जा कंडुं करेइ । पच्छा कंडूयं तस्स य खयं[1] भवइ । अद्दाणाइसु वि पुढवीकाए सचित्ते उवेसंताणं उम्हाए पुढवी विद्धंसइ, संतराए पुण अप्पा विराहणा । अचित्ताए वा ससरक्खाए पुढवीए अवेसणिया[2] भरिज्जंति । पच्छाकम्मं च गिहिनिसेज्जाए कारणजाएण निविट्ठस्स उट्ठिए उप्फासंति,[3] अचियत्तो वा आसणे उवेसंतो गिहत्थाणं भवइ । जत्थ निवेसइ तत्थ धूलीए भरिज्जइ ।

संथारपट्टो जइ न होइ जत्थ निवज्जइ सचित्ताचित्ताए वा पुढवीए तत्थ भरिज्जइ धूलीए ताहे पप्फोडेइ धुवेइ वा पच्छा बाउस दोसा भवंति ।

उत्तरपट्टो छप्पइयासारक्खणनिमित्तं इयरहा कंडूयंताणं ते चेव खयादयो दोसा ।

कप्पा दुब्बलसंघयणाणं सीयपरीसहवारणनिमित्तं हीरिपच्छायणनिमित्तं वत्थगहणं अनुण्णायं । [भा.गा. ८३१-८५८] तस्स पुण उवहिस्स इमे विसं उवघाया भवंति तत्थगाहा "उग्गमउप्पायण"

उग्गम उप्पायण एसणा य पडिक्कमणा य परिहरणा ।
अचियत्त वतीयारे* तहेव परियट्टणा विहिया ॥ भा.गा. ८५९॥
उग्गमम्मि य अण्णाते पामिच्चे य पवाहणे ।
तेरिच्छयाहए चेव तदा तेणाहडेति या ॥८६०॥ भा.गा.

उग्गमोवघाए उग्गमेण असुद्धं गेण्हइ । १ उप्पायणोवघाए उप्पायणाए असुद्धं गेण्हइ । २ एसणाए असुद्धं गेण्हइ । ३. अविहीए परिकम्मेइ, अणट्ठाए परिकम्मेइ । ४. परिहरणा नाम परिभोगो । अविहीए परिभुंजेइ । अब्भिंतरे उण्णियं बाहिं सोत्तियं अहवा दिवसं पाउओ हिंडइ । ५

अचियत्तोवघाओ भंडमच्छरियत्तं करेइ- मा मम छिवउ कोइ वत्थं वा पायं वा । ६.

अइरेगोवघाओ- गणणाए पमाणेण य अइरेगं धरेइ । ७. वत्थपताइं परियट्टंति- एयं तव देमि तुब्भे मम अन्नं देज्जह, तं गेण्हइ सावयाओ वा समणाओ वा । लोउत्तरिया परियट्टणा । ८ उग्गमंमि य अन्नाए उग्गमो न णज्जइ- केण उग्गमियं? गीयत्थेण वा असंविग्गेण वा । ९

---

१. क्षतं
२. आसनस्थला:
३. जलेन प्रोञ्छन्तीति
* व्यतिचार- गणणा-प्रमाणोल्लंघणं ।

पामिच्चेणत्ति - पामिच्चयं गेण्हइ, लोइयं लोउत्तरियं |१० पवाहणेत्ति संभोइयं असंभोइयं च एगट्ठा हिंडावेइ पडिग्गहयं मत्तगं वा, अहवा वासत्ताणाइ | अहवा संभोइयस्स पडिग्गहाइ वाहणं न देइ | मत्तगं वा सन्नाभूमिमाइ असंभोइयस्स एगाणियस्स देइ |११

तिरच्छाहडेत्ति तिरच्छाहडं सुणएण वा वानरेण वा मज्जारेण वा आणीयं गेण्हइ, तेणाहडं[१] वा सदेसाइ गिण्हइ |१२ गाहा - "अण्णाणोवहए चेव"

अण्णाणोवहए चेव मालोहड अरक्खिए |
कते य कारिते चेव बंधणे य विराहणे ॥८६१॥ भा. गा.
विवन्नकरणे चेव एमेता पडिवत्तिओ |
एते पत्ते य उवघाता उवहिस्स तु विसति ॥८६२॥ भा. गा.

अण्णाणोवहएत्ति अकप्पिएण वत्थ-पाय-आहाराई उग्गमियं तं पडिगाहेइ |१३ [卐]उल्लोएइ वा भायणाइ तं मालोहडं |१४ अणरक्खिएत्ति सुन्नं वसहिं करेइ | गिलाण बालाइ अकप्पियं वा धरेइ |१५ कीएत्ति सयं निसिज्जा करेइ, अन्नेण वा कारवेइ |१६-१७ निसेज्जाइ अविहीय बंधइ |१८

भायणं भिन्नं वा धरेइ | पुप्फगाइ बहुबंधणं वा धरेइ |१९ वन्नमंतं वा विवन्नं करेइ, मा मे कोइ हरिहित्ति | विवन्नं वा वन्नमंतं करेइ विभूसाए |२० एवमित्यवधारणे प्रतिपत्ति उत्तरमित्यर्थः | एए वीस उवघाया | [भा. गा. ८६३-८७९] अहवा इमे उवहि उवघाया | तत्थ गाहा - "पंचट्ठ पंचगा वा"

पंचट्ठ य पण्णरसा सोलस दस चेव होंति ठाणाणि |
चत्तारि एक्कगाइं बारस बीसं च ठाणाइं ॥८८०॥ भा. गा.
दव्वे खेत्ते काले भावे पुरिसे य होंति पंचेव |
एएसिं पंचण्हवि परूवणा होंति कायव्वा ॥८८१॥ भा. गा.

दव्वे अनलाइ गेण्हइ वत्थं पायं वा | अलं भूषणपर्याप्तवारणेसु न अलं अनलं पादं ताव अनलं अपर्याप्तं दुर्बलमलक्षणं वा | एवं वस्त्रमप्येसोवघातः |

खेत्तंमि जंमि अग्घियं दुल्लभं वा | काले वि जंमि कालंमि अग्घियं दुल्लभं वा | पुरिसे जहा असहू तहा सहू वि हुंतओ उवहिं भुंजइ | उवघायं भावे जहा गिलाणो तहा अगिलाणो वि उवहिं परिभुंजइ उवघाओ |

अट्ठत्ति अहाकडं अमग्गिअं, अप्पपरिकम्मं गेण्हइ वत्थाइ | अप्पपरिकम्मं मग्गिउं सपरिकम्मं गेण्हइ उवघाओ | विभूसाए धरेइ उवघाओ | मुच्छाए धरेइ

---

१. तिर्यगाहृतं स्वदेशादेरिति |

卐 'ओलइओ जो तु वेहासे' इति भा. गा. ८७५ | अवलगित इत्यर्थः

उवघाओ | गारवेण धरेइ उवघाओ | अपडिलेहिअं धरेइ उवघाओ | अचिअत्तं मा मे कोइ छिवउ उवघाओ |

पन्नरसत्ति उग्गमदोसा पन्नरस | लाडपरिवाडीए मीसजायं अज्जोयरगं च एक्कं | सोलसत्ति उप्पायणदोसा | दस इति एसणा दोसा | चत्तारि एक्कगा वि य संजोयणादुट्ठं धरेइ, सइंगालं धरेइ, पमाणाइरेगं धरेइ, सधूमं धरेइ उवघाओ |

बारसेत्ति "वेयण वेयावच्चे" जेहिं कारणेहिं वेयावच्चाइहिं धरेयव्वो तेहिं न धरेइ उवहिं | पुनरवि उवसग्ग-आयंकाइहिं न धरेयव्वो तेहिं धरेइ | जं जत्थ जुज्जइ तं भाणियव्वं |

वीसत्ति ताणि चेव उग्गमाईणि जाव विवन्नं करेइ | एवं नवइ [५+८+१५+१६+१०+४+१२+२० = ९०] विसोहिठाणा | एए चेव अविहीए अविसोहिठाणा | दो वि मेलियं आसीयं ठाणसयं भवइ | तत्थ गाहा —

आसीयं ठाणसयं जस्स विसोहीए होइ उवलद्धं |
सो जाणइ विसोहिं उवघायं वावि उवहिस्स ॥ भा. गा. ८९४॥

जिणकप्पियाणं बारसविहो उवही आसीएण ठाणसएण गुणिओ दो ठाणसहस्साइं सट्ठसयं [१२×१८० = २१६०] च भवइ |

थेराणं चोद्दसविहो ओहोवही आसीएण ठाणसएण गुणिज्जइ ताहे दो ठाणसहस्साइं पंचेव सयाणि हुंति वीसाणि [१४+१८० = २५२०] ठाणाणं | अज्जाणं पणवीसइविहो ओहोवही आसीएण ठाणसएण गुणिज्जइ ताहे चत्तारि सहस्साणि पंच य ठाणसयाणि [२५+१८० = ४५००] भवंति | (इति अजीवकल्पः) [भा. गा. ८८२-९००]

इयाणिं मीसओ तत्थ गाहा-"छहिं सोलसहिं चेव"

छहिं सोलसहिं चेव, दोहिं वि निप्फज्जती य जो कप्पो |
दुगसंजोगादीओ सव्वो सो मीसओ कप्पो ॥९०१॥ भा. गा.

छत्ति पव्वावणाइ छव्विहो दवियकप्पो | सोलसत्ति आहाराइ जाव नखछेदनं सोलसविहो अजीवदवियकप्पो | पव्वावेइ आहारं च देइ | एवं वत्थ उवस्सवणयं जाव कण्णसोहणयं | एवं मुंडिए एयाणि य देइ जाव नहछेयणंति | एवं सिक्खावणाए उवट्ठावणाए संभुजणाए संवासे संवसइ, आहारं च देइ जाव नहछेयणं ति | सव्वेसु वि विभासियव्वं |

मीसए एत्थ विभासगुणणा थेराणं अज्जाण य | [भा. गा. ९०२-९१२] जिणा ण पव्वावेंति, उवएस पुण करेंति जे आसन्ने जत्थ वा नित्थरइ | संजोयणा गाहाओ थेराणं अज्जाणं य निज्जासि* | दवियकप्पो समत्तो | [भा. गा. ९१३-९६५A]

---

* भा. गा. ९१३-९६५-A नयेरिति तात्पर्यम् |

इयाणिं खेत्तकप्पो "जं देवलोगभूयं" गाहासिद्धं | [भा.गा. ९६६]

जं देवलोगसरिसं खित्तं णिप्पच्चवाइयं जं-च |
एसो तु खेत्तकप्पो देसा खलु अद्धछव्वीसं ॥ भा.गा. ९६७॥

काणि पुण ताणि खेत्ताणि ? रायगिह मगह-चंपा जत्थुप्पत्ति जिणाणं चक्कीणं रामकण्हाणं [भा.गा. ९६८ - ९७४] गाहा "खेमो सिवादि"

खेमो सिवो सुभिक्खो अप्पप्पाणो उवस्समणुण्णो |
एसो तु खेत्तकप्पो गामनगरपट्टणाइण्णो ॥ भा.गा. ९७५॥

खेमो डमरविरहिओ अ | सिवो रोगविरहिओ | सुभिक्खा पउर-अन्नपाण | अप्पपाणो पिपीलियाविरहिओ | उवस्सय मणुण्णो इत्थिनपुंसकाइविरहिओ, समसेज्ज, कयवरविवज्जिओ |

गामनगराकराणि बहूणि वासमासपाउग्गाणि खेत्ताणि | [भा.गा. ९७६-९८०] गाहा – "उदगग्गि"

उदगग्गि - तेण - सावयभएसु थंभणि वलाण रूक्खं वा |
कंतारे पलंबादि वसणं पुण वाइ गीतादी ॥ नि. भा. गा. ४९२॥

उदयत्ति उदए णं य पेल्लिज्जंति न बुज्झंतीत्यर्थः | अग्गिणा ण डज्झंति | धणकवाडहम्मियगाओ कोट्टिमतलाओ य अहाकडाओ वसहीओ सरीरोवहितेण - सावय - तक्कर - परचक्कविरहिएसु देसेसु साहुविहारो अणुण्णाओ | जत्थ य साहूणं कालपरिभोगी जणो, सुत्तत्थपोरिसिं काउं तइयाए पोरिसीए भिक्खावेलाए | गाहा –

सूरो अणण्णगम्मो जत्थ णरिंदो तहिं सुहविहारं |
साहुगुणे य वियाणति कुणाति य साहूण रक्खं ॥ भा.गा. ९८७॥
अहिरण्णसुवण्णेते छज्जीवणिकाय संजमे णिरता |
जाणति जणो य एवं जत्थ तु साहूण गुणणिहसं ॥ भा.गा. ९८८॥

पुढवीपइ य सूरो विसेसं जाणइ साहूणं जहा - एए अहिरन्नसोवन्निया मंगलभूया सव्वसंगविवज्जिया | समणगुणे य जणो जाणइ, एसणिज्जं देति आहाराइ | गाहा – "णाणस्स"

णाणस्स दंसणस्स य चरणस्स य जत्थ णत्थि उवघाओ |
एसो तु खेत्तकप्पो जहियं च अणायणा णत्थि ॥ भा.गा. ९८३॥

णाणदंसरचरित्ताइणं जत्थ विद्दि, तवनियमसंजमजोगाणं य परिवड्ढि अणायतणाणि जत्थ लोइया इत्थि पसुनपुंसका वाउरिया वा

वाह लोद्धिया चरगपरिव्वाइया विवक्खभूया णत्थि। लोउत्तरियं अणायणं पासत्थोसन्नकुसीलाइ लिंगमेत्तपडिछन्ना नत्थि। एरिसे खेत्ते विहरियव्वं। [भा.गा. ९८९-९९२]

काइं पुण इमाइं आलंबणाइं काऊण न विहरइ ? तत्थ गाहा-"वसहि संथार"

वसही संथारो भत्त पाण वत्थे पडिग्गहे सेहा।
सड्ढा य पुव्वसंथुय असद्दहंते य पडिबंधो ॥भा.गा. ९९३॥

वसहित्ति सीयकाले निवाया उण्हकाले सीयला, वासासु सीयविवज्जिया अणोवरिसा। संथारगा चम्मरुक्खमाई। पाणयं च सीयलं। वत्था य तामलि-त्तिक-सिंधवाई लब्भंति।

पडिग्गहा य तत्थ पारंपुरया लब्भंति। सेहा य उप्पज्जंति। सड्ढा य दुद्ध दहि घयाइं दिंति। पुव्वपच्छासंथुएसु नेहाणुरायपडिबंधेण वा असद्दहंतस्स मासकप्पं पडिबंधो होइ - किं मासकप्पेण ? बहुतरीरियासु विराहणा, णाणाइयं च परिहाणी होइ, तित्थवोच्छेओ य होइ, जं च भणमाणा[1] ? निययावासे संवासाइ दोसा, अंतोमासं संवसमाणस्स ते चेव संवसाइ दोसा होहिंति। [भा.गा. ९९४-१००३]

एवं निइयवासदोसे असद्दहंतस्स तस्स आह-"निक्कारणे पडिबंधो" गाहा-

निक्कारणम्मि एवं पडिबंधो कारणम्मि णिद्दोसो।
ते चेव अजयणाए पुणो वि सो पावती दोसे ॥भा.गा. १००४॥

निक्कारणंमि दोसा निक्कारणे। एएसिं चेव बिइयपयं कारणे जत्थ बाहिं विहरंताणं अक्खेमं तत्थ अच्छेज्जति। तत्थ य अक्खेमे जय-णा-नगरं पविसइ संवट्टयं वा आसयंति अहवा जत्थ अन्ने अच्छंति तत्थ अक्खेमं तेण न विहरइ।

असिवं वा अन्नत्थ वट्टमाणे तत्थ सिवं ताहे अच्छंति। अन्नत्थ वा दुब्भिक्खं तत्थ सुभिक्खं ताहे अच्छंति। दुब्भिक्खे वा पणगपरिहाणाइ जयणा।

बहुपाणाइ उवस्सए कडमुहाइसु जयंति। कीडिओ संचारएसु कुंथुमाइ पउरे वा अभिक्खणं पमज्जणाइ जयणा। छप्पइयपउरे अन्नोन्नपरिभोगो, अन्ना-सु वा वसहीसु वा अविज्जमाणीसु अमणुण्णे उवस्सए गंधे करेंति, सुप्पम-ज्जियं च करेंति।

उदयभयेण थलाणि रुहंति, उच्चे वसहिं गिण्हंति। अग्गिभएण घणकवा

---

१ 'वण धणं' इति ख प्रतौ।

-डाइसु हंमियतलेसु वा वसंति |रोगे असिवाइ अपत्थाणि परिहरंति लोण नेहा-इ|सावयभएण एगाणिया न संचरंति |गाममज्झे वसहिं गेण्हंति सप्पे मंतेहिं णीणिंति |तेणातक्करभएण सत्थेण संचरंति |अकालपरिभोगिसु रत्तिं सज्झायं करेंति |अन्ने धम्मं कहेंति |मज्जायं वा गाहेंति |

अहवा वसहीए वि एक्कंमि वसंतस्स मासाइयं वा वासाइयं वा, अन्नदेसे वा वसहीओ इत्थिनपुंसकपसुदोसाकुलाओ |

सीयकाले वा मंदोवकरणाणं निवाया,उण्हकाले वा सीयलप्पवाया, वासासु वा निग्गलनिच्चिक्खिल्ला, घणकवाडदढकुड्डुबिलवज्जियासु |अन्नेसु य खेत्तेसु एयगुणसमाउत्ता वसही नत्थि |

संथारगा चंमरुक्खाइ अहाकडया मंकुणादिदोस वज्जिया |ते य अन्ने-सु खेत्तेसु नत्थि |भत्तपाणं वा सबालवुड्डाउलगच्छे पाओग्गं मणुण्णं सपरपक्खो-माणविवज्जियं उग्गमाइविसुद्धं,पाणगं च सीयलं असंसत्तं पउरं तत्थ लब्भइ| अण्णेसु य खेत्तेसु तारिसयं नत्थि |वत्था य वासत्ताणाइ अहाकडया गुरुमाइ पाउग्गाणि तत्थ लब्भंति |पडिग्गहा य अलं-थिर- धुवधारणीया अहाकडया तत्थ लब्भंति |

सेहाइ जाइकुलरूवसंपन्नाइ तत्थ गामे नगरे मेहाविणो तित्थावो-च्छित्तिकरा |सड्ढा य तत्थ गामनगरदेसे वा सेणावइ- इब्भ- सेट्ठि- सत्थ-वाहाइ साहुविवज्जिया चरगभिच्छुंडधिज्जाइहिं विपरिणामिज्जंति |पुव्व-पच्छ-संथुआ तंमि अच्छमाणे सम्मदंसणं गेण्हंति पव्वयंति वा |एअनिमित्तं अच्छमाणो निद्दोसो |निक्कारणे पच्छित्तं अच्छमाणस्स |

जइ पुण कारणे अच्छमाणो अजयणाए अच्छइ तत्थ दोसा का पुण जयणा? जइ सपरिक्खेवो सबाहिरिया तत्थ जइ अंतो मासकप्पो वा वासा-वासो वा कओ,बाहिरिगा य अपरिभुत्ता, तत्थ बहिरियाए अण्णवसहिं गेण्हंति| अण्णे तण संथारगा डगल य कुडमुह उच्चारपासवणमत्ताइ,बाहिं चेव भिक्खा-यरिया,बाहिं चेव उच्चारपासवणभूमी |

अहवा बाहिरिया वि परिभुत्ता,वसही वा नत्थि पाउग्गा इत्थिनपुंस-गपसुमाइविरहिया घणकुड्डुकवाडा ताहे तम्मि चेव वसहीए तणसंथारगकुड-मुहउच्चार मत्तयाइ अन्ने गिन्हंति,असइ ते चेव परिभुंजंति |बाहिं वा अपरि-भुत्ते बाहिं भिक्खायरियं हिंडंति |पुव्विं पच्छा संथवाइ परिहरंता उग्गमाइसु जयंति ||खेत्तकप्पो समत्तो || [भा.गा. १००५- १०२२]

इयाणिं कालकप्पो- तत्थ गाहा— "मासं पज्जोसवणा"

मासं पज्जोसवणा वुड्डावास परियायकप्पो य |
उस्सग्गपडिक्कमणे कितिकम्मे चेव पडिलेहा ||१०२३||
सज्झायज्झाणभिक्खे भत्तवियारे तहेव सज्झाए |
णिक्खमणे य पवेसे एसा खलु कालकप्पविही ||१०२४|| भा.गा.

पुव्विं मासकप्पो निशीथे परूविओ | इमं पायच्छित्तं- इह उउबद्धे मासाइत्तं वसहीए वसइ मासलहुं | तीए चेव भिक्खायरियाए मासलहुं उच्चारपासवणभूमीए मासलहुं | विहारभूमीत्ति जत्थ सुत्तत्थपोरिसी गमेंति उवस्सए य असज्झाए तत्थ वि मासलहुं | परिसाडितणसंथारए मासलहुं | अपरिसाडिंमि चउलहुं | एए उउबद्धे नव मासा अणुमुयंतस्स* |

निक्कारणे वासावासातीए वसहीए चउलहुं | अपरिसाडीसंथारए चउलहुं | भिक्खायरियाए मासलहुं | काइयभूमीए मासलहुं | काइयमत्तए मासलहुं | उच्चारमत्तए मासलहुं | सन्नाभूमीए मासलहुं | सुत्तत्थपोरिसीए परिसाडितणेसु मास-लहुं |

ते पुण साहवो वासावासपाउग्गं खेत्तं पडिलेहिऊण बाहिं अच्छंति | जो तत्थ खेत्ते तेहिं पडिलेहिए अन्नो सच्चित्तं गिण्हइ तं तेसिं चेव खेत्तिअं ति काऊण, अहवा वच्चंताणं चेव वासावासपाउग्गं खेत्तं अंतरा य वासमारद्धं, पाउसदोसा जाया- बहुपाणा अहुणोब्भिन्ना, बहु हरिया अभिनिव्वट्टा | ताहे अंतरा चेव ठिया | ताहे डहरए गामे महाजणपाउग्गाए वसहीए असईए अन्नोन्नासु वसहीसु वीसुं वीसुं ठिया | पच्छा तत्तिया सेज्जयरा न तीरंति परिहरिउं | जत्थायरिया अच्छंति तत्थेगो सेज्जायरो ठविज्जइ | मासकप्पोत्ति उउबद्धे एसो चेव कालकप्पो |

पज्जोसवणाए आसाढपुण्णिमाए ठाइयव्वं | एसो वि कालकप्पो | खेत्तं अलभमाणा कारणजाएण वा जाव पंच राइंदियाणि हिंडेज्जा | सत्तरि जहन्नो | वासातीते दसराया तिन्नि उक्कोसा |

इयाणिं वुड्ढावासो वुड्ढिगतो वासो वृध्दावास: | सो पुण वुड्ढावासो वृध्दस्स वासो | पच्चयंतो चेव कोइ जंघाबलपरिहीणो भवेज्जा | तस्सुक्कोसेणं देसुणा पुव्वकोडी, सेसा मज्झिममजहन्ना | [भा.गा. १०२५- १०३७]

कद(*) विज्जा चरियं, लाघवेण तवस्सी तत्तो तवो |
देसितो सिद्धिमग्गो, अहाविहिं संजमं पालइत्ता दीहाउसो वुड्ढवासस्स कालो
|| भा.गा. १०२५-१०३७

विधा नाम बारस वरिसाणि सुयं, बारसेव अत्थग्गहणं, कयं चरित्तं लाघवेणं देस दरिसणं बारसेव वासाणि कयं | लाघवं तिविहं - (१) उवगरण लाघवेणं, (२) सरीरलाघवेणं, (३) इंदिय लाघवेणं | तओ छट्ठट्ठमाइ कओ | देसिओ सिद्धिमग्गो नाम अव्वोच्छित्ति कया | जहा सुत्ते भणियं तहेव संजमो अणुपालओ | अहाविहिं संजमं पालइत्ता दीहे य सो आउए | एयं तस्स दीहाऊणो वुड्ढा-

---

* अनुमोदकस्स पंच लघुमासा एक चतुर्लघु इति नवमासा यदि वाऽनुन्मुञ्चत एते |

A विशालगच्छप्रायोग्यायाम्

(*) कया विद्या - ज्ञानमधीतमिति |

वासयस्स कालो | असमत्थो य अब्भुज्जयविहारस्स [भा.गा. १०३९-१०४४]

वुड्ढावासस्स इमाहिं दार गाहाहिं अत्थो अणुगंतव्वो | अब्भुज्जयं अचयंतो अगीयसीसो य गच्छपडिबद्दो अच्छति जुण्णमहल्लो कारणतो जावि अन्नो वि || (भा.गा. १०४५)

जंघाबले व खीणे गेलन्ने सहायतो व दोब्बले |
अहवावि उत्तिमट्ठे निप्फत्ति चेव तरूणाणं || (भा.गा. १०४६)

जाव एएहिं कारणेहिं वुड्ढावासं वियाणाहि | कहं पुण जंघाबलपरिखीणो भवइ ? जइ सुत्तत्थाणि दाऊण दो गाऊए वच्चइ सपरक्कमो विहरिउं | अत्थ-पोरिसिं अदाऊण, सुत्तं दाऊण एत्तियं चेव वच्चइ सो वि सपरक्कमो विहरि-उं | दो वि अदाऊण एत्तियं चेव वच्चइ सपरक्कमो विहरिउं |

सुत्तत्थाणि दाऊण दिवड्ढं गाउयं वच्चइ समत्थो विहरिउं | अत्थ अ-दाऊण एत्तियं चेव वच्चइ समत्थो विहरिउं | अहव दो वि अदाऊण दिवड्ढं गाउयं वच्चइ सपरक्कमो | गाउए वि एए चेव तिन्नि विकप्पा | सुत्तत्थाणि दाऊण अद्धगाउयं वच्चइ जाव भिक्खावेलाए समत्थो | सुत्तं दाऊण एत्तियं चेव, अह दो वि अदाऊण अद्धगाउयं भिक्खावेलाए सो अपरक्कमो थेरो |

एमेव तस्स जंघाबलपरिहीणस्स अपरक्कमस्स थेरगुरुणो वुड्ढावा-सो विहिज्जइ | जे वि सपरक्कमा दुगाउय - दिवड्ढगाउय - गाउय - अद्धगाउयं तेसु तेसु वि अणुकंपा जयणाए अणागयं तेसिं पुरओ गंतूण पढमालिया पाणगं च घेप्पइ, अंतरा विस्सामिज्जइ, उवगरणं च से सव्वं घेप्पइ | अहवा तिहिं जयणा आहारोवहिसेज्जासु |

जो पुणवुड्ढावासं वसइ तस्स जइ अट्ठावीसं संजया भवंति, ते चत्तारि भागे कीरंति | सत्त जणा तस्स सहाया दिज्जंति | दो संघाडगा भिक्खं भमंति | तिण्णि जणा थेरस्स पासे अच्छंति | पलीवणाइसु दो थेरं गेण्हंति | एगो उवहिं गेण्हइ | जाहे नत्थि एत्तिया ताहे दोन्नि | जाहे नत्थि एत्तिया एगो वि | [भा.गा. १०४७-१०६९]

संताऽसई नाम अत्थि विहारस्स अकप्पिआ* | संताऽसई नाम तत्थ चेव तंमि वुड्ढावासे जयणा खेत्ते काले वसहिं संथारे |

वुड्ढावासे जयणा खेत्ते काले वसही य संथारे |
खित्तम्मि णवगमादी हाणी जावेक्कभागो तु || भा.गा. १०७०||

खेत्तजयणा - नव वसहीओ घेत्तव्वाओ | अट्ठ उउबद्धे, एगा वासाणं वसही |

* अकाल्पिका: संयता इति

अन्नोन्न भिक्खायरियाए। अन्नोन्न उच्चारपासवणभूमी। अह न होज्ज नव वसहीओ ताहे अट्ठ। एवं एक्केक्का परिहायइ जाव एक्का वसही। तत्थ जइ खेत्तं पहुप्पइ अन्नोन्नाए भिक्खायरियाए थीरा कालच्छेदं करेंति। अपरक्कमा तहिं थेरा कालं च अविवरीयं करेंति। अविवरीयं नाम कालइक्कं-तउवट्ठाणदोसे卐 परिहरंति। विवरीओ जया पुण असई वसहीए य तदा पुण सो अविवरीओ भवइ। तिविहा तहिं जयणा —

आहारे ताव सुद्धं मग्गइ तिखुत्तो। सुद्धस्स असइ पणगपरिहाणीए जयइ। एवं उवहि सेज्जासु। वसहित्तिदारं - केरिसाए वसहीए ठाएअव्वं? जाव सव्वसेलाए ठाइ। तीसे असई काणिट्ठमई। काणिट्टाओ लोहिट्टा पच्छा पक्किट्टगा, आमिट्टगा, पच्छा पिंडघरे, दारुघरे, कडणे,☼ कडए, तणघरए। एएसिं वोच्चत्थगहणे चउगुरु।

संथारएत्ति दारं - केरिसो पुण संथारो तेसिं थेराणं घेत्तव्वो? चंपकरुक्खपट्टे□ घणनिव्वण निमंतओ वा मउओ सुहफासो सो वसही य अहासंथडो चेव मग्गियव्वो। पच्छा असई य अहासंथडस्स सेज्जायरसंतिओ चेव अन्नाओ वा ठाणाओ आणिज्जइ। पच्छा असई सेज्जागरसंतियस्स^ स यऽन्नघराओ आणिज्जइ। पच्छा निवेसण। पच्छा साहीओ^ वि याऽऽणिज्जइ जाव बत्तीसजोयणेहिं जो पडग्गो। तस्स असइ पाडिहारियं मंगलकरणनिमित्तं नीणेंति। मंगलकरणनिमित्तं नाम केसिंचि अज्जय पज्जयाऽऽगयं तं फलयं अच्चणिज्जं पूयणिज्जं। न किंचि तेण अन्नं कीरइ। तं संजएहिं जाइयं।

तेहिं भणियं - अम्हं एयं न कोइ परिभुंजइ। तुब्भं आयरियाणं देमो। किं पुण अम्हे एयस्स अमुकदिवसे महिमं करेहामो। पुप्फगंधेहिं अच्चेहामो। *जायरओ य कीरइ। जइ तुब्भे तद्दिवसं आणेह ताहे गेण्हह। जइ तद्दिवसं ओसक्कण-अइसक्कणाइं य ण याणइ तहा करेंति। पुन्ने वुड्ढावासे ताहे पच्चप्पिणंति। अह अप्पडिहारिओ ताहे अन्नस्स वुड्ढावासिणो देंति। मोत्तुण वुड्ढावासी जइ अन्नस्स दिंति आवज्जइ चउलहुया। [भा.गा.१०७१-१०८४]

गेलन्नेत्ति दारं - गेलन्ने वि एसेव जयणा। तस्स बिइज्जया[1] नत्थि। संतासंतसई[2] ये वा तिविहा जयणा। असहायस्स[3] एगाणियस्स दुइज्जंततस्स दोसा। जाव बिइज्जए न लब्भइ ताव एगत्थ अच्छइ अम्मापिउसमेसु सुद्धकुलेसु। [भा.गा.१०८५]

卐 निषिद्धावधेः प्रागागमनदोषः।

☼ क्वचित् 'कडए कंडए' इति। तथा च कटमयानि गोमयलिप्तानीति संभाव्यते।

□ १०७९ भाष्यगाथायां 'चम्मकरुक्खो' वा तथा च वृक्षविशेष इति।

* शात्रिजागरजगिति संभाव्यते।

^ 'सयज्ज घ' ख प्रतौ।

^ विथितः

१. सहायकाः

२. 'संतासंतसईए वा क्वचित्प्रतौ।

३. असहाइस्स ख प्रतौ।

दुव्बलो नाम न चएइ विहारेउं तस्स वि तहेव जयणा वसहिमाइ उत्तिमट्ठपडिवन्नो वा वुड्ढावासं वसेज्जा निप्फंत्तिनिमित्तं वा तरुणाणं, खेत्ताणं च अलंभे पाउग्गाणं, वुड्ढावासं वसइ कयसंलेहो वा न तरेज्ज विहरिउं, तरुणपडिकम्मे वा, गिलाणानुट्ठियस्स जाव पाडिहारा न पूरइ ताव अच्छेज्जा| सव्वेसिं चेव जयणा वसहिमाइ |

निप्फत्ति तरुणाणं भाणिअव्वा |बारस वरिसाणि कालियस्स सुअं गेण्हइ |संवच्छरं तमेव झरइ |सोलसवासाणि दिट्ठिवायं गेण्हइ |बारस वरिसे तमेव झरइ |जो सो वुड्ढावासं ठिएल्लओ तस्स एए बिइज्जया दिज्जंति|

चोदगो भणइ- झरणे य कालियसूयस्स गहणे य, पुव्वगयस्स झरणे गहणे य जइ एत्तिओ उक्कोसं कालो अनुण्णाओ, आयारपकप्पनामे जो कालच्छेदो भणिओ सो कयरेसिं संजयाणं? जे भिक्खू निइयवासं वसइ |

आचार्याह- जे सुत्तत्थतदुभयं समन्नागया महिड्ढिया थेरा वुड्ढावासेण ठिया तेसिं च बिइज्जया अवस्स दायव्वा |इमे य गहणधारणसंपन्ना निम्मेयव्वा धम्मसद्धिया |तओ तेसिं तरुणाणं थेराणं नीसाए कारणजाएण एत्तिओ कालो विदिन्नो |एयकारणवइरित्ताणं साहूणं नानुण्णाओ कालो एगंमि खेत्ते वसिउं |

अज्जाणं पुण पंच वसहिओ घेत्तव्वाओ |कम्हा? जम्हा तासिं दुमासं कप्पो |नव य गहणं सेसाणं संजयाणं |

वुड्ढावासे अइक्कंते, उउबध्दे मासे अईए, वासावासे चउमासे अईए उग्गहो तिविहो न भवइ निक्कारणियाणं सचित्ताचित्तमीसओ अह पुण विसुध्देसु आलंबणेसु अइच्छिए वि काले अच्छंति ताहे उग्गहो भवइ |काणि पुण आलंबणाणि? नाणदंसणचरित्ताणि जाव तं कज्जं न वोच्छिज्जइ ताव उग्गहो न लब्भइ |वोच्छिन्ने तंमि कज्जे, असिवाइसु वा विरहिए नत्थि उग्गहो |जो पुण समत्ते वि कारणे इच्छेज्जा उग्गहं सो जहा कोइ पुरिसो छुहाभिभूओ आगासे कुच्छिपुरं मग्गइ न य से कुच्छी पूरइ अभिलसंतस्स वि |एवं चेव उग्गहे। पडिसिध्दे काले न होइ उग्गहो |अच्छंतस्स य सट्ठाणपच्छित्तं कालदुवे |वासासु अणुन्नाओ |जहा- केइ साहुणो आसाढमासे ठिया तेहिं अन्नं वा सपाउग्गं खेत्तं न लध्दं, तत्थेव ठिया वासावासस्स, परओ वि मासं अच्छिज्जइ |एव एएसिं अणुन्नायं |एस कालकप्पो ||

भा.गा. १०८६- ११०५ ततः परं यावत् १११५ पृष्ठ ४५ तमे |

परियाए त्ति- पज्जोसवणा जो जस्स कालो परियाए |एसो वि कालकप्पो|

[भा.गा. १११६- ११२०]

काउसग्गो- सो यं सायं गोसग्गे[1] य |एसो वि कालकप्पो |अहवा पक्खिए चउम्मासिए संवच्छरेणं काउसग्गप्पमाणं |एसो वि कालकप्पो|रिया-

1. प्रातः इति तथा 'सा सयं स गोसध्दे ए' इति रव प्रतौ एवं उच्छवासानां शतं प्रातः सायं च संभाव्यते

-वहियाए उद्देस समुद्देस अणुन्नाए वा पणवीसंउसासा एसो कालकप्पो।
[भा.गा. ११२१-११२२]

किइकम्मे[2] त्ति जहा रायणियाए वंदणायं।एसो वि कालकप्पो।
[भा.गा. ११२७-११२० भा.गा.११२३-२५]

पडिलेहणा पुव्वण्हावरण्हेसु उवहिस्स।एसो वि।[भा.गा. ११२६]

सज्झाय त्ति उद्देसो सज्झायस्स कालिय-उक्कालियाणं पढमाए पोरिसीए।उद्दिट्ठं कालियसुयं पढमाए पच्छिमाए पोरिसीए पढिज्जइ।पुव्वण्हावरण्हेसु वा कालियउक्कालियाणं अंगपविट्ठस्स अंगबाहिराणं वा अणुन्ना। एसो वि कालकप्पो।

झाणं नाम अणुओगो बितियाए पोरिसीए।एसो वि कालकप्पो[भा.गा.११२७]

भिक्खा काले चरियव्वं,अकालो परिवज्जेयव्वो।एसो वि कालकप्पो।

भत्तट्ठं[3] णो अत्थं गयंमि आइच्चे पुरत्था य अणुग्गए।एसो वि कालकप्पो।अहवा जिणकप्पियाणं भत्तं पंथो य तइयाए।एसो वि कालकप्पो।
[भा.गा. ११२८-११३०]

वियारे सुत्तत्थतदुभयाणि काउं समुद्दिट्ठेसु सन्नाभूमिं गम्मइ।एसो वि कालकप्पो।रत्तिं चउसु वि पोरिसीसु,पढमचरमासु वा दिवसस्स अकालसन्ना इति।एसो वि कालकप्पो।[भा.गा. ११३१]

सज्झाओ चउसु वि संझासु सज्झाओ न कायव्वो।महापडिवएसु वा महामहेसु वा सुगिम्हदिवसेसु वा सज्झाओ न कायव्वो।एसो वि काल-कप्पो।[भा.गा. ११३२] [गा. ११३३ च न स्पृष्टा]

निक्खणमेत्ति-अट्ठसु उउबद्धिएसु मासेसु विहरियव्वं।वासावासे चत्तारि मासे न विहरियव्वं।एसो वि कालकप्पो।[भा.गा. ११३४]

अयमवि कालकप्पाधिकारेणेव सुहसीलो कोइ सुहसीलयाए-"किं मम नेहेण परियट्टिएणं मुंडियममुंडियं वा अन्नस्स देइ संबंधियस्स वा अन्नस्स कुले देइ,गिलाणस्स वा वेयावच्चकरं देइ,खमयस्स वा।सव्वे वि एए जइ मुंडिए देइ,न य लब्भइ दाउं[1]।अह ससिहाए देइ सकुले अन्न-कुले वा जेसिं देइ तेसिं चेव ते।[भा.गा. ११०३-१११५]

सेसाओ गाहाओ पढियसिद्धाओ जहा ववहारे,पज्जोसवणा जहा निसीहे।नवरि इमा गाहा सुत्ते जहा निबंधो—"नो कप्पइ निग्गंथाणं वाघारिय वुट्ठिकायंसि"।वग्घारियवासं नाम वासत्ताणस्स दो वि अंताओ भिंदित्ता पडले तिमेइ,तत्थ न कप्पइ हिंडिउं।अह पुण नाणट्ठी तवस्सी दुब्बलो अणहियासो वा आहारेण विणा न सक्केइ संझोवासणं पि काउं, सव्वे वि एए वग्घारिवासे वि गिण्हंति।

२.कृतिकर्म विषयकं ४ तमे पृष्ठेऽपि।

३.'भुत्तट्ठ णा' ख प्रतौ,'भत्तट्ठाणं' भाष्ये ११३०,'भत्तट्ठयाएणो क्वचित् प्रतौ 'पंथो भत्तट्ठ णो' क्वचिच्च।
१ दत्वा

इयाणिं उत्तरकरणे जयणा - संजमखेत्तचुयाणं - संजमखेत्तं नाम जत्थ उन्निया वासत्ताणा लब्भंति | ते य तओ चुया, अन्नंमि खेत्ते वासत्ताण-विरहिए ते चेव नाणट्ठी तवस्सीमाइ उत्तरकरणे जयंति | उत्तरकरणं नाम जं उवरीकाऊं हिंडिज्जइ | तत्थ पढमं उन्नियं पंडरयं पच्छा कालयं, पूलयं,+ उट्टियं, सणमयं, अयसिमयं, सोत्तियं वा घणमसिणं तओ कोसिकारगं दुग्गुल्लं पट्टमयं | तेसिं अलंभे तालसूई कुडसीसं छत्तयं वा अपच्छिमं | इयाणिं किइ-कम्मे गाहा - "सेढीठाणाठियाणं"

सेढीठाण-ठियाणं, कितिकम्मं बाहिराण भयितव्वं |
सुत्तत्थजाणएणं, कायव्वं आणुपुव्वीए ||बृ.क.भा.गा. ४५०३||

श्रेणीस्थानं चरित्तं विरतिरित्यनर्थान्तरं | सा च श्रेणी द्विधा द्रव्यश्रेणी भावश्रेणी च | द्रव्यश्रेणी आकाशश्रेणी | भावश्रेणी भावविशुद्धचरित्रव्यवस्था सामायिकाद्या | तास्वपि श्रेणीसु वर्तमानाऽपि केइ वंदनकज्जे कज्जकज्जे य बाहिरा हुंति | जिणकप्प, सुद्धपरिहार, अहालंद पडिमापडिवन्ना य |
[अत्रार्थे भा.गा. ११२७-११२० अपि द्रष्टव्या:]

वंदणाकज्जं नाम अब्भुट्ठाणं वंदणं च | कज्जकज्जं नाम कुल कज्जाइ | पासत्थादओ उवंदण अब्भुट्ठाणाइ बाहिरा, कुलकज्जाइसु अब्भं तरा | गाहा - "सेढीठाणे दुगभेदगा य चत्तारि भयणिज्जा ||"

सेढीठाणे सीमाकज्जे चत्तारि बाहिरा होंति
सेढीठाणे दुगभेदयाए चत्तारि वीभइया ||भा.गा. १३२०||
||बृ.क.भा.गा. ४५३१||

दुगभेदोत्ति वंदणअब्भुट्ठाणे य जहा आवन्नपरिहारिया, अणवट्ठ पारंचिया, अज्जाओ य अब्भुट्ठाणाइपडिकुट्ठा सेढीठिया वि कज्जकज्जे पुण आवन्नपरिहारे अणवट्ठपारंचिय जया संघो न लहइ कज्जं तया ते वि कारेंति | एस कालकप्पो समत्तो | इयाणिं भावकप्पो | तत्थ गाहा - "सुत्तुद्देसे वायणा"

सुत्तुद्देसे वायणा पडिपुच्छ परियट्ट अणुपेहा |
आयरियउवज्झाया अह होति तु सुत्तकप्पविही ||भा.गा. ११७६||

सो य मूलप्पकारेण तिविहो - दंसण - नाण - चरित्ते | तत्थ दंसणे ताव पढमं अल्पस्वरतरमिति कृत्वा दर्शनकल्पः पूर्वमुपदिश्यते[1] | सम्यग्द-र्शनपूर्वका ज्ञानतपः संयमा इति कृत्वा दर्शनकल्पः[2] पूर्वमुपदिश्यते || [भा.गा. ११३५-४५ पृ. ८९ तमे]
[भा.गा. ११४६]

१. पूर्वमपि दिश्यते | ख प्रतौ |
२. पूर्वमपदिश्यते ख प्रतौ |
+ तणमयमिति |

तत्र दर्शने- तो दंसणस्स चेव तु जेहिं पदेहिं तु होति उवघाओ।
ताइं इमातिं वोच्छं णिक्खमादीणि तु कमेण ॥भा.गा. ११४७॥

णिक्खमण गमण भुंजण सद्दियवयणे य एक्कवायणिए।
दंसणणाणाभिगमे रायकुमारे गणहरे य ॥भा.गा. ११४८॥

निक्खमणेत्ति- अहो! भट्टारओ केरिसए[3] नक्खत्ते निक्खंतो अम्हं[4] वधाए? एष दर्शनोपघातः। स एव भगवान् तत्कारणं जानीते। [भा.गा. ११४९-५१]

गमणेत्ति- अहो भिच्छुयाणं सुदिट्ठं। अणुमाइयाए गच्छंति साहवो। तुरियं गच्छंति, तत्थ वि एवं भावेयव्वं- एए भिच्छुयादओ सीह-वग्घ-बग-भूया। सणियं पि गच्छंता असमिया चेव। [भा.गा. ११५२-५४]

भुंजणेत्ति- भिच्छुगबोडियादओ[5] तुसिणीयं भुंजंति। साहवो भासंता जेमंति। तत्थ वि एवं भावेयव्वं- एए वग्घ गिद्धकंकभूया। साहवो भगवंता कारणं पडुच्च भासंता वि भुंजंता समिया एव। *एवं वि दरिसणविराहणा। तत्थ एवं भावेयव्वं- साहवो उग्गमाइसुद्धं भुञ्जंता वि अणासिया चेव। धिज्जाइयाणं वेया सक्कएण[1], अम्हं पागएण[2] पाढो। [भा.गा. ११५८] तत्रापि सद्दियवयणस्स तत्थ गाहा लोणादिट्ठंतेणं वा—

तत्थ वि सद्दियवयणं सद्दिया चेव णवरि जाणंति।
सव्वेसऽणुगाहट्ठा इतरं थीबालवुड्ढादी ॥भा.गा. ११५९॥
तत्थ[3] वि भावेयव्वं सो च्चिय अत्थो तु होति सव्वासिं।
सामुद्दसेंधवादी जह लवणसहाव सव्वे वि ॥११६४॥

अहवा न चित्ता वायति भासा। धिज्जाइयाण वेया एगवायणिया मिलंति। अम्हं बहुकीओ वायणाओ। तत्थ वि नवरि अत्थो मिलइ। [भा.गा. ११६३]

दंसणपभावगाणि वा सत्थाणि। अनुओगं वा दरिसणपभावकं। तं गिण्हमाणो जस्स वा पासे गिण्हइ, तेसिं वा अट्ठाए गच्छंतो, अद्धाणे उग्गमाइ जं पडिसेवइ आहाराइ असुद्धं नाणाहिगमे वा नाणमधिज्जंतो नाणनिमित्तं वा गच्छंतो, वायणारिअस्स वा जहा सिक्खापयंमि तो सुद्धो। तत्थ जं पाडिसेवइ तं न सद्दहइ। [भा.गा. ११६५-६६]

---

३. 'केरिसओ' ख प्रतौ।
४. णिक्खमणे बेंतम्हं अधोवहाएत्तु णायओ भगवं। इत्यादि भाष्य गाथा ११४९ तथा चास्माकम् अधः— ^
५. 'भिक्खुगणाइयादओ' ख प्रतौ।
१. संस्कृतभाषायां
२. प्राकृतभाषायां [नरकादावुपपाताम
③. श्री गणधरैः सूत्रग्रथने दृष्टान्तगाथा [११६०-६३]
* पाठस्त्रुटितः संभाव्यते।

रायकुमारे त्ति पव्वज्जा अप्पपंचमगस्स | रायपुत्तो अमच्चपरोहो-सत्थवाह-धिज्जपुत्ते य पंच वि पव्वइया | रायपुत्तो रण्णा चेव तत्थ छूढो | सव्वे वि सुत्तत्थतदुभयेसु निम्माया | आयरियत्ते रायपुत्तो सामोवेक्खाओ | सेसा जहारिहेसु उवज्झाय-थेर-गणावच्छेइय-पवत्तत्तणे य | तेसिं पेउमिस्सा[४] पव्वइउकामा | अन्ने भणंति वेरिएहिं कहिया राजा पव्वइओ सहामच्चमाईहिं | ते वि रायपुत्तप्पमियओ जहारिहेसु ठाणेसु उप्पव्वावेउ[५] हाविया | ते वि भगवंता कंचुगसंघाडोए छूढा | धुवलोयं करेमाणा फासुएणा पडोकारेण [६]अप्पाणं भावेंति | लक्खणपाढए पुच्छिऊण जाओ तारिसिआओ इत्थिआओ लक्खणसंपन्नाओ, तासु रिउकाले अवच्चुप्पायणं कारं तासिं च सव्वासिं पुत्ता जाया | ते साइरेगट्ठवासजायए जाणित्ता रायपुत्तं रज्जे अभिसिंचित्ता सेसए य सएसु ठाणेसु ठविऊण पडियागया |

आयरिया य वुड्ढा | अप्पसेसाउया | अन्ने य तारिसया लक्खणसंपन्ना आयरियाईणं ठाणाणं पाउग्गा नत्थि | पच्छा सो निरुद्धपरियाओ वि आयरियपए ठविज्जइ | तत्थ वि ताव "निक्कारणानि[१] कडाणे" पत्ति णोदिज्जा[२] इति भणियं होइ |

तेसु तहप्पयारेसु कुलेसु जं से निरुद्धपरियाए वि समणे निग्गंथे आयरियत्ताए अभिसिंचइ, को य गुणो तंमि अहिसित्ते ? संजइवग्गस्स तेयजणणं भयगोरवया य भवइ | दुज्जनस्स य अप्पत्थणिज्जाओ भवंति | कुडुंबपरिवड्ढी य भवइ | कुडुंबपरिवड्ढी नाम पव्वयंति समणा समणीओ य तारीसे दट्ठूणं महिड्ढिए | वत्थ-पत्त-ओसह-भेसज्जाणि य सुलभाणि भवंति |

केरिसा य पुण ते रायकुमाराइ पंच अभिसिंचति ? अहो अम्हं एरिसया पंच वा रायपुत्ताइ पव्वइआ | सीयमाणा य थिरा भवंति- जइ ताव एए भगवंता संते भोए, पत्थयामो वा | [भा. गा. ११६७-७२]

भावकल्प द्वार गाथा -

दंसण णाण चरित्ते तव पवयण पंच समिति तिहिं गुत्तो |
हतरागदोस णिमम्म खमदमणियमट्ठिओ णिच्चं ‖ भा. गा. ११२५ ‖

ते य अपराजिया भवंति जे नाणदरिसणतवअणसणाई विणओ | नाणविनयाइ | सच्चसमिति संजमो | समिति रियाइ पंच | गुत्तीओ तिन्नि मणगुत्ताइ हयरागदोसा संतकसाया वि होंतया जम्हा कोहाइण निग्गहपरमा | निम्ममा कलेवरे वि निस्संगा | क्षम सहिष्णुत्वे | दम उपशमे |

---

४. पूज्यपितरः
५. 'उप्पव्वावेत्तु' क्वचित्प्रतौ |
६. सामग्र्या

१. उत्सर्गतः स्थापिता इति प्रवृत्ति, भाष्ये तु 'पत्तीकडाइं तु तेहिं थेराणं पात्रीकृतानीति | गाथा- ११७२ ‖
२. ज्ञापयेत
३. सव्वसमिति | ख प्रतौ |

नियमो इंदियनोइंदियनियमे य ठिया निच्चं । गाहा — "अणिगुहियबलवीरिय" अणिगूहियबलविरितो परक्कमति जो जहुत्तमाउत्तो ।
अत्तट्ठकरणजुत्तो गुणभावण भावणिक्कंपो ॥ भा. गा. ११३६ ॥

पुरिसवार परक्कमा पडिलेहणाइ सुप्रकारेण उज्जमंतिपराक्रमंति जहोत्ते उवउत्ता य अत्तट्ठकरणजुत्ता आत्महितार्थ करणयुक्ता इत्यर्थः । यति प्रयत्ने मूलगुणउत्तरगुणेसु जुत्ता । भावणाइसु अणिच्चमसरणाइसु भावनोत्कृष्टा । [भा. गा. ११३७ - ११४५]

गणधरेत्ति गणधारिस्स असहुणो वा जं कीरइ, जह अज्जसमुद्दाणं दोच्चंगाणि[४] वीसुं[५] घेप्पंति तन्न सद्दहइ [भा. गा. ११७३]

"तत्थ वि जंमि कुलं आयत्तं" गाहा —
तत्थ वि भावेयव्वं जेणायत्तं कुलं तु तं रक्खे ।
अण्णस्स वि कायव्वं गिलाणस्सेस उवदेसो ॥ ११७४ ॥ भा. गा.

एवंगुणजातीया नाणाइगुणजुत्ता रायकुमारादयो अभिसिंचंति तं जइ न सद्दहइ दरिसणविराहणा । अह सद्दहइ दंसणविसुद्धया । एस दरिसणाकप्पो । [भा. गा. ११७५] [भा. गा. ११७६ पू तमे] [भा. गा. ११७७-१२६३] (पृ. ४७)

इयाणिं चरित्तकप्पो- तं चरित्तं किं पडिसेविए अपडिसेविए भवइ? अपडिसेवंतस्स मूलगुणाइचरित्त विसुद्धि भवति । [भा. गा. १२६४]

तत्थ गाहा — "पडिसेवणा"
पडिसेवणा तु दुविहा दप्पे कप्पे य होंति णायव्वा ।
एतेसिं तु विभासा जह भणिय णिसीहणामम्मि[१] ॥ भा. गा. १२६५ ॥

चरित्ते सा य चउविहा - दप्पप्पमाया अणाभोगा आहच्चेइय । दप्पिया पडिसेवणा दसविहा - दप्पिया, अकप्पिया, निरालंबा, चियत्तकिच्चा, अपसत्था, विसत्था, अपरिच्छया, अकडजोगी, अणानुवावी, नीसंका । दप्पिया नाम जो दप्पेण जहा- अणेगवायाम जोग्गवग्गणा एस दप्पिया । एत्थ मूलं अहवा चउगुरुं । अकप्पो नाम छसु काएसु वा एक्के वि पडिसेवणा सा अकप्पिया । तत्थ मूलं अहवा कायनिप्फन्नं ।

निरालंबणं नाम जत्थ नाणदंसण चरित्तालंबणं नत्थि सा निरालंबणा । तत्थ मूलं चउगुरुं वा । चियत्तकिच्चं नाम तं किच्चं जं कारणे पडिसेविअं, जस्स चियत्तं[२] भवइ सो चियत्तकिच्चो जहा सेलओ

---

४. यथा दौत्ये मधुरतिक्तकटुभाषणं तथैवाहारार्थं मधुरतिक्तकटुद्रव्याणि ।
५. पृथक् पृथक् ।

१. निशीथ भा. गा. १४४
२. प्रीतिकरं

राया पव्वइओ | तत्थ मूलं | अप्पसत्था नाम जो अप्पसत्थेण भावेण पडिसेव-
-इ | को पुण अप्पसत्थो भावो ? जो बलरूवहेउं वा विसयहेउं वा | तत्थ
मूलं मासियं वा |

वीसत्थो नाम सपक्खपरपक्खस्स वा अभीओ पडिसेवइ सा विस-
त्था | तत्थ मूलं मासलहुयं वा | अपरिच्छणा नाम अपरिच्छिऊणं जो पडिसे-
-वइ दव्व-खेत्त-काल-भावा सहसादेव सा अपरिच्छपडिसेवणा | तत्थ मूलं मास-
-लहुगं वा | अकड-जोई नाम तिखुत्तो अमग्गिऊणं जं पडिसेवइ | तत्थ मूलं
मासलहुगं वा | अणणुतावी नाम पच्छा णाणुतप्पइ सो अणणुतावी | तत्थ मूलं
-चउगुरुं मासलहुगं वा |

नीसंको नाम जो इहपरलोएसु अभीओ नीसंको पडिसेवइ सा
नीसंका | तत्थ मूलं चउगुरुगं वा | मूलं दससु असुध्देसु भवइ | एएसु चेव
सुध्देसु सोही भवइ |

इयाणिं पमाओ-कसाय कहाय वियडे |

अप्पत्तिए असंखड णिच्छुभणे उवधिमेव पंतावे |
उद्दावण कालुस्से असंपत्ती चेव संपत्ती ‖ नि.भा. १०५‖

इमं पच्छित्तं

लहुओ य दोसु दोसु अ, गुरुगो लहुगा य दोसु ठाणेसु |
दो चतुगुरु दो छल्लहु, अणवट्ठेक्कारसपदेसु ‖१०६ नि.भा.‖

कसाए उप्पाएइ अप्पणो पंचराइंदिया | अण्णस्स उप्पाएइ मासलहुं |
अहवा कोइ साहुणा वंदिओ, तेण य पमाएणं न पडिवंदिओ, पच्छा कसा-
-ए उप्पाएइ, अप्पणो अपत्तियं करेइ, मासलहुं |

मया वि एसो न पडिवंदियव्वो, असंपत्तीए मासलहुं, संपत्तीए मासगुरुं|
असंखडं करेमि त्ति, असंपत्तीए मासगुरुं, संपत्तीए चउलहुं |
निच्छुहावेमित्ति, असंपत्तीए चउलहुं, संपत्तीए चउगुरुं | उवहिं हारवेमि, असं-
-पत्तीए चउगुरुं, संपत्तीए छल्लहुं |

पंतावेमित्ति, असंपत्तीए छल्लहुं, संपत्तीए छग्गुरुं | पहरण मग्गइ, क-
ट्ठाइ दिट्ठे, छग्गुरुं गहिए छेओ, आहए मूलं, परिताविए अणवट्ठो | जइ उद्दायइ
पारंची | अहव न उद्दायइ अणवट्ठो चेव |

एए एकारस पया चउसु वि कसायेसु नेयव्वा | अहवा एअं चेव
हेट्ठिल्ल जाव पंतावेमित्ति, असंपत्तीए छल्लहुं, संपत्तीए अणवट्ठो[1], आहए
पारंची | गाहा ‖

इत्थीणं जाइकहाए कुलरूवनेवत्थकहाए चउगुरु तवकालविसेसियं |
देसकहाए छंद-विहि-विकप्पसमुपयारकहाए चउलहु तवकालविसेसियं |

---

१. 'अभिन्ने गेण्हइ | इत्यधिकं ड.लि. प्रत्ययोः |' उग्गिण्णेअणवट्ठो इत्यपि क्वचित्

भत्तकहाए आवाए[2] चउलहु दोहिं वि लहु णिव्वावे[3] कालगुरु, आरंभे तवगुरु, णिट्ठाण[4]कहाए चउलहु दोहिं वि गुरु |

रायकहाए चउसुवि अइयाण - निज्जाण - बलवाहण - कोसकोट्ठागार कहा-ए चउगुरु तवकालविसेसियं अहवा चउलहु |

वियडं गेण्हइ गालेइ परिभाएइ परिभुंजइ चउलहु तवकालविसेसियं | (चकारात्) सद्देसु इत्थीणं चउगुरु, पुरिससद्देसु चउलहु अहवा राजे सव्वत्थ चउगुरु |

केरिसा अप्पमत्तस्स पडिसेवणा ? आहच्च वा अणाभोगा वा | अणाभोगो नाम एकान्तविस्मृतिः |

कहिं पुणो सा होज्जा ? रियाइसु दिट्ठे सहसक्कारे तस्स रीयमाणस्स आउत्तस्स कायजोगमासज्ज पुव्वपडिलेहिए करेमाणेण न तिन्नो साहरेउं कुलिंगाइ जीवो विराहिओ | कुत्सितं लिंगं कुलिंगं, सो य कुलिंगो बेइंदियाई | न केवलं कुलिंगो आइग्गहणेण सम्मत्तलिंगो वि विराहिओ, तह वि सो अबंधओ साहु | कहं ? इमाकारगाहा -

पंचसमियस्स मुणिणो, आहच्च विराहणा जइ भवेज्जा |
रीयंतस्स गुणवओ, सुव्वत्तमबंधओ साहू ||१||

अहवा "उच्चालियंमि पाए" | को पुण सो अबंधओ ? जो राग-दोसविप्पमुक्को, संतकसाओ वा निग्गहपरमो | अत्थि य सो पाणाइवाओ, न पुण तस्स तारिसा खंडणा भवइ जेण आया अप्पमत्तो य, जहा असिंमि आउत्तस्स चंकमाणस्स | अप्पमत्तस्स जा विराहणा सा अपावकरी भवइ | जो य पमत्तो तस्स बहुपावकरी भवइ | एवं चेव अप्पमत्तस्स साहुणो नत्थि विराहणा | जो पमत्तो सबंधओ अमारेंतो वि | एवं समे विसमे अच्छिन्ने छेयं[2]- तडीय वा रीयाइ करेंतस्स | आइग्गहणेण अवसेसा वि समिईओ |

पुव्वब्भासेण कस्सइ सावज्जा भास णिज्जा | अज्झत्थविसोहीए सो सुद्धो चेव | तहा एसणाए | आयाणनिक्खेवे वा उवही संथारए आउत्तं गेण्हमाणस्स संजयस्स जा विराहणा होज्जा अबंधओ चेव सो | उच्चारपासवणाईणि वि किंचि[4] जयमाणस्स विहिणा आउत्तस्स जइ विराहणा होज्जा अबंधओ | तत्थ वि एस अप्पमायपडिसेवणा | एस चरित्तकप्पो | [भा. गा. १२६६ - १२६७]

---

२. अवापः - पाकस्थानं |
३. पक्वमपक्वं वा परस्मै दीयते स निर्वापः |
४. निष्पत्तिर्या लक्षद्रव्यव्ययेन भवति |

१. सदृशा नि. भा. गा. १०३
२. पर्यन्तविभागः
३. छिन्नटंका तत्र तथा 'तडीए' इति संभाव्यते
४. 'किंच इति ख प्रतौ

इयाणिं नाणकप्पो-सुयं उद्दिसई सुयकप्पो, वाएइ ति वायणाकप्पो, समुद्दिसइ ति समुद्दिसणाकप्पो, विहिणा पडिच्छई पडिच्छणाकप्पो, परियट्टेइ ति परियट्टणाकप्पो, अणुप्पेहेइ ति अणुप्पेहणाकप्पो। [भा. गा. ११७६ पृ.]
तत्थ सुयकप्पो-इमा गाहा "आयारे सूयगडे जाव दिट्ठिवाए त्ति"।

आयारमादि कातुं सुयं जा होति दिट्ठिवादो तु।"
अंगाणंगपविट्ठं कालियमुक्कालियं चेव ॥११७७ भा. गा॥

एत्थ गाहा-"जं जत्थ सिक्खिअं जं जेण जोएण सिक्खियं तं तहेव दायव्वं।"

एतं सुतं तु जं जत्थ सिक्खितं जेण जह तु जोगेणं।
तं तह चिय दायव्वं एसो खलु अज्झयणकप्पो ॥११८१॥ भा. गा.
"तं पुण संवादसमुट्ठियं वा"
तं पुण सव्वं पि भवे संवादसमुट्ठियं व णिज्जूढं।
पत्तेयबुद्धभासित अहव समत्तीय होज्जाहि ॥११७८॥ भा. गा.
संवादसमुट्ठियं नाम जहा केसिगोतमिज्जं।
समत्तीए जहा चोद्दस पुव्वा भगवया केवलनाण समत्तीए भासिया। पत्तेयबुद्धभासियं इसिभासियादि। तं कालियं वा उक्कालियं वा अंगपविट्ठं वा अंगबाहिरं वा। कालियं उत्तरज्झयणाइ। आयाराइं अंगपविट्ठं। अंगबाहिरं पन्नवणाइं। अहवा-कालियं अंगबाहिरं दसाकप्पववहारे। एवमज्झयणमिति पदं। सव्वो सो अज्झयणकप्पो। [भा. गा. ११७९-११८२]
तं च केरिसं? तत्थ गाहा-"जियं मियं परिजियं"
जित[1] परिजितं[2] अमिलितं[3] अविच्चामेलितं[4] अवेविद्धं[5]।
घोसणिकाइय[6] ईहिय[7] सुविमग्गियहेउसब्भावं[8] ॥११८३॥ भा. गा.

फुडं[9] विसदं[10] सुद्धवंजण[11] पदं[12] अक्खर[13] संधिकारणमणूणं[14]।
पादप्पयाणुलोमं[15] णिउत्तसुत्ते[16] त्ति सुतकप्पो ॥११८४॥ भा. गा.

णिपुणं[17] विपुलं[18] सुद्धं[19] णिकाइयं[20] अत्थतो सुपरिसुद्धं[21]।
हितणिस्सेसकरं[22] बुद्धिवड्ढणं[23] फलमुदारजुत्तं[24] ॥११८५॥ भा. गा.

(१) जियं नाम जत्थ पुच्छिओ झाडेति भणइ। (२) परिजियं उक्कुइ-उवइय। (हेट्ठुवारेतो उवरितो हेट्ठा) (३) अ-मिलियं ति जहा धण्ण कोद्दव-तिल-वीहिकादि। (४) विच्चामेलियं[1] विच्चामेलये कोलियपायसो।

---

१. भिन्नभिन्नांशैर्मिश्रितं यथाऽधमजातीयपायसः।

(५) अवाइद्धं च, वाइद्धं हारो मुत्तावली वा | (६) घोसा जहा-उयत्तादओ तहेव निकाएइ | (७) ईहियं ऊहियं वितक्कियं वीमंसितमित्यर्थः | (८) सोभनं मार्गितं सुविमग्गियं हेउकारणमित्यर्थः | शोभनो भावसंगतः पूर्वापरेण अव्याहतमित्यर्थः | उच्चारियं संतं तहेव नज्जइ | (९) फुडंति अक्खर विसुध्दं | (१०) विकडं प्रकटं सूत्रार्थतः | (११) सुद्दवायणं ति पूर्वापरतः संबध्यते अर्थतो | (१२) पद्यते इति पदं अर्थपरिसमाप्तियुक्तमित्यर्थः | (१३) क्षर संचलने | पदैरक्षरैर्वाऽलङ्कृतमित्यर्थः | (१४) संधनं संधिः, कारणैश्च युक्तं मात्रादिभिश्च न्यूनाधिकं न भवति | (१५) पादैः पदैश्च अणुलोमं अविपरीतमित्यर्थः | (१६) नि पुनराधिक्ये, योजनं युक्तिः | अर्थ युक्तिना युक्त मिति | श्रुतकल्पगाहा[2] | (१७) 'निपुण' निराधिक्ये पुनितं विदितमुपलब्धमित्यर्थः | (१८) विपुलं च तत् विस्तीर्णमित्यर्थः | (१९) शुध्दं च पूर्वपरतः | (२०) निकाचितं सार्थतः | (२१) अक्षरैः सारं अर्थतः सुपरिशुद्धमिति | अरणात् अर्थः | सु प्रशंसायां | परि सर्वतो भावः, सर्वतः सर्वावस्थं अर्थतः परिशुध्दं | (२२) हितं इह परत्र च ऐहिकामुष्मिकं निःश्रेयसकारकं | (२३) बोधो बुद्धिः अवगम इत्यर्थः | बुद्धिं वर्द्धयतीत्यतोबुद्धिवर्धनं | (२४) उदारफलमिति इहामुष्मिकं- इहभवे पदानुसाराद्या लब्धयः रिजुमति - विपुलमति - अवधिज्ञान-लब्ध्याद्या | आमुष्मिकं स्वर्गापवर्गौवा | श्रुतकल्पः || [भा.गा. ११८६ - ११९८]

इयाणिं उद्देसकप्पो | उवट्ठियस्स उद्दिसइ, नो अणुवट्ठियस्स | जो पुण अणुवट्ठियस्स उद्दिसइ अणालोइयगुणदोसस्स तस्स चउगुरु | अहवा सुए चउलहु, अत्थे चउगुरु | [भा.गा. ११९९]

तत्थ गाहा - " आलोयणा य विणए"

आलोयणा य विणए खेत्तदिसाभिग्गहे य काले य |
रिक्खगुणसंपदा चिय अभिवाहारे य अट्ठमए ||१२००|| भा.गा.

गाहासिद्धं जहा ववहारे | [भा.गा. १२०१ - १२०७ -चूर्णी, पृ. ५४] तं पुण किं उद्दिसइ ? अंगं सुयखंधं अज्झयणुद्देसं वा | किंनिमित्तं[1] वाएइ ? तत्थ गाहा - " अव्वोच्छित्ति"

अव्वोच्छित्ति संवेग विणय उववेय वज्जभीरुस्स |
पुव्वण्हे जोगसमुट्ठितस्स उद्देसणाकप्पो ||१२०८|| भा.गा.

अ-मा-नो-नाः प्रतिषेधे | न व्युच्छित्ति प्रतिपत्तिरित्यर्थः | उक्तं च-" यस्तु-कृतार्थोऽप्युत्तममवाप्य धर्मं परेभ्य उपदिशति | नित्यं स उत्तमेभ्योऽप्युत्तम इति पूज्यतम एव || [तत्वार्थकारिका ६ ||

संवेगो नाम संसारभीरुत्वं | विनयो ज्ञानाद्या[2] | 'उप सामीप्ये उपेतो युक्त इत्यर्थः |

---

१. 'केहिं गुणेहिं जुत्तस्स तु उद्दिसियव्वं' इति भाष्ये गा. १२०७

२. ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः, जिनाद्या' इति जे. प्रतौ |

वज्जं पापं कल्मषमित्यर्थः तस्य भीतः। वज्जभीतः। आरंभमभीत इत्यर्थः। पूर्वाह्णे युज्यते इति योगः।

सम्यग् उत्थितः समुत्थितः चरित्रस्थमित्यर्थः। एवं गुणजातीयस्स अंग श्रुतस्कंधादयो उद्देष्टुं कल्पंते। सो य आलोएंतो पुच्छिज्जइ - कइ आयरियाणं सहाया? जओ सि आगओ। सो भणेज्जा - एक्काकी आयरिओ। सो पुण सीसो पाडिच्छओ वा एवं भणेज्जा, दोण्ह वि चउगुरु। पाडिच्छंतस्स वि चउगुरुयं। तेहिं आणीयं सचित्ताचित्तमीसयं तंपि न लभइ।

अहवा भणेज्जा - अपरिणयाऽऽयरियसहाया, सीसे चउगुरु, पडिच्छए चउलहु।

अहवा भणेज्जा - अप्पाधारा आयरिया जे वा से पासे अच्छंति मए चेव पडिपुच्छंति सुत्तत्थतदुभये वा, सीसे चउगुरु, पडिच्छए चउलहु। पडिच्छंतस्स वि तं चेव। अहवा भणेज्जा - "गिलाणा आयरिया, पासे वा से गिलाणो, दोण्ह वि चउगुरु।

अहवा भणेज्जा - बहुरोगा आयरिया जे वा से, दोण्ह वि चउगुरु। अहवा भणेज्जा - मन्दधम्माऽऽयरिया जे वा से पासे, अहमेव सारणावारणाइ, सीसे चउगुरु, पडिच्छए चउलहु।

अहवा भणेज्जा - पाहुडं[1] काउं अणुवसामिते[2] आगओ हं, पडिच्छंतस्स चउगुरु। तेसिं पुण जइ सगच्छे संभोइए आगया पंचराइंदिओ छेओ। अहवा संभोइया वि परगच्छीया तत्थ दसराइंदिओ छेओ। अह संविग्गा गीयत्था अन्नसंभोइया तत्थ पन्नरसराइंदिओ छेओ। [भा.गा. १२०१ - १२०४]

कालेत्ति अंगसुअखंधाणि सुक्कपक्खे पन्नत्ति- महाकप्पसुत्ताइ सरए सुभिक्ख नेमित्तियाइ पुच्छिऊण दव्वखेत्तकालभावेसु। [भा.गा. १२०५- १२०७]

दव्वओ सुवण्णरासि रयणरासि चेइयरुक्खे वा। खेत्तओ पउमसरे विरए[3] वा साणुणाइये उच्छुकरण- सालि- करणे। कालओ तइया- पंचमी- दशमेक्कारसीतेरसीसु, रिक्खे मिगासिर अद्दा पुसो।

भावओ उच्चट्ठाणगतेसु गहेसु।

दिसाओ तित्थंकरो केवलिणो वा ओहि- मण- चउद्दस- नवपुव्विआ वा जाहे दिसाए। अहवा पुव्वाए उत्तराए वा अभिगिज्झइ।

अभिव्वाहारे कालियसुयमुद्दिसंतो खमासमणहत्थे सुत्तत्थतदुभएहिं उद्दिस्सामि। दिट्ठिवाए उद्दिस्सामि दव्वगुणपज्जवेहिं एस उद्दिसणाकप्पो॥ इति भा.गा. १२०८॥

इयाणिं वायणाकप्पो [भा.गा.१२०९] तत्थ गाहा- "अप्पणो य दढ रक्खा"

अप्पणो य दढ रक्खा, विपुलो य तहागमो।
सुयणाणस्स य पूजा, जिणाण[4] छिद्दे य दुच्छल्लो ॥१२१०॥ भा.गा.

---

१. कलहं कृत्वा
२. 'अणुवसामित्ता' क्वचित् प्रतौ।
३. विरजस्के
४. जिनाज्ञा, छिद्रे च दुःखेन छल्यते।

अप्पणो वायर्यंतस्स सुत्तत्थाणि नाणदंसणाइणं दढ रक्खा भवइ। अट्टज्झाणं च न भवइ कप्पट्ठिदिट्ठं तेणं, तवो य भवइ। विपुला य निज्जरा भवइ। उक्तं च — "दुवालसविहंमि वि" (भा. गा. १२११ - १२१३)

बारसविहम्मि वि तवे सब्भिंतर बाहिरे कुसलदिट्ठे।
णवि अत्थि णवि य होही सज्झायसमं तवोकम्मं ॥१२१४॥

एकाग्रचित्तस्य च स्वाध्याययोगोद्युक्तस्य अवधिज्ञानादयोऽतिशया उत्पद्यन्ते। तयट्ठोवउत्तस्स इंदियनोइंदियपणिही भवइ। जोगवाहि त्ति काऊण बहुस्सुओ य दुक्खं छलिज्जइ कुदेवयाहिं। [भा. गा. १२१५ - १२१७]

गाहा — "अत्ताण परिस पुरिसं"—

अत्ताण परिस पुरिसं हितऽणिस्सिय परिजितं जितं काले।
दिट्ठत्थं फुडवंजण णिव्वावण णिव्वहणसुद्धं ॥ भा. गा. १२१८॥

अप्पाणं तुलेइ - किं वायणासमत्थो असमत्थो ? एंति वा मम सुत्तत्थ-तदुभयानि ? पुरिसं जाणइ परिणामयाऽपरिणामयं, छेयसुत्तस्स जोग्गमजोग्गा वा। अहवा जइ मेहावी उग्गहणसमत्थो तो बहुयं कड्ढइ। इहरा विच्चामेलियं परिसा जाणियव्वा। जइ छेअसुत्तं पढंति ताहे जे सुत्तपरिणामिया तो वाएइ। इहरा विपरिणमेंति हियं। इह य परत्थे य।

अणिस्सिओ वाएइ सीसपडिच्छयउवकरणेहिं णीसंगं[1] करेइ। परिजियं उक्कुइओवइयं[2]। जिय सुत्तस्स वि एइ। काले जओ जस्स कालो जस्स अत्थं जाणेइ वयणविसुद्धं च निव्ववेंतो[3] वाएइ। जत्थ अक्खेवं करेइ तत्थ निव्वहइ। [भा. गा. १२१९ - १२२७]

केरियस्स पुण पढिअव्वं पासे गाहा — "तपुसीगंधियपुत्ते"

तउसारामी तउसे पुव्वं ण पलोए आगते कहते।
जाव पलोए ताव तु केइ विपरिणत अण्हहिं गेण्हे ॥१२२८॥ भा.गा.

एमेव गंधिपुत्ते जाणमजाणे य गंधभाणे तु।
आभागी अणाभागी उवसंघारो वि य तहेव ॥१२३३॥ भा. गा.

जहा तपुसीआरामिओ पुव्विं न चेव पलोएइ तपुसाणि जाव कइया[4]

---

१. 'णीसंगं' । ख प्रतौ ।

२. हेट्ठुवरितो उवरितो हेट्ठा गा. १२२५ भाष्ये तु 'उक्कोइतोवइअं' तथा च उक्कइअ-सव्विणं तुण्णणं तेनोपचितं- त्रुटितं सदनुसन्धायोपचितं ।

३. निर्वापयन्निति ।

४. क्रायकाः ।

आगया। ताहे मग्गइ जाव पलोएइ ताव अन्नत्थ गया। एवं जो आय-रियो पुच्छिओ चिंतेइ सुत्तत्थतदुभयाइं तस्स सीसा परितंता नासंति। सो निज्जराए अणाभागी भवइ पडिच्छयलाभस्स य। जेण पुव्विं चिंतिया-णि सुत्तत्थाणि सो मग्गिओ झडत्ति देइ। एवं पूव्विं चिंतियं सुहं वाएइ। [भा.गा. १२२९-१२३२] गंधियावणे तहेव विभासा। तहा सिरिधरिएण पुव्व-दिट्ठाणि सो कज्जे उत्पन्ने रन्ना मग्गिओ सुहं देइ। जो मग्गिओ पुलएइ सो विणस्सइ। अहवा दओभासे जहा सेणियस्स रन्नो हत्थी तंतुएण[1] वेढिओ। ताहे सिरिघरिओ जलकंतं मणिं मग्गिओ। जाव निहालेइ ताव मारिओ। अन्नो मग्गिओ, तेण झडति आणीओ। हत्थी मोइओ। सो य पूइ-ओ। [भा.गा. १२३४-३६]

रण्णो दो देवीओ पेस्सल्ली वल्लभी य ण्हायंति।
पेस्सल्ली हरावे आभरणे वल्लभीए उ ॥११३७॥ भा.गा.
जह चेडी आभरणं आवासे तह इमं पि णायव्वं।
उवसंघारो तह विय आयरिए होति कायव्वो ॥११३८॥ भा.गा.

देवित्ति पेसिल्लियाए वल्लभाए ण्हायंति आभरणानि गहियाणि जहेव चेडि उवसंहारो सामाइयनिज्जुत्तीए।

पुच्छंतओ[2] इयाणिं [भा.गा. १२३९] तत्थ गाहा — "अणुरत्तो भत्तिगओ"

अणुरत्तो भत्तिगओ अतिंतिणो अचवलो अलुध्दो य।
अव्वखित्ताऽऽउत्तो कालण्णू पंजलिउडो य ॥भा.गा. १२४०॥ भा.गा.

संविग्गो मद्दविओ अमुती अणुयत्तलो विसेसण्णू।
उज्जुत्तमपरितंतो इच्छितमत्थं लभति साधू ॥१२४१॥ भा.गा.॥

अणुरत्तो नाम वण्णवाई भत्तिमन्तो य। अतिंतिणो दुविहो — दव्वतिंतिणो तिंबुरूयगाई। भावतिंतिणो आहारोवहिमाइतिंतिणो। तिंतिणो नाम 'मम न देइ आहारे'। 'आहारे मज्झऽब्भंतरे संभोगणा[3]।'

अचलो[4] य चपलभावश्चापल्यं। अलुध्दो य आहाराइसु। अव्व-क्खित्तो अन्नं किंचि न करेइ पढंतो। उवउत्तो य तम्मि मणवयसा। कालन्नू कालं जाणइ पुच्छियव्वे पढियव्वे य। अहवा कालंनू सज्झाय-

---

1. जलजन्तुविशेषस्तेनेति।
2. 'पडिच्छगं वोच्छं' भा.गा. १२३९।
3. 'संजोगणा इति क्वचित्
4. अचपल:

-काले पढइ, न उ अकाले। पंजलिउडो य प्रह्वांजलिपुडो य काले उवट्ठाइ। गाहा १२४१। दव्वसंविग्गो मियो। भावसंविग्गो जो पुव्वरत्तावरत्तकाले। मद्दवि-ओ जो मिउभावजुत्तो। एवं अमाई अलोभी अमुई य सुत्तत्थ-तदुभयाणं जाव पारंगओ।

अणुयत्तओ बालवुड्ढसेहाणं।

विशेषं जानीते विशेषज्ञः। आचार्य विशेषं जानीते अनु-वर्तनाविशेषं वा। अकृतघ्नो वा। उज्जुत्तो वा सुत्तत्थतदुभयगहणे। अपरि-तंतो सुत्तत्थतदुभयगहणेसु जो जहा दिट्ठिवाए स्थूलभद्दसामी। एवंगुणजुत्तो शिष्य इप्सितानर्थान् प्राप्नोति लभतेत्यर्थः। कश्चासौ? उच्यते- प्रतीच्छकः। पडिच्छणाकप्पो ॥ [भा.गा. १२४२- १२५१]

इयाणिं पुच्छणाकप्पो [भा.गा. १२५२] तत्थ गाहा—"पदमक्खरं"

पदमक्खरमुद्देसं संधी सुत्तत्थतदुभयं चेव।
घोस णिकाइत ईहित सुविमग्गितहेतुसब्भावं ॥१२५३॥ भा.गा.

पद्यते इति पदं। पदमर्थपरिसमाप्तौ पदमिति। क्षर संचलने। न क्षर-तीत्यक्षरं। उद्दिश्यतेत्युद्देशः। संधनं संधिः। पदमक्षरं[A] संधिरित्यर्थः। एतानि पदाक्षरोद्देशसंध्याद्यानि सूत्रार्थतदुभयानि पृच्छतीति पुच्छगकप्पो।

घोषैरुदात्तादिभिः, निकाचयतीत्यपोहते च सुविमार्गितहेतुसद्भावं च कारणमुक्तमित्यर्थः, तत् पृच्छते इत्यतः पृच्छककल्पः। [भा.गा. १२५४-५६]

इदानीं आचार्योपाध्यायकल्पः [भा.गा. १२५७] तत्थ गाहा—

उग्गम उप्पायण एसणाए णिरवेक्खो णीयपडिसेवी।
सुत्ते अदिट्ठसारो आयरिओ ण कप्पति सो तु ॥भा.गा. १२५८॥

उद्गम्यत इत्युद्गमः; उत्पाद्यतेत्युत्पादना। उद्गमादिषु निरपेक्षः निः-कृप इत्यर्थः। निइयं नित्यं नियंत्रितपिंडभोजक। सूत्रेण अदृष्टसार इति अगीतार्थः। न इति प्रतिषेधे, न कल्पते स इति निर्देशः। तु विशेषणे। आच-रणमाचारः। एतद्दोषसमन्वागतः[1] न कल्पत्यसौ आचार्यः। एभिरेवोद्गमादि-भिः। सापेक्षः, संसार भीरुरित्यर्थः। नैत्यकवासनैत्यकपिंडपरिवर्जकश्च सूत्रार्थ-गृहीतसारश्च एवं गुणजातीय कल्पतेअसौ आचार्यः।

शिष्य आह—आचार्यबहुत्वे संदेहोऽस्माकं यस्माच्चरकपरिव्राजका

---

१. 'तद्दोषः समन्वागतः कल्पत्यसौ' इति ख प्रतौ।

A उद्देश इत्यप्यत्र संभाव्यते।

५ संपेहए अप्पगमप्पगेणं। किं मे कडं इत्यादीति।

अप्याचार्यो:, तथा वर्धकिसुवर्णकारकलाचार्याश्च लौकिका: | अत आचार्य बहुत्वे संदेहोऽस्माकं | [भा. गा. १२५९ - १२६१]

आचार्य आह — "आयरिय उवज्झाय" गाहा —

आयरिय उवज्झाया णाणुणाया जिणेहिं सिप्पट्ठा |
णाणे चरणे जो यावग त्ति तो ते अणुण्णाता ||१२६२|| भा. गा.

ये त्वयोपदिष्टाश्चरकादय: शिल्पाचार्याश्च एते द्रव्याचार्या न भगवद्भिरर्हद्भिरनुज्ञाता, तद्व्युदासार्थं गाहापश्चार्धेनाभिधीयते — "णाणे चरणे" भावाचार्यास्तु सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रतपसंयमान्[1] योजयंति ग्राहयंति स्वयं च युक्ता इत्यत: भावाचार्या इत्यनुज्ञाता: | [भा. गा. १२६३ - १२६६ - चूर्णि पृष्ठ - -] छव्विहो कप्पो समत्तो |

सत्तविहो कप्पो

इयाणिं सत्तविहो कप्पो, तत्थ गाहा — "ठियमठिय"

ठितमठित जिणे थेरे लिंगे उवही तहेव संभोगे |
एसो तु सत्तकप्पो णेयव्वो आणुपुव्वीए ||भा. गा. १२६७||

ठियकप्पो, अट्ठियकप्पो, जिणकप्पो, थेरकप्पो, लिंगकप्पो, उवहिकप्पो, संभोगकप्पो | तत्थ गाहा - ताव सामाइयछेओवट्ठावणियाणं भणइ समं चेव जत्थ ठिया अट्ठिया वा | सीसो एवं परूविए भणइ - कइ ठाणट्ठिओ कप्पो, कइहिं ठाणेहिं अट्ठिओ ? एत्तो धुयरयकप्पो कइट्ठाण पवेइओ ? धुयरओ नाम कम्मरयं धुणेइ इति धुयरय: |

आचार्य आह - चउट्ठाणेहिं ठिया, छहिं अट्ठिया | पढमा के ते ? पढमा सामाइयसंजया | छेओवट्ठावणिया बिइया, ते ठिया दसविधंमि कप्पे |

पढमा चउहिं ठिया - सिज्जायरपिंडे य चाउज्जामे य पुरिसजिट्ठे य किइकम्मस्स य करणे | चत्तारि अवट्ठिया कप्पा | एवं[2] कप्पं नातिचरंतीति | तेन उवट्ठिया सिज्जायरपिंडं एगंतेण य परिहरंति | चाउज्जामे य धम्मे ठिया | तेसिं पुरिसजेट्ठो धम्मो | किइकम्मं तेहिं ओहाराईणि[3] एहिं कायव्वं | एतेहिं नियमा ठिया |

---

१. 'संयम:' इति रव प्रतौ
२. 'एयं इति क्वचित् |
३. यथारात्निकै: |

छहिं अठिया - आचेलक्कुद्देसिए य पडिक्कमणे य रायपिंडे मासं पज्जोसवणा छप्पेए अणवट्ठिया कप्पा।

ते सचेला। जत्थ तेसिं चेलनिमित्तो रागो दोसो वा उप्पज्जइ तं न धरेंति। अह महद्धणमुल्ले वि रागो दोसो वा न उप्पज्जइ धरेंति।

उद्देसियं पि तेसिं न एगंतसो न कप्पइ। अन्नस्स कयं कयाइ गेण्हंति जया से अहाभावेण एज्जा, उवेच्चागयं[४] ते ण गिण्हंति।

अइयारो से जइ अत्थि पडिक्कमंति, नत्थि तो न पडिक्कमंति।

रायपिंडे जइ दोसा भवंति तो परिहरंति, अह नत्थि तो गेण्हंति।

जइ तेसिं उउबद्धे एक खेत्ते दोसा न भवंति तो पुव्वकोडिं पि अच्छंति एगत्थ। अह उवसग्गादओ दोसा भवंति तो मासस्संतो वि नींति। जइ तेसिं जे वासारत्ते दोसा ते अत्थि तो पज्जोसवेंति, अह नत्थि तो वासारत्ते वि विहरंति। एमेव छप्पेया भणिया। [भा. गा. १२६८-७०/१२७२-७४]

कुओइ ठिया कुओइ अट्ठिया वा वीसं तित्थयरा जे य महाविदेहे एए अट्ठियकप्पे। पुरिमपच्छिमयाणं छेओवट्ठावणीयसंजया दसविहंमि ध्रुयरय-कप्पे ठिया। "आचेलकुद्देसि" गाहा -

> आचेलक्कुद्देसिय सेज्जातर रायपिंड कितिकम्मे।
> वत जेट्ठ पडिक्कमणे मासं पज्जोसवणकप्पे ॥१२७१॥ भा. गा.

अचेले त्ति दारं - अचेलो दुविहो - संताचेलो असंताचेलो य। असंता-चेला तित्थगरा। ते एगंतेण असंताचेला चेव। जे सेसा ते संता। ते संतेहिं वि चेलेहिं अचेला। को दिट्ठंतो?

जहा कोइ पुरिसो अत्थाहं नइं उत्तरइ। दोण्णि व सा ए सीसे वेढिऊण उत्तरइ। जइ वि ताणि चेलाणि अत्थि अह य नग्गओ भणइ। जहा काइ महिला परिजुन्ननियंसणा कोलियं भणइ - हे तंतुवायग! लहुं ता मे वुणाहि साडियं, नग्गिया मं न पेच्छसि? न य सा नग्गिया। अह य परिजुन्नचेला नग्गियत्ति भण्णइ। एवं साहू वि संतेहिं चेलेहिं अचेला भवंति। जेण असत्ता अदुट्ठा भाव अभिन्नानि धरेंति। पुरिमपच्छिमाणं नियमा अचेला।

मज्झिमाणं अचेला सचेला वा। ते भगवंता रागदोसनिग्गहपरमा य पडिमाए वा पाउयाण वा रागदोसा न भवंति। जे पुण पुरिमपच्छिमाणं संज-याणं जइ ते निरुवहयलिंगभेयं करेंति, निरुवहया नाम हट्ठ समत्था अगि-लाणा वा। लिंगभेए पुण इमं पच्छित्तं -

---

४. उपेत्याऽऽगतमिति

परलिंग करेंति मूलं | कडिपट्टए गरुलपक्खे चउगुरु |

कारणजाए पुण लिंगभेयं करेज्जा | गिलाणो वा अरिसा भगंदलेहिं वा कडिपट्टयं करेइ | लोयं वा करेंतो बंधइ | सरीर किइकम्मं वा आयरियाईणं करेंतो, आइग्गहणेणं भायणाईणि ओयारेंतो[1] उ[2]ल्लयंतो, संथारगं वा करेंतो, कडिपट्टयं बंधेज्जा | असिवे ओमोयरिए रायदुट्ठे परवाइदुट्ठे वा आघाडे अन्नलिंगं काऊण कालक्खेवो वा गमनं वा | [भा. गा. १२७५-१२८४]

इयाणिं उद्देसियं [भा. गा. १२८५] "आहा अहे य कम्मे"

आहा अहे य कम्मे आयाहम्मे य अत्तकम्मे य |
तं पुण आहाकम्मं णायव्वं कप्पती कस्स ॥ भा. गा. १२८६ ॥

तं पुण उद्देसियं पुरिमपच्छिमाण संघस्स ओघेण य समणाणं समणीणं वा कुलगणस्स वा जइ ओहेण करेंति ठियकप्पे न कप्पइ |

जया पुण रिसहसामिसंतयाणं अज्जाणं अज्जियाणं वा उद्दिस्स करेइ तं रिसहसामिसंतयाणं दोण्ह वि न कप्पइ | अजियसामितणाया गिण्हंति |

अजियसामिसंतयाण अज्जयाणं कयं अज्जियाणं कप्पइ | अज्जियाणं वा कयं अज्जयाणं कप्पइ | पडिस्सए वि जइ एक्कंमि गामे गणेतु करेइ, एगं दो वा जं तत्थ न गणेइ पडिस्सयं तेसिं कप्पइ गणिएसु वि पडिस्सएसु जे [1A]पाहुणया वत्था सन्नातके जहा कप्पस्स चउत्थुद्देसे | [भा. गा.[2A] १२८६-१२८८] गा. १२८९-१२९७ न स्पृष्टाश्चूर्णिकारैः]

इयाणिं सेज्जायरपिंडे त्ति "तित्थर पडिकुट्ठो"

तित्थगरपडिकुट्ठो आणा अण्णाय उग्गमो न सुज्झे |
अविमुत्ति अलाघवया दुल्लभसेज्जा विउच्छेदो ॥ १२८९ ॥

सव्वतित्थकरेहिं पडिकुट्ठो |

अविमोत्ति अलाघवता दव्वे भावे य | दव्वे जहा वी[3]रल्लसउणओय रेसियाणं[4] तित्तिरवट्टयाइ मारेऊण तंतुए पडियाऽऽणि[5]ज्जइ भाव अविमुत्तिए साहू जिब्भादंडेण पुरमहिगओ तत्थेव पडिज्झइ |

---

१. अवतारयन् | २. भाजनानि आर्द्रयन् प्रक्षाल्यन् गतिमद्ध। व्रजन् वर्षासु वाऽऽर्द्रमिवन्निति।

१A. जे पाहुणया पच्छा पत्ता तके पा. प्रतो | बृहत्कल्प गाथा ५३५१-५२-५३-५४ |

२A. वास्तव्या इति संभाव्यते |

३. ओलायकनामा पक्षी |

४. "पासियाणं क्वचित् |

[टिप्पणकम् :- ओलायकः पक्षी तन्त्र्या पादे बद्ध्वा यत्र तित्तिरप्रभृतिकः पक्षी दृश्यते तत्र मुच्यते, ततस्तेन यदा तस्य शकुनस्य ग्रहणं कृतं स्यात्तदा भूयोऽपि तयैव तन्त्र्या तस्य कर्षणं क्रियते। तत आगतस्य हस्ततले मांसं दीयते, ततो मांसे प्रगृद्धः सन् मुक्तोऽपि स्नायुबन्धनमन्तरेणापि शकुनिमानयति, आनीय च तत्रैवावतिष्ठते।]

लाघवो दव्वे भावे य। दव्वे सेज्जायरं, काले अच्छमाणस्स ते वि सड्ढा सेज्जायर माइयाभूणय भूणियाओ वा णंतए[1] देंति। पभू वा वाकरणेण। दव्व लाघवो सरीरे, किं तेहिं निद्धपेसलेहिं? पोल्लो थूलो य भवइ। पच्छा न तरइ विहरिउं।

आणा जिणाणं अइक्कंता भवइ।
अन्नायमन्नाएण य विहरियव्वं।
उग्गमुप्पायणेसणाण वि उवघाओ।

दुल्लभा य सेज्जा भवइ। जहा एगो पंचसईओ[2] गच्छो एगस्स खद्धादाणियस्स[3] सालाए ठिया। ते अमज्जाइल्ला। संघाडओ तत्थेव पयरणं[4] मग्गइ। एवं तं घरं फेल्लं[5] जायं। पच्छा तेसु गएसु अन्ने गीयत्था संविग्गा य आगया। तत्थ एवं दुल्लभा सेज्जा।

दुविहे गेलन्ने - आगाढाणागाढे।
आगाढे तहेव घेप्पइ अहिदट्ठाइसु।

अणागाढे य रोगाइसु सखेत्ते तिखुत्तो मग्गिऊण ताहे गेण्हंति अलंभे। निमंतेइ वा अभिक्खणं ताहे न भणइ, जहा-"न वट्टइ तुब्भतणयं" अम्हं कोट्ठागारे भूयं। जाहे पडिभाइयंति पाहुणयगिलाणणाणट्ठाए ताहे घेच्छामो। दुल्लभदव्वाण वा सयपाकमरुतेल्ल[6]-हंसतेल्लाइ वासत्ताणेण वा आयरियपाउग्गेण ताहे घेप्पइ। जं वा दुल्लभं तं मग्गिज्जइ, पच्छा किहं[7] दिउ? सेसं जहा कप्पस्स[8] बितिय उद्देसे सागरियपुत्ते। [भा.गा. १२९९-१३००]

इयाणिं रायपिंडो-'राजृ। दीप्तौ। 'पिंडि' संघाते। जो मुदितमुद्धाभिसित्तो तस्स पिंडो परिहरियव्वो। मुदितो नाम जो उदितोदियकुलप्पसूओ। मुद्धाभिसित्तो नाम जस्स बद्धमउडेण रण्णा अभिसेओ कओ। एत्थ चउभंगो।

---

१. वस्त्राणीति।
२. पञ्चशतीक इति।
३. प्रचुरभोजनदायिन इति।
४. प्रतरणं प्रथमदातव्यां भिक्षां।
५. निर्धनं।
६. 'मरुआ' वनस्पति विशेषः।
७. पच्छातकथं दद्यादिति।
८. बृहत्कल्प गा. ३५४७

मुदितो मुद्धाभिसित्तो सो य पंचहिं सहिओ सेणावइ - पुरोहिय-सेट्ठि - अमच्चसत्थावाहेहिं | तस्स पिंडो वज्जणिज्जो | जो मुइअमुद्दाभिसित्तो न भवइ तस्स पिण्डो न वज्जो | सेसाण जइ दोसो अत्थि तो वज्जितो | अह नत्थि तो न वज्जो |

सो दुवालसविहो रायपिंडो - असण - पाण - खाइम - साइमं - वत्थ पडिग्गह - कंबल - पायपुंछणं सुई - पिप्पलय - नखच्चण - कन्नसोहणयं | एअस्स दुवालसविहस्स रायपिंडस्स जो एगमवि गिण्हइ तस्स चउ-गुरु आणाइविराहणा |

इसरतलवराइ - 'ईश' एश्वर्ये | तलवरो राजप्रतिमो छत्त-चामररहिओ | माडंबिओ नाम सव्वं रज्जं भुंजति | सेट्ठी बद्धवेढणो[1] | सत्थवाहो सत्थं नेइ | एएहिं निंतानिंतेहिं वाघाओ सुत्तत्थतदुभयाणं | जाव ते अइंति निंति वा ताव जइ अच्छइ एगंते सुत्तपलिमंथो | अहवा आस - हत्थि - जो-ह - रह - पायाल संघट्टणेण भायणाणि भिंदिज्जा | पंचण्ह इंदियाणं अन्नतरइं-दियजायं लूसावेज्जा | अहवा सो तत्थ पविट्ठो, तत्थ य से पज्जत्तं उक्कोसगं अफासुयऽणेसणिज्जं नीणियं, लोभेण न सक्कइ परिच्चइउं, एसणोवघाओ | तत्थ आकिन्नविप्पकिन्नानि रयणाणि, तानि अन्नेण वाहियाणि केनइ, तत्थ संजओ संकिज्जइ | तत्थ गेण्हणाइ दोसे | अहवा तेणो एस जो इहं पविसइ - चोरउकामो गेण्हणाई | संकाए मूलं | नीसंकिए अणवट्ठो | अभिमरो परदारी वा संकाए अणवट्ठो | नीसंकिए पारंची | - चरित्तभेओ वा ताणि तत्थ निरुध्दबत्थीणि अच्छंति, संजयं गेण्हेज्जा | अणिच्छंतस्स वा अयसं छुभेज्जा - "समणेण पडिग्गाहिय" | स इच्छंतमणिच्छंते गेण्हणाइ | चउगुरुमाई जाव पारंची |

इमे ते दोसा - आइन्ने गोमिएहिं[2] पंताविज्जइ, अइभूमी अइगओत्ति | अहवा अन्तेपुरस्स सव्वओ गुम्मिया[3] ठविया तेहिं घेप्पेज्जा हणेज्ज वा बंधेज्ज वा मारेज्ज वा, जइ वि अणुन्नायं अयाणंता | तत्थ वा रयणाणि नानाविहाइं आभरणानि वा पासित्ता लोभवसओ गेण्हेज्जा | एएण लिंगेण पवेसो लब्भइ तेणो व पविसइ ताए नीसाए पच्छा सो घेप्पइ संजओत्ति | विसेसमयाणमाणा कुल - गण - संघे वा पत्थारं कुज्जा | इत्थीवा उरालसरीरं पासित्ता गेण्हेज्जा | तिरिक्खा वा तत्थ दुट्ठा सीह - वग्घ - वानरसाणा ते अपुव्वं दट्ठूण खाएज्जा | माणुसा वा दुट्ठा जे मिच्छा ठविया ते आहणेज्जा | एअस्स जो धम्मो अम्हं होउत्ति उद्दवेज्जा | एवमाई दोसा | तम्हा न घेत्तव्वो रायपिंडो पुरिमपच्छिमेहिं | मज्झिमगा पुण बावीसं जत्थ दोसा अत्थि

---

१. 'पट्टवेढवणे | ख प्रतौ 'पट्टवेढणओ जे. प. प्रतयो:

२. राजसन्मानितै: | ३. रक्षका:

तं परिहरंति, जइ नत्थि गेण्हंति | बिइयपयं दुविहे गेलन्ने निमंतणा गेण्हे-
-ज्जा | [भा. गा. १३०१- १३०५]

इयाणिं किइकम्मं- तं च दुविहं- वंदनं अब्भुत्थाणं च समणेहिं समणाणं अहाराइणीयाए कायव्वं, समणीहिं समणीणं अहारायणीयाए कायव्वं | सव्वाहिं संजईहिं संजयाणं कायव्वं जम्हा पुरिसाइओ पुरिस-पणीओ धम्मोत्ति | [भा. गा. १३०६- १३३९]

इयाणिं वयाणि- पंचयामो पुरिमपच्छिमाणं | मज्झिमयाणं तित्थयराणं महाविदेहगाण च चाउज्जामो | किंनिमित्तं पुरिमपच्छिमाणं पंचयामो, मज्झि-मगाणं महाविदेहगाण च चाउज्जामो ?

पुरिमा उज्जु सोज्झा | केण पुण पुरिमा उज्जु सोज्झा ? जेण उज्जु जडा तेसिं बहिध्दादाणं[1] वज्जइ | ते उज्जुजडत्तेण न परिहरंति- जहा अम्हं मेहुणं कप्पइ | वीसुं[2] कए सुहं वज्जंति |[3]

चरिमाणं दुरणुपालओ कप्पो जेण वंक जडा | जइ तेसिं बहिध्दा-दाणं वज्जइ तओ वंकजडत्तणेणं परपरिग्गहिया इत्थिया, न मम एस परिग्गहोत्ति पडिसेवेज्जा | तेण पंच महव्वया |

मज्झिमयाणं पुण सुविसोज्झं सुअणुपालगं च, तेण कारणेण | जम्हा ते उज्जु पन्ना | जेण तेसिं बहिध्दादाणेत्ति भणिए सव्वं उवागच्छइ, उज्जु-पन्नत्तणेण, जम्हा इत्थिआ अपरिघेत्तुं[4] न परिभुंजइ | तेण परिग्गहे मेहुणं पडइ | तेण तेसिं चाउज्जामो धम्मो | इयरेसिं पंचजामो | [भा. गा. १३४१]

इयाणि जेट्ठे त्ति- कस्स पुण को जेट्ठो ? जो जस्स पढमं उवट्ठाविओ सव्वजिणाणं पि | तो कहिं चेव ठाणेहिं उवट्ठावणा भणिया ? इमे दस उव-ठावेयव्वा | तओ[5] पारंचिया, तओ अणवठप्पा[6], दंसणं जेण वंतं मिच्छत्तं गओ, चरित्तं वा केवलं वंतं, केवलं नाम सव्वं, आव चीयत्तकिच्चो[7] जीवकाये समारंभइ, जाव पढमयाए[8] पव्वयइ | एए दस उवट्ठावेयव्वा |

केसिं च ताव मयं- जहा दसविहा उवट्ठावणारिहा | अन्नेसिं तिविहो वि पारंचिओ एक्को चेव, अणवट्ठो य एगो, उवरिल्ला चत्तारि छ |

केसिं चि मयं- पारंचिय, अणवट्ठप्प, चरित्तवंता[9] एए सव्वे एक्को

---

१. धर्मोपकरणाद् बहिर्यत् तस्यादानाद् विरमणं बहिध्दादानविरमणमिति |

२. विश्वक्- पृथक् |

३. 'परिच्छंति' पेच्छंति च क्वचित् प्रतौ

४. परिघेत्तु रव प्रतौ

५. दुट्ठे- पमत्ते, अन्नमन्नं करेमाणे |

६. साहम्मियाणं तेण्णं, अन्नधम्मियाणं तेण्णं करेमाणे, हत्थादालं दलेमाणे बृ.क.सू. २.३.

७. यथा पृ. ५३

८. सामायिक चारित्रेण प्रव्रजति तस्योपस्थापना

९. वान्त चरित्रा इति |

-चेव जेण तिहिं वि वंतं -चरित्तं,इयरे य तिन्नि |एए -चत्तारि |एए सव्वे पुण वन्निया |

जेहिं दंसणं वंतं तेण आभो- एण अणाभोएण वा |

जो पुण अणाभोगेण मिच्छत्तं गओ जहा एगो सड्ढो निण्हयाणं तेण पव्वइओ सुंदरा साहुणो काऊण |अन्नेहिं संजएहिं दिट्ठो |तेहिं पुच्छिओ- किह निण्हयाणं ते पव्वइओ सि ? सो भणइ -न याणामि विसेसं ति तेण पव्वइओ |पच्छा आलोएइ ताहे तस्स तमेव[1] पच्छित्तं जं संमं पडिवज्जइ |सो -चेव परियाओ |

जो पुण आभोएण तेसु गओ,पुणो य सम्मत्तं आगओ, आलोइय-पडिक्कंतस्स मूलच्छेओ |

छज्जीवनिकाए अप्पज्झो[2] जो विराहे ,अप्पज्झो नाम अणप्पवसो न भवइ, तस्स मूलं |

जो पुण अणप्पज्झो खित्तचित्ताइ जीवकाए समारंभइ सो आलोइयपडिक्कं-तो सुद्धो |

जो पुण अणाभोगेण गयस्स अपायच्छित्त पायच्छित्तं देइ ,जो पुण आभोएण गयस्स पायच्छित्तं न देइ |तत्थ अपायच्छित्ते पायच्छित्तं,पायच्छित्ते अइमत्तया |तेण दुविहस्स वि धम्मस्ससुयधम्मस्स -चरित्तधम्मस्स य विराह-णा कया भवइ |नाण- दंसण- -चरित्तमओ य सिद्धिमग्गो विराहिओ भवइ| [भा.गा. १३४२-१३५६] इमे दोसा —

उस्सुत्तं[3] ववहरंतो कम्मं बंधइ चिक्कणं |
संसारं -च पवड्ढइ महामोहं -च कुव्वइ ||१|| [भा.गा. १३५७]

उम्मग्गदेसणाए वा मग्ग विप्परिणामए |
परं मोहेण मोहेत्ता महामोहं -च कुव्वइ ||२|| [भा.गा. १३५८]

इयाणिं पडिक्कमणेत्ति- पुरिमपच्छिमजिणाणं देवसिओ राइओ वा अइयारो होउ वा मा वा अवस्सं पडिक्कमंति |

मज्झिमगाणं जइ अत्थि अइयारो तो पडिक्कमंति तं -च वेलं| अह नत्थि न पडिक्कमंति | [भा.गा. १३५९]

इयाणिं मासकप्पेत्ति- मासकप्पो दुविहो- जिणाण थेराण य |एक्केक्को दुविहो- ठियकप्पो[4] अट्ठियकप्पो य |पुरिमपच्छिमया ठियकप्पे |मज्झिमा अट्ठिय-कप्पे |मासं मासेण विहरति |अट्ठियकप्पियाणं अनियतं |[भा.गा. १३६०]

---

१. आलोचनेन
२. आत्मवशः
३. सदृशे गाथे १३५७-१३५८ भाष्ये
४. ठियकप्पे अट्ठियकप्पे य |ख प्रतौ |

पज्जोसवणत्ति दारं-ठियकप्पियाणं अट्ठियकप्पाणं जिनाण थेराण य| ठियकप्पिया उक्कोसेण चत्तारि मासे अच्छंति जहन्नेण सत्तरि राइंदिया| अट्ठियकप्पिया जइ वासारत्तो अत्थि तो अच्छंति चत्तारि मासा एगखेत्ते| अह नत्थि विहरंति |जे ठियकप्पा ते कारणे विवज्जासं करेंति|असि-वाइएहिं कारणेहिं वा निग्गच्छंति, अइरित्तं वा अच्छंति|एस विव--ज्जासो |

जो पुण निक्कारणे अच्छइ अइरेगं, ओरेणं[1] वा निग्गच्छइ सो पासत्थाइ ठाणेसुवट्टइ|तं च –

पासत्थठाणं संकिलिट्ठं जिणवुत्त थेरेहिं य |
तारिसं[2] तु विसोहेंतो सो विहारेण सुज्झइ ||१||
ओसन्नसंकिलिट्ठाणं जिणवुत्तं थेरेहिं य |
तारिसं[2] तु विसोहेंतो सो विहारेण सुज्झइ ||२||

एवं सेसाण वि –

एत्थ ठवणाकप्पे दसविहे एस जो वन्निओ ठवणाकप्पो सो दुविहो - अकप्पठवणाकप्पो य सेहठवणाकप्पो य |

अकप्प ठवणाकप्पो नाम जं अकप्पिएण आहारोवहिसेज्जा गेण्हावेइ गहियं वा परिभुंजइ |

सेहठवणाकप्पो नाम अट्ठारसपुरिसेसु वीसं इत्थीसु पुव्वभणियेनि[3]-यजीवदवियकप्पे एए जो न पव्वावेइ सो सेहठवणा कप्पो |

एत्तो जो एगतरं पि नायरइ, जो य उत्तरगुणकप्पो[4] पिंडविसोहि-माइओ तेहिं जो सरिसकप्पो सो संभोइओ |

[5]सरिकप्पे सरिच्छंदे तुल्लचरित्ते विसिट्ठतरए वा |
साहूहिं संथवं कुज्जा, नाणिहिं चरित्त मंतेहिं ||१||

[6]जे सरिकप्पा सरिछंदा तुल्ल चरित्ता विसिट्ठतरया वा एएसिं भत्तपाणं आइएज्जा|अहवा सएण लाभेण तूसेज्जा|ठियमट्ठियकप्पो सम--त्तो|इयाणिं गाहा –

---

१. समीपे|'उरेण' इति क्वचित् तथा च त्वरितेन |
२. 'तारिसं गवेसंतो सो विराहे न सुज्झइ' पा प्रतौ |
३. मियः इति क्वचित् |
४. 'उग्गमगुणकप्पा' ख प्रतौ |
५. नि.भा. २१४७ तथा बृ.क.भा. ६४४५ द्रष्टव्यं |
६. नि.भा. २१४८ तथा बृ.क.भा. ६४४६ द्रष्टव्यम् |

दुविहो मासकप्पो, जिणकप्पियाण थेराण य |
सो पुण दुविहो अट्ठियकप्पो वा होज्जा ठियकप्पो वा ||१||
[भा. गा. १३६०]

अट्ठियकप्पिया नाम बावीसाणं तित्थयराणं मज्झिलाणं तेसिं जिणकप्पो थेरकप्पो वि अत्थि ठियकप्पियाणं पुरिमपच्छिमाणं जिणाणं तेसिं पि जिणकप्प - थेर कप्पा अविरुद्धा |

एवं पज्जोसवणाकप्पो वि ठियाणं अट्ठियाणं य | एवं जिणकप्पियाण वि पज्जोसवणाकप्पो | ठियकप्पियाण वि अट्ठियकप्पियाण वि अत्थि |

तत्थ तु थेरकप्पियाणं पज्जोसवणाकप्पो उक्कोसेण चाउम्मासो, सत्तरि राइंदिया णं जहन्नेण | ठियमठियमेगयरेसि असिवाइसु कारणेसु विवज्जासियऽन्नतरो उउबद्धे वासावासेऊण अब्भहिओ |

एत्थ पुण दसविहे ठियकप्पे ठवणाकप्पे य दुविहे, उत्तरगुणकप्पे य पिंडविसुद्धाई जो सरिसो सो संभोगिओ |

ठवणाकप्पे त्ति - दुविधे | किमुक्तं भवति ? उच्यते - अकल्पः अमर्यादा अनीतिः अनुपदेश इत्यनर्थान्तरं | तस्य स्थापना वारणा प्रतिषेध इत्यनर्थान्तरं | सो य दुविहो - अकप्पठवणाकप्पो सेहठवणाकप्पो य |

तत्थ अकप्पठवणाकप्पे आहारोवहिसेज्जाओ अगीयत्थेण उग्गमियाइ परिभुंजइ | एष अकल्पः अमर्यादा |

सेहठवणाकप्पे अट्ठारस पुरिसाई, एते अनले जो पव्वावेइ जाणओ अजाणओ | जाणओ गीयत्थो | अपुच्छिऊण पव्वावेइ तस्स सट्ठाणपच्छितं | अयाणओ अगीयत्थो | तस्स पव्वावेंतस्स सत्तरत्तं तवो होइ | तओ छेओ | पहावइ छेएण छिन्नपरियाए तओ मूलं | तओ दुगं |
[भा. गा. १३६१- १३६३]

इयाणिं जिणकप्पो अह्रोपदिष्टं भगवद्भिः बहुषु सूत्रेषु जहा जिणकप्पाऽहालंदसुद्धपरिहारकल्पश्च | एतदस्माभिर्नावगम्यते - किं ताव तीर्थकरं मुक्त्वा येऽन्ये जिनकल्पाऽथालंदशुद्धपरिहारकाश्च किं ताव प्रव्रजंता एव जिनकल्पादि प्रतिपद्यंते उत कालान्तरोऽस्ति ? आह - वत्स ! श्रुयतां जिनकल्पाद्यानां विधिः | तह गाहा - 'गच्छंमि य निम्माया'

गच्छामि य णिम्माया थेरा जे मुणिलसव्वपरमत्था |
अग्गह अभिग्गहे वा उवेंति जिणकप्पियविहारं || भा. गा. १३६४ ||

जया गच्छे प्रव्रज्यादि सूत्रार्थोभय अनियतचारश्च कृतो भवति,

सूत्रार्थानां च शिष्यप्रतीच्छकानां अव्युच्छित्तिं कृत्वा पश्चादुपयुज्यन्ते-यदि दीर्घायुष्का: पश्चाद् जिनकल्पादि प्रतिपद्यन्ते [भा.गा. १३६५-६८]

तत्थ गाहा

पवज्जा[1] सिक्खापद, अत्थगहणं च अणियओवासो ।
निप्फत्ती य विहारो, सामायारी ठिइं चेव ॥१॥

एतदुपरिस्तादस्मिन्नेव कल्पे प्रथमोद्देशके मासकल्पद्वितीयसूत्रे व्या-ख्यास्यामः। इह तूद्देशमात्र एष जिनकल्पाभिसंबंधः। तत्थ गाहा — "परिणाम जोग सोही"

परिणाम जोग सोही, उवहिविवेगो य गणणिक्खेवो य ।
सेज्जा संथार विसोहणं च विगती विवेगं च ॥भा.गा. १३६९॥

परिणामसोही नाम किं नु? विहारेण अब्भुज्जएण। जोग सोहीत्ति पंचविहा, तुलणाभावना इत्यर्थः। "तवेण सत्तेण सुत्तेण

तवेण सत्तेण सुत्तेण, एगत्तेण बलेण य ।
तुलणा पंचहा वुत्ता, जिणकप्पं पडिवज्जओ ॥बृ.क.भा.गा. १३२८॥

उवहिविवेगं करेइ जिणकप्पं पडिवज्जिउकामो। कयराए उवही-ए? अप्प परिकम्माए[2] य। आहाकडं उवहिं गहाय परिकम्मं करेइ।

इत्तिरियं गणसन्नासं करेइ। गणधरं ठवइ। सेज्जाए अपरिभुंजं-तीए एगदेसे संथारं सयमेव गिन्हेइ। विगइओ न गेण्हइ।

तओ पच्छा जाहे परियम्मेण भाविओ अप्पा ताधे जिणसमीवे वा चोद्दसपुव्विसमीवे वा।

जो गणधरो पुव्वसमिक्खिओ जहा ववहारस्स तइए उद्देसे, आयारप्पकप्पं धरेइ तं वामपासे ठवेऊण चुन्नाइं सीसे छुभइ, आवक-हाए से गणमणुजाणइ। अणुजाणित्ता तओ पच्छिमे काले सप्पुरिसेहिं निस्से-वियं आचीर्णमित्यर्थः। परमघोरं कापुरिसदुरणुचरमित्यर्थः। जिनानां कल्प जिनकल्पः। कल्पो नीतिः मर्यादा समाचारीत्यर्थः। विहारं 'वि' नानार्थं, 'हृञ्' हरणे, विविधमनेकप्रकारं कर्मरजं हरति विहरति। उपेति उपेत्य गृह्णाति प्रतिपद्यतेत्यर्थः। किं च तत् अभ्युद्यतचरित्रं? अत्यर्थं उद्यतं अभ्युद्यतं स्थविर-

---

१. नि.भा.गा. ३८१३ तथा बृ.क.भा.गा. ११३२
२. 'अप्पपरिकम्माए सपरिकम्माए य। इति क्वचित् ।

-कल्पाद्विशिष्टतरमित्यर्थः | [भा·गा. १३७०-७१] [भा·गा. १३७९ पृष्ठेऽत्र
गाहा - "संवेगजणियहासा"

संवेगजणियहासा सुत्तत्थविसारता पयणुकम्मा |
चिंतेंति गणं धीरा णिंता वि हु ते जिणाणाए ||भा·गा. १३८०||

भावसंवेगेन जनितमुत्पादितमित्यर्थः | हसनं हासः उत्सव-भूतमित्यर्थः | सूचनात् सूत्रं | अरणादर्थः | विशारदा जानका इत्यर्थः | प्रतनुः अल्पकर्मावशेषा इत्यर्थः | किं-च- तं गणं सबालवुड्ढं | धी बुद्धिरित्यर्थः | णिंता निग्गच्छंता इत्यर्थः | वि[1] नानार्थे | हु पादपूरणे | ते इति जिणकप्पि-या | जिनानामाज्ञा जिनाज्ञा उपदेशो ज्ञानमित्यर्थः | किमुक्तं भवति जिनाज्ञा इति ? उच्यते-यद्यस्ति गणधर-गुणलब्ध्युपेतः, ततः प्रतिपद्यंते जिनकल्पं | उत नास्ति तद्गुणयुक्तः ततः सत्यपि जिनकल्पसामर्थ्ये यद्यसौ स्वच्छंदं गणं व्युदस्य जिनकल्पं प्रतिपद्यते ततो आज्ञातनया लिप्यते | अतश्चिन्त-यंति गणं धीरा इति | गाहा -

ठावेऊण गणहरं, आमंतेऊण तो गणं सव्वं |
तिविहेण खमावेती सबालवुड्ढाउलं गच्छं ||भा·गा. १३७९||

आमंतेऊण गणं- आमंत्रयित्वा गणं गणधारिं व्यवस्था-प्य ततस्त्रिविधेन क्षामयंति सबालवुड्ढाकुलं गच्छमिति | गाहा-"निद्धमहुरं"

णिद्धमहुरं णिसेसं परलोगहितं गुरूण अणुरूवं |
अणुसट्ठिं देंति तहिं गणाहिवतिणो गणस्सेवं ||भा·गा. १३८१||

निद्धमिति भावनिद्धं भावमधुरं च नीसेसकरं च इहपरलोगे हियं च गुरुभिस्तीर्थकरादिभिः उपदिष्टं अनुज्ञातमित्यर्थः | अणु-सासइ गणं गणधारिस्स य | गाहा- "तव नियम"

तवणियमसंपउत्ता आवस्सग-झाणजोगमल्लीणा |
संजोगविप्पओगे अभिग्गहा जे समत्थाणं ||१३८२ भा·गा.||

तवो बारसविहो | नियमो इंदिय स्वयं युक्ताः स्वयं-प्र-युक्ताः | आवासयं पडिलेहणाइ | जोगं मणजोगाइं | झाणं सुत्तत्थतदुभयाणं गुणणं अहवा धम्मसुक्काइ | अल्लीणा युक्ता इत्यर्थः | ते परुदिता |
आयरिया भणंति- एए संजोगा विप्पओगंता | अहवा सव्व एव संयोगः

---

१. 'वी' ख प्रतौ

सदेवमणुयासुरे लोके विप्रयोगावसान: कटुविपाकश्च नि:शीलनिर्व्रतानां। एतदर्थमेव तपोनियमादिष्वप्रमाद: कार्य: |

अभिग्रहा ये जिनकल्पिकानां संघयनादिसंपन्नानां योग्या: द्रव्य-क्षेत्रकालभावयुक्ता: ते गृह्णते |

गणमामंत्रयित्वा गणधरं सेहावेइ-उपदेशं ददातीत्यर्थ: |गणधारिणो गणस्स य | [भा.गा. १३८३ - १३८८] "गणसंगहुवग्गह" गाहा -

गणसंगहुवग्गहरक्खणे तुमं मा काहिसि पमादं |
ठितकप्पो हु जिणाणं गणधरपरिवाडिया गच्छे ||१३८९ भा.गा.||

संगहेत्ति वत्थपत्ताहाराइ |उवग्गहो सुत्तत्थाइ |रक्खणं इहलोगपारलौकिकं-एहिकं-शरीरोवहितेण- सीह- वग्घाउलाणि खेत्ताणि परिहरइ |

परलोइयं-चरगभिच्छुंडाईण संसग्गिविरहिओ |इत्थिनपुंसक पसुसंसत्ताण य वसहीण परिहरणं |सपक्खे पासत्थोसन्नाइसंसग्गिवज्ज-णं |आहारोवहिमाईण य मूलगुणादसुध्दवज्जणं |एवमाइसु कज्जेसु मा हु काहिसि पमायं | किं निमित्तं? जम्हा ठियकप्पे एस जिणाइगणधरपरिवाडि-याअवोच्छित्ती भवति |गाहा- "मज्जार- रसिय"

मज्जाररसियसरिसोवमं तुमं मा काहिसि विहारं |
मा णासेहि दोण्णि वि अप्पाणं चेव गच्छं च ||भा.गा. १३९०||

गाहासिध्दं | किं निमित्तं? मा संसारकंतारे संजोगविप्प-ओगमए सारीरमाणसदुक्खभयाउले नासेहिसि अप्पाणं गच्छं च | च शब्देन चउभंगो |"वड्ढंतओ विहारो" गाहा —

वड्ढंतओ विहारो जिणपण्णत्तो दुवालसंगम्मि |
जह जिणकप्पियपरिहारियाण सेसाण वि तहेव ||भा.गा. १३९१||

जहा भट्टारो एगागी पव्वइओ, पच्छा केवलनाणविभूइ पत्तो | इंदभूइप्पमुहा-चोद्दससमणसाहस्सी संपरिवुडो |उक्तं च "संतवेरा[1] वा लवसत्तमोत्तमा:" श्लोक: |इत्यतो वड्ढंतओ उच्यते |जिणकप्पिय-परिहार-यथालंद-चतुर्दशपूर्वधराद्या: संभिन्नश्रोत: पदानुसारी कोष्ठबुध्यादिभि: वर्द्धन्तको भवति |एस अवट्ठियकप्पो चेव गणधरपारंपर्य इत्यर्थ: |सो अप्प-णा करेंतो अन्ने पडिचोएज्जासि | [भा.गा. १३९२] दिट्ठंतो- "जो अप्पणो पलित्तं" गाहा—

---

१. शान्तवैरा मुनय: पश्चात् अनुत्तरवासिदेवा:, ततो मनुष्येष्वागति: दीक्षा कैवल्यं मुक्ति-रितिसंभाव्यते |

जो सगिहं तु पलित्तं अलसो तु न विज्झवे पमाएणं ।
सो न वि सद्दहियव्वो परघरदाहप्पसमणम्मि ॥१३९३॥ भा.गा.

जो अप्पणो घरं मणिकणगरयणसंतसारसमिद्धं पलित्तं न विज्झावति किह सो अन्नेसिं विज्झवेस्सइ । एवं नाणदंसणचरित्ताणि अट्ठारससीलंगसहस्साणि रयणभूयाणि, मूलगुणउत्तरगुणपडिसेवणादोसेण पडिलेहणपप्फोडणाहाणिदोसेहिं डज्झमाणाइ जो न सारक्खइ, किं सो अन्नेसिं सीसपडिच्छयाणं सारण-वारण-पडिचोयणं वा करेस्सइ ? गाहाओ पढियसिद्धाओ —

नाणं अहिज्जिऊणं जिणवयणं दंसणेण रोएत्ता ।
न चएति जो धरेतुं अप्पाण गणं न गणहारी ॥भा.गा. १३९४॥
नाणं अहिज्जिऊणं जिणवयणं दंसणेण रोएत्ता ।
चोएति जो धरेतुं अप्पाण गणं स गणहारी ॥ १३९५॥
नाणं अहिज्जिऊणं जिणवयणं दंसणेण रोएत्ता ।
न चएति जो ठवेउं अप्पाण गणं न गणहारी ॥१३९६॥
नाण अहिज्जिऊणं जिणवयणं दंसणेण रोएत्ता ।
चोएति जो ठवेउं अप्पाण गणं स गणहारी ॥१३९७॥
णाणम्मि दंसणम्मि य तवे चरित्ते य समणसारम्मि ।
ण चएति जो ठवेउं अप्पाण गणं ण गणहारी ॥१३९८॥
णाणम्मि दंसणम्मि य तवे चरित्ते य समणसारम्मि ।
चोएति जो ठवेउं अप्पाण गणं स गणहारी ॥१३९९॥

न चएइ त्ति जो अप्पाणं धारेउं मूलउत्तरगुणेहिं किह सो अन्ने धरावेस्सइ ? एवं तवनियमसंजमसज्झायमाइसु जो अप्पाणं ठवेउं ण तरेइ किं सो अन्नं ठवेस्सइ ? एत्थ गाहाओ गमियाओ ।

एसा गणहरमेरा आयारत्थाण वण्णिता सुत्ते ।
लोगसुहाणुगताणं अप्पच्छंदा जहिच्छाए ॥ भा.गा. १४००॥
लोयसुहं सद्दादी विसया तेसिं तु जे भवे रत्ता ।
अप्पच्छंदा ते ऊ विहारो ण तु तेसऽणुण्णातो ॥१४०१॥

एस गणधरमेरा मर्यादा सीमा इत्यर्थः । आयारत्थाणं त्ति पंचविहे आयारे जुत्ताणं, आचारे स्थित: आचारस्थः तेषां वण्णिता सूत्रे प्रणीता इत्यर्थः । जे पुण लोगसुहेसु सद्दाइसु रत्ता, तेसिं अप्पछंदियाणं तित्थयरेहिं नाणुन्नाओ विहारो । गाहा — "उग्गमुप्पायणाइ"

उग्गमउप्पायण-एसणा उ चरित्तस्स रक्खणट्ठाए ।
पिंडं उवहिं सेज्जं सोहेंतो होति सचरित्ती ॥१४०२ भा.गा.॥

उग्गमुप्पायएसणाओ चरित्तसारक्खणनिमित्तं पिंडसिज्जोवहिमाइ सोहेंतो सचरित्ती भवइ। जो आहाराइणि सोहइ सो सचरित्ती भवइ। गाहा— "सीदावेइ"

सीतावेति विहारं सुहसीलत्तेण जो अबुद्धीओ ।
सो णवरिं लिंगसारो संजमसारम्मि णिस्सारो ॥१४०३ भा.गा॥

जो सीयावेइ विहारं सुहसीलगुणेहिं सो अबुद्धिओ अज्ञानीत्यर्थः। तस्य को दोषः? उच्यते-सो नवरि लिंगधारी। संयमस्वाध्यायादिषु योगेषु असौ निःसारः। ततः किं भवति? उच्यते-संसारे दीर्घकालावस्थायी भवति।

किमालंबनं कृत्वा संयमोद्यमः कार्यः? उच्यते-'तित्थयरो चउनाणी" गाहा

तित्थयरो चउनाणी सुरमहितो सिज्झियव्व य धुवम्मि ।
अणिगूहियबलवीरिओ तवोवहाणम्मि उज्जमति ॥भा.गा. १४०४॥

यदि तावद्भगवान् तीर्थकरः छद्मस्थकाले चतुर्ज्ञानोपेतः, अच्युतादिभिरिंद्रैर्महितः ध्रुवं च सिज्झितव्येत्यर्थः, अनिगूहित बलवीर्यपुरुषकारपराक्रम बाह्याभ्यंतरे तपसि उद्यमं करोति।

किं पुण अवसेसेहिं दुक्खक्खयकारणा सुविहिएहिं ।
होति ण उज्जमियव्वं सपच्चवायम्मि माणुस्से? ॥१४०५ भा.गा॥

किमिति प्रश्ने। पुनर्विशेषणे। किं पुनर्येऽन्यऽविशिष्टा संहननहीना बलवीर्यादिभिश्च, दुःखक्षयार्थेषु सुविहितेषु शोभनं विहिता सुविहिता सुव्यवस्थिता इत्यर्थः। तपोनियमसंयमादिषु योगेषु सुष्ठुतरं प्रयतितव्यं उद्यमः कार्यं इत्यर्थः। कस्मात्? यस्मात् बहुप्रत्यपायं बहुविघ्नं च मानुष्यं। "संखित्ता विव पवहे" गाहा सिद्धा—

संखित्ता विव पवहे जह वड्ढति वित्थरेण पवहंती ।
उदधिंऽतेणं च नदी तह सीलगुणेहि वुड्ढाहि ॥ भा.गा. १४०६॥

अन्ना गाहा— "मा कुणह पमायं"

मा कुणह[1] पमायं आवस्सएहिं संजमतवोवहाणेहिं ।
णिस्सारं माणुस्सं दुल्लभलाभं वियाणित्ता ॥१४०७॥ भा.गा.

अमानोना: प्रतिषेधे । मा कुर्वथ कषाययोगादिभि: प्रमादं । अवश्यकरणीयमावश्यकं । किं च तदावश्यकं ? संयमतपोध्यानादिभि: एष आवश्यक: । तप एव उपधानं तपोपधानं । किमर्थं ? यस्मान्नि:सारं मानुष्यं जलबुद्‌बुदसमानं कुशाग्रजलबिंदुसन्निभं चेत्यादि । ततश्चैवंगु-णजातीयं दुर्लभलाभं दुष्प्रापमित्यर्थ: । विविधं- अनेकप्रकारं वा ज्ञात्वा । दिट्ठंतो चोल्लगपासगाइसु तहा मानुष्यक्षेत्रं । तथाऽऽलस्यमोहस्तंभा इत्या-दि । तत: किं कार्यं ? गाहा — "तिव्वकसायपरिणया"

तिव्वकसायपरिणता परपरिवादं च मा करेज्जाह ।
अच्चासायणविरता होह सदा संजमरता य ॥१४०८ भा.गा.॥

तीव्रा नाम उत्कृष्टा दीर्घकालान्तरावस्थायी वा । कष बंधने । कषंतीति कषाया क्रोधादि, परिणति: परिणाम: परस्य वाद:, परि सर्वतो भावे, वदनं वाद: । परिवादो नाम संतगुणनासनता दोषोद्भावनं च । अमानोना: प्रतिषेधे । मा कुर्याथ । अत्यर्थमासादनविरताश्च । आयं सादयतीत्यासादना । ज्ञानचारित्रादीनां आगमनं सादयतीत्यर्थ: । भवथ सदा नित्यकालमपि संयमतपोरता । किं च — "सुस्सूसया गुरूणं" —

सुस्सूसगा गुरूणं चेइयभत्ता य विणयजुत्ता य ।
सज्झाए आउत्ता साहूण य वच्छला णिच्चं ॥१४०९॥

शुश्रूषा आहारादिभि: यथाशक्त्या गुरूणं । गुरव आचार्या । चैत्यभक्ताश्च विनययुक्ताश्च स्वाध्याये च वाचनादिष्वायुक्ता: । साधूनां बालवृद्धग्लानादिषु वत्सला नित्यं । किंच — "एस अखंडियसीलो" गाहा —

एस अखंडियसीलो बहुस्सुतो य अपरोवतावी य ।
चरणगुणसुट्ठिय त्ति य धण्णाण परीति घोसणगं ॥१४१० भा.गा॥

एष इति एभिर्गुणै: पूर्वोक्तै: युक्त: । अखंडितशील: अभग्नचरित्र इत्यर्थ: । बहुश्रुतश्च अपरोपतापी च । अपरोपतापी नाम साधूनां वर्णवादी-त्यर्थ: ।

---

१. 'कुणमप्पमाय' इति भाष्ये ।

येऽन्ये शाक्यादयो कुतीर्थाः, तेष्वसार्वज्ञकेषु परिवाद एव निर्जराहेतुः।
किं च "चरणगुण" गाहा (छंदं)- चरणं पडिलेहणाइ। गुणा मूलगुणादि।
शोभनं स्थितः सुव्यवस्थितः इत्यर्थः। धन्यानां परीति[1] घोषणकं, यशोमूलि-
-को धर्म इति कृत्वा। "बाढं ति भणिऊणं" गाहा-

बाढं ति भाणिऊणं एवं णे मंगलं ति जंपंता।
आनन्दअंसुपादं मुंचंति गुणे सरंता से ॥१४११॥ भा. गा.

ताहे सव्वे वि एतदिति यद् भगवद्भिरुपदिष्टं तदेता-
-स्माकं मंगलमिति कृत्वा आनन्द अश्रुपातं - आनन्दो ताव जं जिणकप्पं
पडिवज्जइ, अंसुपाओ जं गुरवो विप्पओगं करेंति गुणे सरंता से।
[भा. गा. १४१२] "सव्वस्स" गाहा -

सव्वस्स दायगाणं समसुहदुक्खाण णिप्पकंपाणं।
दुक्खं खु विसहिउं जे चिरप्पवासो गुरूणं तु ॥१४१३॥ भा. गा.

सर्वस्वमिति सूत्रार्थं ज्ञानदर्शनादयो वा समसुखदुःखा-
-नां विगतरागानामित्यर्थः अहवा धृतियुक्तानां निःप्रकंपानामिति
ज्ञानदर्शनचारित्रेषु निष्प्रकंपा। दुःखं विविधमनेकप्रकारं वा सहितुं
धारयितुमित्यर्थः। चिरप्रवासमित्यर्थः। केषु चिरप्रवासः? उच्यते-गुरुभिः।
गाहा - "शीलड्ढ"

सीलड्ढ गुणड्ढेहि य बहुस्सुएहि य अपरोवतावीहिं।
पवसंतेहिं मएहि य देसा उ खंडिया होंति ॥१४१४॥ भा. गा.॥

शीलं नाम प्रकृतिः स्वभाव इत्यर्थः। गुणा मूल उत्तरगुणा।
मूलगुणादिभिश्च आढ्या बहुश्रुतैः अपरोपतापिभिश्च पवसणं नाम जिण-
-कप्पाइपडिवत्ती देसांतरगमनं वा। ततः किं भवति? अहवा मरंतेसु देसा
शून्या भवंति। [भा. गा. १४१५-१६] "थामावहारविजढा" गाहा-

थामावहार विजढा काउं गहणं गाहणं चेव।
सुत्तत्थझरियसारा गेण्हंति अभिग्गहे धीरा ॥१४१७ भा. गा.॥

ते अच्छमाणा कहेंति पव्वाविंति य सीसपडिच्छय।
सुत्तत्थतदुभयाइं थामावहारविजढा उच्छाहबलविरीयपुरिसकारपरक्क-
-मेण सयं गिण्हंति गाहयंति सीसे-चरणकरणाइ। सुत्तत्थ झरियसारा झरि-
यं गुणितं जितं परिजितमित्यर्थः। ताहे अभिग्गहा गेण्हंति जिणकप्पिय-

---

१. प्ररिजाति - प्रगाचछति।

पाउग्गे धीरा धी बुद्धिरित्यनर्थान्तरं |एवं ताव समत्थो पडिवज्जइ | [भा.गा. १४१८-१४२१]

जो पुण सुत्तत्थाइहिं निम्माओ वि देहे दुब्बलो हवइ सो उ ण पडिवज्जइ |गाहा-"देहस्स'—

देहस्स दुब्बलत्तं आयरियाणं च दुल्लभपसादा |
रोगपडिबंधं ण सहति सीउण्हादी अपडिभोगी ||१४२२ भा.गा||

देहदुब्बलदोसा य संहननदुर्बला इत्यर्थः|दुल्लभा य अविणी-याणं गुरुप्पसाया, ताहे तेण चेव ण पढियं, ताहे अयाणंतो किं पडि-वज्जइ? अन्नो पुण सुत्तत्थाइनिम्माओ विहोऊण अपडिभोएणं[1] चेव सीदति|[भा.गा. १४२३-२४-२५] गाहा-'कासे सासे'

कासे सासे जरे दाहे जोणीसूले भगंदरे |
अरिसा अजीरए दिट्ठी मुद्धसूले अकारए ||१४२६|| भा.गा.
अच्छीवेयण तह कण्णवेयणा कंदु कोढ दगउरं |
एते ते सोलस वी समासतो वण्णिता रोगा ||भा.गा.१४२७||

कासो सासो जरदाहाईणि सूल भगंदरार्षः झरकं[2] दृष्टिमूर्ध-शूलः अकारकादिभिः तथा शीतोष्णपरीषहाक्षुधातृषाऽलाभादिभिः परिषहैः असहिष्णवः परिषहाः परिषोढुं समर्था न भवंति |जिनकल्पप्रतिपत्ति-समर्थाः पूर्वाभिहितैश्च षोडशभिः कासस्वासादिभिः जिनकल्पस्य समर्था न भवंति |अन्ने पुण [भा.गा. १४२८]-"सो गामो सा वइया"

सो गामो सा वइया तं भत्तं भद्दओ जणो जत्थ |
एताइं संभरंतो गुरुकुलवासं ण रोएति ||१४२९ भा.गा.||

गाहासिद्धं|[भा.गा. १४३०] "सछंदुट्ठाण" गाहासिद्धं—

सच्छंदुट्ठाणाणिवज्जणस्स सच्छंदगहितभिक्खस्स |
सच्छंदजंपियस्स य मा मे सत्तू वि एगागी ||१४३१||

सछंदुट्ठाणं नाम सछंदेण उट्ठाणनिवेसणं अपडिलेहिए|सछंदग-मणेरियाइ गमणं अणुवउत्तस्स|अहवा वइया गामे संखडी|अहवा चक्के थुभे|सच्छंदभिक्खगमणस्स उग्गमाइ असुद्धमवि|सच्छंदजंपियं

---

१. अपरिपालनेन जिनकल्पस्य |

२. क्षरकः येन देहबलं क्षरतीति संभाव्यते|

भासा सावज्जा अगारभासासु वा | मा मम सत्तु वि एगागी | गाहा-[भा. १४३२-३३]

कप्पे सुत्तत्थकल्पः मर्यादा इत्यर्थः | सूत्रार्थ विशारदः | संघयण-वीर्यादियुक्तस्य जिनकल्पनिष्पन्नस्य कल्पते नित्यमभिगृहीतेषणा |

खेत्ते काल-चरित्ते तित्थे परियाग आगमे वेदे |
कप्पे लिंगे लेस्सा गणणे झाणे यऽभिग्गहे ||१४३४|| भा. गा.

खित्तेति कयरम्मि खेत्ते होज्जा जिणकप्पिओ? जम्मणे ण पन्नरससु होज्जा | साहरणं पडुच्च अन्नतरंमि खेत्ते होज्जा |

काले ओसप्पिणीए[1] जम्मणेण दोहिं, संति भावेण तिहिं | उस्सप्पिणीए जम्मणेण तिहिं, संतिभावेण दोहिं |

चउत्थे[2] पलिभागे चरित्तेण पडिवज्जमाणओ सामाइए वा छेओवट्ठावणिए वा | पुव्वपडिवन्नओ अन्नतरे होज्जा | तित्थे | नो अतित्थे |

परियाओ दुविहो- गिहत्थपरियाएण जहन्नेण एकूणतीसवासपरियाए, उक्कोसेण पुव्वकोडी |

आगमो जहन्नेण नवमपुव्वस्स तइयं आयारवत्थुं, उक्कोसेण भिन्नाइं दस | अहवा आगमं किं करेंति? पडिवन्ना न करेंति |

कयरंमि वेदे होज्जा? पडिवज्जमाणयं पडुच्च पुरिसवेए | पुव्वपडिवन्नओ सवेदओ अवेदओ होज्जा |

ठियकप्पे वा अट्ठियकप्पे वा

लिंगे पडिवज्जमाणयं पडुच्च दव्वओ भावओ य सलिंगे | पुव्वपडिवन्नयं पडुच्च भावे नियमा सलिंगे, दव्वे भइओ |

लेस्साए पडिवज्जमाणओ तिहिं विसुद्धाहिं, पुव्व पडिवन्नओ छण्णमन्नतरीए |

गणण पमाणेण केवइया होज्जा? पडिवज्जमाणयं पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि | जइ अत्थि, जहन्नेण एको वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सयपहुत्तं | पुव्वपडिवन्नए पडुच्च जहन्नेण सहस्स-पहुत्तं, उक्कोसेण वि सहस्सपहुत्तं |

अभिग्गहा जिणकप्पियपाउग्गा अत्थि | सेसा नत्थि |

झाणे पडिवज्जमाणयं पडुच्च धम्मे | पुव्वपडिवन्नयं पडुच्च बितिए[3]वि |

---

१. अवसर्पिण्यां जन्मतः तृतीय-चतुर्थारकयोः सद्भावतस्तु तृतीयचतुर्थपञ्चमारकेषु | उत्सर्पिण्यां जन्मतः द्वितीय तृतीय-चतुर्थारकेषु, सद्भावतस्तु तृतीयचतुर्थारकयोरिति |

२. अरक इति | ३. शुक्लेऽपीति |

ते पव्वावेंति मुंडावेंति वा ? नत्थि। उवदेसं पुण से दिंति।

मणसमावन्ने वि अणुग्घाइयं पायच्छित्तं वहंति। असिवाइ कारणं नत्थि। नवरं जंघाबले खीणे एगंमि खेत्ते अच्छंति, तत्थ वि अणुग्घायं पायच्छित्तं वहंति।

निप्पडिकम्मसरीरा ते भगवंता अच्छिमलं पि नावणेंति।

तइयाए पोरुसीए भत्तं पंथोय। तइयाए हिंडिऊण भिक्खं गहाय अडविं गंतूण तत्थ समुद्दिट्ठा सन्नं वोसिरित्ता पडिग्गहं एगपासे ठवेत्ता सावसेसाए तइयाए पोरुसीए वसहिं एंति।

जत्थ आवज्जइ लहुगं तत्थ वि गरुअ-पायच्छित्तं वहंति। एस जिणकप्पो समत्तो। सेसं जहा मास कप्पो [भा.गा. १४३५-३६]

इयाणिं थेरकप्पो। तत्थ गाहा – "तिविहंमि संजमंमि'

तिविहम्मि संजमम्मि उ बोधव्वो होति थेरकप्पो तु।
सामाइय-छेद-परिहारिए य तिविहम्मि एयम्मि ॥१४३७ भा.गा॥

थेरकप्पो सो तिविहो-सामाइयछेओवट्ठावणिओ परिहारविसुद्धिओ त्ति।
सामाइयो ठिये अट्ठियकप्पे वा।
छेओवट्ठावणिओ परिहारविसुद्धिओ ठियकप्पे च्चेव।
तत्थ सामाइयसंजमो ठियकप्पे अट्ठियकप्पे वा।
बिइओ नाम छेओवट्ठावणिओ सो ठियकप्पो नियमा।
तइओ परिहारविसुद्धिओ सो नियमा ठियकप्पो।

परिहारविसुद्धिओ तप्पढमयाए जिणपायमूले पडिवज्जंति। जहा मासकप्पे। नवरि उदीरणमेत्तं-गणप्पमाणेण जहन्नेण तिन्नि गणा, उक्कोसेण सयग्गसो। पुरिसप्पमाणेण जहन्नेण सत्तावीसं पुरीसा उक्कोसेण सयपहुत्तं। छट्ठे[1] उद्देसे तेसिं सुत्तं विभाविज्जइ।

ते दुविहा- जिणकप्पिया थेरकप्पिया य।
जिणकप्पिया आवकहिया।

थेरकप्पिया अट्ठारस मासे अच्छिऊण कयाइ जिणकप्पं पडिवज्जंति, कयाइ तमेव उवसंपज्जित्ताणं विहरंति। अहवा तमेव गच्छं एंति। सेसं जहा मासकप्पे।

पुव्वपडिवन्नए पडुच्च जइ अत्थि-जहन्नेणं सयपहुत्तं, उक्को-सेण सहस्सग्गसो।

---

१. बृहत्कल्पसूत्रस्य षष्ठउद्देशक इति।

अहालंदिया वि एमेव। नवरि दुविहा-गच्छपडिबद्दा य गच्छनिग्ग-
-या य जहा मासकप्पे। जे अपडिबद्दा ते दुविहा-जिणकप्पिया य थेर-
-कप्पिया य। जिणकप्पिया किंचि पडिक्कम्मं न करेंति। थेरकप्पिया गच्छ-
-माण[1] त्ति नियमा पडिग्गहधारी। तत्थ वि गिलाणस्स जं किंचि करणिज्जं थेरकप्पिया फासुएण पडियारेण अहालंदियस्स करेंति। सेसं जहा मास-
-कप्पे। नवरं गणप्पमाणेण जहन्नेण तओ गणा, उक्कोसेण सयग्गसो एवं पडिवज्जमाणेयं पुरिसप्पमाणेण जहन्नेण पन्नरस, उक्कोसेण सयग्गसो। पुव्वपडिवन्न पडुच्च जहन्नेन सयग्गसो, उक्कोसेण सह-
-स्सपहुत्तं। सेसा जहा जिणकप्पियाण ठिई।

एत्थ थेरकप्पिया वन्नेयव्वा जहा कप्पे। अज्जाण मासकप्पो वन्नेयव्वो जहा कप्पे।

शिष्य आह - जिनकल्पाद्या: द्रव्यक्षेत्रकालभावाभिग्रहेषु अभिगृहीतेषणया आहारादी गृह्णंति। स्थविरकल्पिका: किमर्थं प्रकीर्णेष-
-णाया: आहारादि गृह्णंति? प्रकीर्णा अनभिगृहीतेषणा इत्यर्थ:।

आचार्य आह - बालवुड्ढथेराणं बालवुड्ढा य कारणे पव्वाविया। ते जइ अभिग्गहियाए एषणाए गिन्हंति, अभिग्गहिएसणाए य चंदावेज्ज-
सरिसो लाभो। सेहाईणं च अभावियाणं दुब्बलसंघयणाणं नाणदरिसणा-
-इसु य पडिबद्धाणं दिवसं हिंडंताण चेव लभिस्संति। पच्छा संघयण-
-दुब्बलत्तणेण अभावियत्तणेण संजमं छड्डेहिंति। पासत्थाईहिं परतित्थिएहिं वा गमिस्संति। पच्छा तित्थवोच्छेओ भविस्सइ। गच्छो य महिड्ढिओ सबालवुड्ढाउलो रयणागरभूओ। जिणकप्पियाणं च गच्छाओ चेव प्रसूति: प्रवृत्तिरित्यर्थ:। जम्हा गच्छे पकिन्नाए सुविसुद्धाए हिंडमाणा उग्गमाइसुद्धं आहाराइ गिन्हंता भुंजंता य जहन्नेण अट्ठपवयणमायाओ, उक्कोसेण चोद्दसपुव्वाणि अहिज्जंति अवोच्छित्तिकरा य हुंति। ओहिमणपज्जव-केव-
-लनाणं च उप्पायंति। सोहम्माइकप्पोवएसु जाव सव्वट्ठसिद्धे वि उववज्जं-
-ति। एएण कारणेण गच्छे पडिकिन्नेसणाई। गाहा॥

थेरकप्पियाणं खेत्तकाला जहा मासकप्पे। पव्वावणाइ जहा मास-
-कप्पे। [भा.गा. १४३८ - १४४२]

इयाणिं लिंगकप्पो- सो पढमं जिणाणं। तत्थ गाहा —

रूढणहकक्खणिगिणो मुंडो दुविहोवही जहण्णो सिं।
एसो उ लिंगकप्पो णिव्वाघातेण णेयव्वो ॥१४४३ भा.गा.॥

रूढनहरोमया अवट्ठिय धुयलोयया निगिणो मुंडो। जहन्नेण

1. गच्छाइ्ति संभाव्यते तथा 'गच्छमाणिंति' पा. प्रतौ।

दुविहो उवही रयहरणो मुहपोत्तिया य। एस लिंगकप्पो। [भा.गा. १४४४-४५]
गाहा -

अच्छिद्दपाणिपाया वइरोसमसंघयणधारी ॥ भा. गा. १४४६ पश्चार्ध
उयहिविव अक्खोभा सूरो इव तेयसा जुत्ता ॥ भा. गा. १४४७ पश्चार्धं

अच्छिद्दपाणि जिणा अच्छिद्दपाणिपाया वइरोसहसंघयणधारी, समुद्र व गंभीरा, सूर्यवत्तपोतेजराशियुक्ता:। गाहा —

अव्वावण्णसरीरा वइगंधो ण भवते सरीरस्स।
रवतमवि न कुच्छते सिं परिकम्मं ण वि य कुव्वंति ॥ १४४८॥

अव्वावन्नसरीरं नाम विगंधसरीरया न भवइ। रवयं पि न कुच्छइ। बाह्य शरीर परिकर्म रहिता। धीरा बुद्धिमंता इत्यर्थ:। ईदृशा पाणिपात्रधरा: जिनशासने शास्त्रे विनिर्दिष्टा:। [भा. गा. १४४९] गाहा -

दुविहो अतिसेस तेसिं णाणातिसओ तहेव सारीरो।
णाणातिसओ ओहिमणपज्जव तदुभयं चेव ॥ १४५० भा. गा.॥
दुविहो तेसिं अइसओ-नाणाइसओ सरीराइसओ य।
नाणाइसओ-ओहिमणपज्जव सुत्तत्थतदुभयं च।
तिवली अभिन्नवच्चा सारीरा होंति अइसेसा।
तेसिं जहन्नो दुविहोवही-रयहरण मुहपोत्तिया य।
उक्कोसो पंचविहो-रयहरणं मुहपोत्ती कप्पा य तिन्नि एस पंचविहो।
[भा. गा. १४५१-५३] गाहा— "उव्वट्टण"

उव्वट्टण घंसणमज्जणा य णहणयण दंतसोभा य।
एते उवघाता खलु भवंति जिणलिंग कप्पस्स ॥ १४५४ ॥ भा. गा.

उव्वट्टणाइं सरीरस्स, घंसणा धोवणा य पायाईणं, नह-नयण-दंत सोहा य, दंतकट्ठाइएसु, (उवकरणाइसु) जिणकप्पियाणं उवघाओ भवइ।
एयाणि चेव थेरकप्पियाणं जाणि चोद्दसविहउवहि अइरेगाणि जाणि य उवट्टणाईणि निक्कारणे पच्छित्तं। कारणे भइयव्वं।
वासत्ताणेण लिंगभेओ न भवति, तं तु अणुन्नायं। केच्चिरं कालं? उक्कोसेणं चाउम्मासं, जहन्नेण सत्तरि राइंदिया ठियकप्पे अट्ठियकप्पे वा। असिवाइकारणेहिं विवज्जासियं। [भा. गा. १४५५-५८ तथा १४६०]

नवरं एतदुक्तं भवति — "गाहा - निरूवहयलिंग"

णिरूवहतलिंगभेदे गुरूणा कप्पति य कारणज्जाते |
गेलण्ण रोग लोए सरीर वेयावडियमादी ॥१४५९॥ भा.गा.

निक्कारणे गिहत्थलिंगं वा अन्नलिंगं वा करेइ मूलं |निक्का-रणे कडिपट्टयं बंधइ -चउगुरु |गुरुलपक्खे एगओ दुहओ वा अद्धसकडी -चउगुरु |संजइ पाउए -चउलहु |खंधे पुच्छे मासलहुं |

बिइयपए कारणजाए रायदुट्ठमाइहिं गिहलिंगमन्नलिंगं वा करेंतो सुद्दो |कडिपट्टयं पि लोयं करेंतो, भायणं उयारेंतो ऊलयंतो[1] वा, गिलाणं व-हंतो सयं गिलाणो अतरंतो कडिपट्टयं काऊण चंकमेज्जा |पाहुणयं वा विसामिंतो कडिपट्टयं करेज्जा |गरुलपक्खं अद्दं सकडीं वा अणाभोएण सेहो वा करेज्जा |संजइपाउयं वासारत्ते करेज्जा |वासात्तणाइ खंधे पुच्छा-ई तेसिं पडुच्च अहवा सिंधुमाइदेसं पडुच्च संजइपाउयं करेज्जा |
[भा.गा. १४६१] गाहा "सक्कार - वंदण"

सक्कार वंदण णमंसणा य पूजा कहणा य लिंगकप्पम्मि |
पत्तेय बुध्दमादी लिंगे छउमत्थ तो गहणं ॥भा.गा.१४६२॥

एतेसिं पुण दव्वभावलिंगाणं दव्वलिंगे इमे गुणा भवंति-सक्का-रिज्जइ इंदाइहिं केवलज्ञानोत्पत्तौ, कहिंतो य संमओ सलिंगेण |इहरा गिहि-लिंगेण अन्नलिंगेण वा केवलनाणे वि उप्पन्ने कहयंतस्स छउमत्थो जणो न सद्दहइ- तुमं कीस मप्पणा न करेसिं[2]? जं पुण पत्तेयबुद्धाणं गिहिलिंग वा अन्नलिंग वा तं न पुएइ कोइ, न वा कोइ पुच्छइ-केरिसो वा तुज्झं धम्मो ? तं छउमत्थाणं गहणमेव नागच्छइ |[भा.गा.१४६३-१४६८]
लिंगकप्पो समत्तो |

इयाणिं उवहिकप्पो |गाहा - "ओहे उवग्गहंमि य"

ओहे उवग्गहे य दुविहो उवही तु होति णायव्वो |
ओहोवही तु तिण्हं ओवग्गहिओ भवे दोण्हं ॥१४६९ भा.गा.॥

सो दुविहो - ओहोवही उवग्गहीओ य |जिणकप्पे थेरकप्पा-

---

१. प्रक्षालयन्निति |
२. 'धम्मं इति शेषः

इयाणं च ओहोवही। उवग्गहीओ य थेरकप्पियाणं।

उवग्गहीओ साहूण साहूणीण य।

तिण्हं ति किमुक्तं भवति ? जिणकप्प- थेरकप्प- अहालंदियाण तिण्हंपि ओहोवही समाणो। तत्थ जिणकप्पाऽथालंदकप्पाइयाणं च तिण्हं ओघो उ।

थेराणं ओघोवही सामन्नो, उवग्गहीओ विसेसेण साहूणं [भा.गा. १४७०] तत्थ गाहा – "बारस चोद्दस"

बारस चोद्दस पणुवीस णव य एक्को य णिरुवही चेव।
जिण थेर अज्ज पत्तेयबुद्ध तित्थकर तित्थकरे ॥१४७१॥ भा.गा.

बारसत्ति जिणकप्पियाणं पडिग्गहधारीणं पाउरणसहियाणं।

चोद्दसविहो थेरकप्पियाणं ओहोवही।

पणवीसइविहो अज्जाणं ओहोवही।

नव पत्तेयबुद्धाणं।

एगो तित्थयराणं पव्वयंताणं। तेणं परं तित्थयरा निरोवहिणो। एवं जिणकप्पियाईणं ओहोवहिपरिमाणं भणियं। गाहा- "पाणि-पडिग्गहधारीय"

पाणीपडिग्गहीया पडिग्गहधारी य होंति जिणकप्पे।
थेरा पडिग्गहधारी कप्पादीया तु भइयव्वा ॥१४७२॥ भा.गा.

जिणकप्पिया दुविहा- पाणिपडिग्गही पडिग्गहधारी य। थेरकप्पिया नियमा पडिग्गहधारी। कप्पाइया पत्तेयबुद्धा ते भइयव्वा- पाणिपडिग्गहिया वा पडिग्गहधारी वा। गाहा- "बिय तिय"

बिय तिय चउक्क पणए नव दस एक्कारसेव बारसगं।
एते अट्ठ विकप्पा उवहिम्मि होंति जिणकप्पे ॥१४७३॥ भा.गा.

बियं[1] तिय[2] दुविहो पाणिपडिग्गहिओ जिणकप्पिय, चउक्कसोत्तिओ उन्निओ य दो कप्पा, पणयं,- दो सोत्तिया तइओ उन्निओ। नवपडिग्गहधारी- जिणकप्पियस्स। दस- तस्सेव पाउरणसहिअस्स। एगो सोत्तिओ बीओ उन्निओ कप्पो। बारस- तिन्निवि कप्पा, नव य रयहरणाइ। [भा.गा. १४७४] एए उवहिविगप्पा जिणकप्पियाणं तु। "अहवा दुगं च पणगं"

---

१. रजोहरणं मुखवस्त्रिका च।
२. कल्पसहितस्य।

गाहासिद्धं ।

अहवा दुगं च पणगं उवहिस्स तु होंति दोण्णि वि ।
विकप्पा पाणिपडिग्गहियाणं अपाउय-सपाउयाणं च ॥१४७४॥

तिन्नेव य पच्छागा गाहासिद्धं [भा.गा. १४७५-७६] भा.गा.

'पत्तं पत्ताबंधो' गाहा सिद्धं —

पत्तं पत्ताबंधो पातट्ठवणं च पातकेसरिया ।
पडलाइं रयत्ताणं च गोच्छओ पातणिज्जोगो ॥१४७७॥ भा.गा.
एए चेव दुवालस मत्तउ अतिरेग चोलपट्टो य ।
एसो य चोद्दसविहो उवहि खलु थेरकप्पाणं ॥१४७९॥ भा.गा.

"एए चेव दुवालस" पत्तं पत्ताबंधो थेराणं गाहासिद्धं ।पुणो वि तिन्नेव य पच्छागा थेराणं गाहासिद्धं ।

"अज्जाणं" "उग्गहणंतग" गाहासिद्धं —

अज्जाणं एसेव य चोलत्थाणम्मि णवरि कमढं[1] तु ।
अतिरेग अंगलग्गा इमे तु मुणेयव्वा ॥१४८०॥ भा.गा.
उग्गहणंतग पट्टो अड्ढोरुग चलणिया य बोधव्वा ।
अब्भिंतर-बाहिणियंसणी य तह कंचुए चेव ॥१४८१॥

"उक्कच्छिया" गाहासिद्धं—

उक्कच्छिय वेकच्छिय संघाडी चेव खंधकरणी य ।
ओहोवहिम्मि एत्ते अज्जाणं पण्णवीसं तु ॥भा.गा. १४८२॥

उवहि कप्पस्स तइओद्देसे ।"सत्त य पडिग्गहम्मि" गाहा सिद्धं ।

सत्त य पडिग्गहम्मि रयहरणं चेव मुहपोत्ती ।
एसो तु नवविकप्पो उवही पत्तेयबुद्धाणं ॥१४८३ भा.गा.॥

एसो नवविहो य उवही पत्तेय-बुद्धाणं ।"एगो तित्थगराणं" गाहासिद्धं-

एगो तित्थगराणं णिक्खममाणाणं होति उवही उ ।
तेण परं निरुवहि ऊ जावज्जीवाए तित्थगरा ॥१४८४ भा.गा॥

"जिणा बारसरूवाणि" गाहासिद्धं ।

जिणा बारसरूवाइं थेरा चोद्दसरूविणो ।
अज्जाण पण्णवीसं तु अतो उड्ढं उवग्गहो ॥१४८५ भा.गा॥

एस उवहिकप्पो ॥

इयाणिं संभोगकप्पो ।सो संभोगो छव्विहो —

---

1. भोजनार्थं पात्राविशेष इति

ओहसंभोगो, अभिग्गह संभोगो, दाणसंभोगो, अणुपालणासंभोगो, उववायसंभोगो, संवाससंभोगो छट्ठो [भा.गा. १४८६] तत्थ पढम संभोगो बारसविहो —

उवहि सुत्त भत्तपाणे अंजलीपग्गहे इय।
दावणा य निकाए य अब्भुट्ठाणे त्ति आवरे ॥१४८९ भा.गा॥
कितिकम्मस्स य करणे वेयावच्चकरणे इय।
समोसरण सन्निसेज्जा कहाए य पबंधणे ॥१४९० भा.गा॥

उवहि त्ति पयं, तस्सिमाए गाहाए अत्थो अणुगंतव्वो—

उग्गमुप्पायणेसणा य परिकम्मणा य परिहरणा।
संजोगविहिविभत्ता छट्ठाणा हुंति उवहिंमि ॥१४९१॥ भा.गा.

संभोइओ संजओ संभोइयस्स संजयस्स उवहिं कारणे उग्गमेण सुध्दं उग्गमेति।

संभोइओ निक्कारणे सुध्दं पि उग्गमेइ पायच्छित्तं। विसंभोइओ य संभोइओ संभोइअस्स उवहिं उग्गमेण असुध्दं निक्कारणे उग्गमेइ पायच्छित्तं जेण असुध्दं, विसंभोगो वा। जइ आउट्टइ संभोगो पायच्छित्तं च से दिज्जइ। एक्कसि दो तिन्नि वारे। तिण्ह परेण आउट्टं तस्स विसंभोगो कीरइ। अह पढमए वि न आउट्टइ ता विसंभोगो कीरइ।

संभोइओ संजओ संभोइयसंजयस्स उवहिं कारणे सुध्दं अलभमाणे उग्गमेण असुध्दं न उग्गमइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा। अह उप्पाएइ सुध्दो।

संभोइओ संजओ संभोइयाए संजईए उवहिं कारणे सुध्दं उग्गमेइ संभोगो। निक्कारणे सुध्दं पि उग्गमेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा। संभोइओ संजओ संभोइयाए संजईए उवहिं निक्कारणे उग्गमेण असुध्दं उप्पाएइ पायच्छित्तं चउगुरु, उवही य जेण असुध्दं उप्पाएइ। आउट्टंतस्स संभोगो। अणाउट्टंतस्स विसंभोगो। असुध्दं उग्गमेण तं पायच्छित्तं।

संभोइओ संजओ संभोइयाए संजईए उवहिं उग्गमेण सुध्दं अलभंतो असुध्दं ण उग्गमेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा।

संभोइया संजई संभोइयाए संजईए उवहिं कारणे उग्गमसुध्दं उग्गमेइ संभोगो। निक्कारणे सुध्दं पि उग्गमेंतीए पायच्छित्तं विसंभोगो वा। संभोइया संजई, संभोइयस्स संजयस्स उवहिं कारणे असिवा- संभोइयाए संजईए उवहिं कारणे उग्गमसुध्दं अलभंती उग्गमेण असुध्दं उग्गमेइ संभोगो। अह संते बल- वीरिए न उग्गमेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा। संभोइया संजई संभोइयस्स संजयस्स उवहिं निक्कारणे उग्गमसुध्दं उग्गमेइ पायच्छित्तं चउगुरु विसंभोगो वा। संभोइया संजई

-इसु अद्धाणाइसु वा विवित्ताणं[1] उग्गमसुध्दं उप्पाएइ संभोगो। सइ बले न उप्पाएइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा। संभोइया संजई संभोइयस्स उवहिं कारणे सुध्दं अलभंती उग्गमअसुध्दं उग्गमेइ संभोगो। सइ बले न उग्गमेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा।

संभोइओ संजओ असंभोइयस्स संजयस्स संविग्गस्स उवहिं निक्कारणे उग्गमसुध्दं उग्गमेइ पायछित्तं विसंभोगो वा मासलहुं। पासत्थाईणं चउलहु। अहाछंदे चउगुरु।

संभोइओ संजओ असंभोइयस्स संजयस्स उवहिं कारणे उग्ग-मसुध्दं देइ संभोगो। अह सुध्दं अलभंतो उग्गमअसुध्दं देइ संभोगो। अह सइ बले उग्गमअसुध्दं न देइ पायछित्तं विसंभोगो वा।

संभोइओ संजओ असंभोइयाए संजईए उवहिं निक्कारणे उग्गमसुध्दं देइ चउगुरु पायछित्तं विसंभोगो वा। आउट्टंतो कारणे सुध्दो।

संभोइओ संजओ संभोइयाए संजईए उवहिं कारणे उग्गमसुध्दं अलभंतो असुध्दं उग्गमेऊण देइ संभोगो। सइ बले न देइ पायछित्तं वि-संभोगो वा।

एवं संजईण वि। संभोइयाए संजई असंभोइयाए संविग्गाए उवहिं उग्गमसुध्दं निक्कारणे देइ पायछित्तं मासलहुं विसंभोगो वा। पासत्थाए चउलहुं। अहाछंदाए चउगुरु। अह कारणे उग्गमसुध्दं असुध्दं वा देइ संभोगो। सइ लाभे अदेंतीणं पायछित्तं विसंभोगो वा।

संजयाणं पुण पासत्थसंजईणं निक्कारणे दिंताणं छल्लहु अणाउट्टंते। अहाछंदीणं छग्गुरु। कारणे पुण असिवाइहिं विवित्तयाणं संवि-ग्गीहुंतीयाणं न देंति पायछित्तं विसंभोगो वा।

एवमुप्पायणाए, एवमेसणाए वि।

संभोइओ संजओ संभोइयस्स उवहिं कारणे विहीय परि-क्कम्मेइ संभोगो। निक्कारणे विहीय मासलहु विसंभोगो वा। कारणे अविहीय सुध्दो।

संभोइओ संजओ संभोइयाए संजईए उवहिं निक्कारणे विहीय अविहीय वा परिक्कम्मेइ पछित्तं चउगुरु विसंभोगो वा। कारणे विहीय अविहीय वा सुध्दो। अह कारणे विहीं वा न करेइ पायछित्तं विसंभोगो वा।

एवं संजईण वि सपक्खे परपक्खे वा। एवं असंभोइयाण वि संजय-संजईणं। कारणे सव्वत्थ सुध्दो। निक्कारणे पायछित्तं विसंभोगो वा।

संभोइयाणं ताव संजईण[2] उस्सगेण परिकम्मेयव्वो विहीए। अन्नसं-

---

१. नट्टमुषितादिकारणे

२. "संजयाण" इति क्वचित्।

भोइयाण वि संजईण कारणे विहीय परिकंमेंतो सुद्धो। निक्कारणे पाय-
-च्छित्तं विसंभोगो वा। एवं संजईण वि परिक्कम्मंतीणं। तत्थ वि पायच्छित्तं
विसंभोगो वा निक्कारणे। कारणे विहीय संभोइयाऽसंभोइयाणं संजयाणं
संजईणं पि सुद्धो। परिकम्मणेत्तिगयं।

इयाणिं परिहरणा। परिहरणा नाम परिभोगो। संभोइओ संभोइयस्स
उवहीविहिपरिहरणाए परिहरति संभोगो। जइ अविहीय परिहरइ पायच्छित्त-
-त्तं मासलहुं विसंभोगो वा। अविही नाम खोमियं बाहिं उण्णियं अब्भंतरे।

संभोइओ संजओ संभोइयाए संजइए उवहिं निक्कारणे विही
अविहीय वा परिहरइ पायच्छित्तं चउगुरु, विसंभोगो वा अणाउट्टंतस्स। विवित्ताइ-
-कारणे सुद्धो।

संभोइओ संजओ अन्नसंभोइयस्स उवहिं निक्कारणे विहीय
अविहीय परिहरइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा। संविग्गाण मासलहुं। अहाच्छं-
दाण चउग्गुरू। पासत्थाईण चउलहु। संजईण संविग्गाण चउगुरु। पासत्थीण
छलहु। अहाछंदीण छगुरू। कारणे विहीय अविहीय सुद्धो। परिहरणं तिगयं।

एस जह एक्कसंजोगो एवं दुसंजोगो वि उग्गम उप्पायणेसणाए
परिकम्मणाए परिहरणाए य। एत्थ दस दुयसंजोगा, दस तियसंजोगा, पंच
चउक्का संजोगा, एगो पंचसंजोगो। एएण संजोगविहाणेण जो निप्फण्णो
सो छट्ठो। उवहित्तिगयं। इयाणिं

सुए त्ति वायणा पडिच्छण पुच्छणा य परियट्टणा य कहणा य।
संजोगविहि विभत्ता सुत्तनाणे होंति छट्ठाणा ॥ भा.गा. १४९२॥

संभोइओ संभोइयं विहीय वाएइ संभोगो। अविहीय पायच्छित्तं
विसंभोगो वा। संभोइओ संभोइयं पत्तं न वाएइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा।
संभोइओ असंभोइयं वाएइ, आउट्टंतस्स पायच्छित्तं, अणाउट्टंतस्स विसंभोगो
वा पासत्थाइ चउलहु। अहाछंदे षड्गुरू। संजईओ निक्कारणे वाएइ संभो-
इया असंभोइयाओ य, आउट्टंतस्स ङ्का, अणाउट्टंते विसंभोगो।

संभोइया संजई संभोइयं संजइं वाएइ संभोगो, संभोइया संजई सं-
भोइयं संजयं निक्कारणे वाएइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा। एवं असंभोइयं
संजयं संजइं य। वायणत्ति गयं।

इयाणिं पडिच्छणा-संभोइओ संभोइयस्स मूलओ[1] सुत्तं पडिच्छइ
संभोगो। असंभोइयस्स मूलाओ संभोइए संते मासलहु। पासत्थाइ ङ्क। अहाछंदे
चउगुरू। संजईण संभोइयाऽसंभोइयाणं ङ्का। पासत्थीण फ्र। अहाछंदीण फ्रा जहेव
वायणाए।

१ समीपे

संविग्गो संविग्गस्स पुच्छं भणइ संभोगो। अन्नस्स वि एग दुग तिन्नि पुच्छाओ भाणियव्वाओ। केइ भणंति पासत्थाईणं पुच्छा वि न भाणियव्वा।

संभोइओ संजओ संभोइय संजईण निक्कारणे पुच्छं भणइ ङ्क विसंभोगो वा, कारणे सुद्धो। एवं संजईण वि सट्ठाणे जहा संजयाण।

इयाणिं परियट्टणा - संभोइओ संभोइएण समं परियट्टेइ संभोगो। जहा वायणाए। संजईण वि तहेव।

संभोइओ संभोइयस्स अत्थं कहेइ संभोगो। जइ पत्तस्स न कहेइ विसंभोगो। जहेव वायणाए तहेव दोण्ह वि वग्गाणं कहणाए।

एएहिं चेव संजोगा कायव्वा। एवं छट्ठं पयं। सुयं ति गयं।

इयाणिं भत्तपाणेत्ति —

उग्गमुप्पायणेसणा य संभुंजणा निसिरणा य।
संजोगविहिविहत्ता भत्तपाणे वि छट्ठाणा ॥भा.गा. १४९३॥

उग्गमुप्पायणेसणा य जहेव उवगरणे तहा इह वि भत्तपाणे।
संभोइओ संभोइएणं संभुंजणारिहेण वि सद्धिं संभुंजइ संभोगो।

संभुंजणाऽणरिहेण सद्धिं संभुंजइ ङ्क विसंभोगो वा। के य ते असं-भुंजणारिहा? कुष्ठी क्षयगृहीत प्रभृतयः, विसंभोगो। संभोइओ असंभोइअं संवि--ग्गं संभुंजणसंभोएण संभुंजइ मासलहु विसंभोगो वा। पासत्थाई ङ्क। अहाछं--देण ङ्का। अहवा अणालोइअ गुणदोसं संभुंजइ ङ्का।

संभोइओ संभोइयासंजईहिं समं संभुंजणसंभोएण संभुंजइ छेओ। असंभोइयाहिं समं मूलं। जहा संजयाणं सट्ठाणे परट्ठाणे तहा संजईण वि सट्ठाणे परट्ठाणे। संजयाण जहा संजईहिं समं तहेव संजएहिं समं। संभु--जणे त्ति गयं।

इयाणिं निसिरणे त्ति - निसिरइ परिठवेईत्यर्थः।

संभोइओ संभोइयस्स अइरित्तं भत्तपाणं विहीय निसिरइ संभोगो। अविहीय निसिरंतस्स तन्निप्फन्नं।

संभोइयस्स अइरित्तं भत्तपाणं निक्कारणे परिठवइ मासलहुं विसंभोगो वा। पासत्थाइ ङ्क। अहाछंदे ङ्का। संजईणच्चयं परिठवेइ ङ्का। अन्नसंभोइयाणं वि तहेव। संजईण वि निसिरंतीण तहेव।

संजोगा ते चेव।

इयाणिं अंजलिपग्गहो - वंदिय पणामिय अंजलि गुरुस्सआलावो अभिग्गह निसेज्जा।
संजोय विहिविभत्ता अंजलिपग्गहे वि छट्ठाणा ॥भा.गा.१४९४॥

संभोइओ संभोइयं वंदइ संभोगो | संभोइयं न वंदइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा | संभोइओ संविग्गं अन्नसंभोइयं वंदइ संभोगो, न वंदइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा इयरेसिं पासत्थाईणं जइ वंदणं करेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा |

संभोइओ संजओ संभोइयाओ संजईओ पुव्वं वंदइ द्ध | असंभोइयाण वि एमेव |

संजईओ एमेव ताहिं संभोइयाहिं वंदियव्वा, जइ न वंदति पायच्छित्तं विसंभोगो वा | रत्थाइ-तिय-चउक्केसु जइ वंदंति पायच्छित्तं विसंभोगो वा | जइ संजई अन्नसंभोइयसंविग्गं न वंदइ द्धा विसंभोगावा | संजईण सट्ठाणे तहेव |

संभोइयस्स पणामं करइ संभोगो | जहेव वंदणे तहेव पणामे | सिरेण पणामं करेइ |

संजओ संभोइओ संभोइयस्स अंजलिपग्गहं करेइ संभोगो | जहेव वंदणे | अंजलि पग्गहो हत्थेण |

संजईहिं पुण संजयाण अंजलिपग्गहो न कायव्वो | जइ करेइ पछित्तं द्ध विसंभोगो वा | नवरि जाहे संजयपासे कारणेण पढइ ताहे अंतो संघाडीए अंजलिं काऊण पढिज्जइ | बाहिं करेंति पायच्छित्तं विसंभोगो वा | जइ गुरूण चक्खुआलोए पणामं न करेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा | जइ गुरूणं चक्खुआलोए पणामं करेइ संभोगो |

अन्नसंभोइयस्स संविग्गस्स गुरुणो गुरुआलावं करेइ संभोगो | अह न करेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा | गुरु आलावो नाम किं खमासमण वट्टइ ? संजओ संजईय [1]संभोइयाण गुरुआलावं करेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा |

संजईण जहा सट्ठाणे संजयाण | संजईओ संजयाण गुरुआलावं करेंति पायच्छित्तं विसंभोगो वा |

संजओ संभोइओ संभोइयस्स गुरुणो अभिग्गहनिसेज्जं चउप्फलयं कप्पं काऊण उववेसणं देइ संभोगो | अन्नेसिं करेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा | संविग्गे मासलहु | पासत्थाई चउलहुं | अहाछंदे चउगुरु | संजईण संभोइयाऽसंभोइयाणं अभिग्गहनिसेज्जं करेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा |

संजईओ पवत्तिणीए संभोइयाए अभिग्गहनिसेज्जं करेइ संभोगो | असंभोइयाणं संजईण संजयाण व अभिग्गहनिसेज्जं करेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा |

एएसिं संजोएण छट्टं ठाणं निप्फज्जइ |

---

१. क्वचित् प्रतौ 'संभोइया - असंभोइयाणं

इयाणिं दवावणं ति —

सेज्जोवहि आहारे, सीसगणाणुप्पयाण सज्झाए ।
संजोगविहिविभत्ता, दवावणाए वि छट्ठाणा ॥भा.गा. १४६५॥

संभोइओ संभोइयस्स सेज्जं तिहिं वि सुद्धं देइ उग्गमाई संभोगो। संभोइओ असंभोइयस्स निक्कारणे सेज्जं उग्गमादिसुद्धं देइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा।

संभोइओ संजओ संभोइयाए संजईए सेज्जं उग्गमाइसुद्धं देइ संभोगो। उस्सग्गेण तासिं सेज्जा संजएहिं उग्गमेत्ता दायव्वा। संभोइओ अन्नसंभोइयाए संजईए सेज्जं उग्गमाइसुद्धं असुद्धं वा निक्कारणे देइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा। कारणे सुद्धो।

संभोइयाए संजइए सेज्जं उग्गमाई सुद्धं पुव्वुप्पाइयं थेरो देइ संभोगो। अह निक्कारणे उग्गमेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा। कारणे सुद्धो। असंभोइयाण निक्कारणे उग्गमेउं देइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा। कारणे सुद्धो।

जइ संजईओ संजयाण निक्कारणे दिंति चउगुरु कारणे सुद्धा।
उवही एमेव।

एवं भत्तपाणे वि। नवरि संजईण कारणे भत्तपाणं दायव्वं निक्कारणे पायच्छित्तं विसंभोगो वा।

संभोइओ संजओ संभोइयाए संजईए सीसिणिगणं देइ संभोगो। असंभोइयस्स सीसगणं देइ पायच्छित्तं क्क विसंभोगो वा। संभोइओ संजओ संभोइयाए संजईए सीसिणिगणं देइ संभोगो। अह सीसगणं देइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा।* (संभोइओ संजओ संभोइयाए संजईए सीसिणिगणं न देइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा।)

संभोइया संजई संभोइयाणं संजयाणं समणं वा सिस्सिणिगणं वा देइ संभोगो अह न देइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा। अन्नसंभोइयाणं क्क विसंभोगो वा। संभोइया संजई संभोइयाए संजईए सीसगणं देइ संभोगो। असंभोइयाए सीसगणं देइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा। संजई संभोइया आयरियस्स सीसिणिगणं देइ संभोगो। अणायरियस्स देइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा। अह वि अन्नसंभोइयस्स देइ सीसिणिगणं सीसगणं वा पायच्छित्तं विसंभोगो वा।

संभोइओ संभोइयस्स पत्तस्स सज्झायं देइ संभोगो अह पत्तस्स न देइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा। जहा सुए वायणाए वा तहा इह वि सज्झाए।

संजोगनिप्फन्नो छट्ठो।

---

* ( ) चिन्हान्तर्गतः पाठः प प्रतावेवास्ति।

जहेव दाणे तहेव निकायणाए वि|निकायणा नाम निमंतणा| एहिं चेव छहिं पएहिं|नवरि निमंतेइ| [भा.गा. १४१६]

इयाणिं अब्भुट्ठाणे वि –

अब्भुट्ठाणे अंजलि किंकर अब्भासकरणमविभत्ती|
संजोगविहिविभत्ता अब्भुट्ठाणे वि छट्ठाणा ||भा.गा. १४१७||

संभोइओ आयरिओ संभोइयं चेव आयरियं अब्भुट्ठेइ संभोगो| आयरिये संते अन्ने साहू अब्भुट्ठेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा|संभोइओ पाहुणयं संभोइमसंभोइयं वा अब्भुट्ठेइ संभोगो|अह न अब्भुट्ठेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा|पासत्थाई अब्भुट्ठेइ चउलघु|अहाछंदे ङ्का|

संभोइया संजई संजयं संभोइयं अब्भुट्ठेइ संभोगो|जइ न अब्भु-ट्ठेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा|संजईओ वि संजईण सट्ठाणे अब्भुट्ठाणे संभोगो अणब्भुट्ठाणे पायच्छित्तं विसंभोगो वा|

संभोइओ संजओ संभोइयगुरुणो अंजलिं करेइ संभोगो|जहा अब्भुट्ठाणं तहा अंजलि, नवरि संजईण संभोइयाऽसंभोइयाणं मूलं|

संभोइओ संजओ संभोइयं आयरियं भणइ– संदिसह किं करेमि! संभोगो अहवा किकम्मं करेंतो भणेइ– संदिसह कओ आढवेमो? जओ संदिसइ तओ आढवेइ|एवं पाहुणए वि|संभोइयं तं सो भणेइ– विस्सामेहि पाणयं वा आणेहि|जं सो भणइ तं करेइ|अन्नसंभोइयं पाहुणयं वा भणेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा|अन्न संभोइयं भणइ– किं करेमि त्ति पायच्छित्तं विसंभोगो वा|

संजओ संजई संभोइयमसंभोइयं वा 'किं करेमि' त्ति भणइ पा-यच्छित्तं विसंभोगो वा|

एवं संजईण वि सट्ठाणे परट्ठाणे य|

संजओ संभोइओ संभोइयं संजयं अब्भासी करेइ संभोगो|संभोइ-ओ असंभोइयं संजयं अब्भासी करेइ– "तुब्भे अम्ह आसन्ना" संभोगो|

संजई अब्भासी करेइ संभोइयमसंभोइयं वा सुद्धभावेण– तुब्भे ममं जहा खंतिया सज्जिलिया वा संभोगो|असुद्धेण पायच्छित्तं विसंभोगो वा|अहवा चुयधम्माओ धम्मे ठावेइ एवं अब्भासीकरणं|

एएण अब्भासीकरणेण सव्वे वि अब्भासी करेयव्वा|अह न करेइ अलाहि अम्ह एएण अन्नकुलिओत्ति पायच्छित्तं विसंभोगो वा|

संभोइओ संजओ संभोइयं संजयं अविभत्ति करेइ तुब्भे मम जहा पिया भाया वा|पडिच्छओ वा भणेज्जा– जहेव मम पव्वावया तहा

तुब्भे वि, नत्थि मम काइ विभत्ति | अवि य तुब्भे विसिट्ठयरा | आयरिओ वि पडिच्छए अविभत्ति करेइ जहा मम अभुओ तहा तुब्भे वि |

संजओ संभोइओ असंभोइयं संजयं अविभत्ति करेइ पायच्छित्तं विसं-भोगो वा | अह संभोइयं करेमित्ति अविमत्ति करेइ संभोगो |

संभोइओ संजओ संभोइयं संजई अविभत्ति करेइ सुद्धेण भावेण-जहा तुब्भे मम खंतियाइ, संभोगो | अह अन्नेन भावेण पायच्छित्तं विसंभोगो वा |

एवं संजई वि संजयं संजई वा सुद्धाऽसुद्धेण तहेव |

एएसिं संजोगेण छट्ठं ठाणं |

इयाणिं किइकम्मे त्ति –

सुत्तायाम सिरोणाय मुद्दाणं सुत्तवज्जियं चेव |
संजोगविहिविभत्ता कितिकम्मे होंति छट्ठाणा || भा.गा.१४१८||

संभोइओ संभोइयस्स असढभावो वातेहिं गहिओ सुत्तेणेगेण वंदइ संभोगो | जइ सढभावो पच्छित्तं विसंभोगो वा | एयाणि सव्वाणि वि वंदंतस्स सढभावस्स सुत्तेण पायच्छित्तं विसंभोगो वा |

संभोइओ संभोइयस्स आयामेण वंदइ संभोगो | वायाए तरमाणो न वंदइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा |

संभोइओ संभोइयस्स सिरं ओणामेइ, अवसेसं न तरइ संभोगो|

संभोइओ संभोइयस्स मुद्दाणं पाडेइ असढभावो संभोगो |

संभोइओ संजओ संभोइयस्स संजयस्स सुत्तवज्जं किइकम्मं करेइ मणसा काएण असढभावो संभोगो | सढेण पच्छित्तं विसंभोगो वा | इमं सव्वेसु वि भाणियव्वं |

संभोइओ असंभोइयस्स, संजईण वा दुविहाण वि एयाणि करे-इ पच्छित्तं विसंभोगो वा | संजईण वि करेंतियाण एमेव |

संजोए छट्ठाणं

इयाणिं वेयावच्चे त्ति पयं

आहारोवहि मत्तग अहिगरण विओसणा य सुसहाए |
संजोग विहि विभत्ता वेयावच्चे वि छट्ठाणा || भा.गा. १४१९||

संभोइओ संभोइयस्स आहारेण वेयावच्चं करेइ संभोगो | अन्न-संभोइयस्स निक्कारणे करेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा | संजइण संभोइया

ऽसंभोइयाणं निक्कारणे पच्छित्तं विसंभोगो वा।

एवं संजईण वि सपक्खपरपक्खे निक्कारणे पच्छित्तं विसंभोगो वा। कारणे सुद्धा।

उवहिणा वि एमेव। नवरि संभोइयाणं संजईणं उस्सग्गेण उवही दा-यव्वो। जइ न देइ, असंभोइयाण य देइ पच्छित्तं विसंभोगो वा।

संजईण जहा आहारो।

संभोइओ संभोइयस्स मत्तगतिएण वेयावच्चं करेइ संभोगो। अवसे-साण जइ न करेइ निक्कारणे पच्छित्तं विसंभोगो वा। कारणे सुद्धो।

संजईण वि तहेव निक्कारणे कारणे य।

संभोइओ संभोइयस्स अहिकरणं उवसामेइ संभोगो। सव्वेसिं अहि-करणं उवसामेयव्वं। संभोगो चेव।

संभोइओ संभोइयस्स असहायस्स सहायं देइ, कुसहायस्स व सुसहायं देइ, सयं वा सहायकिच्चं करेइ संभोगो। असंभोइयस्स देइ पाय-च्छित्तं विसंभोगो वा।

संजईण संभोइयाण देइ कुसहाईणं सुसहाई संभोगो। असंभोइ-याणं देइ पच्छित्तं विसंभोगो वा। एवं संजईणं पि दिंतीणं।

संजोएणं छट्ठं ठाणं।

समोसरणेत्ति दारं —

वास उउ अहालंदे साहरण उग्गहे पुहुत्त इत्तिरिए।
वुड्ढावासो* सरणे छट्ठाणा हुंति पविभत्ता ॥ भा.गा. १५००॥

वासारत्ते पत्तेयं उग्गहं गिण्हिऊण ठियस्स जो अन्नो तत्थ संभोइओ आगंतूण ठाइ, जं तत्थ उप्पन्नं तं च जइ गिण्हइ पायच्छि-त्तं विसंभोगो वा, तं च न लभइ। अह असंभोइओ ताहे तस्स पायच्छि-त्तं। जे तस्स संभोइया ते तं विसंभोइयं करेंति। किं? अणाभवयं गिण्ह-सित्ति। एवं पत्तेयं ठियस्स।

साहारणे वि ठियाणं एवं चेव। जो गिण्हइ अणापुच्छंतस्स पच्छित्तं विसंभोगो वा। एवं वासारत्ते उग्गहं संभोइओ संभोइएण समं खेत्तेहिं पहुप्पंतेहिं एगखेत्ते उग्गहं गिण्हइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा। असइ खेत्ताणं सुद्धो।

एवं संजईहिं समं। असंभोइएहिं य समं एवं चेव।

एवं उडुबद्धे वि साहारणे पत्तेयं उग्गहे वि।

---

* वुड्ढावास समोसरणे ख प्रतौ"

अहालंदोग्गहो पईवसालासु ठियस्स तत्थ वि तह चेव उग्गहो घेत-
-व्वो | सो वि साहारणो पत्तेओ वा होज्जा |

साहारणो जो संमओ गिण्हइ सामन्नो |

पहुत्तोग्गहो जो एगेण गहिओ त्ति |

इत्तिरिओग्गहो नाम पंथं वच्चमाणस्स पईवदिट्ठुलेण उग्गहो|
जत्थ व रुक्खमूलाइसु उग्गहं अणुनवेत्ताण ठिया, जे तत्थ अन्ने य
पच्छा एंति ते इत्तिरिओवसंपन्नया | एस वि पत्तेयं साहारणो वा |

वुड्ढावासे वि साहारणो पत्तेओ वा उग्गहो घेत्तव्वो सो चेव विही |

समोसरणे वि साहारणो पत्तेय उग्गहो तत्थ उवस्सयंमि संभोइओ
संभोइएण समं | समोसरणे अन्ने उवस्सए विज्जमाणे एगं उवस्सयं गि-
-ण्हइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा | एवं सेसेहिं विसमं |

संजईण वि एमेव |

एत्थ छट्ठाणा पविभत्ता | संजोगो नत्थि |

सन्नि सेज्जा इति दारं —

परियट्टणाऽणुओगे वाकरणे पडिच्छणा य आलोए |
संजोगविहिविभत्ता सन्नि सेज्जाए वि छट्ठाणा ||भा.गा. १५०१||

संभोइओ संभोइएण समं सन्निसेज्जागओ परियट्टइ संभोगो |
असंभोइएण सन्निसेज्जागओ परियट्टइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा | एवं संज-
-ईहिं वि समं परियट्टन्तस्स चउगुरु विसंभोगो वा |

संभोइओ संभोइयस्स सन्निसेज्जागओ सन्निसेज्जागयस्स संभो-
-इयस्स अणुओगं कहेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा | सन्निसेज्जागओ नाम
परोप्परं कप्पे उवविट्ठया | एवं पडिच्छंतगस्स वि | जया दो वि परिजिया
गुणेंति तथा संभोगो |

असंभोइयाणं संजयाणं संजईण वा सन्निसेज्जागओ सन्निसेज्जा-
-गयाणं कहेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा |

सन्निसेज्जागओ सन्निसेज्जागयस्स संभोइयस्स वाकरेइ सं-
भोगो | संभोइओ अन्न संभोइयस्स सन्निसेज्जागयस्स वा निसेज्जागय-
-स्स वाकरेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा | पासत्थोसन्नाईणं सन्निसेज्जागए
ण वाकरिज्जइ |

संभोइओ संभोइयस्स सन्निसेज्जागयस्स पडिच्छइ विसंभोगो
एवं सेसाण वि |

सन्निसेज्जागओ संभोइओ सन्निसेज्जागयस्स संभोइयस्स

आलोएइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा|संभोइओ असंभोइयस्स आलोएइ पाय-च्छित्तं विसंभोगो वा|

सा पुण विहारालोयणा अवराहालोयणा वा जया संभोइओ नत्थि गीयत्थो अपरिस्सावि वा तया असंभोइओ वि जो संविग्गो अपरिस्सावि गीयत्थो य तया तस्स वि आलोइज्जइ|

संभोइया संजई सन्निसेज्जागया आलोएइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा|एवं संजईण वि|एएसिं चेव छट्ठं पयं भवइ|

कहा-पबंधेत्ति दारं -

वाओ जप्प वितंडो पइन्नगं चेव निच्छय-कहा य|
संजोगविहिविभत्ता कहापबंधे वि छट्ठाणा ॥भा. गा. १५०२॥

संभोइओ संभोइएण समं वायं करेइ कारणे परिक्खणानिमित्तं संभोगो|सो पुण छल-जाइहेत्वाभासविवर्जितो पक्ष-प्रतिपक्षग्रहो वा वादः|

संभोइओ संभोइएण समं निक्कारण वादं करेइ पायच्छित्तं विसं-भोगो वा|एवं पासत्थाइहिं वि|कारणे वि पुण जइ न करेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा|संजईहिं संभोयाऽसंभोयाहिं कारणे निक्कारणे वा वायं करेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा|

एवमेव संजईण वि|

जल्पो नाम वाक्छलजातिसहितः पक्षप्रतिपक्षपरिग्रहो जल्पः|

वितंडा नाम एकस्य पक्षोऽस्ति नास्त्येकस्याऽसौ वितंडः|संभोइ-ओ संभोइएण समं तहेव|

पइन्नकहा नाम अक्खेवणी अहवा अत्थो धम्मो कामो अहवा उस्सग्गा सुयं पइन्नयकहा अहवा चउण्हं नयाणं आइल्लाणं पइन्नग कहा|एयं संभोइओ संभोइयस्स कहेइ संभोगो|असंभोइयस्स कहेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा|संजईणं संभोइयाणं कहेइ पायच्छित्तं विसं-भोगो वा|

निच्छयकहा नाम अववाद कहा, अहवा मोक्खकहा, अहवा सद्दनयाणं जा कहा सा निच्छयकहा|एयं निच्छयकहं कहेइ संभोइओ संभोइयाणं संभोगो|असंभोइयाणं कहेइ[1] पायच्छित्तं विसंभोगो वा|

संभोइओ संभोइय—मसंभोइयाणं संजईणं कहेइ निक्कारणे पायच्छित्तं विसंभोगो वा|कारणे विही—य सुद्धो|

एवं संजईण वि कहिंतीण|

1. 'करेइ' ख प्रतौ

छट्ठो गमो संजोएण।

एस बारसविहो ओहसंभोगो।बारसविहो चेव विसंभोगो वा। जइ रागेण अणुपालेइ अहवा दोसेण तो एस चउवीसइविहो वि असंभो-गो।अह अरत्तो, एयमेव अणुपालइ तो चउवीसइविहो संभोगो।

रागेण कहं अणुपालेइ? "अहो साहू संविग्गविहारेण विहरइ संभोगं च परियट्टइ जहुत्तचारित्ति" एवं रागेण परियट्टइ।

दोसेण कहं परियट्टइ? अन्ने साहुणो दट्ठुण संविग्गविहारिणो "मा एएहिं उणओ होहामि"; ते [1] निरिहणंतो संभोगं दोसेण परियट्टइ।

अह एयं चेव बारसविहं संभोगं अन्नाणअविरइमिच्छत्तेहिं परियट्टइ तो छत्तीसविहो विसंभोगो भवइ जहा निन्हयाणं।एए चेव तिहिं नाणाईहिं संजुत्तो सम्मदिट्ठी अणुपालेइ।एस छत्तीसविहो विसंभोगो भवइ।

अहवा सो चेव बारसविहो संभोगो चउहिं कोहाइहिं वत्थपत्ताणि उप्पज्जीहिंति।एए चत्तारि वि ठाणा जो अकोहेण।अमाणेण अमायाए अलोभेण परियट्टइ सो अडयालीसइविहो संभोगो भवइ।ते चेव बारस पंचहिं आसवदारेहिं गुणिया सट्ठिप्पगारो विसंभोगो भवइ अविरयस्स। जो एएहिं विरओ परियट्टइ सो सट्ठिप्पगारो संभोगो भवइ।

अहवा सो चेव बारसविहो राइभोअणछट्ठेहिं अविरयस्स बावत्तरिविहो विसंभोगो भवइ।एस बावत्तरि दोहिं गुणिया रागदोसेहिं चोआलसयं भवइ।तिहिं गुणिया अन्नाणाइहिं दो सया सोलसुत्तरा भवंति। चउहिं गुणिया कोहाइहिं दो सया अट्ठासिया भवंति।पंचहिं आसवदारेहिं गुणिया तिन्नि सया सट्ठा भवंति।एसेव बावत्तरि रायभोअणछट्ठेहिं गुणि-या चत्तारि सया बत्तीसा भवंति।एए विसंभोयस्स भेया।एए चेव पस-त्थेण भावेण अणुपालिज्जंता चत्तारि सया बत्तीसा संभोगस्स भवंति। एस ओहसंभोगो समत्तो। [भा.गा. १५०३-१५०६]

अभिग्गहसंभोगो नायव्वो तवे दुवालसविहे अणसणउमोयरियाइ।

जइ सइ बले सइ पुरिसक्कारपरक्कमे अणसणं अट्ठमिपक्खियचा-उम्मासिय संवच्छरिएसु न करेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा।

बिइओ उमोयरियं तिविहं न करेइ कसायउवकरणभत्तपाणे य भिक्खायरियं च जइ न फासेइ।

रसपरिचागं न करेइ।निच्चमेव विगइपडिबंधो।

कायकिलेसं न करेइ ठाणासणमोणाईणि पायच्छित्तं विसंभोगो वा।

जो जहा कायव्वो तं तहा न करेइ पायच्छित्तं विसंभोगा वा।

---

1. तानस्पृहयन्

अहवा इमस्स वि चउत्थकं। अन्नस्स वि साहुस्स चउत्थकं। ते संभोइया अभिग्गहेण। पासत्थाइ विसंभोइया।

दाणगहणसंभोगो चउभंगो- दाणसंभोगो नामेगो नोगहणसंभोगो- उस्सग्गेण संजईण संजएहिं संभोइएहिं वत्थपत्ताणि दायव्वाणि। कारणम्मि य आहारो। ताणं तगो न किंचि घेत्तव्वं।

गहणसंभोगो गिहत्थन्नतित्थिएहिंतो, तेसिं न किंचि वि दिज्जइ। जइ तेसिं निक्कारणे देइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा।

दाणसंभोगो गहणसंभोगो य- संभोइयाणं दिज्जइ घिप्पइ य।

पासत्थाईण न दिज्जइ न य घेप्पइ किंचि। जइ तेसिं देइ गेण्हइ वा किंचि निक्कारणे पायच्छित्तं विसंभोगो वा।

अणुपालणासंभोगो संजईवग्गे। ताओ अणुपालियव्वाओ विईय खेत्तसंकमणाइसु। एस अणुपालणासंभोगो।

जइ अन्नसंभोइयं गिहत्थन्नतित्थिए वा अणुपालेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा।

उववायसंभोगो पंचविहो- सुय, सुहदुक्खे, खेत्ते, मग्गे, विणए य पंच- -हा होइ। एवं पंचविहं उवसंपयं संभोइएण जइ समं करेइ संभोगो। असंभोइ- -एण समं करेइ पायच्छित्तं विसंभोगो वा। संजईहिं वा समं करेइ तो वि पायच्छित्तं विसंभोगो वा।

संवाससंभोगो- संभोइओ असंभोइएहिं समं वसइ पायच्छित्तं विसंभो- -गो वा। एवं संजई हिं संभोइयाहिं समं संवसंतस्स पायच्छित्तं विसंभोगो वा।

एवं संजईण वि वसंतीणं।

संभोइओ गिहत्थेहिं समं संवसइ निक्कारणे पायच्छित्तं वि- संभोगो वा। कारणे सुद्धो।

संजईण गिहत्थीहिं समं संवसंतीणं संभोगो॥ भा.गा. १५०७॥

जस्सेते संभोगा, उवलद्धा अत्थओ य विन्नाया।
निज्जूहिउं समत्थो निज्जूढ वा वि परिहरिउं ॥१॥ भा.गा. १५०८॥
सरिकप्पे सरिछंदे, तुल्लचरित्ते विसिट्ठतरए वा।
कुविज्ज संथवं तेहिं नाणीहिं चरित्तमंतेहिं ॥१॥ भा.गा. १५१०॥
सरिकप्पे[२] सरिछंदे, तुल्लचरित्ते विसिट्ठतरए वा।
आएज्ज भत्तपाणं, सएण लाभेण वा तुस्से ॥१॥ भा.गा. १५०९॥
ठियकप्पम्मि दसविहे ठवणाकप्पे य दुविहमण्णयरे।
उत्तरगुणकप्पम्मि य सरिकप्पो सो संभोगो ॥१५११॥

२. भा.गा. १५१० द्रष्टव्या

एस संभोगपरूवणा। भगवान् एस संभोगो।

कहिंतो विसंभोगो जातो? तित्थकराओ आरब्भ अट्ठपुरिसजुगाणि अविसिट्ठो संभोगो। तया सव्वे वि संविग्गा साहुणो संभोइया य एक्कमेक्क-स्स जहा गोयमसामी, अज्जसुधम्मोजंबुणामो, अज्जप्पभवो, अज्जसिज्जं-भवो, अज्जजसभद्दो, अज्जसंभूयविजओ, अज्जथूलभद्दोत्ति। एएसिं अट्ठण्हं अविसिट्ठो संभोगो।

अज्जथूलभद्दस्स दो अंतेवासी अज्जमहागिरी य अज्जसुहत्थी य। अज्जसुहत्थी अज्जमहागिरीण सद्धिं एगे बद्धेल्लओ। ते विहरंता उज्जे-णिं आगया। अज्जसुहत्थी सिरीघरे ठिओ। इयरे सिवघरे ठिया। एत्थ संप-इस्स उप्पत्ती भाणियव्वा। जहा य तेण विपणि भाणिया एव। तत्थ पउरन्न-पाणं वत्थपत्ताणि वि निसट्ठाणि लब्भंति। तत्थ महागिरिहिं भणियं अज्जसु-हत्थी आमंतेत्ता-अज्जो इमं अपुव्वं दीसइ, गवेसिज्ज। सुहत्थी-जहा राया तहा पया। तत्थ अज्जमहागिरिहिं अज्जसुहत्थी अणाउट्टंता बारसविहेणावि संभोएण विसंभोगो कओ। एवं तेसिं पाहुडं उप्पन्नं। पच्छा पुणो आउट्टा संभोइया कया। एवं जिब्भादंडेण। पच्छा अन्नोवि ओसरइ ते असंभोइया कीरंति। पच्छा पुच्छा समुप्पन्ना। को दिट्ठंतो?

अगडे[1] दो भाउया[2], तिला तंदुल सरक्खे य गोणि असिवे।
अविणट्ठे संभोगे सव्वे संभोइया समणा ॥१॥

दंसणनाणचरित्तवुड्ढिहेतुं संयमतवहेउं उत्तरगुणपिंडविसुद्धादिहे-तुं च संभोगगुणा तहा साहम्म-वइहम्मेत्ति। यदुक्तं निषीधे-

अगडेत्ति-दो अगडा पेज्जा। तत्थेगो अपेज्जीभूओ। तत्थ वइधम्मे-ण पुच्छा जाया कयराओ अगडाओ पाणीयं आणीयं पेज्जं इति सा-हम्मं। अपेज्जी भूओ वइधम्मं तं तत्थेगेहिं तिलेहिं मीसिया[3] वइधम्मं सरक्खत्ति। साहम्मं सुसीलत्ति। दुस्सीलेत्ति वइधम्मं। गावीण दो वग्गा तत्थेगो दूसिओ।[4] सेसं जहा निसीहे। सत्तविहकप्पो समत्तो। [भा.गा.१५१२]

इयाणिं दसविहो कप्पो तत्थ गाहा

कप्प[1] पकप्प[2] विकप्पे[3], संकप्पु[4]वकप्प[5] तह य अणुकप्पे[6]।
उक्कप्पे[7] य अकप्पे[8] दुक्कप्पे[9] चेव य सुकप्पे[10] ॥भा.गा.१५१३॥

---

१. नि.भा.गा. २१५० द्रष्टव्या
२. तयोः कनिष्ठेनाऽनाचारोऽन्तःपुरे कृत इति।
३. तिलतन्दुलाश्च शटितैर्मिश्रिता संभाव्यते
४. अशिवेन गृहीत इति।

(१) तत्थ पढमं कप्पेत्ति पिंडेसणाओ पंच उवरिमाओ, सेज्जापडिमा-ण चउण्हं उवरिमाओ, उग्गहपडिमाण उवरिमाओ, वत्थपाएसणाओ वि उवरिमाओ, जो य हेट्ठो वन्निओ जिणकप्पविही खेत्तचरित्तकालभावा, बारस य भिक्खुपडिमाओ एवमाइ जिणकप्पविही। [भा.गा. १५१३-१५२०]

गाहा "णिच्छय"

णिच्छय णिरास णिम्मम, णिरहंकार परमट्ठ दढजोगी।
चत्त सरीर कसाया, इंदियगामा य णिग्गहिया ॥भा.गा.१५२१॥

निच्छओ नाम निच्छएण ठिया तंमि जिणकप्पे, नो ववहारेण, उत्सर्गेणेत्यर्थः। अहवा निश्चिता तस्मिन् कल्पे। निर्ममा कडेवरे विनिस्संगा। अहंकारवर्जिताः। परम दृढग्राहिणः कायवाङ् मनोयोगे दृढा प्रशस्ते। त्यक्तशरीरसुखाः। शब्दादिष्वपि विषयेषु निग्रहितारः।

गाहा "जं चण्ण"

जं चण्ण एवमादी सव्वणयविहाण आगमविसुद्धं।
कप्पोत्ति णाणदंसण-चरित्तगुणमावहं जाहे ॥१५२२॥ भा.गा.

जं इत्यनुपदिष्टनिर्देशः ये चान्ये गुणाः, सर्वनय विधान विधिर्विधानं, आगमेन च शुध्दं कप्पोत्ति असौ कल्पः ज्ञानदर्शन चारित्रवृध्दिकरः। ज्ञानवृध्दिकरस्तावत् क्षायोपशमिके ज्ञानदर्शनचारित्रे प्रतिपद्यन्ते, पश्चात् तपोगुणयोगोद्युक्ताः क्षायिकान्यपि ज्ञानदर्शन चरित्राणि प्राप्नुवंति। कप्पोत्ति गयं। [भा.गा. १५२३-३०]

(२) इयाणिं पकप्पो। पकप्पो नाम थेरकप्पो सो य उस्सारकप्पाइ।

उस्सार[1]कप्प लोगा[2]णुओग पढमा[3]णुओग संग[4]हणी।
संभोगे[5] सिंगणा[6]इया एवमादी पकप्पो तु ॥भा.गा. १५३१॥

जइ उस्सारेइ चउगुरु, आणाइ विराहणा जहा कप्पपेढियाए। बिइयपए कारणं पडुच्च उस्सारणा। तत्थ उस्सारओ भणामि उस्सारकारणं च, जस्स य उस्सारिज्जइ आयारदिट्ठिवायस्स, उस्सारकारणे, जो आयारस्स अत्थे जाणइ दिट्ठिवायस्स य। तत्थ गाहा—"आयार दिट्ठवायत्थजाणए"—

आयारदिट्ठिवादत्थजाणए पुरिसकारणविहिण्णू।
संविग्गमपरितंतो अरिहति उस्सारणं काउं ॥भा.गा. १५३२॥

आचरणमाचारः ज्ञानदर्शनाद्यः पंचप्रकारः। दृष्टिवादो नाम सर्वदृष्टिनां तत्र समवतारः, तस्य जानकः विधिज्ञ इत्यर्थः। कारणविधिश्च। भावसंविग्नश्च अपरितांतश्च अर्हति उस्सारणं काउं। अपरितंतो नाम पढमाए पोरिसीए सुत्त-मुद्दिसित्तुं वाएइ। बियाए तस्सेव अत्थं कहइ। एवं गुणजाइओ उस्सारेइ अर्हति।

इदानिं पुरिसो जस्स उस्सारिज्जइ—

कारणे अहिगते य पडिबद्धे संविग्गे य सलद्धिए।
अवट्ठिए य पडिबुज्झी गुरूअमुदी जोगकारए ॥भा.गा. १५३३॥

अभिगतो नाम जीवादयो पदार्था यस्य उपलब्धाः। अथवा स-म्यग्दर्शने अभिगतोपडिबद्धो। अहवा आयरिएसु सुत्तत्थेसु सन्नायवग्गो य से पव्वइओ। भावसंविग्गो य लब्धि संपन्नो य। अवट्ठिओ नाम लिंगे वि-हारे य थिरो। पडिबुज्झी नाम कहिज्जंतं परियच्छइ। गुरु अमुयी नाम सम-त्ते वि गुरवो न मुयइ। जोयं च करेइ जंनिमित्तमुस्सारिओ वत्थपायाइ।

इयाणिं कारणं। तत्थ गाहा—

गच्छो य अलद्धिओ ओमाणं चेव अणहियासो य।
गिहिणो य मंदधम्मा सुद्धं च गवेसए उवहिं ॥भा.गा. १५३४॥

गच्छो य बालवुड्ढाउलो। तेसिं च वत्थाईहिं कज्जं। ओमानं[①] च सपर-पक्खा उ। संघयणदुब्बलत्तणेण य अणहियासा। गिहिणो मंदधम्मा मिच्छ-त्ताभिभूया। सुद्धो य उवही गवेसियव्वो उग्गमाइ। उस्सारकप्पो गओ। [भा.गा. १५३५-३६]

(२) लोगाणुओगे - अज्ज कालया सज्झेंतवासिणा भणिया - एत्तियं पढिउं सो न नाओ मुहुत्तो जत्थ पव्वाविओ थिरो होज्जा। तेण निव्वेएण आजी-वगाण सगासे निमित्तं पढिअं। पच्छा पइट्ठाणे ठिओ सायवाहणेण रन्ना तिन्नि पुच्छाओ पुच्छिओ। एगमेगा सयसहस्सेण। एगा पसु लिंडियाओ को वालेइ? बिइया - समुद्दे कित्तियं उदयं? प्रत्ययात्[१] फलं पुच्छइ - महु-रा केच्चिरेणं पडइ न वा? पढमाए कडगं लक्खमोल्लं। बितइयाए[२] कुंड-लाइं। आयरिएण भणियं - अलाहि मम एएण। किं पुण निमित्तस्स? उवया-रो एस। आजीवगा उवट्ठिया - अम्ह एस गुरुदक्खिणा।

---

① अपमानं तद्वारको दुर्भिक्षादिषु च संरक्षको गच्छस्येति।
१. 'ततियाए' इति क्वचित् प्रतौ
२. [illegible] प्रतौ

(३-४) पच्छा तेण सुत्ते नट्ठे गंडियाणुओगा कया। पाटलिपुत्ते संघमज्झे भणइ- मए किंचि कयं तं निसामेह। तत्थ पइट्ठियं। संगहणीओ वि पकप्प- ट्ठियाणं अप्पधारणाणं उवग्गहकराणि भवंति। पढमाणुओगमाइ वि तेण कया। [भा. गा. १५३७-४८]

(५) संभोगोत्ति- किं निमित्तं संभोगो परियट्टिज्जइ? उच्यते-संगहो- -वग्गहनिमित्तं। संगहो वत्थपायाहाराइ, उवग्गहो सुत्तत्थाइ, वच्छलया य। सहभोज्जा पीइ य भवइ। बहुमाणो य लज्जा य संभोइयत्ति- किह असंखडेमि एतेण सद्धिं। साहारणं च असणाइ। अन्नो लहइ, अन्नो न लहइ। कुलमज्जायाओ य- जहा कुलथेरा कुलमज्जायाओ ठवेत्ता हिंडंति। सकुले वा नत्थि उवसंपया परियाओ य। कुलगणसंघठवणाओ ताओ नाइक्कमिज्जंति। एस अणाइक्कम्मो। [भा. गा. १५४९-५४]

इयाणिं सिंगणाइयं- नाम कज्जाण सिंगभूयं[4] अथवा सिंहनादभूतं कुलादि कार्येषु, राजदुष्टादिषु वा, पुलागाइलद्धिं वा प्राप्य, विद्यादिकार्येषु, विद्यादिभिर्वा अतिशयैर्वै क्रियादिभिर्वा लब्धिभिः राजानमपि वशमानयंति साधवः इत्यतो सिंहनादिकं। तं च दुविहं- चेइयनिमित्तं साहुनिमित्तं वा सगच्छे परगच्छे उप्पज्जेज्जा। [भा. गा. १५५५] गा. १५५६-५८ पृष्ठ ९९ तमे।

गाहा – 'गच्छानुकंपयाए"

आणाए जिणिंदाणं अणुकंपाए चरण जुत्ताणं।
परगच्छे व सगच्छे सव्व पयत्तेण कायव्वं ॥१५६० भा. गा॥

गच्छस्साणुकंपेत्ति किमुक्तं भवति- अनवस्थाप्रसङ्गवारणमित्य- -र्थः। चरित्तठियस्स साहुस्स सर्व प्रयत्नेन कर्तव्यं। आह- भट्ठ चरित्ते न कायव्वं? उच्यते – इक्षुकारदृष्टान्तसामर्थ्यात् लिंगत्थाण वि कीरइ।

यः पुनर्मर्यादाप्रतिपन्नः, गाहा – "मज्जाया"

मज्जायसंपउत्ते चिरमवि कायव्वमपरितंतेण।
मज्जायविप्पहूणे सउवालंभं सति करणं ॥भा. गा. १५८५॥

मर्यादा नाम चारित्रमर्यादा नीतिरित्यर्थः शोभनं युक्तं संप्रयु- -क्तं तस्य चिरमवि कर्तव्यं सर्व प्रयत्नेन। यः पुनर्मर्यादाहीनः तस्य सकृत् कार्यं। को तरति तस्य पुणो पुणो काउं? उवालंभइ – जइ पुणो एरि- सं करेसि तो ते ण मोएमो। गाहा- पश्चार्धं "लिंगं अणुमुयंतो"[1]

---

१. 'अणुम्मुयंते' भाष्ये तथा चानुन्मुञ्चन्।

अणवत्थवारणट्ठा उच्छूदिट्ठंतलो कुसीले वि।
लिंगं अणुम्मुयंते जीवट्ठिय अपुट्ठधम्मे य ॥१५६१ भा. गा.॥

तं पुण कस्स कज्जइ? लिंगमणुमुयंतस्स जीविया[2] बोडस्स अपुट्ठधम्मस्स वि कीरइ जहेव संविग्गस्स। तं पुण कहं उप्पज्जइ? कोइ भणेज्ज-एस संजओ संजई वा मम दुयक्खरओ, सीमट्ठियओ वा, मया दाउं वा आणीयो, धरेंतो वा, आवन्नओ वा, दुब्भिक्खाइ पोट्टेण वा पविट्ठो, दारे मम एस जाओ। दंडिएण वा अक्कमित्ता दासाणि कताणि, लोभावेउं वा सिक्खावेउं वा हिया[3]। दंडिओ वा कम्मोदएण मिच्छादिट्ठी बंध-वह-मारण-चारित्ताओ वा भंसेज्जा निरुंभेज्जा वा। तत्थ जो निरालंबणो, समत्थो विज्जाइहिं वा अन्नेण वा पुरिसकारपरक्कमेण न करेइ तत्थ विसंभोगो। एवं ताव साहुनिमित्तं। [भा. गा. १५५६-५९] भा. गा. १५६२-६५ चूर्णि पृष्ठ-१०० तमे तथा गा. १५६६-६७ पृष्ठ-१०० तमे] चेइयनिमित्तमियाणि - तत्थ गाहा -"रूप्पहिरण्ण सुवण्णं" [प्रस्तुत गाथाऽनुपलब्धेश्चूर्णिगतार्थसंगता गाथा लिख्यते]

भण्णति एत्थ विभासाजो एमाइं सयं विमग्गेज्जा।
तस्स ण होति सोही, अह कोति हरेज्ज एयाइं ॥भा. गा. १५७०॥

साहुणा आयट्ठिएण तवनियमजुत्तेण चेइयनिमित्तं रूप्पहिरण्णसुवन्नं अपुव्वं उप्पाएइ तस्स नाणदंसणचरित्तमनोकरणइच्चाइत्ति करणसोही न भवइ। गाहा - 'खेत्तहिरण्ण' [प्रस्तुत गाथाऽनुपलब्धेश्चूर्णिगतार्थसंगता गाथा लिख्यते]

चोएइ चेतियाणं खेत्तहिरण्णे व गामगवादी।
लग्गंतस्स व जतिणो तिकरणसोही कहंणु भवे ॥भा. गा. १५६९॥

जया पुण पुव्वपवत्ताणि खेत्तहिरण्णदुप्पयचउप्पयाई जइ भंट्टं वा चेइयाणं लिंगत्था वा चेइयदव्वं राउलबलेण खायंति, रायभडाइ वा अच्छिंदेज्जा तया तवनियमसंपउत्तो वि साहु जइ न मोएइ, वावारं वा न करेइ तया तस्स नाणाइसुद्धि न भवइ, आसायणा य भवइ। [भा. गा. १५७१-७२]

एवं समुप्पन्ने कज्जे रायाईणं पुव्वं अणुसट्ठी कीरइ। धम्मो वा से कहिज्जइ। अणिच्छंतस्स अंतरद्धाणेण वा अवहरंति। ओसोविउं पासायं वा कंपेइ। किमिदं साहूण न करेसि? खंभं वा कंपेति। आयासे वा उव्वीहेंति[1]। वेयालो वा कड्डइ। तं वा भेसइ। अभिओ गिज्जइ वा संकामणीए वा

---

२. जीविकार्थं मुण्डस्य।
१. उद्व्यथयन्ति
३. हृता:

संकामिज्जइ | आवेसणीए वा | जइ न मुयसि अमुयं करेमि | वेयणं वा से उप्पायंति | विद्वेषणं कुर्वन्ति तत्र जहा छड्डेइ | [भा.गा. १५६२- १५६५]

ते[2] य लिंगत्थेहिं समं वच्चमाणा "भत्तपाणे" गाहा—

भत्ते पाणे सयणासणे य सेज्जोवही य सज्झाए |
वायणपडिच्छणासु य सुहसीले अत्तसंहारो ||भा.गा. १५७४||

लिंगत्थाण तहो भत्तपाणं न गेण्हन्ति | सयणासणे य सेज्जो-वहिं वा न गेण्हन्ति | अन्नवसहीए ठंति | सज्झायं वा तेसिं न गेण्हन्ति, न देंति | वायणपडिच्छणासु य सुहसीलेहिं सद्धिं अप्पसाहारं करेंति | [भा.गा. १५७५- १५७९] गाहा— "मिच्छत्ता उसंमं"

मिच्छत्ता सम्मत्तं, सम्मदिट्ठी चरित्तओलंभं |
चरित्तठिते थिरत्तं मलणा य पभावणा तित्थे ||भा.गा. १५६७||

एवं[3] कीरमाणे मिच्छदिट्ठिणो भणंति – अहो साहुणो सोहणो धम्मो | सम्मत्तं गेण्हंति | सम्मदिट्ठी पव्वयंति | चरित्तठिया वि थिरा भवंति | पडिणीया मलिणीहुंति तित्थपभावणाए य | तम्हा दुट्ठा निवारेयव्वा | गाहा- "जं चणणएवमाइ"[1] [भा.गा. १५२२ पृष्ठ ९६]

यदित्यनुपदिष्टनिर्देशः | एवमाद्यं प्रवचनगुणसहितार्थनिष्पन्नं भवति, चारित्रज्ञानदर्शनयोगानां परिवृद्धिकरं |

एष प्रकल्पविधिः – जया पुण राउले गम्मइ परिवारिया य एएहिं | ते य जं विन्नवयंति राउलं जइ समत्था | पच्छा सयं विन्नवेंति | [भा.गा. १५७९]

जो पुण बज्झमाणो वा रुज्झमाणो वा चरित्ताओ भंसिज्जमाणो निरालंबणो नकरेइ मोयणाओ, समत्थो य तम्मि कज्जे | निरालंबणो नाम स इंगालो[2] न भवइ | तेण समं विसंभोगो | [भा.गा. १५८० - ८३]

कयाइ मोइओ संतो पुणरवि घेप्पेज्जा | किं मोएयव्वो, न मोएयव्वो? उच्यते– सयंपि वारा मोएयव्वो, मज्जाया पडिवन्नो | एष पकप्पो | [भा.गा. १५८४- ८९] [भा.गा. १५८५ पृष्ठ- ९८ तमे]

---

२. 'तत्थ पुण कयाइ णिवो अन्नत्थ हवेज्ज तत्थ उ वयंतो | इत्यादि भा.गा. १५७३

३. 'साहम्मियवच्छल्लं' भा.गा. १५६६

१. सद्दशा गाथा संभाव्यते |

२. निस्तेजाः

इयाणिं विकप्पो। तत्थ गाहा – "अइरेग अपडिकम्मे"

अतिरेगं परिकम्मण तह भंडुप्पायणा य बोधव्वा।
एमादि विकप्पो तू तत्थऽइरेगे इमं होति ॥१५९० भा.गा॥

जिणकप्पियस्स ताव एगेण पाएण अलेवाडं गेण्हंतस्स कप्पो भवति।[3] पकप्पओ नाम दोण्ह वि हिंडंताणं एगपडिग्गहे कूरं, एगपडिग्गहे पाणयं। मत्तयारित्ता[4] पकप्पो चेव। अह मत्तएसु गेण्हन्ति भत्तपाणं वा निक्कारणे ताहे विकप्पो। आरोवणा से जइ भोयणमावइइ चउलहुयाइ अट्ठमे दिवसे पारंचिओ। एवं पाए ॥भा.गा. १५९१-९५॥ [भा.गा. १५९६ श्रमणीनामुपधिः]

वत्थे जिणाणप्पमाणप्पमाणं सडंसओ[5] सोत्थिओ[6] वा। गणणाए एगो दो तिन्नि वा[a]। [भा.गा. १५९८-९९]

थेराण गणणा वि[7] तिन्नि कप्पा। पमाणप्पमाणेण आयप्पमाण एस कप्पो पुण [भा.गा. १६००] गाहा – "तिन्नि पभणिया"

तिण्णि तु भणिता कप्पा, अतरंता वि[1] पतिणा पकप्पविही।
उप्पायगवज्जाणं तिट्ठाणारोवणा भणिता ॥भा.गा. १५९७॥

असंथरंतस्स वा अन्नस्स वा बालवुड्ढाई चत्तारि सत्त वा पाउणेज्जा गणणाप्पमाणेण। उप्पायगो नाम पवत्ती[2] तस्स बहुगा विकप्पा भवंति। सेसाणमइरेगमणट्ठाए। धरेंताण उवहिनिप्फन्नं पायच्छित्तं चाउम्मासुक्कोसे। [भा.गा. १६०१-१६०५]

परिकम्मं त्ति दारं - अपरिकम्मा जिणाणं उवही। थेराणं विहिपरिकम्मिओ जइ तो पकप्पो। अविहिपरिकम्मिए विकप्पो। [भा.गा. १६०६]

भंडुप्पायणेत्ति दारं – तत्थ गाहा – "गाहगो"
गाहग गहण गेज्झं जहासंखेमे तु णायत्र्या।
पुरिसे पडिमा उवही तिण्णि तिगा भावसुद्दाइं ॥१६०७॥ भा.गा.

तत्र ग्राहको, ग्रहणं, ग्रहीतव्यमिति पुरुषा ग्राहका, ग्रहणं

---

3. 'पकप्पिओ' ख प्रतौ
4. मात्रकेण चरति 'मत्तयारि तस्य भावः
5. दोरयणी संडासो भा.गा. १५९१ यदिवा सदशं वस्त्रं
6. 'त्तिओ इतिस्यात्तर्हि सौत्रिको वा। स्वस्तिकचिह्नयुक्तं वा।
7. 'बितिन्नि' क्वचित् प्रतौ
1. विपत्तिना यदिवा श्री जिणपतिना भणिता।
2. प्रवर्तक इति ^संभवत्

प्रतिमा, ग्राहीतव्यमुपधी | तिण्णियत्ति तिन्नि ताव आहारोवहिसेज्जत्ति, ताणि तिहिं विसुद्धाणि उग्गमाइसुद्धाणि |

पुरिसेत्ति एगो कप्पे ठिओ गेण्हइ, बिइओ नाम पकप्पो तत्थ दो जणा गेण्हंति तहेव कप्पो तत्थ तिप्पभिइ बहवो वि गेण्हंति | किं च तं घेप्पइ ? भत्तपाणसेज्जोवहि | आइतिकप्पोत्ति कप्प- पकप्प- विकप्पो | तत्थाइ जिणकप्पो तत्थ नियमेन एकेन गहनं उग्गमुप्पायणेसणाए सुद्धं | बिइयं ठाणं नाम पकप्पो | तत्थ निक्कारणे तिहिं वि उग्गमाइहिं सुद्धं आहाराइगहणं, कारणे रागदोसविप्पमुक्कस्स असुद्धं पि आहारं अणुन्नायं | एतदुक्तं भवति- तिन्नि तिका भावओ सुद्धा | [भा. गा. १६०८ - १०]

किं कारणं आइकप्पट्ठियस्स उग्गमाइसुद्धस्स गहणं, गच्छे य असुद्धमवि घेप्पइ ? हे वत्स ! गच्छो परिरक्खणिज्जो सबालवुड्ढाउलो जम्हा सव्वसोक्खकरो, जिणकप्पाइण ताओ निप्फत्ति रयणागर- दिट्ठंतसामत्था | केण पुण कारणेणं गच्छे पुण उग्गमाइअसुद्धंपि घेप्पइ ? [भा. गा. १६११ - १६१५]

उच्यते "आकिण्णाया महाणो" गाहा —

आइण्णता महाणो कालो विसमो सपक्खओ दोसा |
आदितिगभंगगेणं गहणं भणितं पकप्पम्मि ||१६१६|| भा. गा.

जहा आकिण्णा दोसा सपक्खाइ | महायणो य साहूण एगत्थ अच्छंति, जइ एगो वा दो वा आइंति तेसिं सुलभा भिक्खाइ | कालो य दुब्भिक्खाइ विसमो | सपक्खदोसा य असंविग्गाइ | महुराए कोंट[1] इल्ली य दिट्ठंतो जहा उग्गमेते | अविकोविया य सावगा न याणंति ताहे ओमाणदोसेण साहू ण लभंति आहाराइ ताहे आइतियभंगो नाम उग्गमाइअसुद्धं घेप्पइ | गाहा - "तियतिक्क" [भा. गा. १६१८ - २१]

तियतिक्कंतपमाणे अणुवासो चेव कारणनिमित्तं |
परिकम्मण परिहरणे उवही अतिरित्तगपमाणो ||१६१७|| भा. गा. ||

किं पुण कारणजाए तिविहंपि पमाणं अइक्कमंति ? किं पुण तं तिविहं पमाणाइक्कंतं ? खेत्ताइक्कंतं, कालाइक्कंतं, पमाणाइक्कंतं | आयप्पमाणाओ अइरेगं पि गेण्हेज्जा | गणणाए तिण्हं कप्पाणं अइरेगं पि गेण्हेज्जा | खेत्तं पमाणाइक्कंतं अद्धजोयणस्स परेण वि गेण्हेज्जा | कालाइ-

---

1. कुटा वेषविडम्बका:

-क्कंत अणुवासं[2] उइयं[3] अणुवसइ |अणुवासोमासं वासावासं वा अच्छिओ पुणो वि तत्थेव अच्छइ असिवाइसु कारणेसु |

परिकम्मणेत्ति - अविहीय परिक्कम्मणं पि करेज्जा |बलिओ होउत्ति अविहीय परिक्कम्मेज्जा अंतो कंबली करेज्जा, अइरेगप्पमाणं पि धरेज्जा|

परिहरणत्ति - असंथरतो अंतो उन्नियं पि करेज्जा सीयाभिभूओ ए-वमाइयं कारणे वितहं करेंति सो वि सव्वो विकप्पो |

इयाणिं संकप्पो सो दुविहो - पसत्थो अपसत्थो य |[भा.गा.१६२२-१६२७] १६२८ भा.गा.

तत्थ गाहा - "दंसणनाण"

दंसणनाणचरित्ते अणुपालण पसत्थ णोपसत्थो उ |
इंदियविसयकसाएसु अप्पसत्थो उ संकप्पो ||१६२९|| भा.गा.

संकप्पो व्यवसायः परिणाम इत्यर्थः |तत्थ पुव्वद्धे गाहे पस-त्थो, पच्छद्धे अपसत्थो |

पसत्थो ताव दंसणे कहमहं दंसणपभावगाणि सत्थाणि अहिज्जेज्जा, अपुव्वनाणगहणं वा करेज्जा, चरित्तं वा विसुद्धं अणुपालेज्जा|एवमाइ पसत्थो संकप्पो |

अपसत्थो सद्दाणुवाई जाव फासाणुवाई, कसाएसु कोहाइ नि-च्चवसगओ |एस अपसत्थो |संकप्पो गओ |[भा.गा. १६३०-१६३४]

इयाणिं उवकप्पो - तत्थ गाहा - "भत्तेण व पाणेण व"

भत्तेण व पाणेण व उवकरणेण व उवग्गहं कुणति |
उवकप्पति गुणधारी उवकप्पं तं वियाणाहि ||१६३५|| भा.गा.

उव सामीप्ये उपेत्य कल्पते इत्युपकल्पः| आहारादिसु उपे-त्योपकारे वर्त्तते इत्युपकल्पः|साहुस्स उवग्गहं करेइ आहाराइणा पडं-तस्स कुड्डस्सेव थूणा |मूलगुणउत्तरगुणधारी उवकप्पं तं वियाणाहि | [भा.गा. १६३६] गाहा "भत्तेण य"

भत्तेण व पाणेण व उवकरणेण, व उवग्गहियदेहो |
जो कुणति सो समाहिं तस्सावरणं हणाति दाता ||१६३७|| भा.गा.

---

२. वर्षायाः पश्चात्

३. ऋतुकाले

सो पुण भत्ताइहिं साहुस्स उवग्गहं कुणमाणो समाहिं समुप्पायइ। चउविहं नाणदंसण तव चरित्त समाहिं उप्पायंतो तासिं चेव नाणदरिसण-चरित्त-तव-समाहीणं आवरणं हणइ कम्मं।गाहा-"भत्तस्स य पाणस्स य"

भत्तस्स व पाणस्स व उवकरणस्स व उवग्गहकरस्स।
जो कुणति अंतरायं तस्सावरणं पवड्ढेति ॥भा.गा. १६३९॥

जो पुण अंतरायं करेइ आहाराईणं साहुस्स दिज्जंताणं सो तासिं चेव नाणदरिसणतवसमाहीणं अंतराये वट्टइ।सो नाणाइ-अंतरा-यं बंधइ।उवकप्पो [भा.गा. १६४०]

इयाणिं अणुकप्पो-गाहा-"नाणचरणड्ढ"

नाणचरणड्ढयाणं पुव्वायरियाण अणुकित्तिं कुणइ।
अणुगच्छइ गणधारी अणुकप्पं तं वियाणाहि ॥भा.गा. १६४१॥

नाणदरिसणचरित्ततवड्ढगाणं पुव्वायरियाणं नाणगहणेण य तवोविहाणेसु य अणुकिइं करेइ सो पुण अणुकप्पो।गाहा-"गुणसय"

गुणसयकलिओ संजमो, मोक्खो य गुणोत्तरो मुणेयव्वो।
सामायारी हाणी तु जोगहाणी मुणेयव्वा ॥भा.गा. १६४२॥

जो पुण गुणसयकलियाणं अलंकृतानामित्यर्थः, गुणांतरं चेव अभिलसंताणं नाणाइसु परिहाणी होज्जा।खेत्ते अद्धाणाइसु, काले ओमाइसु, भावे गिलाणाइसु [भा.गा. १६४३-४५] गाहा-"एगंतनिज्जरा"

एगंतनिज्जरा से जह भणिता सासणे जिणवराणं।
जोगनियत्तमतीणं सुहसीलाणं तवो छेदो ॥भा.गा. १६४६॥

तहावि तेसिं एगंतनिज्जरा चेव यथा भगवद्भिरुपदिष्टं प्रणीतमित्यर्थः।जो पुण संजमजोगनियत्तमई चंदउत्तिया[1]सिरी[2]सुहसीलोत्ति भन्नइ।तेसिं तवो छेदो वा।एस अणुकप्पो [भा.गा. १६४८]।इयाणिं उक्कप्पो गाहा-"उग्गम"

उग्गमुप्पायणएसणासु निरवेक्खो कंदमूलफले।
गिहिवेयावडियासु य उक्कप्पं तं वियाणाहि ॥१६४९॥भा.गा.

---

१. 'चंद्रगुप्तवंशजाः' इति कटाक्षे संभाव्यते। ‖ २. 'सरीरसुह' क्वचित्

जो उग्गमाइसु निरवेक्खो कंदमूलाई खायइ, गिहिवेयावच्चाणि करेइ कुंटलाईहिं ॥ एस उक्कप्पो ॥ गाहा – "णामणि"

णामणि थंभणि लेसणि वेताली चेव अद्धवेताली ।
आदाणपाडणेसु य अण्णेसु य एवमादीसु ॥ भा. गा. १६५० ॥

णामणी- ओणामणी- थंभणीओ विज्जाओ पउंजइ । अद्धवेयाली नाम जो उट्ठवेऊण पडिपालेइ, वेयाली उट्ठवेइ, गब्भादाणं पडिसाडेइ, संमूच्छियं पाडेइ जोणिपाहुडं वा करेइ । अन्नेसु य एवमाइसु पावाययणेसु वट्टइ । गाहा – "तस एगिंदिय"

तसएगिंदियमुच्छण संसेइममुच्छमरणमहिओगे ।
रोद्दाऽऽहव्वण तह बंभदंडथंभे य अगणिस्स ॥ १६५१ ॥ भा. गा.

तसपाणाइ मसगाई विच्छिए वा संसेइमे वा संमुच्छावेइ । मुच्छण-मरण-अभिओगाइहिं माहेसरिं वा आहेवणीं[3] वा पउंजइ । रुद्दादिच्चणं[4] बंभदंडं वा अगणिकायं थंभेइ । [भा. गा. १६५२-५७] इयाणिं अकप्पो । गाहा – "निक्किवे"

णिक्किव णिरणुकंपो पुप्फफलाणं च सा[illegible]णं कुणति ।
जं चण्ण एवमादी सव्वं तं जाणसु अकप्पं ॥ भा. गा. १६५८ ॥

निक्किवो नाम निग्घिणो निरणुकंपो पुप्फफलाणि विद्धंसेइ विज्जाओ परसुमादि पउंजइ । एवमाइकम्मकरो सो अकप्पो । [भा. गा. १६५९-६०]

एयाणि पुण उक्कप्पअकप्पाणि निक्कारणे करेंतो सट्ठाणे पच्छित्तमावज्जइ । तदर्थगाहा – "सत्तट्ठमठाणेसु"

सत्तट्ठमठाणेसु सट्ठाणा सेवणाए सट्ठाणं ।
गच्छागाढंमि उ कारणंमि बितियं भवे ठाणं ॥ १६६१ ॥ भा. गा.

गच्छमाइसु पुण कारणेसु य राइदुट्ठमाईसु असिवाईसु य जयणाए करेंतस्स उक्कप्पाकप्प बिइयं ठाणं भवइ । किं पुण बिइयं ठाणं ? पकप्पो चेव सो भवइ । एस अकप्पो । [भा. गा. १६६२-६३]
इयाणिं दुकप्पो । तत्थ गाहा –

दंसणणाणचरित्ते तवविणए णिच्चकाल पासत्थो ।
णिच्चं च णिंदिओ पवयणम्मि तं जाणसु दुकप्पं ॥ भा. गा. १६६४ ॥

3. आक्षेपणी वा क्वचित् 'आहव्वणी' तथा चाहुवानीमित्यर्थः ।
4. [illegible]

सो दंसणाइहिं पासत्थो अच्छइ निच्चं निंदिओ गरहिओ पवयणम्मि जेण ताइं थाणाइं पडिसेवइ ।

गाहा – "दुकप्पविहारीणं एगंतासायणा य बंधो य ।
आसायणा य बंधेण चेव दीहो तु संसारो ॥१६६५॥ भा.गा.

गाहासिद्धं । एस दुकप्पो ॥

एस * पुण गाहा उक्कप्पाकप्पेसु भाणियव्वा विहाराई । इयाणिं सुकप्पो । तत्र गाहा —

दंसणनाणचरित्ते तवविणए णिच्चकालमुज्जुत्तो ।
णिच्चं पसंसिओ पवयणंमि तं जाणसु सुकप्पं ॥१६६६॥ भा.गा.

दंसणणाणाइसु निच्चं उज्जमं करेइ, निच्चं पसंसिओ पवयणे सोभणात्ति । गाहा – 'सुकप्पविहाराइ'

सुकप्पविहारीणं एगंताराहणा य मोक्खो य ।
आराहणाइ मोक्खेण चेव छिन्नो य संसारो ॥१६६७॥ भा.गा.

गाहासिद्धं । एस पसत्था सुकप्पकप्पे अणुगंतव्वा । अणुकप्पविहारीणं आराहणा य मोक्खेण चेव छिन्नो उ संसारो । दसविह कप्पो समत्तो ।

इयाणिं वीसइविहकप्पो - दाराणि - नाम[1], ठवणा[2], दव्वकप्पो,[3] खेत्तकप्पो[4], कालकप्पो,[5] दंसणाकप्पो[6], सुयकप्पो[7], अज्झयणकप्पो,[8] चरित्तकप्पो[9], उवहिकप्पो[10] संभोगकप्पो[11], आलोयणाकप्पो,[12] उवसंपयकप्पो[13], उद्देसअणुन्नकप्पो[14], अध्दाण कप्पो[15], अणुवासकप्पो[16], ठियकप्पो[17], अट्ठियकप्पो[18], जिणकप्पो[19] अणुपालणाकप्पो[20] । [भा.गा. १६६८-१६७१]

नामस्थापने पूर्ववत् । तत्र गाहा —

जो चेव दवियकप्पो छव्विहकप्पंमि होति वक्खाओ ।
सो चेव निरवसेसो जो य विसेसोऽत्थ तं वोच्छं ॥ भा.गा. १६७२॥

सो चेव दसविहकप्पो, सो चेव छव्विहकप्पो, जीवदवियकप्पो अहीणमइरित्तो भाणियव्वो ।

---

१. अभिनवे नगरे निवेश्यमाने अक्षरसहिता मुद्रिका: पात्यन्ते यस्य योग्या भूमिस्तस्य तस्या: प्रदानार्थं ततो भूमिशोधनं तदनन्तरं पीठिका, ततस्तदुपरि प्रासादादिकरणम् ।

* अनन्तरोक्तगाथा १६६५ उकप्पाकप्पविहारिणामुद्देशेन भाजितव्येत्यर्थ: ॥ बृ.क.भा. ३३०॥ संभाव्यते, 'दुकप्पाकप्पेसु' इति स्वप्रतौ च ।

एस पुण वीसइविहो कप्पो, इमे वा पंचकप्पा, सव्वं वा कप्पज्झ-
-यणं कस्स उद्दिस्सइ? उच्यते - सुपरिच्छियकयभोम्मे उंडियापेढियदिट्ठं-
-तेणं जहा ओहनिप्फन्ने निक्खेवे। पेढिया - विहिसुत्तं आवासगमाइ सूय-
-कडावसाण पेढगबद्धस्स दिज्जइ। पासादठाणीया कप्पव्ववहारा, ते
सुपरिच्छियाणं परिणामगाणं दिज्जंति। [भा. गा. १६७३ - १६७४]

गाहा - "सव्वं पि य"

सव्वं पि य सुयणाणं सुत्तत्थो सड्ढिए ण तु असड्ढी।
अह पुण को परमत्थो विसेसओ पवयणरहस्सं? ॥१६७५ भा. गा.॥

जिणवयणं विशेषतः सूत्रार्थाः सद्धाजुत्तस्स दिज्जंति उव-
-ट्ठियस्स परमत्थो पुण विसेसओ छेअसुत्ताणि ताणि चेव पवयणरह-
-स्साणि [भा. गा. १६७६] गाहा - "अप्पं पि य"

अप्पं पि य तं बहुगं अरहस्समपारधारए पुरिसे।
दुग्गलगमाहणे विव जह वइरगहीरगादीयं ॥१६७७॥ भा. गा.

आह केत्तियं पुण तं पवयणरहस्सं दोन्नि चेव पयाणि
दिज्जंति जं च कप्पाई? उच्यते अप्पं पि य तं बहुयं होइ पायच्छित्तं।
जहा को दिट्ठंतो? एगेण दरिद्देण रत्थाए धोइयाए वइयरहीरो लद्धो तेण
अन्नमन्नेसिं दरिसिओ, तं फुसंतं रायकुलं गयं, पच्छा रन्ना एस हरिओ।
एवं आयरिएण तस्स किं चि रहस्सपयं सिट्ठं ताहे सो अन्नमन्नेसिं
कहेइ ताणि अववायपयाणि। तं पि य अववायपयं कहिज्जमाणं अ-
-न्नमन्नेसिं आयरियाणं कन्नं गयं। आयरिएहिं वाहरिऊण भणिओ -
पलवसि, न एयं एरिसं किं चि कहेमि - नवरि अज्ज मए सुयं। [भा. गा.
१६७८ - १६८३] गाहा - "दव्वाणि" -

दव्वाणि जाणि काणि ति गहणं लोए उवेंति साहूणं।
तेसिं तु संभवं मग्गमाणे ण तु साहते अत्थं ॥१६८४ भा. गा.॥

जाणि पुण साहुस्स आहाराईणि दव्वाणि गहणं एंति तेसिं
जइ संभवं मग्गइ - कओ एस साली उप्पन्ना? दिग्घोदण पाहुडियाए नीणि-
याए अगारिं भणइ - कओ एयाणि तंदुलाणि आणीयाणि? अच्छाहि ताव
जाव पुच्छामि। ताए सिट्ठं - आवणाओ। अच्छ! सा वि एसा साहुनिमित्तं साली

१. टीप्पण पृ. १०६ नमे

वाविया होज्जा। एवं फलहीओ - वत्थे नीणिए फलहीण उप्पत्तिं गवेसति। तुंबीओ वा गवेसइ - तुंबीण उप्पत्तिं लाउए नीणिए। रुक्खा वा सेज्जा निमित्तं। एवं सो पुच्छिऊण कत्थ एयाणि उप्पन्नाणित्ति ताहे ताहिं गच्छइ जहा पिंडनिज्जुत्तिए। एएसिं आहाराईणं मूलोप्पत्तिं तंदुलादि गवेसमाणो अत्थं न साहयइ। आहारादीनां निष्पत्तौ च ज्ञानदर्शनचारित्रार्थसिद्धिः। [भा. गा. १६८५ - १६८७] [तथा १६८८ - १६९१] गाहा -

एवं सो हिंडंतो भत्तं पाणं च ठाणमुवहिं च।
जह उग्गमे उ कह वा सज्झायं कुणतु हिंडंतो? ॥भा. गा. १६९२॥

भत्तपाणे एवं सो हिंडंतो भत्तपाणं वा उवहिं वा कह उग्गमेइ सज्झायं वा करेउ सेज्जोवहिं वा सोहेउ निच्चं हिंडंतो?

जो णिक्खमणपवेसे कालो भणितो तु वासउडुबद्धो।
दुचउक्कं उडुबद्धे विहारो हेमंतगिम्हासु ॥१६९३ भा. गा.॥

जे य निक्खमणपवेसणकाला अट्ठ उउबद्धिया मासा निक्खमणकालो त्ति भण्णइ। पवेसकालो य वासावासो नवमो। ते तस्स न भवंति हिंडतस्स। दुगचउक्कत्ति चत्तारि हेमंतिया चत्तारि गिम्हिया। एएसु अणुन्नाओ विहारो। [भा. गा. १६९४] गाहा -

दोण्णि सया चत्ताला उडुबद्धे एत्तिओ विहारो तु।
वासासू पण्णासा पणगं पणगं हसति एगं ॥१६९५॥

दोन्नि सया चत्ताला हेमंतगिम्हासु होंति दिवसाणं मासकप्पेण। वासासु य पंचासा पंच वा हसिया तस्स न भवइ निच्चं हिंडंतस्स। संवच्छरेण तिन्निसट्ठाइं दिवससयाइं विहारकालो दुपक्खे वि साहूण साहुणीण य। गाहा -

पुरपच्छिममज्झाणं सव्वेसिं एस काल वोच्छेओ।
णिच्चं हिंडंतेणं विराहितो होति सो णियमा ॥१६९६॥ भा. गा.

पुरिमपच्छिममज्झिमाणं तित्थयराणं सव्वेसिं एस कालच्छेओ।

गाहा - आहारोवहिसेज्जाण, णाणदव्वेहिं होति णिप्फत्ति।
वेसण - मिरिए पिप्पलि अल्लग - घततेल्लगुलमादी ॥१६८८॥ भा. गा.

तिविहम्मि तिविहे वि आहारोवहिसेज्जाणं अणेगेहिं दव्वेहिं संभवो भवइ। आहारे ताव पिप्पलि घयवेसणेहिं। ताहे केत्तियस्स हिंडिस्सइ? जत्थ ताणि उप्पन्नाणि निप्फत्तिरुत्पत्तिरित्यर्थः। पिप्पलीओ हिमवंते, मिरियाइं मलए, हिंगुरमढेसु, वत्थाणि तामलित्तिए पुंडवद्दण सिंधुसुरद्वासु वत्थाणं उप्पत्तीओ जाव ताणि हिंडइ ताव नाणाइपरिहाणी अंतरा चेव मरइ। एवं पाए सेज्जाए य। तम्हा नो निप्फत्ती मग्गियव्वा। निप्फत्ती नाम मूलसंभवो। [भा. गा. १६८९-९१]

निप्फन्नं मग्गियव्वं। निप्फन्नं देंतस्स सयासाओ१तस्स कडे २ तस्स निट्ठिए चउभंगो। एत्थ निप्फन्नेण अहिगारो। पच्चुप्पन्नो नाम तहेव दव्व कुल देसे भावे य मग्गिज्जइ। जहा पिंडनिज्जुत्तीए। नो मूलुग्गमं पुच्छइ दव्वाणं। एयं पुच्छइ किंनिमित्तं उवक्खडियं? एवं पुच्छीऊण गेण्हइ। [भा. गा. १६९७-९९] गाहा- "*समणे समणी*"

समणे समणी सावयसाविगसंबंधि इड्ढि मामाए।
राया तेणे पक्खेवे या णिक्खेवयं कुज्जा ॥१७००॥ भा. गा.

भत्तपाणे, वत्थपाएसु वा नीणिएसु पुच्छइ - कस्सेयं? सो पुच्छिओ भणेज्जा - तुब्भं चेव निमित्तं उवक्खडियं, कीयं, पामिच्चयं, परियट्टियाइ, वत्थं वा वुणावियं कीयं पामिच्चयं, परियट्टियाणि। इयाणिं तुब्भट्ठाए मुहं कयं, बीयाणि वा अवणीयाणि, कीयमाइ वा।

एवं साहेज्जा - समणेण समणीए वा संबंधिएण वा सावएण वा सावियाए वा इड्ढिमंतेण वा मामएण वा दमएण वा दूभएण वा रज्जभद्रेण वा रायाए वा तेणएण वा पक्खेवयाणि छूढाणि। समणं वा समणी वा लिंगत्था भणंति - अम्हं न गेण्हंति। ते पक्खेवगं करेज्जा। सावओ वा साविया वा तेसिं साहवो न गेण्हंति आहाराई। ते पक्खेवगं कुज्जा। इड्ढिमंतो वा दंडभडभोइयाइ तेसिं साहवो न गेण्हंति। ते आहाराई पक्खेवगं कुज्जा। मामओ नाम मा मम घरे कोइ ढुक्कउ ईसालुयत्तणेण। तस्स भोइया सड्ढी सा पक्खेवगं कुज्जा। राया - 'मम रायपिंडं न गेण्हंति, आहाराइ पक्खेवगं कुज्जा।'

निक्खेवे पुण वत्थं पत्तं वा संविग्गाऽसंविग्गा वा साहवो असिवाइसु कारणेसु अन्नदेसं गच्छमाणा निक्खिववेज्जा। तेहिं भणियं अमुए काले ण एज्जामो तो साहूण देज्जाह।

संभोइयाणं घेप्पइ। असंभोइयाणं पासत्थाईण य संथरमाणा न गेण्हंति।

दमओ दुमग रज्जभट्टो वा आहाराई 'कस्सेयं' ति पुच्छिओ भणेज्जा- सामी! किं मम आहाराई वत्थपायाई वि नत्थि? दूमगओ जइ अहं रन्नो अविरइयाए वा भोइयस्स तो मम वत्थाईणि वि नत्थि? भट्टो भणेज्जा- जइ अहं रज्जाओ ईसरियाओ भट्टो तो अहं किं आहाराइणं पि नाहारेमि? सेसं जहा पेढियाए[1]। न य नाम न वत्तव्वं, दुट्टे[2] रुट्टे जहा वयणं ॥ भा.गा. १७०१-१७०२॥ गाहा — "आइन्नया"—

जं पुण जत्थाइण्णं दव्वे खित्ते य होज्ज काले य।
तहियं का पुच्छा तू जह उज्जेणीए मंडेसु ॥१७०३ भा.गा.॥

जत्थ पुण आइन्न खेत्त काले वा भवइ जं जत्थ देसे पवत्तइ पउरं च जहा उज्जेणीए मंडया तत्थ का पुच्छा? जत्थ पुण दव्व कुल-देस भावे अपुव्वकरणं दट्ठूणं पुच्छा- किं निमित्तं एयाणि आहाराईणि कयाणि? मूलगुणउत्तरगुणेसु आहारोवहिसेज्जाणं गहणं विसोहेयव्वं साहुणा [भा.गा. १७०४-१७०५] गाहा- "कीए पामिच्चे"

कीते पामिच्चे छेज्जए य, णिप्फत्तिओ य णिप्फण्णे।
कज्जं णिप्फत्तिमयं समाणिते णिप्फण्णं ॥१७०६ - भा.गा.॥

एवं कीय-पामिच्चेऽच्छेज्जा अणिसिट्ठाईणि निप्फज्जंति तंदुला वा लाउया वा संजयट्ठाए। कीयाणि वा कत्तियाणि वा सुत्ताणि, लाउयाणि वा संजयट्ठाए उत्ताणि, पच्छा आयट्ठाए निप्फन्नाणि कप्पंति संजयाणं। रुक्खा वा संजयट्ठाए उत्ता पच्छा आयट्ठाए छिन्नाणि, घराणि य कयाणि आयट्ठाए निप्फाइयाणि ताहे कप्पंति। जं तं निप्फत्तिओ आयट्ठा निप्फन्नं तं कप्पइ। कज्जं निप्फत्तिमयं ति कज्जं नाम आहाराइमयं वि जहा तंदुलमयं आहारं सुत्तमयाणि वत्थाणि समाणियत्ति तस्स कंडंतस्स निप्फन्नं। [भा.गा. १७०७-१७०८] गाहा- "निप्फत्तिओ य"—

णिप्फत्तिओ य णिप्फण्णओ य गहणं तु होज्ज समणस्स।
णिप्फत्तिओ असुध्दे कहं णु णिप्फण्णते सोही? ॥१७०९॥ भा.गा.

एयं निप्फत्तिओ अगवेसणा। निप्फण्णं तो गवेसणं गहणं च।

---

1. बृहत्कल्पपीठिकायाम् भा.गा. १७०१ पच्छार्धम् ॥
2. 'पुट्ठे' ख प्रतौ।

गाहापच्छद्धेण चोदग आह - निप्फत्तिओ व निप्फन्नओ अ साहुस्स आहाराइगहणं होज्जा। निप्फत्तिओ असुध्दं कहं निप्फन्नं गिज्झइ? उच्यते, एवं ताव गवेसियव्वं - एग निप्फन्नं गवेसिज्जइ, न तु मूलनिप्फत्ति। दव्वाणं मूलनिप्फत्तिए गविट्ठाए बहुदोसा। आह - जइ एगं गवेसिज्जइ जं गेण्हइ निप्फन्नं, किं एगठाणं परिच्चयइ? एगठाणयं नाम उप्पत्ति तंदुलाइणं वत्थाइणं च। उच्यते - "न हु सव्वदव्वा[1]" न हु एग कुले नाणा दव्वाणि तित्तयकडुयमाईणि संभवंति। किंतु एवं गवेसमाणस्स तुज्झ सव्वदव्वाण मूलोप्पत्ती, आहाराईणं सुध्दी चेव न भविस्सइ, सज्झाईणं च जे हाणिदोसा हिंडंतस्स। [भा.गा. १७१० - १७१४]

गाहा - एवमवि अप्पमत्तो [प्रस्तुत गाथानुपलब्धेश्चूर्णीगतार्थसंगता] गाथा लिख्यते -

सुयणाणपमाणेण उ उवउत्तो उज्जुयं गवेसंतो।
सुध्दो जदि वावण्णो खमओ इव सो असढभावो ॥१७१५॥ भा.गा.

एवमित्यवधारणे। किमवधारणीयं? एवमप्पमत्तस्स गवेसमाणस्स, जइ वि निप्फन्नं संजयट्ठाए, न याणेज्जा, तओ तं च परिभुंजेज्जा आहारोवहिसेज्जा। ताहे तम्मि परिभुत्ते वि सुज्झइ जहा सो खमओ सुध्दं गवेसमाणो। जो पुण मुक्कधुराओ मुक्कधुरो नाम आहाराइसु उग्गमाईहिं मुक्कतत्ती, सो लग्गइ जहासए[2] अहाकम्मपरिणओ। गाहा - (१७१६ गाथार्थ इति)

अग्गेसु - आयारग्गेसु सेज्जाणं तइए उद्देसए आयाणाए - [3]इह खलु नो सुलभे उवस्सए भवइ। जुत्तजोगी गवेसंतो सुध्दो चेव भवइ उग्गमाइअसुध्दे वि। अहवा तइयंमि वि अज्झयणे रियाणं, जइ संकमे असुध्दो कओ। अहवा संकमे ण सुज्झइ असिवाइ कारणेसु, तत्थ वि तहेव देसूणं पि पुव्वकोडिं अच्छमाणो सुज्झइ। एएसु उग्गमाइसु आहाराइसु जुत्तजोगी परिहरंतो अहाउयं पालेमाणो सिज्झइ। [भा.गा. १७१६ - १७२२]

गाहा - "कारणेण" -

बाहिरकरणे जुत्तो उवओग महड्डिओ सुत्तधराणं।
जं दोसं समावण्णो वि णाम जिणवयणतो सुध्दो ॥भा.गा.१७२३॥

एवं जइ बाहिरकरणेण संपउत्तो उवओगो होइ सो महड्डिओ सुत्त-

---

१. भा.गा. १७११ / १७१२ गता अवयवाः।

२. यथाऽऽशयः।

३. 'तह' स्व प्रतौ।

-धराणं[1] | महर्द्धिक इति महारिध्दित्वमावहति | को दिट्ठंतो ? जं दोसमावन्नो वि खमओ सुध्दो सुयनाणपमाणेण | गाहा ॥ भा॰ गा॰ १७१५ ॥

दोसकरणम्मि - दव्वओ नाम एगो सुध्दो नो भावओ, चउभंगो | तइओ दव्वभावओ सुध्दो | चउत्थो दोहिं वि असुध्दो तस्स का कहा ? जे पढम बिइया तेसु मग्गणा - बिइए भंगे दव्वओ असुध्दे वि भावओ सुध्दो | अहवा दुविहं करणं - दव्वे भावे य | सुध्दो वा भावओ सुध्दो आराहओ होइ | जे जिणदिट्ठा भावा रागादओ तेहिं नो लिप्पइ जम्हा | [भा॰ गा॰ १७२४ - १७२६]

गाहा — "एएसामण्णतरं"

एतेसामण्णतरं कीयादी अणुवउत्तो जो गिण्हे |
तट्ठाणगावराहे संवड्डियमोवराहाणं ॥ १७२७ ॥ भा॰ गा॰

एएसिं कीयाईणं आहाराईणं वा जो अणुवउत्तो गाहओ तस्स आरोवणपच्छित्तं | जया पुण बहुइओ आलोयणा होज्जा तत्र कथं दातव्यं ? उच्यते - सव्वत्थ होउं समिक्खिऊण जइ तवेण सुज्झइ तो तवो दिज्जइ, इहरहा छेओ वा मूलं वा | कहिं एयं पमाणं भणियं ? उच्यते, निसीहस्स वीस -इमे उद्देसे | एस ताव दवियकप्पो ॥ [भा॰ गा॰ १७२८ - १७३१]

इयाणिं खेत्तकप्पो | तत्थ गाहा — "आइछक्कणियत्ती"

आदी छक्कणियत्ती तु वण्णिता जंमि जंमि खेत्तंमि |
एतेसिं सण्णिकासे सालंबो मुणी वसे खेत्ते ॥ १७३२ भा॰ गा॰ ॥

आइखेत्तकप्पो छव्विहकप्पे वन्निओ | खेत्तकप्पविही खेमो सिवाइ[2] | जइ पुण एगो अखेमो, एगो असिवो होज्जा |

(असिवे उ सव्वकालो चेव |) अह खेमो दुब्भिक्खं च | दुब्भिक्खे पणगपरिहाणीय जयणा | गुरुलाघवं वा नाऊण एवमेक्कगसंजोएण जावइया संजोगा उट्ठेंति तावइ- एसु अप्पाबहुयं नाऊण जत्थ अप्पदोसं तत्थ ठाइयव्वं |

सालंबो - नाणदरिसणाइ आलंबणं | [भा॰ गा॰ १७३३ - १७३६]

गाहा - "कडजोगी"

कडजोगिसन्निकासे बहुतरगं जत्थुवग्गहं जाणे |
थोवतरियं च हाणिं तत्थण्णयरे दुविहकाले ॥ १७३७ ॥

दुविह कडजोगी वि सन्निगासं - सन्निगासो नाम अब्भासो

1. सुरवराणां ख प्रतौ
2. भा॰ गा॰ १७५ खेमो सिवो सुभिक्खो अप्पप्पाणो उवस्सयमणुण्णो | इत्यादि

वा अववादो वा नाऊण अप्पदोसतरे अच्छेज्जा जत्थ गुणा बहुतरा जाणाइ, अप्पतरिया य हाणी। दुविहे[1] तत्थ काले ठिओ- उउबध्दे वासासु य वसमाणो सुध्दो। एएसामन्नतरे खेत्ते आलंबणविरहिओ पडिकुट्ठे खेत्ते वसइ तस्स संवट्टिता वराहे तवो वा छेओ वा। एस खेत्तकप्पो॥

इयाणिं कालकप्पो- कलनं काल: कालसमूहो। जीयते[2] अनेनार्थ इति नय:। केवइयं पुण कालं साहुणा संजमं अणुपालेयव्वं? उच्यते- जाव आउसेसं ताव अणुपालेयव्वं। [भा. गा. १७४०]

सो पुण कत्थ अणुपालेयव्वो? उच्यते- गीयत्थसंविग्गसगासे। जइ पुण वाघाएण गीयत्थसंजया न होज्जा ताहे मग्गियव्वा। [भा. गा. १७४१] तत्थ गाहा- 'पंच छ सत्त सया"

पंच व छ सत्त सत्ते अइरेगं वा वि जोयणाणं तु।
गीतत्थपादमूलं परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥१७४२॥ भा. गा.॥
एगं व दो व तिण्णि व उक्कोसं बारसेववासाइं।
गीतत्थपादमूलं परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥१७४३॥

गाहा सिध्दं। एवं संविग्गे वि दो दो गाहाओ- [भा. गा. १७४४-४५]

जत्थ गओ तत्थ चउभंगो। तेसिं अगीयत्थसंविग्गाणं अलंभे एगो वि रागदोसविप्पमुक्को थामावहारमकरेंतो विहरेज्जा। परीसहेसु अपरितंतो, अणिगूहीयबलवीरियो आगमसहाओ, आगमो नाम सुत्तत्थाणि। एएसु पएसु जयंतो गीयत्थसंविग्गो पुव्वभणिओ चउभंगो तस्स सगासे अच्छइ। तस्सासइ बिइयतइयाण। कत्थ अच्छियव्वं? गीयत्थसंविग्गपायमूले। तस्सासइ बिअपए गीयत्थअसंविग्गे, पच्छा संविग्गअगीयत्थे, पच्छा चउत्थे पडिसेहो। आइतियभंगाण असईए य एगो वि थामावहारविजढो विहरउ। [भा. गा. १७४६- १७४८]

गाहा- "कालंमि संकिलिट्ठे"

कालंमि संकिलिट्ठे छक्कायदयावरो वि संविग्गो।
जयजोगेण अलंभे पणगगणतरेण संवासो ॥ भा. गा. १७४९॥

संकिलिट्ठकालो नाम जम्मि काले गीयत्थसंविग्गा नत्थि सो संकिलिट्ठकालो। तत्थ छक्कायदयावरो जुत्तजोगी भावसंविग्गो, अलाभे

---

1. 'दुविहा' ख प्रतौ

2. नीयते- अनुपाल्यतेश्रामण्यमित्यर्थ:।

पासत्थादओ जत्थ गामे तत्थ अन्नाए वसहीए सकवाडदढकुड्डे बिलवज्जि-याए ठवणायरियं काऊण ओहनिज्जुत्तिविहीए एएसिं निवेयणं काऊण। अह अन्ना वसही न होज्जा, तत्थ[1] वा ठियस्स उदंतं न वहंति, ताहे तेसिं चेव वसहीए अपरिभुंजमाणे ओयासे ठाइ।

तत्थ ठिओ आहारोवहिम्मि य जयइ। आहारो सयाए एसणाए हिंडि-माणो न लभेज्जा ताहे पणयपरिहाणीए जयइ जाव चउलहुं पत्तो। जइ तहवि न लभेज्जा, ते य पासत्थाइ निमंतेज्जा ताहे भणइ - उवएसं देह। 'कुलाणि वा मम साहह' भणइ। तहवि एगस्स न देंति ताहे जो धम्मस-ड्डियतरो तं पुव्वं चेव गाहेइ संविग्गभावणं। ताहे भणइ - एएण समं हिं-डामि। तेण वि समं हिंडंतो सयाए एसणाए लएइ[2]। तं च भणइ - अहं अप्प-णा चेव जाणिस्सामि जं मम गिण्हियव्वं, मा तुमं ममट्ठाए गेण्हावेहिसि। अह तेण वि समं भायणे देज्जा ताहे धम्मसड्ढियं भणइ - तुमं मम भाय-णेहिं हिंडाहि अहवा तुमं एसणिज्जं देहि। असइ उक्कड्ढियंपि[3] गिण्हइ। उवही य अप्पणा जयइ जाव चउलहुं पत्तो। जाहे न लभइ ताहे ते भणइ - ममं दवावेह। अह तहावि न लब्भइ, ते भणिज्जा - इमं सीयं गाढं, तुमं च परित्तोवही, इमं गेण्हाहि। ताहे तेसिं तणायं[4] जं अभिनवगहि-यं उग्गमुप्पायणासुद्धं अपरिभुत्तं तं गिण्हइ। तस्सासइ मंदपरिभुत्तं गिण्ह-इ। तं चेवासइ परिभुत्तं पि। पच्छा पुराणगहियं उग्गमाइसुद्धं अपरिभुत्तं। असइ[5] मंदपरिभुत्तं। असइ परिभुत्तमवि तस्सासइ एसणाए असुद्धं अभि-नवगहियं अपरिभुत्तं मंदपरिभुत्तं पि। पच्छा उप्पायणाए असुद्धं अभिनव-गहियाइं। पच्छा उग्गमेण विसुद्धं अभिनव पुराण परिभुत्तं च। एवं जाव हंसा-इं पि रागदोसविप्पमुक्को [भा. गा. १७५०-१७५८] गाहा - "दीहो व मडहतो वा"

दीहो वा मडहओ वा कम्मोदइओ हवेज्ज आतंको।
मडहो अदिग्घरोगो तव्विवरीओ भवे इतरो ॥१७६१॥ भा. गा.
कालचउक्के वि खलु कायव्वं होति अप्पमत्तेणं।
उउबद्धे वासासु य दियराओ चउक्कमेतं तु ॥१७६२॥

अह तत्थ अच्छमाणो होज्जा। तत्थ जइ समत्थो अप्पणा चेव जयइ। असइ लंभे ताहे ते आणेति। एवं सो थामावहारविजढो असइ गिण्हइ। सो आयंको पुण दीहो वा मडहओ वा होज्जा। दोसु वि कायव्वं।

---

१. अन्यस्मिन् प्रतिश्रये
२. लगति
३. अपकर्षवन्तः।
४. सत्कं
५. ख प्रतौ नास्ति।

अहवा तेसिं गेलन्नं होज्जा ताहे सो तेसिं करेज्जा। एयनिमित्तं गच्छवासो इच्छिज्जइ परोप्पर साहिलग्गा य। "काल चउक्क" त्ति उउवासासु रत्तिदिवसओ वा जिणवयणनिद्दिट्ठा गेलन्ने करेमाणस्स विउला निज्जरा। तम्हा कायव्वं निज्जराकामेण। [भा. गा. १७५९-६० तथा १७६३] [गा. १७६४-६६ पृ. ११६ तमे]

गाहा – "दव्वपमाणे"

[प्रस्तुत गाथाऽनुपलब्धेश्चूर्णिगतार्थगाथा लिख्यते –

एगादिया वुड्ढी एगुत्तरिया य होंति दव्वाणं।
ओमत्थगपरिहाणी दव्वागाढं वियाणाहि ॥ भा. गा. १७८४ ॥

*दव्वप्पमाणेत्ति वेज्जो पुच्छियव्वो। केइ भणंति गिलाणो नेयव्वो वेज्जसगासं। एवं भणंतस्स चउगुरु। सो गिलाणो निज्जमाणो परितावणाइ गाढमगाढं। अह सउणा वा, मइल कुचेलाइ, विज्जो वा गिहे न समाणो, समाणे वि अब्भंगिओ एगसाडिओ छारउक्कुरडे वि ठिओ वा, कसाइओ वा भणेज्जा किं मम घर सुसाणकुडी। अहवा विज्जगिहे अन्ने आउरा पासंड गीहत्था य सेज्जासु नवनीयतूलिमउआसु उक्खेवणयतालियंटमाइसु सीयघरे, वासारत्ते सकप्पूरचंदणेण, हेमंते वा कालागरुमाइ, आहारे य णाणप्पगारे पासित्ता संतविभवो रायमच्चो वा पव्वइओ पडिगमणाइ, असंतविहवो निदाणं करेज्जा। जम्हा एए दोसा तम्हा न नेयव्वो गिलाणो विज्जघरं।

सा पुण वेज्जपुच्छाविही अविही य – एगो दंडो, दो जमदूया, चत्तारि नीहारी तम्हा तिन्नी पंच सत्त वा। ते पुण गच्छंता आगड्डविकड्डी[1] करेंति। कालय-रयहरणं, निसेज्ज मइलाणि वा गेण्हंति। एक्केक्कम्मि चउगुरु। तम्हा सुक्किलया पसत्था चोलपट्टरयहरणकप्प।

तत्थ गया वेज्जो कसाइओ अब्भंगिओ वा पुच्छंति चउगुरु। पसत्थासणगओ पसंतो पुप्फपडलहत्थगओ आउरसत्थाणि वा वाएमाणो पुच्छिज्जइ। आयाण निदाणं च से साहिज्जइ। सो पुच्छिओ उवदेसं दिज्जा दव्वाइ।

दव्वओ – कलमसालितंदुला चाउरक्केण[1] गोखीरेण, अट्ठारसवंजणाउलं वा भोयणं उवइसेज्जा। [भा. गा. १७८५]

खेत्तओ – सीयकाले गब्भघरे। उण्हकाले सीयघरे। उक्खेवयतालियंटमाइ सकप्पूर चंदणाइ वा।

---

१. आकृष्टि विकृष्टिं – खिंचताण।

गा १. चतुष्परिणतं गोखीरं, तथाहि – कतिपयानां दुग्धं कतिपया धेनुः पाय्यते, तासामपि अन्या एवं चतुष्परिणत

* कियत्प्रमाणैः साधुभिर्वैद्यसकाशे गन्तव्यम्। यदि वा वैद्यो ग्लानार्थं कलमशालितन्दुलादिद्रव्यप्रमाणं दिशेत

कालओ- पुव्वण्हाइ जाव अद्धरत्ति वा।

भावओ- जत्थ गीय- वाइय- नाइय- कुंभकार- रहकार- सुवण्णकार- -कंसकार- गयसाल- हयसाल- चारगसालाओ य जत्थ अणिट्ठा सद्दा नत्थि, जहा रन्नो, अप्पडिकूलेसु सव्वकज्जेसु वि भवियव्वं।

एवं भणिए जइ भणइ- कुओ अम्ह एयाणि? चउगुरू, गिलाणो परिचत्तो। एवमुवदिट्ठे भाणियव्वं- सावग! तुब्भे रायमाईणं दरिद्दाण य तिगिच्छं करेह विभवाणुरूवं। जाणह तुब्भे जओ परदत्तोवजीवी सव्वमन्नओ मग्गियव्वं। जया कलमसाली चाउरक्कं वा न लभेज्जा तया किं कायव्वं? [भा.गा. १७८६] तया इतरं इतरं वा गोरवीरं एवं जाव कोद्दवकूरो उल्लणाइसु[2] वा ठिओ। खेत्तओ य किडियमाइ[3] जाव चिलिमिली काऊण। कालओ जाहे लब्भइ। भावओ जाणामु अम्हे वट्टावइउं। एतदुक्तं भवति- निद्देसमलुद्धत्तं निकायणा। पच्छा इच्छा य। [भा.गा. १७८७-८८] आयंकपउरयाए पुण कइपडिकइया जहन्निया। तं पुण कहं गंतव्वं गिलाणस्स? जह "भमरमहुकरीओ" गाहा सिद्धं।

जह भमरमहुयरिगणा णिवयंति कुसुमियंमि वणसंडे।
इय होति णिवइयव्वं गेलन्ने कइयवजढेण ॥१७६४ भा.गा.॥

अह वेज्जो भणिज्जा- जामि पासामि गिलाणं। सो वेज्जो संविग्गो गीयत्थो कुसलो, तेण पढमं। पच्छा 'असंविग्गो त्ति गीयत्थो कुसलो। एवं सावए गीयत्थ संविग्ग-पुराणकुसले, पच्छा गीयत्थ असंविग्गपुराणकुसले गहियाणुव्वएगीयत्थ संविग्गभाविए कुसले, अगहियाणुव्वए वि कुसले। पच्छा राया सन्नी गीयत्थ कुसलो, स एव सम्मदिट्ठी कुसलो। एवं तरतमजोगेण सव्वत्थ कुसलेण तेइच्छा। सेसं जहा कप्पे गिलाण सुत्ते। [भा.गा. १७६५-१७६६]

कयाइ संनिही कायव्विया होज्जा। सा वि पिहोव्वरए[1] जहा अगीयत्था न याणंति। असइ कडयंतरिए वा चिलिमिणिअंतरिए वा। उस्सग्गेण जाव पइदिवसं मग्गिज्जइ नेहाइ पणगपरिहाणीए जाव चउगुरू पत्ता। असइ वसहीए वा तस्स संनिहीए सावयस्स अम्मापिउसमाणस्स गिहे कोलालभायणे, तस्सासइ लाउए। एस परिकम्म अहाकडे वि असइए, जहा छिप्पमाणादओ[3A] दोसा न भवंति। पइदिवसं पडिलेहिज्जइ, छारेण गुंडिज्जइ जहा कीडियाईण विराहणा न भवइ। [भा.गा. १७६७-६८]

---

२. अवश्रावणं खाद्य विशेषो वा

१. पृथग् अपवरके

३. लघुद्वारोपेत गृहादि।

२A. सर्पगृहकोकिलादिः स्पर्शभाजो न भवंति यदि वा पीपिलिकादयो न म्रियन्ते स्पृष्ट्वा।

तत्थ कोइ भणिज्जा - निद्दे दव्वे पणिए य दोसा। तत्थ छिप्पमाणे य निक्खिप्पमाणे य पाणाइविराहणा, आणिज्जंते य अडवीओ सचित्तपुढविमाइविराहणा। एवं भणंतस्स चउगुरु। [भा. गा. १७६९]

भण्णति जेण कज्जं तं ठावेज्जा तहिं तु जयणाए।
आयंकविवज्जासे चतुरो लहुगा य गुरुगा य ॥१७७०॥ भा. गा

आयंकविवज्जासे - आयंकविवज्जासो नाम आगाढे अहियट्ठाइ अनागाढं करेइ चउगुरु अणागाढे परगाइ* आगाढं करेइ चउलहु। गाहा॥

जं चेव य उवजीवइ जो पुण पउणो वि समाणो तंमि चेव आहारे पडिबंधं करेइ सेलओ विव तस्स तंबोलदिट्ठंतेण सेसदोसरक्खणट्ठाए - मा अन्ने वि पडिसेवीहिंति, ताहे निच्छुभणा से। [भा. गा. १७७१-१७७२] गाहा "असिवे ओमोयरिए"

असिवे ओमोदरिए रायदुट्ठे पवादिदुट्ठे वा।
आगाढे अण्णलिंगे कालक्खेवो व गमणं वा ॥१७७४ भा. गा.॥

कालकप्पाहिगारे वट्टमाणे असिवाईनि कारणाणि होज्जा। असिवे य जइ सपक्खघाई होज्जा संजयपंता[४], एतंमि आगाढे ताहे लिंगविवेगं काऊण सिवं वच्चइ। अह सव्वत्थ वि असिवं होज्जा ताहे कालक्खेवं करेंति - लिंगविवेगं काऊण अच्छंति जाव सिवं जायं। एवं ओमे वि, रायदुट्ठे वि, पप्प वायदुट्ठे वि। [भा. गा. १७७३-१७७५-७६]

बुद्धिलाइ अन्नलिंगे पुण गहिए इमा जयणा - अह भिच्छुओ ताहे पिंडवाइत्तणं करेइ। अह न लभेज्जा सामन्नं च समुद्देसं जाव य वारओ न एइ ताव अन्नत्थ वच्चइ। अन्नत्थ य गओ ताहे कप्पियारिओ[१] भणाइ - तुब्भे चेव जाणह जं कायव्वं, जं च पमाणं गिण्हियव्वे त्ति। पंतीए पोग्गलपत्तफलाइ परिहरइ विज्जाहारो[२] त्ति। थूभयंतीए जिणे मनसी करेऊण महराइनियत्तणं च भावेइ। अह ससरक्खो ताहे उद्दंडयत्तणं करेइ[३]। भणाइ य - मम वेज्जोवएसेण उसिणोदगं पायव्वं। गाहा -

एगन्नतरागाढे एएसिं कारणाणं विणा अणागाढे निरालंबणो जो पडिसेवइ तट्ठाणारोवणा। [भा. गा. १७७७-१७७९]

---

४. संयतान् प्रति दुष्टा देवता

१. 'कप्पयारीओ' क्वचित्। ३. ऊर्ध्वदण्डत्वम्।

२. वैद्यनिर्दिष्टाहारोऽहमिति।

"संवट्टियावराहे" गाहा —

संवट्टियावराहे तवो व छेदो तहेव मूलं च |
आयारपकप्पे जं पमाणाणिम्माण चरिमंमि ||१७७९ भा.गा.||

एष कालकप्पो | [भा.गा. १७८०]
इयाणिं दंसणकप्पो | तत्थ गाहा —

छक्काए सद्दहिउं इणमण्ण पुणो वि सद्दहेयव्वं |
आगाढमणागाढे आयरियव्वं तु जं जत्थ ||१७८२|| भा.गा.

छक्काएसु वि उवगएसु इममन्नं सद्दहियव्वं - जो आयरियपरंपराएण आगओ अत्थो आगाढे अणागाढे य आयरिज्जइ तं सद्दहियव्वं | [भा.गा. १७८१] तत्थिमाणि सत्त आगाढाणि | गाहा - "दव्वे खेत्ते"

दव्वे खेत्ते काले भावे पुरिसे तिगिच्छ असहाए |
एतेहिं कारणेहिं सत्तविहं होति आगाढं ||१७८३|| भा.गा.

ताव ताव वेज्जो पुच्छियव्वो - जावइयाणि दव्वाणि उवइस्सइ ताव इयाणि न पडिसेविज्जंति, जहा - एयं अम्ह न कप्पइ जाहे उवइट्ठाणि ताहे ओमंथयपरिहाणीए[४] भन्नइ | गाहा ||
एगाइ य वुड्डिए अम्हे करेमु जोग्गं मग्गामु तं चेव जाव कलमसाली | खेत्त काल गाहा —

एवं तु हावयंता खेत्तं कालं च भावमासज्ज |
ता जुहंति जाव तु लंभे जेसिं तु दव्वाणं || भा.गा. १७८७||

तहेव य जहिं लाभो तहिं ठायंति | अहवा भणेज्जा अवस्सिमाणि दव्वाणि जाणियव्वाणि दुल्लहाणि परित्ताणहंसतेल्लमाईणि वा ताहे तं दव्वागाढं पणयपरिहाणीए जयंति जाव चउगुरुएण वि गेण्हंति | १७८८|| भा.गा.||

खेत्तागाढमियाणिं | गाहा —

खेत्तागाढं इणमो असती खेत्ताणं मासजोग्गाणं |
असिवं वा अण्णत्था णदी य वा होज्जा रुद्द तु ||१७८९ भा.गा.||
आयरियादि अगारगा अहवा अण्णत्थ सावता होज्ज |
अंतर जहिं च गम्मति वाला तह तेणखुभिय वा ||१७९०|| भा.गा.

---

४. औद्धत्यपरिहारेण मृदुतया द्रव्यपरिहाण्या द्रव्याणि हापयद्भिर्भण्यते |

खेत्तस्स वा अलंभे - असइ मासपाउग्गाणं खेत्ताणं एगत्थ अच्छंति। असिवं वा अन्नत्थ। नई य वा रुद्धा। न इ[1] वा तीरंति गंतूण। अकारकं वा आयरियाणं अन्नत्थ। सावया[2] वा तत्थ अंतरा वा। दिग्घजाइया वा अन्नंमि देसे अंतरा वा। ताहे एगत्थ अच्छंति। अहवा खेत्तागाढं अद्धाणे। अद्धाणकप्पं - भिक्खावसहिसन्नाभूमिपाणगपलंबाइसु जयणा सद्दहियव्वा। एवं खेत्तागाढं। [भा. गा. १७९१]

कालओ - काले ण[3] पहुत्तो वासावासपाउग्गं खेत्तं वच्चंताणं अंतरा वासं पडियं। तं च अंतरा खेत्तं संनिरुद्धगं। ताहे तं चेव पुव्व-पडिलेहियं खेत्तं जंति उल्लंता वि। अइच्छिए वा वासावासे जइ वासइ मग्गसिरे दसराया तिन्नि होंति उक्कोसेण। ओमोयरियाए वा जयणा आहाराइसु। एयं कालागाढं। (भा. गा. १७९२-१७९४)

इयाणिं भावागाढं। गाहा - "अइउक्कडं च"

अइउक्कडं च दुक्ख अप्पा वा वेदणा झवे आउं।
एतेहिं कारणेहिं भावागाढं वियाणाहि ॥१७९५ भा. गा॥

अइउक्कडंति विसुइयाइ - अहिदट्ठ - विस अप्पा वा वेयणा हिययसूलाइ। तत्थ अग्गी कंदाइ वा परित्ताणं ताइं दायव्वं। एयं भावागाढं। [भा. गा. १७९६]

पुरिसागाढं - जंमि विणट्ठे गच्छस्स विणासो - नाणदरिसणचरित्ताइणं विणासो।

"न हु तुंबंमि विणट्ठे" गाहा -

जेण कुल आयत्तं तं पुरिसं आयरेण रक्खेज्जा।
ण हु तुंबंमि विणट्ठे अरया साधारगा होंति ॥१७९९॥ भा. गा.

ताहे तस्स असुद्धेणावि कीरइ जाव जीवइ। एवं पुरिसागाढं। [भा. गा. १७९७-१७९८]

संजोगदिट्ठपाढी - वेज्जस्स वा संजोगदिट्ठपाढिस्स असइ गीयत्थ-संविग्गस्स ताहे गिहत्थवेज्जस्स जा पाहुडिया कीरइ - ण्हाण - भोयण - वेयणाई[1] तं सद्दहइ। एयं तिगिच्छागाढं। [भा. गा. १८००-१८०१]

गाहा - "होज्ज व सहाय"

होज्ज व सहायरहितो अव्वत्ता वा वि अहव असमत्था।
एय सहायागाढं तम्हा तु मुणी ण विहरेज्जा ॥१८०२॥ भा. गा.

---

१. वाक्यालङ्कारे   २. श्वापदाः
३. काले गच्छो न प्राप्तः कालो वा न पर्याप्तः।

१. बीजनादि यद्वा - 'वेयणाई' इत्यभ्युपगम्य स्नानभोजनादेर्ध्यानं।

सहाया वा से नत्थि | अव्वत्त वया[२] सुत्तेण वा | दोसा य हिंडमाणस्स एगाणियस्स ताहे एगत्थ अच्छंतो अपायच्छित्तो जाव सहाए न लभइ पाउग्गे | एयं सहायागाढं | गाहा — "जावंति"

जावंति पवयणंम्मि पडिसेवा मूलउत्तरगुणेसु |
ता सत्तसु सुध्देसु सुध्द मसुध्दा असुध्देसु ||१८०३|| भा.गा.

एवमाइओ जावंति पडिसेवणाओ ताओ एएसु सत्तसु कारणेसु सुध्देसु सुध्दाओ, एसु सत्तसु कारणेसु अपत्तेसु करेइ, असुध्दाओ | एस दंसणकप्पो | [भा.गा. १८०४-१८०५]

इयाणिं सुयकप्पो | गाहा —
दुविहंमि आगमंमि सुत्ते अत्थे य जे जहिं भावा |
सुत्तमसुत्तकडाणं पवित्थरं ताण अत्थेणं ||१८०६|| भा.गा. ||

दुविहंमि एव सुत्ते अत्थे य दुविहे आगमे जे जहिं भावा वण्णिया | सुत्तं सुत्तकडस्स दिज्जइ | पवित्थरओ नाम सुत्ते गहिए ताहे अत्थो दिज्जइ जं जेण अहिज्जियं | [भा.गा. १८०७-१८०९]

गाहा-"काउस्सग्गे"
काउस्सग्गे वक्खेवणा य विकहा विसोत्तिया पयतो |
अब्भुट्ठाणे वाकोलणा[३] य अक्खेव साहरणा ||१८१०|| भा.गा ||

सुत्त पढियव्व | मज्जाया भण्णइ- पडिलेहिऊण गुरुपरिन्नाईणं उवट्ठिओ सज्झायं पट्ठवेउं निसेज्जं आयरियाणं काऊणं पच्छा सज्झाए पट्ठवणिया-ए काउस्सग्गे कए समाणे वक्खेवो न कायव्वो विकहाओ य इत्थिक-हाइयाओ | विसोत्तिया नाम जं सोतारं हीरंति | अब्भुट्ठाणे वाउलणा[१] जइ अब्भुट्ठेइ सुत्तपोरुसीए मासलहुं, अत्थपोरुसीए मासगुरु | आयरिओ उवउत्तो आलावयं देइ, भंगा वा उवदिसइ | पच्छा वाउलणादोसेण भंगयाराहणातो फिट्टइ | अणुओगमंडलीए वि पट्ठवियाए जस्स सगासे सुयं तं मोत्तूण से-सस्स पव्वावणायरियस्स वि न उट्ठेइ | दिट्ठंतो तित्थकरो आयरिओ | तित्थ-कराणं इयरे गणधरत्थाणे निसामितया | किं-च अब्भुट्ठाणे वाउलणाए दोसा-आयरिओ अक्खे[२] वा, आहारणे वा, उस्सग्गेण वा, अववाए वा आरोवणाओ

---

२ वय: परिणामेन
३. व्याकुलता

वादरिसेउकामो, ते वा गिण्हिउकामा वाउलणादोसेणं न गेण्हंति। दिट्ठंतो अत्थारियाए जहा एगस्स कुडुंबियस्स धन्ने जाए अत्थारिया[३] ओयारिया। तेण य सयं चेव सेयहत्थी दिट्ठो। भणियं च णेणअहो सेयहत्थी दरिसणिज्जो। ते लावया तओहुत्ताए जोइया। दिवसो हत्थिकहाए चेव गओ। तं पि छेत्तं न लूणं। एवं अत्थमंडलीए वि विसोत्तियादोसेण आहारेंतो वि न आहारेइ। भणंतस्स वा पम्हुसइ। बिइयपए जहा पलंबसुत्ते समत्ते, ववहारस्स वा पढमे सुत्ते समत्ते, आरोवणासु वा समत्तासु, कालवेलासु वा, जस्स वा पासे अणुओगो सुओ एवमाइकज्जेसु अब्भुट्ठाणं। "अण्णो वि य सुयकप्पो" गाहा

अण्णो वि य सुतकप्पो सोयव्वं मंडली य रायणिए।
अणुओगधम्मताए कितिकम्मं होति कायव्वं ॥१८११ - भा.गा.॥

अण्णो वि य सुयकप्पो। सोयव्व य राईणियाए जो उट्ठियाए अणुओगमंडलीए अणुभासइ तस्स किइकम्मं कायव्वं। एस सुयकप्पो॥

इयाणिं अज्झयणकप्पो [भा.गा. १८१२] गाहा - "जोए परियाए"

जोए परियाए अणरिहे य अरहे य विणयपडिवण्णो।
सुत्तत्थ तदुभएसुं जे अज्झयणेसु अप्पुभासा ॥१८१३॥ भा.गा.॥

जोगो जाणियव्वो - को कस्स जोगो त्ति, आगाढो अणागाढो वा, परियाओ नायव्वो। पढंतस्स जहा तिवरिसपरियायस्स कप्पइ आयारकप्पे त्ति। अरिहो जाणियव्वो जो विणीओ सो अरिहो, इयरो अणरिहो [भा.गा. १८१४-१८१६- तथा १८२१- १८२२] को य पुण अणरिहो? तत्थिमा गाहा - "तिंतिणिए"

तिंतिणिए चलचित्ते गाणंगणिए य दुब्बलचरित्ते।
आयरियपारिभासी वामावट्टे य पिसुणे य ॥१८१७॥ भा.गा.॥
आदिअदिट्ठभावे अकडसमायारिए तरुणधम्मे।
गव्वित पइण्ण णिण्हइ छेदसुत्ते वज्जिते अत्थं ॥१८१८॥ भा.गा.॥

तिंतिणिओ दुविहो - ठाणतिंतिणिओ उवगरणतिंतिणिओ य। ठाणे अबद्धासणो एत्तो तओ आहावइ निक्कारणे मासलहु विराहणा संजमाइ। दव्वतिंतिणिओ टिंबरुयमिंजिया। थोवं पि वुत्तो तिडितिडेइ मासलहुं। रसतिंतिणिओ अंतो बाहिं वा संजोएइ - सालणग[१] खीर दहिमाइ, निक्कारणे

---

३. कर्मकरा अवतारिताः। || १. शाक व्यञ्जनं।

ओभासइ[२] चउगुरु उवगरणतिंतिणिओ उक्कोसाणि चोलपट्ट-कप्पभायणाणि मग्गइ, सिव्वणीहिं वा कालयं पंडरएण, पंडरयं वा कालएण चउगुरु। बिइय-पए न य तिंतिणि गिलाणो, तेणगाइसु वा कारणेसु। गिलाणस्स वा ओस ढाइकज्जे दवदवचारित्तं[३]। रसतिंतिणो वि गिलाणाइ। जप्पसरीरो[४] वा तिं-तिणियत्तं करेज्जा।

चलचित्तो लिंगे विहारे वा अणवट्ठिओ तस्स मूलं चउगुरुयं वा। अहवा सुत्ते उद्दिट्ठे, तं असमाणेऊण अन्नं पढइ एवमत्थे वि। सुत्ते ड्क। अत्थे ड्का। बिइयपए सुत्तं अत्थं वा वोच्छिज्जिस्सइ तेण पुव्वमुद्दिट्ठं मेल्लेऊण अन्नं गेण्हइ।

गाणंगणिए अंतो छण्हं मासाणं गणाओ गणं संकमइ निक्का-रणे चउगुरु, बाहिं चउलहु अंतो बारसण्हं वासाणं निक्कारणे गणाओ गणं संकमेइ-अंतो चउलहुं, बाहिं मासलहुं। कारणे सुद्धो।

दुब्बलचरित्तो मूलगुणउत्तरगुणेसु पडिसेवइ तन्निप्फन्नं पायच्छित्तं।

आयरियपारिभासिस्स सुत्तं देइ चउलहु, अत्थं देइ चउगुरु।

वामावट्टो एहित्ति जाइ, जाहि त्ति एइ। तस्स सुत्ते चउलहु। अत्थे चउगुरु।

पिसुणोत्ति पेसुन्नं करेइ। आयरिए चउगुरुं। उवज्झाए चउलहुं। खुड्डयस्स मासलहुं। अहवा संते चउलहुं, असंते चउगुरुं। गिहत्थाणं असंते चउलहुं, संते मासगुरुं।

आइअदिट्ठभावो नाम जेण आवसगमाइ न सुयं तस्स छेयसुयं कहेइ चउ-गुरुं।

अकडसामायारीओ नाम जेण मंडलिसामायारी सुत्तत्थतदुभयाणं कहणा-ए तस्स (सुत्ते) चउलहु, अत्थे चउगुरुं।

तरुणधम्मो नाम तिण्ह पंचण्हं वा वरिसाण उरए[५] तस्स सुत्ते ड्क, अत्थे ड्का।

गव्विओ नाम थोवेण वि सुएण गव्विओ भवइ।

पइण्णवागरणो नाम जेसि तेसिं वा अगीयत्थाण अववायपदं कहेइ तस्स सुत्ते ड्क, अत्थे ड्का।

निण्हइ नाम जस्स पासे सुयं तस्स लज्जइ, अन्नं बहुतरं आय-रियं आइक्खइ, तस्स पासे मया सुयं। तस्स सुयं देइ ड्क, अत्थे ड्का।

आयरियपारिभावी नाम जो भणइ-डहरो अकुलीणो त्ति य। आयरिओ डहरो, सो य परिणयवओ। पच्छा सूयाए भणइ-चेडरुवो दुद्ध-पुण्णेण मुहेण ड्क। असूयाए भणइ तुब्भे के आयरियत्तणस्स दुद्धपुण्णेण

---

२. अवभाषते - याचते।
३ शीघ्रगामित्वं
४. याप्यशरीरो वा-स्थूलकायो यदिवा रुग्णत्वेन कृशकायः।
५. अर्वाक्

मुहेण ङ्का। सो कुलीणो, आयरिओ न तहा। सूयाए भणइ - अम्हेत्थ के ? आयरियत्तणस्स हीणकुला, ङ्क। असूयाए भणइ तुब्भेत्थ हीणजाइया आयरिया जाया ङ्का। सो मेहावि आयरिया न तहा। सूयाए भणइ - अम्हेत्थ के ? आयरियत्तणस्स दुम्मेहा कट्ठभूया ङ्क। असूयाए भणइ - तुब्भेत्थ पुढविकाइया सुया य जहा सिक्खाविया ङ्का। सो खद्धादाणिओ[१] निक्खंतो, आयरिया न तहा। सूयाए भणइ - अम्हेत्थ निक्खंडमंडिया[२] समुदाणिया[३] निक्खंता के अम्हे आयरित्तणस्स होमो ? ङ्क। असूयाए भणइ - तुब्भे दमया, आयरिएहिं ते[४] कवालओ भिन्नो पुणोत्थ आयरित्तणे ठविया, चउगुरु। सो बुद्धिमंतो आयरिया न तहा। सूयाए भणइ - अम्हे के आयरित्तणस्स ? जेसिं अम्हं ईहा-[५]पोहा वि नत्थि, ४। असूयाए भणइ - तुब्भेत्थ किं उल्लावेह पुढविकाया ईहापोहवज्जिया, ङ्का। सो लद्धिसंपन्नो वत्थपायाईहिं आयरिया न तहा। पच्छा सूयाए भणइ - अम्हेत्थ के आयरित्तणस्स जे अम्हे अप्पणो वि परिमाणं न करेमो आहाराईहिं ङ्का। असूयाए भणइ - तुमं को आयरियत्तणस्स जइ ते वियडस्स[६] अम्हे आणेऊण मुहे छुभेज्जामो [भा. गा. १८१९] तारिसयस्स जो आयरिओ सुयं देइ चउलहुं, अत्थे ङ्का सो दुविहो नायव्वो - गाहासिद्धं -

सो वि य सीसो दुविहो पव्वावियतो य सिक्खओ चेव।
सो सिक्खतो वि तिविहो सुत्ते अत्थे तदुभए य ॥१८२०॥
भा. गा.

इयाणिं चरित्तकप्पो [भा. गा. १८२३] तत्थ गाहा - "पंचविहंमि"

पंचविहंमि चरित्तंमि वण्णिता जे जहिं अणुभावा।
एसो चरित्तकप्पो जहक्कमं होति विण्णेओ ॥भा. गा. १८२४॥

तं पुण चरित्तं पंचविहं सामाइयमाई। अणुभागो[७] नाम सामाइओ दुविहो - इत्तरिओ आवकहिओ। छेओवट्ठावणिओ छेत्तूणं परियागं। परिहारविसुद्धिए निव्विसमाणो निव्विट्ठो य। एवं सव्वे वि भाणियव्वा। जो जस्स अणुभागो। तंमि पुण चरित्ते गुरुलाघवं नायव्वं।

पंचसु वि एएसु कयरं भारियत्तरं लहुयतरं वा ? उच्यते - सव्वगुरुइयाऽहिंसा, तस्स सारक्खणट्ठं सेसाणि। तयणंतरं मेहूणं, ततश्चौर्यं, ततो मोसं, सव्वलहुओ परिग्गहो। सकका वत्थाइसु रागदोसाणि

---

१. प्रचुरदानदाता
२. निक्खंडमुंडिया रव प्रतौ।
३. भिक्षाकाः।
४. तव रहस्य प्रकटितमित्यर्थः संभाव्यते
५. अहा वुहा रव प्रतौ।
६. राहोः यदिवा 'विडयस्स' क्वचित् तथा च विटपस्य शाखाभूलस्य।
७. विभागः

अवेणेऊणं तु[1] । ण विणा रागेणं ।

लोए पुण मुसावाओ भारिओ जहा तच्चन्नियसड्ढेहिं कवडेण मुसावायववज्जाणि सिक्खापयाणि घेत्तूण विहारो विलओलिओ ।[2]

एसा पुण गुरुलाघवविसोहि कारणे कीरइ — पढमं जं लहुयं तं सेविज्जइ । तं पुण कत्थ सेविज्जइ ? [भा. गा. १८२५ - १८३४]

गाहा "गच्छाणुकंपयाए" बोहियाइसु —

गच्छाणुकंपयाए आयरियगिलाणआवतीए य ।
पडिसेवा खलु भणिता एते खलु कारणा ते उ ॥१८३५॥
बोहियतेणादीसुं गच्छस्सट्ठा णिसेवणा होति ।
आयरियाण व अट्ठा विभास वित्थारओ एत्थं ॥१८३६॥ भा. गा.

सबालवुड्ढाउलगच्छकुलाइकज्जे वा आयरियाणं गिलाणाइ अज्जाइकज्जेसु वा दव्व खेत्तकाल - भावावईसु वा । एएसु गच्छाणुकंप-याइसु कारणेसु अपत्तेसु सुहसीलयाए वयाणि पेल्लइ सो आवज्जइ तट्ठाणपच्छित्तं [भा. गा. १८३७ - १८३९] गाहा - "गच्छाणुकंपयाए"

गच्छाणुकंपयाए आयरिय गिलाण आवदि विदिण्णे ।
जत्थेव य पडिसेहो सच्चरित्तासेवणा तत्थ ॥१८४१॥ भा. गा.

सो पुण एएसु गच्छाणुकंपाईसु कारणेसु पत्तेसु गुरुलाघव विसोहीय वयाणि वेल्लइ । जाणि चेव पडिसेवियाणि[3] ताणि चेव पडिसे-वइ सो सुद्धो [भा. गा. १८४०] गाहा - "पुरिमस्स"

पुरिमस्स पच्छिमस्स य मज्झिमगाणं तु जिणवरिंदाणं ।
आसेवणा य सच्चरित्तया य अत्थेण अणुगम्मो ॥१८४२॥

एवं पुरिमपच्छिममज्झिममाणं तित्थयराणं कारणपत्ते आसेवणा य भवइ । पडिसेवियपयाणं सच्चरित्तया य कहं पुण अत्थओ अणु-गमित्ता[4] ? [भा. गा. १८४३] गाहा —

---

१. 'तेण विणा रागेणं' इति संभाव्यते ।
२. मठो लुण्टित:
३. प्रतिसेव्यानि
४. अनुगन्तव्या

जे के अवराहपदा किण्हा सुक्का भवे पवयणंमि ।
णिघरिसपरिच्छणाए खलु जह कणगं ताव णिहसेसु ॥१८४६॥भा.गा.

जे के अवराहपया हिंसादओ किण्हेत्ति गुरुया, सुक्किलत्ति लहुया सुवन्ननिघरिसमिव परिक्खियव्वा । अधारणीयमिति[1] कट्टु कयजयण-पुरिसकारो तुलासमो नाणदरिसणचरित्तट्ठी । [भा.गा. १८४४ तथा १८४७]

दुट्ठाणा मूलुत्तर दप्पे अजए य होति पडिसेहो ।
कप्पे जयणाणुण्णाता जो पुण णिक्कारणा सेवे ॥१८४८॥ भा.गा.

दुयठाणं नाम मूलगुणा य उत्तरगुणा य । ते कप्पंति[2] एवं सव्वत्थ वि पडिसेहे भुज्जो अणुण्णा कया । गाहा – 'पडिसेह अणुन्ना'

पडिसेहोऽणुण्णा वा पायच्छित्ते य ओह णिच्छइए ।
ओहेण उ सट्ठाणं अत्थविरेगेण वोगडियं ॥भा.गा. १८४५॥

पच्छित्तं पुण दुविहं – ओहियं[3] णेच्छइयं[4] च ओहेण जं चेव आवन्नो तं चेव दिज्जइ । निच्छयओ पुण अत्थेण विरेत्तूण[5] विणिच्छिएणं ति भणियं होइ तो दिज्जइ विरेगो पुण छव्विहो । [भा.गा. १८४९- १८५०] तत्थ गाहा – "कस्स कहं"

कस्स[1] कहं[2] कहिं[3] तं वा कइया[4] णु कंम्मि[5] केच्चिरं[6] होति ।
छट्ठाणपदविभत्तं अत्थपदं होति वोगडियं ॥ भा.गा. १८५१॥

१. कस्स वा – गीयत्थस्स वाऽगीयत्थस्स वा ? गीयत्था आयरिया उवज्झाया भिक्खू वा । आयरिया उवज्झाया नियमा गीयत्था । ते पुण कयक-रणाऽकयकरणाणं तहाणुरूवं दिज्जइ । भिक्खू अभिगय अणभिगय, थिराऽथिर, कयकरणाई भयणिया ।

२. कहं ति – जयणाए अजयणाए वा पडिसेवियं ?

३. कहिं ति – अद्धाणे वा जणवए वा पडिसेवियं ?

४. कइया – सुभिक्खे वा दुब्भिक्खे वा ? दिया वा राओ वा ?

५. कंमि – कारणे वा अकारणे वा ?

६. केच्चिरं – कइवारे कालं वा ?

---

१. अवधारणीयमिति क्वचित् ।
२. द्वितीयपदं प्राप्नुवन्तीत्यर्थः यदिवा 'कप्पेति' त एव आचार इति संभाव्येत ।
३. औत्सर्गिकं ।
४. आपवादिकं ।
५. विश्लिष्य ।

एवं छहिं ठाणेहिं *वोकडेऊणं दिज्जइ ।

तत्थ जइ सुद्धेण सुद्धा चेव । सुद्धत्ति कारणं । असुद्धा अकारणे सेवियं, अगीयत्थाईसु वा असुद्धं । तस्स पुण सहु असहुत्ति दिज्जइ । सदओ थिरसंजमो जेण [भा.गा. १८५२-१८५५] गाहा – "सोऊण"

सोत्तूण कप्पियपदं करेति आलंबणं मतिविहूणो ।
रहस्सं च अणरहस्सं करेति मतिसूयओ पुरिसो ॥१८५६॥ भा.गा.

जो पुण सोऊण कप्पियपयं, कप्पियपदमिति अववाओ सव्वत्थ एवं कायव्वं ति मन्नइ मइविहूणोत्ति मइविहूणत्तणेण आलंबणाणि करेइ, रहस्साणि अरहस्साणि करेइ । मइसूयगो[१] नाम सो पावो । गाहा – "माइट्ठाणविमुक्को"

माइट्ठाणविमुक्को अकप्पियं जो तु सेवते भिक्खू ।
तं तस्स कप्पितपदं, मायासहिए चरणभेदो ॥१८५७॥ भा.गा.

गाहासिद्धमेव । एव चरित्त कप्पो ॥

इयाणिं उवहिकप्पो [भा.गा. १८५८-५९] उवही उग्गमाइसुद्धो धरेयव्वो गाहासिद्धमेव उग्गमाइ ।

"पत्तं पत्ताबंधगो"

पत्तं पत्ताबंधो पायट्ठवणं च पायकेसरिया ।
पडलाइं रयत्ताणं च गोच्छओ पायणिज्जोगो ॥भा.गा. ८१७॥

गाहा सिद्धमेव । "तिन्नि य पच्छागा"

तिण्णेव य पच्छागा रयहरणं चेव होइ मुहपोत्ती ।
एसो दुवालसविहो उवही जिणकप्पियाणं तु ॥भा.गा. ८१८॥

गाहा सिद्धमेव । एस जिणकप्पो । थेरकप्पो "एए चेव दुवालस"

एए चेव दुवालस मत्तग अइरेग चोलपट्टो य ।
एसो उ चउद्दसविहो, उवही पुण थेरकप्पम्मि ॥२८५५॥ बृ.क.भा.गा.
(भा.गा. १४७९)

दंडए गाहा । "चम्मए" गाहा –

चम्म पडि तलिय खल्लग वज्झादी होज्ज चम्मगहणं तु ।
अत्थुरण पादरक्खा फुडिए तह संघणट्ठादी ॥ भा.गा. ८४७॥

गाहा – "कोसए"

कोसग नहरक्खट्ठा, हिमाऽहि कंटाइसु उ खपुसादी ।
कत्ती वि विकरणट्ठा, विवित्त पुढवाइरक्खट्ठा ॥२८८१ बृ.क.भा.गा॥

---

१. सूयग – खलो दुर्जनो दुष्ट इति यावत् ।
* विचार्य – विचिन्त्य ।

गाहा सिद्धं । "जंच उवग्गहकरं"

वातिय - पित्तिय - सिंभिय गुलियाणं अगदसत्थकोसे ।
जं चऽणुवग्गहकरगं गेण्हह अद्धाणकप्पंमि ॥भा.गा. २०२५॥

गाहासिद्धं । गाहा — "फासुय अफासुए वावि"

फासुयमफासुए यावि जाणए या अजाणए ।
ओहोवहुग्गहिते धारणा कस्स केच्चिरं ॥ भा. गा. १८६०॥

उवही पुण जो गहिओ भवइ सो केच्चिरं धरेयव्वो ? जो फासुओ उवही सो जाणगो वा होंतु अजाणगो वा ताव परिभुंजंति जाव जुन्नो, जाव रुंचिऊण[1] अट्ठए वि कज्जइ । आयरिउवज्झाया नियमा जाणगा । अह अफासुओ जाणगा य कारणे गहिओ ताहे वि ताव परिभुज्जइ जाव जरइ । अह अफासुओ अयाणगा कारणे गहिओ ताहे उप्पन्ने फासुए इयरो परिट्ठविज्जइ । एवं चउभंगे धरणा वा परिट्ठवणा वा [भा.गा.१८६१-६

चोयग आह - गाहा —

चोदेति पंचण्हं किण्ण वि एगो पडिग्गहो होति ।
तो दो एक्केक्कस्स तु भण्णति ण पहुप्पए एवं ॥१८६७॥
भा. गा.

एगेण किमेगो पादो ? जाव पंचण्ह वि सयाणं एगेगो पडिग्गहओ अहवा दोण्हं दोण्हं तिण्हं चउण्हं वा पडिग्गहओ एगो न पहुप्पइ तो दो दो एगस्स - पडिग्गहओ मत्तओ दिज्जइ ।

उच्यते - अद्धाण - पाहुणगाईसु कारणेसु । कहं धरेउ जइ बहुगा-ण एगमेगो पडिग्गहओ ? एवयं भणंतस्स चउगुरु । अप्पा परो पवयणं जीव-निकाया परिच्चत्ता । वारत्तगं[2] दिट्ठंतेण । सव्वेण वि दोण्णि गेण्हियव्वा - मत्तओ पडिग्गहओ य । किं कारणं ? जेण गच्छो सकारणो सबालवुड्ढ-सेहपाहुणयाइसु । आह-जइ नियमा दो दो धरिज्जंति, जिणकप्पियाणं किं निमित्तं एगओ । [भा.गा. १८६८- १८७०]

संगहियकुच्छि जसपेहिय अप्पाहारे चियत्तदेहे य ।
णासण्णेऽणावाए णातिनिरुद्धे ठवियभाणं ॥१८७१॥ भा. गा.

उच्यते- स भगवान् संगहियकुच्छी । जोयणं पि गच्छइ सन्नाडो । जसकारी य पवयणस्स । जेण अयसो भवइ तन्न करेइ । अप्पाहारो सो

---

१. जीर्णफटितांशं दूरीकृत्य

२. नि.भा.गा. ५८९० चूर्णी द्रष्टव्या

भयवं। तत्ते अओकवल्ले[३] विव विद्दंसइ तस्साहारो।
सरीरे य अपडिबद्धो। न य आसन्ने वोसिरइ उच्चाराई। न य आवाए वि। विच्छिन्ने थंडिले पडिग्गहं एगपासे ठविऊण। एएहिं कारणेहिं तस्स एगो पडिग्गहो। गाहा —
तिहिं जइ वत्थाणि दाणिं कइहिं वत्थेहिं पडिप्पवइ[१]? उस्सग्गेण तिहिं। जया पुण तिहिं न संथरेज्जा तो अइरेगाणि धरिज्जंति। आह — ननु पमाणाइरेगे दोसा? उच्यते सबालवुड्ढाउलो गच्छो सह कारणेण सकारणो। तेसिं बहुएहिं कज्जं। अन्नओ य मग्गंतो सेहाइकारणेसु न लभइ ताहे परिच्चत्ता सेहादओ। पच्छा वोच्छेयकरो भवइ सपक्खस्स तित्थस्स वुत्तं भवइ। [भा.गा. १८७२ - १८८३] गाहा — "जइ एयविप्पहुणो"

जइ एयविप्पहूणा तवणियमगुणा भवे निरवसेसा।
आहारमादियाणं को नाम परिग्गहं कुज्जा ॥१८८४॥ भा.गा.

जइ आहारोवहिसेज्जासु विप्पहूणाणं नाणदरिसणचरित्ताणं तवनियमसंजमसज्झायमाईणं निप्फत्ति होज्जा तेण आहाराइ आइग्गहणेण ओसहाईणं च को उवग्गहं कुज्जा -? [भा.गा. १८८५ - ८६]

"जंमि परिग्गहियं"
जंमि परिग्गहियंमी तसथावरघातणा पवत्तंति।
गहणे गहिते धरणे सो णाम परिग्गहो होति ॥१८८७॥ भा.गा.
जत्थ पुण परिगिज्जमाणं तसथावराणं उवघाओ पवत्तेज्जा — पुरेकम्मं उदउल्लाइसु तं न घेप्पइ गहिए वा पच्छाकम्माइ, धरेंते वाऽपडिलेहणाइ भएण न पडिलेहइ भएण मा हीरिहित्ति। सो परिग्गहो भवइ। उवहिंमि घेप्पंति गहिए धरेज्जंते वा एए दोसा न भवंति। सो परिग्गहो निद्दोसोत्ति अपरिग्गहो चेव। [भा.गा. १८८८ - १८९२]
गाहा - "आहारोवहि"
आहारोवहिपूजादिकारणा ण तु परूवितं तित्थं।
नाणचरणाण अट्ठा तित्थं देसिंति तित्थकरा ॥१८९३॥ भा.गा.

किं निमित्तं भगवया तित्थं पवत्तियं? उच्यते - नवि भगवया आहारादिनिमित्तं तित्थं पवत्तियं। नाणदरिसणचरित्तनिमित्तं। तवसंजमाईणं निव्वाणसाहगं परिविद्धिकारणं तित्थं पवत्तियं। [भा.गा. १८९४]

---

३. तप्तेऽयोमये कटाहे।

१. 'पहुप्पेज्जा' इति भाष्ये गा. १८७९।

गाहा — "नाणचरण"

नाणे चरणे गुणकारगाणि आहारउवहिमादीणि ।
एतेण अणुण्णाला नहिं ठिताणं तु तो पूजा ॥१८९५ भा. गा ॥

आहाराईणि नाणाईणं गुणकारगानित्ति तेन अणुन्नायं । तेण पुण नाणाईसु ठियस्स पूया वि इच्छिज्जइ । जहा गणहारिस्सुक्कोसाहारोवहिमाईणं । एस उवहिकप्पो । [भा. गा. १८९६]

इयाणिं संभोगकप्पो पुव्वभणिओ सत्तविहदसविहकप्पेसु दोसु वि पसंगनिमित्तं असभोइओ न संभुज्जइ । इह पुण जं तत्थ न भणिअं तं भणणाइ । [भा. गा. १८९७ - १९००] किं निमित्तं पुण संभोइओ कज्जइ ? गाहा- "अणुकंपा"

अणुकंपा संगहे चेव लाभालाभेऽविदाघता ।
दावदवे य गेलन्ने कंतारे अंचिए गुरू ॥१९०१ भा. गा. ॥

उच्यते- अणुकंपिया बालवुड्ढाओ हुंति । संगहो य । गिलाणाईणं ओसहभेसज्जाइसु संभोगोत्ति काऊण नियमा उवउज्जंति । लाभालाभनिमित्तं च अन्ने लंभति । असंखडे[1] य उत्पन्ने अविडाही भवति । अविडाही नाम पिट्टणादयो दोसा न भवंति, एस मम एगभाणिओत्ति[2] काऊण [भा. गा. १९०२ - १९०४] "जइ एगभाणजिमिया वि" तत्थ गाहा—

जइ एक्कभाणजिमिता गिहिणो वि य दीहमेत्तिया होंति ।
जिणवयणबहिब्भूता धम्मं पुण्णं अयाणंता ॥१११७॥ भा. गा.

जइ ताव निस्सीला निव्वया जिणवयणपरम्मुहा छक्कायनिरणुकंपा गिहिणो वि एगभायणियोत्ति काऊणं मज्जादमणुपालंति, किं पुण सव्वजगज्जीवसारणिएण मोक्खमग्गपडिवन्नेणं साहुणा साहुणीए य ? सरीरमिव अणुपालणिज्जो [भा. गा. १११८] दवदव दोसा न भवंति । दवदवत्ति -मा एस पुव्वं घेच्छिहिइ । दवदवदोसा परिहरिया भवंति । गिलाणो य सारक्खिओ । कंतारे य साहारणं भवइ । अंचिए[3] वा गुरवो सुहं जस्स रोयइ तस्स सयासाओ भुंजंति । इहरा एगो परितम्मइ वेयावच्चकरो । बाहिरभावा य सेसा जायंति । गाहा ॥

---

१. कलहे ।
२. एकभाजनिकः सह भोजीति ।
३. दुब्भिक्खे वा । इति जे प्रतौ ।

हट्ठो उ लाभजुत्तो जो पुण सढो एयाणि ठाणाणि पुव्वुत्ताणि न करेइ, अन्ने न आणिंतित्ति काऊण, जं वा तं वा घेत्तूण एइ जोगहीणो । तम्हा सेस-परिपालणनिमित्तंसो तु मंडलीए कीरइ । गाहा ॥ [भा. गा. ११०५-१११०]

एए चेव य - जइ हट्ठो ताहे बहुं आणेऊण एक्कओ भुंजइ ताए खरं-टेऊण - विकिंचणा तस्स अणाउट्टंतस्स । अह मंदलद्धिओ तहवि न लभइ ताहे पुणो छुब्भइ । एवं तेण आयरिएणं सव्वेसिं जोगो वोढव्वो । [भा. गा. ११११-१११४] दिट्ठंतो - "जह गयकुलसंभुओ" गाहा सिद्धं ।

जह गयकुलसंभूओ गिरिकंदर विसमकडगदुग्गेसु ।
परिवहति अपरितंतो णियगसरीरुग्गते दंते ॥१११५॥ भा. गा.
तह पवयणभत्तिगओ साहम्मियवच्छलो असढभावो ।
परिवहंति अपरितंतो खेत्तविसमकालदुग्गेसु ॥१११६॥ भा. गा.

तेण प्रकारेण तथा प्रवचनमिति चातुर्वर्ण: श्रमणसंघ:, तस्य भक्त: प्रवचनभक्त: । सदृशो धर्मेण साधर्मिक: । वत्सलभावो वात्सल्यं आहारादिभि: संग्रहोपग्रह इत्यर्थ: । अशठभावो ऋजुभाव इत्यर्थ: । परि सर्वतोभावे वहति परिवहति परिकड्ढतीत्यर्थ: अपरितंत अपरिश्रान्त इत्यर्थ: । असहुवग्गो नाम बा-लवृद्धशैक्षग्लानादयो । क्षेत्रे वाऽध्वनादिषु । काले दुर्भिक्षादि । दुर्गम राजदुष्टादिषु । दृष्टांतो वइरस्वामी ।

आह - किं पुण संभोत्तव्वं, किं न संभोत्तव्वं? उच्यते उग्गमाइ-सुद्धं भोत्तव्वं । गाहा -

आइतिय[1] उग्गमाइअसुद्धं न संभोत्तव्वं । [भा. गा. १११९]

आह - जाणि ताव वत्थाणि उग्गमाइअसुद्धाणि पायाणि य ताणि मा संभुंजंतु । जाणि वि पडिलेहणाई उवहयाणि ताणि मा एगट्ठा बज्झंतु,[2] मा वा वाहिज्जंतु, मा संफासदोसेण वा सहसा वा असंभोइया-ओ संभोइएसु भत्तं पाणं वा छुभेज्जा । पच्छा जइ उवहम्मइ ।

आचार्य आह - जइ आइतियसुद्धं उग्गमाइसु भत्तपाणाइ संफा-सेण असुद्धेणोवहम्मइ । एवमसुद्धे सुद्ध संजोगेण किह न सुज्झइ? किं च, अनवत्था य । ते जइ सुद्धे पडिग्गहे आहाकम्माइ गहियं तेण तस्स पडिग्गहयस्स उवघाओ भविस्सइ । अहवा असुद्धस्स वि सुद्धे गहियं ति कट्टु सुद्धी भवउ । अह ते आहाकंमिए गहिए वि तस्स पडिग्गहयस्स उवघाओ न भवइ, न वा तस्स भत्तपाणस्स सुद्धी भवइ । एवं संभोइयाओ

---

१. आहारोपाधिशय्या यदिवा आधाकर्मौद्देशिकमिश्र यद्वा उद्गमादि त्रिकम् ।
२. संघट्ट्यन्ताम् ।

विसंभोइए छूढे संफासेण उवघाओ न भविस्सइ | किं च जइ असंभोइयाओ संभोइए छूढे उवघाओ भवइ, एवं संभोइयाओ असंभोइए छूढे असंभोइयस्स वि सुध्दी भविस्सइ | अह ते एवं न भवइ | ननु ते इच्छामेत्तं | न य इच्छामेत्तओ सिध्दी | [भा.गा. ११२० - ११२३] गाहा — "उवघाओ"

उवघातो विसोही वा णत्थि अजीवस्स भावतो एसो |
उवघातो विसोही वा परिणामवसेण जीवस्स ||भा.गा. ११२४||

उपेत्य घातो उपघात: | स च द्विविध: द्रव्योपघातो भावोपघातश्च | तत्र द्रव्योपघात: शुचिद्रव्येण उपहन्यते | भावोपघातो द्विविध: — प्रशस्तोऽप्रशस्तश्च | तत्र प्रशस्तोपघात: मिथ्यादर्शनाविरतिकषायोपघात: सम्यग्दर्शनादिषु[1] प्रशस्त | अप्रशस्तोपघातस्तु सम्यग्दर्शनाद्युपघात: मिथ्यात्वादिषु प्रवृत्ति: |

विशोधी वा | धी नानार्थातिशयेषु | सु प्रशंसाऽस्तिभावयो: | शोधनं शुध्दि: | विविधमनेकप्रकारा वा शुध्दिर्विशुध्दि: | साऽपि द्विविधा- द्रव्यविशुध्दिर्वस्त्रादि | भावशुध्दि: सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रविशुध्दि: |

स च विशुध्द्युपघातो वा अजीवद्रव्याणां न भवत्येव सिध्दांत: | कस्मात् ? अजीवद्रव्याणां क्रोधादय: परिणामविशेषा न भवन्ति | तेनोपघातो विशुध्दता वा अजीवानां न भवतीत्येष भावना निश्चय इत्यर्थ: | आह — कस्योपघात इति संज्ञा ? यद्यजीवानां न भवति शुध्दिरूपघातो वा ? उच्यते — उपघातो विशुध्दिर्वा परिणामप्रत्यया जीवानां भवति | तच्च जीवानामिति सिध्दान्त: | परिणति: परिणाम: अध्यवसायो भावशुध्दिरित्येकोर्थ: | एस संभोगकप्पो | [भा.गा. ११२५ - ११२६]

इयाणिं आलोयणा | गाहा- "दुविह पडिसेवणाए"

दुविह पडिसेवणाए दोठाण दुयागताण ठाणाणं |
जस्सेव[2] तु अहिमुहतो आलोएज्जा तदट्ठाए ||११२७|| भा.गा.

आङ्मर्यादायां लोकृ दर्शने | आलोचना नाम आलोचना- प्रकटना- ऋजुभाव इत्यर्थ: |

सा आलोचना मूलउत्तरगुणयो: प्रतिसेवितयो: |

आलोचना सा दुविहा - दप्पिया कप्पिया य | एक्केक्का दुविहा- मूलगुणेसु य उत्तरगुणेसु य |

---

१ 'सत्स प्रवृत्ति: वा इतिशेष: |

२. 'जं सेवत्' रव प्रतौ |

मूलगुणेसु जयणा अजयणा। एवं उत्तरगुणेसु वि। एवं कप्पिया वि मूलउत्तरगुणेसु जयणा अजयणा।

कप्पिया नाम असिवादिकारणेसु नाणदरिसणचरित्तकुलगण-संघचेइयकज्जेसु य उप्पन्नेसु रागदोसविप्पमुक्का जयणा-पुरिसकारो आगाढाणागाढेसु तुलासमो पडिसेवइ, सा कप्पिया। तव्विवरीया दप्पिया।

तं पुण कस्सालोएइ? जं चेव पुरओ काउं विहरइ। तत्रालोचना-रिहो —

आयारवमाहारवं ववहारुव्वीलए पकुव्वी य।
अपरिस्सावी निज्जव अवायदंसी गुरू भणिओ ॥४॥

तावदाचारवान् नाणाइपंचविह आयारे उज्जुत्तो। आहारवं-आलोइज्जंतं अवधारेइ। ववहारवंपायच्छित्तववहारं जाणइ-मूल उत्तरगुण दप्प-कप्प-जयणा-अजयणा-आगाढ-अणागाढेसु विऊ। ऊवीलए जहा गंडं पक्कं निप्पीलेइ पूवाई[1] नीणेइ। भावो पीलो वि तहा उच्छाहेइ जहा अपलिउंचमाणो आलोएइ। पकुव्वए तहा करेइ जहा पायच्छित्तं पकुव्व-इ वहतीत्यर्थः। अवायदंसी अवायं जाणइ दव्वखेत्तकालभावावायं वहं-तस्स। अपरिस्सावि दव्वापरिस्सावि घडाइ। भावापरिस्सावी आलोइय-मन्नस्स न कहेइ। निज्जवए-पायच्छित्तं वहंतं न मुयइ। उवग्गहे य से वट्टइ गिलाणाइ।

इयाणिं आलोएंतओ जाइसंपन्नो न गूहइ। अपच्छानुतावी पायच्छित्तं वहंतो न परितप्पइ-किं मए आलोइयं?

आलोयणा दोसा —

आकंपइत्ता अणुमाणइत्ता जं दिट्ठं बायरं व सुहुमं वा।
छन्नं सद्दाउलयं बहुजण अवत्त तस्सेवी ॥

आकंपइत्ता वत्थपत्ताईहिं आकंपेइ। अणुमाणइत्ता जाणह अप्प-संघयणोऽहं। जं दिट्ठमन्नेहिं तमालोएइ अहवा बादरं आलोएइ, सुहुमं न आलोएइ। छन्नं आलोएइ जहा न नज्जइ। सद्दाउलो ढड्डर सद्देण आलोएइ परिभणंतो अ अहो पुन्नमंतो अत्तदोसे आलोएइ। महायण-मज्झे वा आलोएइ। अव्वत्तं आलोएइ। तस्सेवी नाम पासत्थाईणं मूल-गुणउत्तरगुणपडिसेविणो तुल्लजाईअस्स आलोएइ।

अथवाऽन्योऽर्थः आलोचनाया मोक्षाभिमुखः मोक्षार्थमालोचयति,

---

१. पूयादि

अभिमुखता अपलिकुंचणा इति आलोयणा विसल्लीकरणत्थं। [भा.गा.११२८-
आह - किं निमित्तमालोएइ ? ११३२]
गाहा - "जइ वि य"

जदि विय तवगुणजुत्तो होति मणुस्सो अणुद्धरियसल्लो।
ण करेति दुक्खमोक्खं सल्लुद्धरणे पि जतियव्वं ॥भा.गा. ११३३॥

जइवि तवगुणेहिं जुत्तो तहावि अणुद्दियभावसल्लदोसेण न सुज्झइ ससल्लो तवनियमजुत्तोवि। जम्हा न सुज्झइ तम्हा भावसल्लुद्धरणे य प्रयतितव्वं।

कस्स सयासे आलोएअव्वं ? उच्यते - जाणगस्स जो पायच्छित्तं जाणइ। [भा.गा. ११३४] गाहा - "पायच्छित्तमयाणंतो"

पायच्छित्तमयाणंतो ठाणे ठाणे अहाविहिं।
आलोयणाए उवसंपयाए ण हु होति पाउग्गो ॥११३५॥ भा.गा.

जो पायच्छित्तं न याणइ अगीयत्थो तंमि तंमि ठाणंमि मूलगुण पाणाइवायाइ, उत्तरगुण पिंडविसोहिमाइ। कारणं असिवोमाइ, तव्विवरीयं अकारणं। अहवा कुलगणसंघचेइयाइ कारणं। अभिवायणाईसु वा कारणं। एवं जो न याणइ सो आलोयणाउवसंपयाणं अप्पाउग्गो भवइ।

आह - किमर्थमगीतार्थो द्वाभ्यामपि कारणाभ्यामप्रायोग्यो भवति? उच्यते - अनभिज्ञत्वात् वैद्यपुत्रवत् पूर्वाह्णे वमनं दद्यात्।
गाहा - "किं कारणं"

किं कारणं ? ण याणति सोहिं साहुस्स सोहिकामस्स।
ठाणे ठाणे पुढवादिएसु मूलुत्तरे वावि ॥११३६॥ भा.गा.

किमिति प्रश्ने। कारणं हेतुरित्यर्थः। न इति प्रतिषेधे। वि नानार्थो। शोधनं शुद्धिः। ज्ञा अवबोधने। परिषोढव्याः परीषहा स्त्रीचर्यानिषधाऽऽक्रोशरोगमलाधास्तान् श्रमयंतीति श्रमणाः। शोधिं कामयंतीति शोधिकामाः। कामयति प्रार्थयति कांक्षयतीत्येकोऽर्थः। आलोयणाए गुणे य पलिउंचणादोसाण य। ण होइ पाउग्गो। एवं उवसंपयाए वि न होइ पाउग्गो। [भा.गा. ११३७-११३८]
"पायच्छित्तं वियाणंतो"

पायच्छित्तं वियाणंतो ठाणे ठाणे जहाविहिं ।
आलोयणाए उवसंपयाए सो होति पाउग्गो ॥११३९ भा.गा.॥

गाहासिद्धं । पुणो गाहा[1]- किं कारणं ? वियाणइ गीयत्थो । किं निमित्तं आलोयणाए उवसंपयाए य अरिहो ? सो जाणइ । दप्पकप्पपडिसेवणाणं पलिउंचियमपलिउंचियाण य गुणदोसजाणओ अरिहो । गाहा - "पडिसेवणाइयारे"

पडिसेवणाइयारे दुविहे काले पबंधवोच्छेदे ।
एक्केक्क छक्कएणं आलोयण मा पडिच्छाहि ॥११४०॥ भा.गा.

पडिसेवणाइयारेत्ति सा चरित्ते भवइ । मूलगुणाइयारा य उत्तरगुणपडिसेवणाइयारा य दुविहे काले - उउबद्धे वासावासासु वा । अहवा दिया राओ वा । अहवा सुभिक्खदुब्भिक्खे वा । जयणा अजयणा वा । पबंधो नाम संपओगो, तस्स पडिसेवणा । पबंधस्स वोच्छेयनिमित्तं जाणि तानि ठाणानि छक्कस्स, ताणि अणुगंतूण दिज्जइ पायच्छित्तं । छक्को नाम स एव - कहं ? कस्स ? कहिं वा ? अहवा पुढवीमाइछक्कं । अहवा महव्वयछक्कं अणुगम्म दिज्जइ[2] [भा.गा. ११४१-११४४] गाहा- "आलोयणा"

आलोयणववहारो संवासि पवासिया उ अवराहा ।
संवासिया उ गच्छे पवासिया कारणगतस्स ॥११४५॥ भा.गा.

आलोयणववहारनिप्फन्ना पुण दुविहा अवराहा भवंति संवासिया य पावासिया य । संवासिया ताव जे गच्छे अच्छंतस्स । पावासिया जे पवसियस्स केणइ कारणेण । अहवा संवासिया जाव अणवट्ठो । पावासिया पारंचिओ । संवासिया भइया वायणाइसु पंचसु पएसु । पंच पया इति सज्झाओ वायणपुच्छणाइ । [भा.गा. ११४६-११४७]

आवन्नपरिहारिया अणवट्ठाण ण य दिज्जइ संवसंताण वि वायणाइ, न य तेसिं अंतिए घेप्पइ । [भा.गा. ११४८-४९] एस आलोयण कप्पो ॥

इयाणिं उवसंपयाकप्पो । तत्थ गाहा —"दुविहंमि आगमंमि"

दुविहंमि आगमंमि उ परूवणा चेव आयरणता य ।
पण्णवण गहण अणुपालणाए उवसंपदा होति ॥भा.गा. ११५०॥

सा दुविहा उवसंपया आगमनिमित्तं उवसंपज्जिज्जइ सुत्तनिमित्तं अत्थ-

1. वक्ष्यमाणार्था गाथा संभाव्यते ।
2. अकप्प गिहिभायणं चेत्याद्यपि भा.गा. ११४३.

-निमित्तं वा | अहवा ते आयरिया परूवेऊण सुत्तपयाणि उस्सग्गाववाएसु गाढं जाणंति | अहवा गाढतरं तत्थ आचरणा पडिलेहणाइसु | अहवा ते पन्नवणं धम्मकहाए अक्खेवणाइसु धम्मपन्नवणं निरागं[1] जाणंति | तं पि किर सिक्खियव्वं धम्मकहिस्स वा | गाहगा ते आयरिया गाहणाकुसला | अणुयत्तंति वा ते आयरिया गिलाणाइसु कारणेसु | अणुपालेंति वा मूलगु-णाइ | एवं परूवणाइसंपन्नो उवसंपज्जियव्वो | एगवइरित्तो न उवसंपज्जि-यव्वो जइ वि गीयत्थो होइ | जइ[2] पुण असंविग्गादयो उवसंपज्जइ परू-वणाइसंपन्नं ति काऊण[3] [भा. गा. ११५१-११५७]. गाहा — "वत्तणा संधणा"

वत्तणा संधणा चेव, गहणं सुत्तत्थ तदुभए |
वेयावच्चे खमणे, काले आवकहादि य || ६३६१ नि. भा. गा. ||

वत्तणा नाम सुत्तस्स परियट्टणा, अत्थस्स गुणणा | संधणा सुत्त-त्थाणं पव्वज्जकारणा[4] | गहणं अभिणवाणं सुत्तत्थाणं चेव | गाहा — "तलिया" [गाथानुपलब्धेः कल्प्यते चेयं गाथा —

तलियाऽऽमुंचण वत्थ, चलण धुवण मक्खण पमज्जणाइं |
गहण निक्खेवे मोण निक्खमण पवेस अच्छणं य ||
[एतत्संवादिनी नि. भा. गा. ५५५५ द्रष्टव्या]

जो सो उवसंपज्जंतओ गच्छं परिच्छइ, सो वा गच्छेण परिच्छि-ज्जइ | तलियाओ निक्कारणे आमुंचइ | वत्थाइ चलणाणि वा निक्कारणे धुवंति मक्खेंति वा | पमज्जणाइं दंडाइगहणनिक्खेवे ण भवइ | मोणेत्ति निक्खमणपवेसे आवसिय निसीहियाओ नत्थि | सुत्तत्थतदुभयाणि वा न करेंति मोणेण अच्छंति | एयाणि उवसंपज्जमाणो न कुज्जा गच्छे वा एव-माइ नत्थि पच्छा सारणया वा विसग्गो वा | जइ वत्तणाइनिमित्तं उवसंप-न्नो न वत्तेइ, न संधेइ अभिणवंवान गेण्हइ सारिय य पच्छा विसग्गो |
जो पुण पासत्थाइ उवसंपज्जइ तत्थ गाहसिद्धं — "सीहमुहं" -चरणकरणं "गाहासिद्धं" एमेव अहाच्छंदे" सिद्धं |

सीहमुहं[5] वग्घमुहं उयहिं व पलित्तगं व जो पविसे |
असिवं ओमोदरितं धुवं से अप्पा परिच्चत्तो || ११५८ ||

---

१. प्रचुरं स्पष्टं वा
२. 'जो पुण' पा प्रतौ तथैतत्संबन्धश्चाग्रे भा. गा. ११५८
३. 'तस्य इमे होंति दोसा' भा. गा. ११५७ [गाथयासह]
४. 'पच्चग्ग कारणा' यदिवा 'पम्हुट्ठ-कारणा' संभाव्यते |
५. 'गुहं' नि. भाष्ये गा. ५५६५

तहचरणकरणहीणे पासत्थे जो उ पविसते भिक्खू ।
जयमाणे उ पजहिउं सो ठाणे परिच्चयति तिण्णि ॥११५९॥
एमेव अहाच्छंदे कुसील ओसन्नमेव संसत्ते ।
जं तिण्णि परिच्चयंति णाणं तह दंसणं चरित्तं ॥११६०॥ भा.गा.

को पुण अरिहो ? कत्थ उवसंपज्जियव्वं ? गाहा – "भत्तोवहि"

भत्तोवहिसयणासण - दाणग्गहणे य एक्कमेक्कस्स ।
हट्ठगिलाणे कतकारिते व अणातिक्कमो जत्थ ॥११६५॥ भा.गा.

तत्थिमे चत्तारि गच्छा – एगो भत्तपाणं देइ गेण्हइ वि । एगो देइ, न गिण्हइ । एगो गिण्हइ न देइ । न देइ न गिण्हइ । तत्थ पढमे उवसंपजिअव्वं ? सेसा नाणुन्नाया । बिइए लाभं न भवइ गिलाणाइकज्जेसु । तइए गि-लाणस्स न कोइ किंचि करेइ अट्टवसट्टस्स मरणदोसा । चउत्थे अ सव्व एव । पढमे गुणा भत्तोवहिसयणासणाइसु गहणे दाणे य हट्ठगिलाणाइक-ज्जेसु अवरोप्परस्स एयाणि जत्थ कीरंति तत्थ अणुन्नायं । [भा.गा. ११६१-६४] गाहासिध्दं च – "जो पुण"

जो पुण ते दूसेंतो करेति उवसंपदं असुध्देसु ।
तिठाणगामिलासी हवइ तु वोसट्ठतिट्ठाणो ॥११६६ भा.गा॥

जो पुण सुध्दं आयरियं दूसेइ केणइ पुच्छिओ – 'अमुयस्स आयरियस्स पासे कीस न ठिओ सि न पढिओ वा? भणइ तस्स अमुओ नाम दोसो – अप्पियसज्झायाइ । जइ य ते तस्स दोसा नत्थि ताहे तमा-वज्जइ जं दोसं भणइ, जं च असुध्दस्स मूले उवसंपज्जइ तं च तस्स तयं आवज्जइ एवं ताव उवसंपज्जंतस्स ।

इयाणिं उवसंपयारिहो जइ असुध्दं अमुगो नाम एयस्स दोसो अविणीयाइ तं जइ पडिच्छइ ताहे जट्ठाणवाई तट्ठाणं आवज्जइ । तं च असुध्दं रागेण पडिच्छइ जे तस्स दोसा ते आवज्जइ । वोसट्ठतिठाणो नाम नाणदरिसणचरित्ताणि । [भा.गा. ११६७-११७१]

केरिसो पुण आयरिओ अणरिहो उवसंपदं प्रति ? गाहा – "आहारे"
आहारे उवहिंमि य पगासणा होति अणरिहमसड्ढे ।
एगंतनिज्जरट्ठी संविग्गजणंमि उद्देसो ॥११७२॥ भा.गा.॥

जो आहारोवहिओ अहं लभिस्सामीति संगहं करेइ पडिच्छयाणं च तत्तो लभामि। अणरिहो वा तिंतिणियादओ वाचेति। असड्ढए[1] वा आकट्टी[2] समाकट्टी काऊण वाचयति सो वि नोव उपसंपज्जियव्वो।

जो पुण एगंतनिज्जरट्ठी पंचहिं ठाणेहिं वाएइ, संगहोवग्गहअव्वो-च्छित्तिनयट्ठाए सो उवसंपज्जियव्वो।

वायणारिहो वि नाणदंसण अहत्थिभावा जाणणट्ठयाए वा पढेइ सो वाएयव्वो। तस्स पुण वाएंतस्स एयाणि चेव आहारउवहिमाईणि लभंति। एए चेव ठाणा वायणाइ विनयभत्तिरागेण वा थामावहारविजढो तित्थस्स अणुधम्मया इति कट्टु तस्स प्रकाशं च भवति गणहारिणो। एस उवसंपयाकप्पो। [भा. गा. ११७४-८०-८३-८५]

इयाणिं वायणाकप्पो[3]। गाहा — "सुत्तत्थतदुभयं"

सुत्तत्थतदुभयाइं पवायते ताव जाव संधाणं।
बहुपच्चवाययाए विजढे भजियं तु संधाणं ॥ भा. गा. ११८६॥

सुत्तत्थतदुभयं वा ताव वाएइ जाव संधाणं। संधाणं नाम अद्धं। किं निमित्तं न समाणेइ जेण अद्धं होज्जा? उच्यते बहुपच्चवायताए विजढो, जोगे निक्खित्ते भणियं होइ। भइया य संधणा। संधणा नाम पुणरवि जोगउक्खेवो, समाणं ति वुत्तं होइ। जइ असिवाइकारणेहिं निक्खित्तो जोगो तो से पुणो वि सारिज्जइ। अह दप्पेण सढयाए वा निक्खिवइ ताहे न उक्खिप्पइ पुण जोगो। [भा. गा. ११८७-८८]

आह - आचार्यो किमर्थं भैक्षं न पर्यटति, वैयावृत्यं वा न करोति? उच्यते —

वाते[1] पित्ते[2] गणालोए[3] कायकिलेसे[4] अचिंतता[5]।
मेढी[6] अकारए बाले गण चिंता[10] इड्ढी[11] वादिणो ॥११८१ भा. गा.॥

(१) (२) 'वाएपित्ते' आयरिओ जो हिंडइ उण्हकालसीयकालवासासु हिंडंतो वाएण घेप्पइ। सोवाणेसु चडंतो कवाडाइं उग्घाडेंतो सुत्तत्थतदुभयाणं परिहाणी। गच्छस्स सीसपडिच्छगाणं गिलाणारोवणा य। उण्हकाले

१. मन्दश्रद्धान्।
२. आकृष्टिं समाकृष्टिं खिंचताणं।
३. उद्दिसण वायण त्ति एगट्ठा। भा. गा. ११८५

वा पित्ताइ सेइओ[4] अइबहुयं वा पाणीयं पीओ[1] उव्वाओ य न तरइ समु-द्दिसिउं[2]। उवगरणं च पडिलेहंतो वाएण घेप्पेज्जा। तत्थ वि सुत्तत्थाइपरि-हाणी।

(३) 'गणालोए' जहा गोवालो गावीए तिन्नि वेला पलोएइ पुव्वण्ह-मज्झण्हाऽवरण्हेसु तहा आयरिओ वि पुव्वण्हे ताव आवासए[3] सुत्तत्थमं-डलीए गणालोयं करेइ। मज्झण्हे समुद्देसवेलाए। अवरण्हे वि सज्झाय वे-लाए आवासए वा। को आगओ अणागओ वा? परीसहपराइओ वा? पित्त-मुच्छाए पडिओ वा? तत्थ नाहिइ अच्छंतो- सव्वाणि जाणइ।

(४) कायकिलेसो य हिंडंतस्स।

(५) पच्छा किलेसाभिभूओ सुत्तत्थाणि न चिंतेइ। हिंडंतो पडिलेहंतो य अचिंतिय सुत्तं देइ मासलहुयं, अत्थं देइ मासगुरुं। सुत्तं नासे-इ ङ्क। अत्थं नासेइ ङ्का। अच्छंतो पुण सुत्तत्थाणि चिंतिऊण देइ, न य नासेइ।

(६) मेढी पमाणं आधार इत्यर्थः। दव्वमेढीए बइल्ला परिग्गहिया सुहं भमंति। भावमेढीए आयरिया मेढीभूया। तम्मि य सव्वे संनिय-ट्टंति। जाणंति य अच्छंता कोऽत्थ हिंडइ, को न हिंडइ। गिहिनि-सेज्जं वा जो वा हेइ तं जाणंति अच्छंता।

(७) 'अकारए' आयरियाणं हिंडंताणं जं सरीरस्स अकारयं अंबक्ख-लमाई नीणियं जइ गिण्हइ समुद्दिसइ य सरीरापत्थं गिलाणा दोसा। अह पडिसेहेइ अकारकं इति ताहे लोओ उड्डुहइ- आय-रिओ चेव अजिइंदिओ जं पि तं पि नेच्छइ। किं पव्वइयत्थ?

(८) वालेण वा सुणएण वा खज्जेज्जा, गिलाणारोवणा, सुत्ताइपरि-हाणी गच्छविणासो य।

(९) गणचिंता- गणं न चिंतेइ हिंडंतो बालवुड्ढगिलाणसेहपाहुणय। बालवुड्ढा य न तरंति दीहभिक्खायरियं हिंडिउं। गिलाणस्स न कोइ वावारेंतओ गेण्हंतओ वा। अह वावारेंति- गिलाणस्स गेण्ह पाउग्गं। ते य न गेण्हंति। अहवा जं वा तं वा आणेंति। ताहे जइ भणंति- किं एरिसं गिलाणस्स जाणीयं वा? ताहे तेहिं भ-ण्णइ कसाइएहिं तुब्भे सयमेव हिंडंता किं लभह? दीसंता तुब्भे पडिरूवा[4] लाभाणं। एव सेहपाहुणाणं पि न करेइ गिण्हं-तओ संदिसंतओ वा। जइ पुण अच्छंतो बालवुड्ढादयो सव्वे चिं-तेंतो गिलाणस्स पाहुणयाणं वा पाउग्गं गेण्हावेंतो वा।

---

१. स्वेदितः
२. श्रान्तः
३. भोक्तुम्

३. आवश्यके
४. उचिताः

(१०) इड्डित्ति इड्ढी राय-रायमच्च-दंड-भड़ भोइया व आगया, धम्मं सुणेमोत्ति, जाव आयरियं भिक्खं गया। ते खिंसिऊण पडिगया 'एरिसा आयरिया भिक्खं पि से न कोइ आणेइ। अह अच्छंतो तेसिं धम्मं कहेंतो, ते पव्वयंता वा, सावगा वा हुंता, अहाभद्दया वा दाणसड्ढा वा हुंता, पवयणउवग्गहकरा वा हुंता। तेसिं चंदगवेज्झसरिसो[1] आगमो।

जहा एगेण रण्णा अमच्चेण य धम्मो सुओ। ते[2] य अक्खि-
-त्ता। तेहिं गंतूण अंतेउरे कहियं, जहा-एरिसा तारिसा य आयरिया। पच्छा बिइयदिवसे महादेवी अमच्ची य समागया धम्मं निसामोत्ति[3], जाव भिक्खं गया। पच्छा खिंसिउं पडिगया। ताओ वि य पव्वयंताओ सावियाओ वा हुंताओ। एए दोसा।

(११) वाई वा आगओ पुच्छइ-कहिं आयरिया? केणइ सिट्ठं भिक्खाए गया। पच्छा वाई भणइ-किह सो अत्थाणि जाणिहिइ? जो दिवसं भिक्खं हिंडंतो अच्छइ। अहवा परिस्संतो त्ति काऊण नीसट्ठं[4] द्रावेई। सो वि उव्वाओ[5] न तरइ उत्तरं दाउं। पच्छा पवयणोभावणाया[6]। अह अच्छंतो, पच्छा सत्थाणि चिंततो परवाई हेउणा वा निमित्तेण वा पराइणंतो पच्छा पवयणउब्भावणाया कया हुंता [भा॰गा॰ १९८२] गाहा "गणाहारिस्साहारो" [एतत्प्रतीकपूर्वा गाथा नोपलभ्यतेऽतो न लिखिता]

गाहासिद्धं। "उद्दिट्ठंमि उ"

उद्दिट्ठंमि य अंगे सुतखंधंमि य तहेव अज्झयणे।
आसज्ज पुरिस कारण तिट्ठाणे होति पडिसेहो ॥१९८९ भा॰गा॰॥

अंग-सुयखंधु-अज्झयणे उद्दिट्ठे, आसज्ज नाम प्राप्य, पुरिसं उद्दिसावेउं ताहे अच्छइ[7] अट्टखट्टेहिं[8] अहवा अविणीओ, विगइपडिबद्धो वा, अविओसवियपाहुडे[9] त्ति। एवमादिदोसा पच्छा नाया ताहे निक्खिप्पइ जोगो।

---

१. चन्द्रकवेध्य सदृशः राधावेध सदृशः।
२. 'तेण' जे प्रतौ।
३. 'निसामेंति' जे प्रतौ।
४. प्रचुरं निद्राति।
५. परिश्रान्तः।
६. प्रवचनाऽपभ्राजनता।
७. छिन्नत्ति - प्रतिषेधति निक्षिपति
८. निरर्थकेषु सत्सु यदिवा यत्ततन्निमित्तमुद्भाव्येति संभाव्यते
९. अशमितकलहः

ति ट्ठाणं नाम सुत्तत्थतदुभयेसु पडिसेहो। कारणे वा असिवाइम्मि न वाएज्जा। [भा.गा. १९९०-१९९२] एस वायणा कप्पो।

इयाणिं अणुन्नकप्पो। गाहा—"वत्थे पाए अणुन्ना"

वत्थं पादग्गहणे वासावासेसु णिग्गमो सरदे।
तिगपणगसत्तग दुगाउयंमि अप्पोदगं जाणे ॥१९९३॥ भा.गा.

यंमि काले वत्थपायाणि घेत्तव्वाणि, वासारत्ते वा ठायंतेसु घेत्तव्वाणि। पच्छा ठियाणं नाणुन्नायाणि। निग्गयाण पुण सरए अन्नेसु खेत्तेसु जत्थ गीयत्थसंविग्गेसु वासो न कओ तत्थ गेण्हंति। जत्थ वा गीयत्थेहिं संविग्गेहिं कओ तेहिं गएहिं चीरे, पच्छा गेण्हंति। तेसिं पुण निग्गच्छंताणं जइ अद्धजोयणस्स अंतो तिन्नि पंच सत्त दगसंघट्टा, दगसंघट्टो नाम जानुहेट्ठा, तहावि अणुन्नायं, परेण नाणुन्नायं। जंति अप्पोदगा, मग्गत्ति रियाए[1] भणियं—जाव सत्त संघट्टा। एवं अद्धद्धे जोयणे। [भा.गा. १९९४-१९९७] गाहा — "वत्थे पाया"

वत्थं पातग्गहणे णाव संथरणंमि पढमठाणंमि।
एत्तो वत्तिक्कमम्मि तु सट्ठाणसेवणा सुद्धी ॥भा.गा.१९९८॥

एवं वत्थपायगहणे वा तणसंथारे वा पढमं ठाणं तु उस्सग्गेण गहणं। एवं नवसु ठाणेसु पढमं ठाणं ति उसग्गेण वुत्तं होइ। नवट्ठाण वइक्कमे पुण सट्ठाणे विसोही भवइ उवहिमाइ। किं च तं सट्ठाणं? आवाए[2] ठाइ ऊसग्गो ताहे अववायओ गहणं। कानि[3] पुण ताणि नव ठाणानि? [भा.गा. १९९९-२००३] तत्थ गाहा — "दव्वे खेत्ते"

दव्वे खेत्ते य काले य वसही भिक्खमंतरे।
सज्झाइए गुरू जोगे एते ठाणा वियाहिता ॥भा.गा. २००४॥

दव्वाणि जइ आहारउवकरणानि लब्भंति तंमि खेत्ते उग्गमाइ सुद्धाणि। खेत्तं ति खेत्तं वित्थिन्नं महाजनपाउग्गं। अन्नं च तारिसं नत्थि खेत्तं। कालेत्ति तइयाए पोरुसीए भिक्खावेला
वसहित्ति वसही पाउग्गा हेमंतगिम्हवासपाउग्गा इत्थिनपुंसगाइदोसरहिया।

१. आचाराङ्ग द्वितीयश्रुतस्कन्ध तृतीयेऽध्ययने।
२. अपवादे उपस्थिते, तिष्ठति - बाध्यते उत्सर्गः।
३. 'अहवा' इति भा.गा. २००३ विकल्पोऽयं नव क्षेत्राणि तदपेक्षया।

भिक्खा सुलभा गुरुमाइपाउग्गा ।
गामांतराणि अविकिट्ठाणि ।
अन्नत्थ असज्झाइयं । तत्थ य सज्झाइयं ।
गुरूण सुलभं पाउग्गं ।
जोगीण व आगाढेतराणं सुलभं पाउग्गं ।

एयाणि नवसु नो णेंति । अत्थं सुणेंति साहवो, अभिनवं गुणेंति वा साहिंति वा उज्जयारेंति वा । सुत्तं गेण्हंति परियट्टंति उज्जयारिंति वा। सबालवुड्ढाउलस्स वा गच्छस्स नत्थि तारिसं अन्नं खेत्तं कारगं पहुच्चति । संथरंताणं चेव विसोहिठाणं पेल्लंति वा, न दूरं गच्छंति, मासकप्पं करेंता चेव उवहिं उप्पायंति । अह पुण दव्वं वत्थं पायं दुल्लभं, खेत्तं वा न पहुप्पइ । ताहे बहुए वि दगसंघट्टे पेल्लइ । दूरं पि गच्छइ - अद्धजोयण परेण वि । [भा.गा. २००५ - २०११]

गाहा – "आलंबणे"

आलंबणे विसुद्धे दुगुणं तिगुणं चतुग्गुणं वा वि ।
खेत्तं कालातीयं समणुण्णातं पकप्पंमि ॥२०१२॥ भा.गा.

तेण आलंबणे वि सुद्धे सव्वं पि अणुन्नायं । दुगुणं खेत्तकालं-दुगुणं-तिगुण-चउग्गुण बहुगुणे वा खेत्तकालाइक्कमा अणुन्नाया पक्कपंमि । एस अणुन्नाकप्पो । [भा.गा. २०१३]

इयाणिं ठियकप्पो[1] । एएसु कारणेसु पत्तेसु, असिवाइसु वा पत्तेसु दव्व खेत्तकालउवहिअइक्कमा अवस्स कायव्वा तेण ठियकप्पो ।

इयाणि अद्धाणकप्पो । [भा.गा. २०१४] गाहा–"उद्दद्दरे सुभिक्खे"

उद्दद्दरे सुभिक्खे अद्धाणपवज्जणं तु दप्पेणं ।
दिवसादी चउलहुगा चउगुरुगा कालगा होंति ॥२०१५॥ भा.गा.

उद्दद्दरा उद्दरा[2] पोट्टा कडपल्ला वा धन्नभरिया । धमेंति[3] खेम-सिव-सुभिक्ख-पउरन्नपाण-वत्थं जइ अद्धाणं पडिवज्जइ दिवा चउलहु, रत्तिं चउगुरु । उग्गम-उप्पायणेसणा य जा खलु विराहणा तं निप्फन्नं पायच्छित्तं [भा.गा. २०१६] किं च – गाहा –

पुढवी आऊ तेऊ चेव वाऊ वणस्सति तसा य ।
णंतेसु परित्तेसु य जं जहिं आरोवणा भणिता ॥२०१७॥ भा.गा.

---

१. भिन्नक्रमतः प्रसङ्गतोवा समागतस्तच्चिन्त्यमग्रे पृष्ठ-१७६ वक्ष्यमाणत्वाच्च ।
२. ऊर्ध्वं दरा-धान्यदराः कटपल्यादयउदरादयश्च पूर्यन्ते यत्र काले तद् ऊर्ध्वदरम् ॥
३. दानार्थं शङ्खानं ध्मान्ति यत्र काले तत् सुभिक्षम् ।

पुढवीकाइय - सचित्तमीसएसु ठाणनिसीयणभिक्खऽणंतरपरंपरपइट्ठिएसु उच्चाराइवोसिरणे वा चउलहुगाइ पच्छित्तं।

आउक्काएपुरेकम्माइऽजयणाइसु, आगासमुवणे[1] वा तन्निप्फन्नं पायच्छित्तं।

तेउक्काय - अणंतर परंपरपइट्ठियभिक्खा, राओ वा संसत्तेसु व. समाणो संघट्टणाइ। सट्ठाणपच्छित्तं। तत्थ गाहा - "लहुओ गुरुओ"

लहुओ गुरुओ लहुया गरुया चत्तारि छच्च लहुया य।
छग्गुरु य छेदो मूलं अणवट्ठप्पो य पारंची ॥२०१८॥ भा. गा.

लहुया गुरुया चत्तारि छ लहुगा य छग्गुरुअ छेद मूलं अणवट्ठप्पो य पारंची। जम्हा एए पच्चवाया तम्हा दप्पेण अद्धाणं परिवज्जए।

बियपए पवज्जेज्जा। न य पायच्छित्तं। गाहा —

असिवे ओमोदरिए रायदुट्ठे भए व आगाढे।
गीतत्था मज्झत्था सत्थस्स गवेसणं कुज्जा ॥२०१९॥ भा. गा.

जया असिवोमोयरिया य रायदुट्ठ भयं वा आगाढं मिलक्खुबोहियाईण। नाणाइअट्ठा वा - जाणि इमम्मि देसे सुत्तत्थतदुभयाइं ताइं णेण गहियाइं धरेइ य, अन्ना य से सत्ति अत्थि अपुव्वे घेतव्वे। दरिसणप्पभावयाणं वा सत्थाणं वा गोविंदनिर्युक्त्यादि अट्ठंगमहानिमित्तं गहणनिमित्तं वा।

एवं कारणे गम्ममाणे गीयत्था मज्झत्था सत्थं पडिलेहाविज्जंति। जस्स इमम्मि विसए[2] रागो सो सत्थमवि असत्थं कुज्जा। जस्स वा दोसो[3] सो असत्थमवि सत्थं कुज्जा।

सो पुण सत्थो कालुट्ठाई कालनिवेसी ठाणठाई कालभोई। कालुट्ठाई नाम जो सुरे उइए उट्ठेइ। कालनिवेसी नाम उग्घाडपोरुसीए ठाइ, दिवसओ वा अवरण्हे वा जिमिओ पुणो न चलइ। ठाणठाइ थंडिले ठाइ। कालभोइ मज्झण्हे भुंजइ दिवसओ वा। एवं एए भंगा नेयव्वा जहा कप्पे अद्धाणकप्पो।

सो य सत्थो पंचविहो - भंडी, बहिलग, भारवाहिया खंधेन वहंति, पोट्टलियो सत्थो, कप्पडिय सत्थो।

---

१. आकाशेशयनम्
२. देशे
३. द्वेषः

भंडियसत्थेण पढमं, तत्थ कंजिकाईणि अत्थि। उज्जुयं घराओ चेव चंकमंति। तम्मि संति सेसाणि अणुन्नवेइ चउगुरुं। एवं तरतमजोगेण। [भा. गा. २०२१]

सत्थवाहो पुराणगीयत्थसंविग्गभाविओ। पच्छा गीयत्थअसंविग्गभाविओ, गहिअअणुव्वओ, अहाभद्दय दाणसड्ढ मिच्छादिट्ठिए परतित्थिए वा एए चेवाऽऽतियत्तिया*।

तत्थ जो पभू सत्थवई सो पुव्वमणुन्नविज्जइ। अहवा आइयत्तिओ जो पभू पेल्लओ[1] य सो पुव्वमणुन्नविज्जइ। अह दो वि पभू दो वि अणुन्नविज्जंति। एगस्स वि अचियत्तेण गमणे गरूया णिच्छुभणाई य दोसा। अहवा जो पेल्लओ तस्स छंदेण गम्मइ। जो य भिच्छुयउवासगाइमिच्छदिट्ठी भणिऊण[2] सीसे कया नेमी - पच्छा विप्पडिवन्नो। उवरिं जयणं भणिहिइ। [भा. गा. २०२०] अद्धाणकप्पे गाहा — 'सत्तुय'

सत्तुय समिए संखडि पत्थयणे खलु तहेव पोग्गलिए।
धम्मकह णिमित्तेणं वसहा पुण दव्वलिंगेणं ॥ २०२१॥ भा. गा.

पुव्वं ताव कणिक्का घय गुल खंड सक्कर खज्जूरा वा पच्छा सत्तुय संखडिमाइलद्धा। पच्छा तलाहणाइया[3] सुक्कवेऊण गुलघयतेल्लमिसा। पच्छा खलं तेल्लगुलाइमीसं। पच्छा पोग्गलियं सुक्कवेऊण तं च फासुयं।

भिक्खं जं च हिंडंता। पच्छा धम्मकहाए पणगहाणीए वा निमित्तेण वा तीयपडुप्पन्नणागए जाव चउगुरुयं पत्तो। तहावि अलंभे वसभा दव्वलिंगेण सरभेद वन्नभेद अंतद्धाण हंसाइहिं वा उप्पा‥ति। [भा. गा. २०२७]

सत्थे पत्ताणं, पंथे, तेणपल्लीसु वा। पंचविहो उग्गहो दव्वाणं ति देविंद - राय - गाहावइ - सागारिय - साहम्मिय पडिग्गहियाण गहणं गीयत्थसंविग्गे सुन्नगामे। ॥ भा. गा. २०२२॥

तिविहं दव्वं - उक्कोस मज्झिम जहन्नयं। उक्कोसं - मउय सण्हय, खर सण्ह य पिंडविगइमाइ। मज्झिमं घणवीइ[5] पढमिय दोच्चंगाइ[6] य।

१. प्रेरको व्यवस्थापक इति।
२. स्वीकृत्य विप्रपतिपत्त्यर्थं प्राकृतप्रयोगः।
३. 'तलाहइया' क्वचित् जलार्द्रकुट्टितास्तिलाः संभाव्यते।
४. स्तेनमुषितानां
५. घनविकृतिः प्रथमा तच्च घृतं संभाव्यते
६. मधुरतिक्तादि द्रव्याणि।

* आदियात्रिका मध्ययात्रिका इति। ख. प्रतौ च 'पुरपुर चेव आतिया' इति।

जहन्नयं दोसीण तक्कपिंडमाइ भिक्खा। जहन्नयं दोसीणमाइ बहिं गामस्स अदिट्ठं गेण्हइ मासलहुं। दिट्ठं गेण्हइ तं चेव। जहन्नयं अंतो गामस्स गेण्हइ मासगुरुं। मज्झिमयं बहिगामस्स अदिट्ठं गेण्हइ मासगुरुं, दिट्ठं गेण्हइ चउलहुं। तं चेव मज्झिमयं अंतोगामस्स अदिट्ठं गेण्हइ चउलहुं, दिट्ठं गेण्हइ चउगुरुं। उक्कोसयं बाहिगामस्स अदिट्ठं गेण्हइ चउलहुं, दिट्ठे चउगुरुं। तं चेव उक्कोसयं अंतोगामस्स अदिट्ठं गेण्हइ चउगुरुं, दिट्ठे छल्लहुं। उवज्झायस्स मासगुरुंताओ आढत्तं छगुरुए ठाइ। आयरियस्स जहन्नं चउलहुए आढत्तं उक्कोसेण अंतोगामस्स दिट्ठे छेए ठाइ।

जयणाए कडवालगाइं[1] मग्गित्तु जेण संथरंति तं गेण्हंति। पाणए जयणा- जत्थ तुयरुक्खो[2] बिहेलगाइ[3] पडिया तं गिण्हिज्जा। पच्छा सिलातत्ते वा[4], पत्तकयवरं[5] वा। जत्थ गावि- महिसि- [6]सूवरुम्मद्दणाई सुवहंते य आयवतत्ते य पासंदणाइसु[7] य जयणा। गहणं तु गीयत्थे। [भा.गा. २०२३]

उवकरणं- पिप्पलय- पलंबाईणं विकरणं, सूचि आरिय[8], नक्खच्चण,[9] तलिय, पुडग[10] वज्झे[10अ] य कत्ती य चम्म कत्तियमाई, कत्तरि[11], सिक्कग, सबेंटलाउए[12] चेव, धम्मकरए[13], [14अ]वाईय- पेत्तिय सिंभियगुलियाणं अगयाणं सत्थकोसाणं जं चन्नेवमाइ उवग्गहकरं गेण्हंति। [भा.गा. २०२४-२५]
अध्दाणकप्पम्मि तिन्नि परिसाओ कीरंति- सीहपरिसा पुरओ, वसभपरिसा मग्गओ, मिगा य मज्झे वसभाणं। [भा.गा. २०२६] ते जाहे उत्तिन्ना अध्दाणं ताव न परिट्ठवेंति अध्दाणकप्पं[14] जाव अध्दपज्जत्ती[15]। गाहा। गाहा- "उवकरण"

उवकरण चरित्ताणं विलोवणा सरीर लोयऽणागाढे।
धम्मकहनिमित्तेणं पुलागकज्जेण आगाढे ॥२०२८॥ भा.गा.॥

---

१. यथाकृतवालचणकादि।
२. कषायरसयुक्तफलवान्।
३. बिभीतकादयः।
४. तप्तशिलायाम्।
५. प्राप्तकचवरं वा।
६. शूकरः।
७. प्रस्यन्दनादिषु
८. अयोमयकीलिका तीक्ष्णाग्रा।
९. नरवार्चनं नखहरणं।
१०. पुटकाः खल्लकानि
११. कर्तरी
१२. सवन्तालाब
१३. जलगालनार्थं वस्त्रम्।
१४. अगदानि
१४अ तुवरवृक्षचूर्णगुटिकानाम् अगदानाम्।
१५. अध्वपूर्णता।
१०अ - वर्ध्रः चर्मदवरक इति।

सो पुण मिच्छादिट्ठी उवकरणं वा विलोवेज्जा, चरित्तसरीरमाई वा। पच्छाधम्मकहाइ पुलागकज्जं करेंति।

आगाढे कहं पुण गंतव्वं सव्वेहिं वि? अह कोइ न तरइ वाहे-उं (भा.गा. २०३०) अतरंता 'गाहा —

एगक्खुरे य दुक्खुरे दुप्पिए अणुबंधि तह य अणुरंगा।
अहभद्दए भिजायति असती अणुसट्ठिमादीहिं ॥२०३१ भा.गा॥

एगक्खुर पच्छा वट्टखुरं मग्गइ। सिद्धपुत्त सावओ वा णं कड्ढइ। असइ खुड्डओ लिंगविओगेण। आवासिए पच्चप्पिणंति। अह भणेज्जा -तत्थ गया पच्चप्पिणेज्जाहि ताहे लिंगविओगेण खुड्डओ चारेइ। एवं गोणो वि। दुप्पिओ नाम हत्थी। अणुरंगी[1] - सकडं। अणुबंधी[2] - पघंसा[3] [भा.गा. २०३२-३५]

एवं दुक्खुरादीसु वि जयणा जा जत्थ सा तु कायव्वा।
सुत्तत्थजाणएण अप्पाबहुयं तु णायव्वं ॥२०३६॥

एवं अप्पाबहुयं नाऊण गाहासिद्धम्। जाव[4] पमाणणिम्माई चरिमम्मि। एस अद्धाणकप्पो। [२०३७-३८-३९ भा.गा] इयाणिं अणुवासणाकप्पो। तत्थ गाहा —"अणुवासम्मि उ"

अणुवासंमि तु कप्पे पण्णवग पडुच्च बहुविहा अत्था।
अणुवासियाए पगतं सुद्धा य तहा असुद्धा य ॥ भा.गा. २०४०॥

अणुवासो नाम वासावासे उउबद्धे वा वसित्ता तत्थेव अणुवसइ, उउबद्धे मासलहु, वासावासे चउलहुं। तत्थ पुण बहुविह सुयत्था जहा एत्थेव कप्पे बिइए मासकप्पसुत्ते। एत्थ पुण अहिगारो अणुवासिज्जतीति। अणुवा-सिया का पुण सा वसही? सुद्धा य असुद्धा य। असुद्धा "पट्टीवंसो वसं-गकडणोक्कंचणादि। [भा.गा. २०४१-२०४२] गाहा —

पट्टीवंसादीहिं वंसगकडणादिएहिं तह चेव।
होति असुद्धा वसही मूलगुणे उत्तरगुणे य ॥२०४३॥
असिवे ओमोदरिए रायदुट्ठे भए व आगाढे।
गेलन्ने उत्तिमट्ठे चरित्त सज्जातिए असती ॥२०४४॥

१. पिसी भा.गा.२०३२ गाडी वाहणविशेषः।
२. सकड़ादी भा.गा. २०३२।
३. प्रघर्षयत इति
४. प्रायश्चितस्य प्रमाणनिर्मातिः- प्रमाणनिर्माणं निशीथसूत्र चरिमे विंशतितम उद्देशे।

अशिवे - असिवाइसु कारणेसु असुद्धाए वि वसति | रायदुट्ठे - कोप्परपल्ली वा सोतानि वा तत्थ नत्थि जाणि बाहिरएहिं खेत्तेहिं संज-याण दोसकरणाणि | भए वा बोधिकादिसु | गेलन्न उत्तिमट्ठे | चरित्त - इत्थि दोसा एसणादोसा | असज्झाइए वा | असई वा गुणाणं जे तम्मि वसहिए | [भा.गा. २०४५.२०४६] गाहा - "आलंबणं"

आलंबणे विसुध्दे सत्तदुगं परिहरे पयत्तेणं |
आसज्ज तु परिभोगं भयणा पडिसेवसंकमणे ||२०४७|| भा.गा. ||

एवं आलंबणे विसुध्दे सत्तदुए[1] परिहरेज्जा जत्तेण परिभोगं पुणमास-ज्ज गुणपरियड्ढित्ति भणियं होइ | भणिया पडिसेह संकमणे गुणवृद्धिनिमित्तं[2] अच्छेज्जा | न सक्केज्जा अन्नं वसहिं खेत्तं वा | एएसु पुण कारणेसु विणा जो अणुवासियं परिवसइ तस्स संवट्टियावराहे | एस अणुवासणकप्पो | [भा.गा. २०४८ - २०५४]

इयाणिं ठियकप्पो[3] | तत्थ गाहा - "गच्छाणु"

गच्छाणुकंपयाए सुत्तत्थविसारए य आयरिए |
आगाढे पढमसंजतो ओवग्गहिए पकप्पदुए ||२०५५ भा.गा. ||

आयरिया वा उवज्झाया वा गच्छो वा हीरइ | उवकरणं आसि-याविज्जइ हेमंते ताहे मारिया चेव भवंति सीएण | एएहिं कारणेहिं आगाढे जइ अत्थि पुलागलद्धि वा अन्नं वा सामत्थं परक्कमइ उवग्ग-हिओ नाम गच्छोपग्रहकरः | पकप्पठियस्स एवमणुन्नायं | दुगं ति साहूण साहुणीण य | गाहा || पडिसेवणा एवं मूलगुणेहिं | भणिया पडिसेवणा |

सीसो पुच्छइ - जहा मूलगुणेसु[5], होज्जा उत्तर गुणेसु वि ? उच्यते - जइ ताव गुरुएसु अणुन्नाया, उत्तरगुणेसु पागेव अणुन्नाया | ठियकप्पो नाम एएसु कारणेसु पत्तेसु अवस्स कायव्वं | एस ठियकप्पो || भा.गा. २०५६ - ६१ ||

इयाणिं अट्ठियकप्पो | तत्थ गाहा - "वत्थपाए"

वत्थे पायग्गहणे उक्कोसजहन्नगंमि अहिओ तु |
ठियमट्ठिते विसेसो परूवितो सत्तकप्पंमि ||२०६२ भा.गा. ||

---

१. पिण्डैषणा - पाणैषणायोः सप्तकद्विकम् |
२. गुणपरिवृद्धिः |
३. पृष्ठ १४१ तमे प्रसङ्गतः किंचित् स्वरुपमुक्तम् |

५. 'मूलगुणेसु वि' इति जे प्रतौ |

वत्थाणि सयसहस्समुल्लाणि वि घेप्पंति मज्झिमाणं तित्थयराणं। सेसं पुण जं ठियकप्पियाणं भणियं तं भाणियव्वं जहा सत्तविहकप्पे। ताओ चेव गाहाओ। एस अट्ठियकप्पो [भा. गा. २०६३-६५] [भा. गा. २०६६-६८ चूर्णीकारैः शब्दतो न स्पृष्टाः]

इयाणिं जिणकप्पो- तत्थ गाहा- "दुय सत्तग"

दुयसत्तए तियचउक्कगस्स अद्धद्ध एगछेदेणं।
अवि होज्ज कालकरणं पुणरावत्ती ण वि य तेसिं ॥२०६९ भा. गा.॥

दुयसत्तगं ति सत्तपिंडेसणाओ सत्तपाणेसणाओ। अहवा पिंडे य उग्गह पडिमाओ य। तिय चउक्क- (१) सेज्जपडिमाओ य ४। वत्थ पडिमाओ ४। (३) पायपडिमाओ ४। एयासिं अद्धद्ध होजो-दो दो आइओ अवणेऊणं सेसाहिं एसति आहाराई। एयासु एसमाणा जइ न लभंति तो अतिकालकिरिया[1] होज्जा। न य हेट्ठिल्लासु गेण्हंति। एस जिणकप्पो। ॥ भा. गा. २०७०-२०७३ ॥

इयाणिं थेरकप्पो। गाहा- "गहणे चउव्विहे"

गहणे चउव्विहंमि बितिए गहणं तु परमजत्तेणं।
जं पाणबीयरहितं हवेज्ज तरमाणए सोही ॥२०७४॥ भा. गा.

गहणे चउव्विहे त्ति वत्थं पायं आहारो सेज्जा। चउण्ह वि असई पढमं पायं घेप्पइ। किं कारणं? तेण विणा बोडियपडिमा[2] चेव। अहवा असणाई पढमं, तत्थ बिइयं पायग्गहणं। परमपयत्तेण जयमाणो पढमं संथरमाणो तस्स पाणबीयरहिया कंदमूलरहिए गेण्हइ। अतरंतो पुण तस्स पाणसहिया वा बीयकंदमूलसहियाए वा गेण्हइ। किं कारणं? तेन विणा आसु पाणक्खओ होज्जा। तरमाणो सुद्धं गेण्हेज्जा। अंतरंतो पेल्लेज्जा। [भा. गा. २०७५-२०७९] गाहा - "सत्तदुए"

सत्तदुए दसए वा अणेगठाणेण वा भवे गहणं।
एत्तो तिगातिरित्तं गच्छे गहणं तु भइयव्वं ॥२०८० भा. गा.॥

सत्तदुयं ति पिंडेसणपाणेसणाओ। दसएत्ति दस एसणादोसा। अणेगठाणे त्ति उग्गमाइ पनरस सोलस एत्तो तिगातिरित्तं नाम उग्गमउप्पायणाएसणासुद्धं तव्विवरीयं एतेहिं चेव उग्गमाईहिं असुद्धं, तं गेण्हेज्जा गच्छ-

---

१. मरणं अनशनं वा   २. दिगम्बरतुल्याः।

सारक्खणहेउं गच्छवासीहिं। भइयं नाम कारणे कप्पइ। इहरा न कप्पइ। एस थेरकप्पो। [भा.गा. २०८१-२०८३॥

इयाणिं अणुपालणा कप्पो। गाहा —

परियट्टी परियट्टंतओ य दुविहो पुणो वि एक्केक्को।
उवसग्गखेत्तकाला वसेण अज्जाण परिवट्टी ॥२०८४ भा.गा॥

परियट्टियव्वं परियट्टंतओ य भाणियव्वो।

परियट्टंतओ ताव आयरिओ उवज्झाओ साहूणं। संजईणं आयरिओवज्झाओ पवत्तिणी।

परियट्टियव्वं दुविहं - साहू साहुणीओ य। ताणं पुण एक्केक्को दुविहो - विहिपरियट्टओ अविहिपरियट्टओ य। तत्थ संजईओ नियमा परियट्टियव्वाओ। किं कारणं? बहूवसग्गं तासिं तेणाइसु। खेत्ताणि य दुसंचाराणि कालवसेणं। संपयं पडुच्च लोगो पंतो जाओ। एयाओ भरहाईहिं पुव्वपरिपालियाओ। ते दुट्ठे निवारेंति। तम्हा नियमा परिपालेयव्वाओ। साहू भइया। केरिसो पुणो परियट्टंतओ? [भा.गा. २०८५-२०९०]

गाहा - "अबहुस्सुए" -

अबहुस्सुते अगीयत्थे तरुणे मंदधम्मिए।
कंदप्पि सीलणट्ठाए अविही दाणे य गहणेय ॥२०९१॥ भा.गा.

न कप्पइ अगीयत्थेण वा। गीयत्थो जो तरुणो मंदधम्मो वा नाणुन्नाओ। धम्मसड्ढिओ जो कंदप्पसीलो सो वि नाणुन्नाओ। अणट्ठाए जाइ संजईणं वसहिं। अविही दायगो नाम निक्कारणे देइ गेण्हइ वा। एरिसो न कप्पइ गणधरो अज्जियाणं [भा.गा. २०९२-२०९५]

गाहा - "उवस्सए" -

उवस्सए य गेलण्णे उवही संघपाहुणे।
से हदठवणुद्देसे अणुण्णा भंडणे गणे ॥२०९६॥ भा.गा.
अणप्पज्झ अगणी आऊ वियारे पुत्तसंगमे।
संलेहण वोसिरणे वोसट्ठ[1] णिट्ठित्ते तिहिं ॥२०९७॥ भा.गा.

अणट्ठागमओ नाम जो इमाइं कारणाइं मोत्तूणं जाइ। काइं पुण ताइं

---

१. 'णिट्ठिते तिहं' निष्ठिता - कालगता ततः शेष संयतीनां शोकापनयनार्थं त्र्यहं त्रीन् दिवसान् यावदुपर्युपरि सूरिणा गन्तव्यमिति। बृ.क.भा.गा. ३७२३ टीकायाम्।

कारणाई ? उवस्सए य गेलन्ने' उवस्सओ संजईणं संजएहिं पडिलेहत्तु दायव्वो | तमुवस्सयं गणधरो दाउं वच्चेज्ज निद्दोसो | गिलाणाए अज्जाए ओसह भेसज्ज पत्थभोयणं वा दाउं वच्चेज्जा उवदिसिउं वा | जहा वा एगा-णीयाए गिलाणीयाए संजईए ओहनिज्जुत्तिगमएणं उवस्सए वा चिलमि-लिअंतरिए वसंतो निद्दोसो |

उवही उस्सग्गेण संजईणं गणधरो उग्गमेऊण पवित्तिणीए दाउं वच्चे-ज्जा | संघपाहुणए कुलथेराई आगया | इड्ढिमंतो वा पव्वइओ राया सेणावइ अमच्च सेट्ठी गणनायक गामउड रट्ठउडमाइ एतज्जननिमित्तं सेज्जायरा-इपन्नवणानिमित्तं विहिणा वच्चेज्जा |

सेहठवणं वा राजपुत्तो पव्वइओ | सो य पडिणीएहिं भिच्छुमाईहिं कहिओ मा एएसिंमहिड्ढिओ होउत्ति | अमच्चाईण मग्गंताण कहिए ताहे आह-वेंति दवदवस्स | ताहे अंतद्धाणिए विज्जाए ^ कंजियाइ परिसेयं काऊण अन्नाओ ओसढं पीसंति अन्नाओ अद्दिइं करेंति जहा संजई पडिभग्गत्ति[1] खरकम्माइ[2] आगयाणं मा बोलं करेहत्ति पडिसेहं करेंति | एवं नाइक्कमइ |

उद्दिसिउं वा गणधरो अंग-सुयखंधज्झयणं वच्चेज्जा समुद्दिसिउं अणुजाणिउं वावि वच्चेज्जा वरं खुड्डियाइ गोरवेण आयरिएण उद्दिट्ठं ति काऊण |

भंडणे वा संजईण उप्पन्ने गणधरो उवसामेउं वच्चेज्जा पवत्ति-णी वा कालगया तत्थ अणुसासणनिमित्तं अन्नं वा पवत्तिणी ठवेउं वच्चे-ज्जा |

अणप्पज्झए वा खित्तचित्त जक्खाइट्ठाए पुच्छणानिमित्तं ओसढं वा दाउं वच्चेज्जा |

अगणिकाए उट्ठिए संजईण उवस्सओ मा डज्झिहिइ दड्ढे वा अन्न उवस्सयं काउं वच्चेज्जा |

आउकाए वा नईपुरए उट्ठिए संजईण उवकरणं संजईओ वा मा वुज्झेज्जा, आउक्काएण वा भग्गाए वसहीए वसहिं संठवेउं अन्नं वा दाउं वच्चेज्जा | वियारभूमिं वा वाएण भग्गा दट्ठु वा संठवेउं अन्नं वा दाउं व-च्चेज्जा | पुत्तो भाया वा अज्जाए पव्वइओ सो य अन्नदेसं गंतूण पुव्व-गए कालियाणुओगे व निम्माओ आगओ तं गणधरो घेत्तुं वच्चेज्जा |

संलेहं वा करेउकामो तत्थोवएसं दाउं, संलीढाए वा वोसिरणे वा वोसट्ठाए वा अणुसट्ठिं दाउं वच्चेज्जा | एसा विही | तव्विवरीया अविही | [भा. गा. २०९८]

केरिसा पुण अज्जा न कप्पइ परियट्टिउं ? गाहा - "वासग्गाम"

वासग्गाम विहारे वीयारादेकदीहिया |

अजुत्तोवहि अणाउत्ता अप्पच्छंदा य काहिता ||२०९९|| भा. गा. ||

^ संजइए पोडिभग्गमुवेति | ताहे तत्थ अमच्चकुलं सह

२. मूलप्रायोति | पडिलग्गत्ति ख. प्रतौ |
३. आरक्षकादय इति |

वासेत्ति एक्किया वसइ गामे | एक्किया गामाणुगामं दूइज्जइ | विचारं वा विहारं वा एक्किया गच्छइ | एगागी वा दीहभिक्खायरियं करेइ | दोच्चंगाणि वा मग्गइ | अजुत्तोवहि त्ति चित्तलगाईणिं कचुगाइं धरेइ | अणाउत्ता रियाइसु | अप्पछंदिया[2] य | घरे घरे कहेइ कहिया | [भा.गा. २१०३-२१०६]

गाहा-"पडिणीय"

पडिणीय थध्द सुहसीला गिहिवेयावच्चकारिता |
संसत्त ठवियभत्ता य बाउसी अप्पणट्ठिया ||२१००|| भा.गा.

प्रत्यनीका अन्यदनीकं प्रत्यनीकत्वं वा करोति | थध्दा दुट्ठसीला | गिहिवेयावच्चकारिया गिहिवेयावच्चाइं करेइ सिव्वणाईहिं | संसत्ता पाउरणादीहिं | ठइय-रइयभत्ता य | बाउसिया चउव्विहा-१ गइए सविलासगई | (२) सयणबाउसिया बिब्बोयणाइसु | (३) भासाए सवियारं भासइ | (४) कायं हत्थे पाए य धोवइ तिलयाणि करेइ अप्पणो परस्स वा | संनिहीसंचयसीला | [भा.गा. २१०६-२११०-२११३-२११४]

गाहा-"अणायथण"

अणायतणगवेसी य छण्णंगाणं पलोइया |
जा यऽण्ण एवमादी अज्जा सा णाणुकड्डिया ||२१०१||

अणाययणं नाम वट्टसाला[1] अस्स-पइय[2]-जंत[3]-गुलसालो[4] दि वा जाति | गुज्झदेसाइं पलोइ | एवमाई अणरिहा पवत्तित्तणस्स [भा.गा. २१११-२११२]

गाहा- "आहारोवहि"

आहारे उवहिंमि य गतीए सयणासणे सरीरे य |
भासाए बाउसाणं जा जहिं आरोवणा भणिता ||२१०२|| भा.गा.||

एएसु जाव सत्तदुयाओ आहारसेज्जोवहीसु अणणुण्णाए सट्ठाणपच्छित्तं | भासा बाउसियाण चउगुरू आइविभासा | [भा.गा. २११५]

गाहा-"अबहुस्सुए"

अबहुस्सुते अगीतत्थे णिसिरिज्ज गणं तु अहव धारेज्जा |
तद्देवसियं तस्स तु मासा चत्तारि भारियया ||भा.गा. २११६||

---

१. कर्बुरितानि २ स्वच्छन्दा

१. वर्त्मनि शाला वर्त्मशाला धर्मशाला |

२. रथशाला

३. यंत्रशाला धारागृहं वा |

४. 'गुणशाला' रव प्रतौ तथा च ज्ञानशालाऽन्यथा बन्दीगृहं हस्तिशाला वा |

अबहुस्सुयाइ देंतस्स गणं आरोवणा - तद्दिवसमेव तस्स चउगुरुयं। आह - केच्चिरं तस्स चउगुरुयं? गाहा - "सत्तरत्तं"

सत्तरत्तं तवो होति, ततो छेदो पहावती।
छेदेणं छिन्नपरियाए ततो मूलं ततो दुगं ॥२११७॥

तवो सत्तदिवसाइं - दिणे दिणे चउगुरुयं। अट्ठमे दिवसे तवाणुरुवो चउगुरुओ। छेओ जाव सत्त दिणा। पन्नरसमे दिणे मूलं। अणवट्ठ पारंची। एवं दोण्ह वि देंत - धरेंताणं। कम्हा अगीयत्थो दायव्वस्स धारेयव्वस्स वा अकप्पिओ? उच्यते नर्तकीदृष्टान्तेन। [भा.गा. २११८ - २०]

गाहा —

दिट्ठंतो नट्टेणं अजाणमाणेणं जाणएणं च।
कायव्वो एत्थ इणमो परूवणा तस्सिमा होति ॥२१२१॥ भा.गा.

जह नट्ट - नट्टिया अयाणंतिया विवज्जासं करेइ। गिज्जमाणे नट्टे य गरहिया भवइ। एवमगीयत्थो अगीयत्थी य न सक्केइ समायरिउं पडिलेहणाइ उवदिसिउं वा परेसिं। इयाणिं गीयत्था जहा नट्टंतं चेव नट्टं गेयं वा अविवज्जासं करेंति जसो किर्त्ति च पावइ। एवं चेव जाणंतो करेइ सुहं उवदिसइ य। [भा.गा. २१२२ - २१२५] किं पुण न याणइ सा सो वा संजओ?

गाहा — "ठाण"

ठाण णिसीय तुयट्टण पेहण पप्फोडणे तथा सयणे।
भासासुद्धग्गहणे जे अण्णे परूविया ठाणा ॥२१२६ भा.गा.॥

ठाणनिसीयणाईणि संजमकियं न याणइ उवदिसिउं पायच्छित्तं वा। गीयत्थो पुण जाणइ। गाहा - "ठाण" [अनंतरोक्ता २१२६] ताणि चेव ठाणाईनि संजमो तवोवहाणाईणि उवदिसइ करेइ य गीयत्थो। किं च - एएसु तवनियमाइसु संजुत्तो गीयत्थो आराहओ भवइ। [भा.गा. २१२७]

गाहा - "अप्पछंद"

अप्पछंदिओ लुद्धो परिभूतो य पत्थिओ।
बहुलोहमोहसण्णो अज्जवग्गो दुरणुकड्ढो ॥२१२८ भा.गा.॥

अज्जावग्गो पुण इमेहिं कारणेहिं दुप्परियट्टियो। पाएण अप्पछंदिओ लुद्धो य - जेण केणइ लोभावियाओ अकिच्चमवि आयरंति। छगलिय-

-वग्गो विव परिभूयाओ पत्थणिज्जाओ य अंबपेसियादिट्ठंतेण वा बहुमो-
-हलोभलोगसन्नाईसु धिज्जाईसु[1]। एएण कारणेण दुप्परियट्टियाओ। [भा.गा. २१२९-३०]

गाहा – "मज्जाया"

मज्जायविप्पहूणे मज्जायाए य संपउत्तंमि।
पडिसेहो अणुण्णा य मग्गधर विलोमता चतुरो ॥२१३१ भा.गा.॥

एवं मर्यादासंप्रयुक्तस्य अणुपालणाकप्पो अणुन्नाओ, इयरस्स पडिसेहो। उवट्ठियस्स चउगुरुयं। एवं ता परियट्टी भणिओ। परियट्टियव्वं पि संजईओ संजया वेति। मज्जादासंपउत्ता परियट्टिज्जंति। इयरेसिं पडिसेहो। उवट्ठियाणं चउगुरुयं। जे पुण मज्जायं सिढिलं करेंति तस्सुव-
-देसो-एक्कसि सारणा विओसि[2]त्ति, बिइ[3] पुव्वं निहोडिओत्ति[4] तइया पडि-
-सारणा। छंदे अवट्टमाणस्स विकिंचणा। गाहा–

गणहारिं वा थेरा सारेंति। अहवा इमस्स अन्नस्स विवेओ अप्पछंदियस्स लुद्धस्स य जहा वा सो गिलाणो भवइ तइया दुप्परि-ट्टियओ होइ। अपत्थदव्वाणि मग्गइ। वामो गव्विओ य विकिंचइ। [भा.गा. २१३२-२१४७-२१४९-२१५०]

गाहा – "उम्मग्ग" –

उम्मग्गदेसणाए संतस्स य छायणाए मग्गस्स।
मग्गधर उवालंभे मासा चत्तारि भारियया ॥२१४८ भा.गा.॥

उम्मग्गं जो देसइ तस्स विकिंचणा। गाहा "मग्गधर" मग्ग धरा नाम कुलथेराइ आयरिया वा।

एए उवालंभिऊणा[1] गुरुयं पायच्छित्तं देंति। एवं थेरकप्पे[2] सुत्ताइ-विसारएण बलमगूहमाणेणा भत्ते वा विरिंचमाणे[3] उवहिम्मि वा, मम न लब्भइत्ति, मम सक्कारो न कीरइत्ति अप्पसुएण[4] होयव्वं। किं कारणं? जो माणणामहिच्छो, माणेहिंति वा केत्तिया जीवा। एस वीसइकप्पो। [२१५१-२१६०]

---

१. 'विज्जाइसु' इति क्वचित्तया च वैद्यादिषु।
२. विद्वानसि   ३. द्वितीयवारं   ४. निवारित इति।
१. 'उवलभिऊण' ख प्रतौ
२. 'थेरकप्पा' ख प्रतौ 'थेरकप्पो'-च क्वचित्।
३. ब्राह्मणादिभ्यो विभज्यमाने सति।
४. आत्मश्रुतेन-आत्मज्ञानेन भवितव्यम् यदि वा 'अप्पू सुएण' इत्यपि क्वचित् तथा च अनुत्कण्ठितेन सुमनसा भाव्यम्।

बायाल कप्पो

इयाणिं बायालीसविहकप्पो - १ दव्वे, २ भावे, ३ तदुभयकरणे, ४ वेरमण, ५ साहारे | निव्वेस[५] ७ सद्दहणा[६] ८ यंऽतर ९ नयंतर १० ठिय ११ अट्ठिय १२ ठाण १३ जिन १४ थेर १५ पज्जोसवणा १६ सुत्ते १७ चरित्ते, १८ अज्झयण १९ उद्देस २० वायण २१ पडिच्छण २२ परियट्टण २३ अणु-प्पेह २४-२५ जायमजाय २६-२७ चिन्नमचिन्ने २८ संधान २९ चयण ३० उववाय ३१ निसीह ३२ ववहार ३३ खेत्तकप्पे य, ३४ काले अ ३५. उवही ३६ संभोग ३७ लिंग जाव[७] ४२ ठवणाकप्पेत्ति || [भा.गा. २१६१-६४]

(१) तत्थ दव्वकप्पो ताव गाहा — "आहारमाइ"

आहारे अट्ठविहे सेज्जोवहि पंचपंचगविसोही |
दंसण चरित्तगुत्तो तव समितिगुणेहिं सोहेति || २१७२ || भा.गा.

असणं, पाणं, वत्थं, पायं, सेज्जा | एएसिं पंचण्ह वि 'पंचपंचगविसोहित्ति पंचपंचगा नाम पन्नरस उग्गमदोसा, दस एसणा दोसा | एए पंच पंचगा पंचवीसं आवन्नो | पणुवीसाए सुयनाणपमाणओ सुद्धो | अहवा छ दस य सोलस उप्पायणादोसा एएसिं सव्वेसिं पि तियवट्टिया सोहि त्ति - न हणइ, न हणावेइ हणंतं नाणुजाणइ, न पयइ, न पयावेइ, पयंतं नाणुजाणइ, न किणइ, न किणावेइ, किणंतं नाणुजाणइ | एस दव्वकप्पो [भा.गा. २१६५-६९]

(२) इयाणिं भावकप्पो | गाहा —

दंसणनाणचरित्ते तवपवयण सच्चसमिति तिहिं गुत्तो |
हतरागदोसा णिम्मम खम दम णियमट्ठिओ णिच्चं || २१७० ||

दंसणनाणचरित्ते तवे य बारसविहे पवयणहियजुत्तो य | सच्चे त्ति संजम | पंचसमिइजुत्तो | पहयरागदोसं | निम्ममत्तया य कलेवरे वि निस्संगता य | खमासीला य दमरया य | इंदियनोइंदियनियमट्ठियाय एस भावकप्पो |

---

५. 'निवेस' इति ख प्रतौ |

६. सद्दहणाकल्पस्य निव्वेसकल्पान्तर्गतत्वात् न स्वतन्त्रः निर्देशः |

७. ३८. पडिसेवणा ४०. अणुपालण
३९ अणुवास ४१. अणुन्ना |

(३) इयाणिं उभयकप्पो | एए चेव दो दव्वभावकप्पा य मेलिया एगट्ठा उभयकप्पो भवइ | दवियकप्पस्स पुरिमद्धं, भावकप्पस्स पच्छिमद्धं गाहा | [भा. गा. २१७१ अनंतरोक्ता च वक्ष्यमाणा च भा. गा. २१७२]

आहारे अट्ठविहे सेज्जोवहि पंचपंचगविसोही |
दंसणचरित्तगुत्तो तवसमितिगुणेहिं सोहेति ॥२१७२॥ भा. गा

आहारे अट्ठविहेत्ति – आहारे असणे मूलगुणसुद्धे उत्तरगुणसुद्धे य | एवं पाणे | एवं खाइमे | एवं साइमे | सेज्जोवहीए एमेव पंचपंचगविसोही | भावओ य दंसणनाणचरित्ततवाइगुणेहिं सोहेइ | एस उभयकप्पो [भा. गा. २१७३-७६]

(४) इयाणिं वेरमणकप्पो | गाहा — "ओहे अभिग्गह"

विरती य अविरती या विरयाविरति य तिविहकरणं तु |
एक्केक्कं होति दुहा ओहे य अभिग्गहे चेव ॥२१७७॥ भा. गा.

दुविहं वेरमण कप्पं – ओहे य अभिग्गहे य | ओहे सव्वविरई पंचमहव्वयाणि | अभिग्गहे – उत्तरगुणा पिंडस्स जा विसोही | अविरई-ओहेण असंजमो, अभिग्गहेण कोहाइ | विरयाविरई – ओहे पंच अणुव्वया, अभिग्गहे उत्तरगुणा सत्त सिक्खावयाणि | [भा. गा. २१७८-२१८३]

गाहा –

उज्जमरक्खियाणं महव्वताणं कतो हवति पीला ?
भण्णाति आहारादिहिं तिहिं पीडा होतऽसुध्देहिं ॥२१८४-भा. गा॥

उज्जमओ नाम उधमः प्रयत्न इत्यर्थः | उज्जमेण रक्खियाणं वयाणं कओ पीला भवइ ? उच्यते – आहारसेज्जोवही य तीहिं असुद्धाहिं पीला भवइ | उग्गमुप्पायणेसणाहिं य सुद्धाहिं निष्पत्तिर्निर्वाणमार्गस्य भवति | एस वेरमणकप्पो | [भा. गा. २१८५ - २१८७]

(५) इयाणिं साहारणो कप्पो | तत्थ गाहा – "सेज्जोवहि"

सेज्जुवहिज्झाय आहारमेव साहार तह य अणुकंपा |
आदिपणगं तु तुल्लं भइयं अणुसासणाए तु ॥२१८८ भा. गा.॥

सो कहं भवइ ? उच्यते – शय्योवधि – आहारादिभिः आयत्तो | कहं सो साहारणो भवइ ? उच्यते – एवं ताणि आहाराईणि

सोहयंताणं महव्वयाणि साहारणानि भवंति। सामान्यानीत्यर्थः। सव्वेसिं पि आहाराई सोहयंताणं संजयाणं ताणि विज्जंते। स्वाध्याययोगयुक्तानां अणुकंपत्ति वा अणुसासणंति वा एगट्ठा। कयाइ कोइ अनिउणो न तरइ अणुसासिउं। न सुहभारियाए[1]। सुत्तत्थतदुभयाणं अव्वोच्छित्तिं काउं वत्थपायाइसु वा संविभागं। भावसुद्धे[2] पुणो तस्स वि साहारणाणि भवंति चेव। एस साहारणकप्पो ॥ [भा. गा. २१८९-२१९७]

(६) इयाणिं निव्वेसकप्पो। गाहा— "नाणं च दंसणं च"

नाणं च दंसणं वा तहा चरित्तं च समितिगुत्तीओ।
एक्कासीतिपदेहिं णिव्विस णिव्वेसणाकप्पो ॥२१९८॥ भा. गा.

नाणेत्ति नाणे दंसणप्पभावणे सु य तवजुत्तयाए, पंचविहचरित्तजुत्तयाए, समिइगुत्तिहिं य उवउत्तयाए अणुपालेंति एयासीपएहिं। कयरे पुण एकासी कप्पा? उच्यते— छव्विहकप्पस्स वीसइविहकप्पस्स य नाम-ठवणाकप्पे अवणेऊण[3] सेसा छव्विह सत्तविह दसविह वीसविह बायालीसत्ति एगट्ठा मेलिया एकासीइ कप्पा होंति। एए सम्मे निव्विसमाणस्स निव्वेसकप्पो भवइ। एस निव्वेसकप्पो। [भा. गा. २१९९-२२०१]

(७) इयाणिं सद्दहणाकप्पो[4]। गाहा— "सव्वे वि"

सव्वे वि हु चरणविसोहि कारगा तह वि अत्थि हु विसेसो।
सद्दहणाऽऽचरणाए भइतं पुण पालणाए तु ॥२२०२॥ भा. गा.

चरणपएसु कप्पेसु कयरो महिड्ढओ? उच्यते सव्वे वि एए चरणविसोहिजुत्तस्स कम्मविसोहिकरा भवंति तहवि विसेसओ सद्दहणा चरणकप्पो य पहाणा। अहवा सद्दहिऊण आयरियव्वं। अणुपालणं पुण कोइ सद्दहिंतो वि न सक्कइ अज्जाओ अणुपालेऊण बहुपच्चवायाओत्ति काउं एस सद्दहणाकप्पो तेण भइयं अणुपालणं पइ। [भा. गा. २२०३-२२०५]

---

१. सुखशीलतया यदि वा सुखं कर्मभारश्च ताभ्यां नेति। भाष्ये (गा. २१९४) सुहभारियत्तणेण इत्यन्यथा 'न सुहतारियाए' सर्व प्रतिषु।

२. सतीति शेषः

३. षड्विधकल्पस्य विंशतिविधकल्पस्य य संबंधिनौ नामस्थापनारूपौ द्वौ द्वौ कल्पौ सर्वसंख्यया च चत्वारः कल्पाः पञ्चाशितेः कल्पेभ्यः शोध्यन्ते तर्हि एकाशितिः कल्पाः अवशिष्यन्ते।

४. भाष्ये न सद्दहणाकल्पस्य निव्वेसकल्पान्तर्गतत्वात न स्वतंत्र निर्देशः।

(८) इयाणिं अंतरकप्पो | गाहा - "पंचठाण"

पंच ठाणमसंख: बारसगं चेव तिण्णि वि तियाणं |
अज्झत्थणाणकरणट्ठयाए सो अंतराकप्पो ॥२२०६॥

अंतरकप्पो नाम - पंचविहं चरित्तं सामाइयमाइ | एक्केक्कस्स असंखेज्जाइं संजमठाणाइं अंतरं | बारसंगं त्ति बारस भिक्खुपडिमाओ, तासिंपि तहेव अंतरं | तिन्नि तिगत्ति सुद्धपरिहारियाण व चत्तारि परि- हारिया, अणुपरिहारिया वि चत्तारि, एगो कप्पट्ठिओ | एएसिं चेव असंखे- ज्जाइं अंतरा संजमठाणाइं | तेसु पुण सव्वेसु वि दुविहा सोही | अज्झत्थ- सोही करणसोही य दो वि कायव्वाओ | नाणट्ठयाए व नाणनिमित्तं वा नाणोवउत्तो वा जं करेइ तत्थवि अज्झत्थकरणं पडुच्च निज्जराविसे- सो | करणविसोहिए वि बाहिरए अज्झत्थो चेव निज्जराविसेसो | एस अंतरकप्पो | [भा.गा. २२०७ - २२१६]

(९) इयाणिं नयंतरकप्पो | गाहा —

सव्वेसिं पि णयाणं आदेसणयंतरं पि सट्ठाणे |
एस णयंतरकप्पो पुव्वगतविसालमादिसु ॥२२१७॥ भा.गा.

सव्वेसिं पि नयाणं आदेसनयो जो[1] जाण मओ आइस्सइ तं | अंतरं नाम नयाओ नयस्स अंतरं | एस नयंतरकप्पो पुव्वनए भ- णिओ विसालाईसु | उप्पायपुव्वमेव विसालं | तत्थ किर सव्वाणि वि आक- रिसिज्जंति | [भा.गा. २२१८ - २२२०]

गाहा — "नयवज्जिओ वि हु"

णयवज्जिओ वि हु अलं दुक्खक्खयकारओ जतिजणस्स |
चरणकरणाणुओगे तेण उ पढमं कतं दारं ॥२२२२ भा.गा.॥

आह - कालियसुत्ते कम्हा नया न समोयरंति? उच्य- ते "नयवज्जिओ वि हुअलं' गाहासिद्धं | नया इति कोऽर्थ:? नयंतीति नया: | अथवा नय: नीति: मार्ग: पथ: दृष्टि: ग्राहक इत्यर्थ: | ते च नैगमा- द्या: जीवादय: पदार्था: विविधै: प्रकारै: नयंति उपपादयंति उपदेशयंती- त्यर्थ: | तेषां च दृष्टिवादे समवतार: | [भा.गा. २२२१]

आह - अस्मिन् चरणकरणानुयोगे नयवादेष्वनभिज्ञानां कथं चरणविशुद्धिर्भवति? उच्यते - श्रूयतां 'आयारपकप्पधरो' गाहा —

---

१. यो येषां मत: सम्मत इति |

आयारपकप्प कप्पववहारधारतो अज्जो ।
णयसुत्तवज्जिओ वि हु गणपरियट्टी अणुण्णाओ ॥२२२३॥ भा.गा.

आचरमाचारः क्रिया इत्यर्थः। स चाष्टप्रकारः-पंच समित-यो गुप्तित्रयं। एस चारित्राचारः। आचारप्रकल्पधरो नाम निषीथेषु सूत्रार्थ धर इत्यर्थः। किं च कल्पव्यवहारधरश्च। अज्जो त्ति आमन्त्रणे निर्देशे वा। नयवज्जिओत्ति नयंतीति नयाः। हुः पादपुरणे। दुक्खक्खयकारओ जम्हा एएण गणपरियट्टी अणुण्णाओ। आह-कहं अणुज्ञातः?

गाहा-"पच्छित्तं"

पच्छित्तकरण अणुपालणा य भणिता उ कप्पववहारे ।
एत्तेण अत्थधारी गणधारी जो चरणधारी ॥२२२४॥ भा.गा.

जम्हा पायच्छित्तकरणं अणुपालयंति जहा गणो अणुपालिज्जइ तं पकप्प-कप्पववहारेसु भणियं। एएण अत्थ धारी जो सो गणपरियट्टी अणुन्नाओ चरणजुत्तो जइ भवइ।

गाहा — "करणाणुपालगाणं"

करणाणुपालयाणं तु पज्जवकसिणं समासओ णाणं।
करणाणुपालणदुतं पज्जवकसिणं भवे तिविहं ॥२२२७॥ भा.गा.

णाणं तं दुविहं-पज्जवकसिणं समासतश्च। पज्जवकसिणं नाम चउ-दश पुव्वाणि। समासओ आयारपकप्पो। [भा.गा. २२३०-३१]

समासः संक्षेप इत्यर्थः। यथा समुद्रभूतस्तडागः चन्द्रमुखी देवदत्ता, सिंहो माणवकः। एकदेशेनाप्योपम्यं क्रियते। चतुर्दशपूर्वधरः सर्व पर्यायेषु सूत्रार्थे[1] चरणकरणादयः पदार्थाः प्रज्ञापयितुं समर्थः। आचारप्रकल्पधरश्चैकदेशतः। दोन्नि वि चरणकरणं अणुपालेउं समत्था। तेण एकदेशाभिज्ञत्वं प्रतीत्य यथा समासतोऽप्यर्थधरः कल्पव्यवहारादयो गणपरिपालणसमर्था भवंति।

पज्जवकसिणं तिविह-सुत्ते अत्थे तदुभये [भा.गा. २२३२] गाहा-"तिग पणग" [प्रस्तुत प्रतीकगाथा क्रमांक २३०१ समस्ति किन्तु नात्र संगच्छते]

दु[2] ति पण छक्कक णयंतरेसु सोलस हवंति ठाणाइं ।
करणट्ठाण पसत्थाऽकरणट्ठाणा उ अपसत्था ॥भा.गा. २२२८॥

तिगं ति दव्वट्ठिय-पज्जवट्ठिय-गुणट्ठिया। अहवा नेगम-

---

१. 'सूत्रार्थेषु' क्वचित्

२. 'दु' ति दव्वट्ठिपज्जवट्ठिय णाया उ अत्तिसेसिय विसिट्ठा' भा.गा. २२२३ पश्चार्धम्।

-संगहववहारा एगं चेव उज्जुसुओ बिइओ, तइओ सद्दो।
अहवा पंच नेगमसंगहववहारा उज्जुसुओ सद्दो।
छक्को त्ति नेगमो दुविहो संगहिओ असंगहिओ य। संगहे-ओ संगहं पविट्ठो। असंगहिओ ववहारे। एए छ भवंति।

एएसु नयंतरेसु सोलस ठाणाइं भवंति। कयराइं ताइं सोलस? उच्यते- छव्विहकप्पे *सोलस। सोलसविहो^ अजीव दवियकप्पो आहाराई जाव कण्णसोहणेत्ति। एयाइ जइ करेइ तो करणठाणाइं पसत्थाइं। [भा. गा. २२२९ - २२३३ - २२४३]

(१०)-(११)- इयाणिं ठियमठिया सभा चेव जंति। चोदग आह- अस्मिन् काले संघयणवर्जितानां साधूनां कीदृशा संयमशुद्धिः?
तत्थ गाहा- "संघयण"

संघयणवज्जिओ वि हु दुक्खक्खयकारओ पणगजाओ।
संघयणसमग्गस्स वि अजातचतुरो अमोक्खाए ॥२२४४॥

उच्यते- वत्स! संघयणवर्जिता अपि 'अलं पर्याप्ति भूषणामंत्रणेषु, यद्यपि ऋषभादिसंघतन। अद्यकाले सेवार्त संघयणिणः साधवः पंचमहाव्रतयुक्ताश्च तथापि दुःखक्षयं कुर्वंति। संघयण संपन्नो वि जइ बलवीरियं गूहइ, जइ न करेइ पंचसु महव्वएसु पयत्तं सो चउसु गइसु अन्नयरिं गइं जाइ। न य से मोक्खो अत्थि। एवं ठियकप्पो। अठियकप्पे वि आयरंतो विमुच्चइ संसाराओ। इयरो चउगइसु अन्नयरिं गच्छइ। पुव्ववण्णिया य एए ठियमठियकप्पा। [भा. गा. २२४५-२२४७]

(१२) इयाणिं ठाणकप्पो सो पुण उड्डठाणाइ। सो ठियकप्पसंजयस्स वि अट्ठियकप्पसंजयस्स वि अणुन्नाओ। [भा. गा. २२४८]
(१३-१४) एवं जिणकप्पो वि[1] दोण्ह[2] वि अणुन्नाओ। [भा. गा. २२४९]
(१५) एवं पज्जुसवणा कप्पो दोण्ह[1] वि। [भा. गा. २२५०]
(१६) सुत्तं अहिज्जियव्वं दोण्ह वि।
(१७) चरित्तं विसुध्दं धरेयव्वं दोण्हं[3] वि। [भा. गा. २२५०] (१९-२०-२२-२३)
उद्देस- वायणपरियट्टण - अणुप्पेह - एयाणि[4] ठियकप्पस्स वि अट्ठियकप्पस्स वि अणुन्नायाणि। [भा. गा. २२५०-५१]
ठवणाकप्पो।[5]

---

^ भा. गा. ७२२-७२३-७२४ द्रष्टव्याः।

१. स्थिताऽस्थितयोः
२. स्थविरकल्पस्याऽपिशब्दाग्द्रहणं संभाव्यते।
३. स्थिताऽस्थितयोः
४. अध्ययन प्रतीच्छनकल्पयोरुल्लेखः कथमपिन कृतः।
५. अग्रेव्याख्यास्यमानत्वात्-अनवसरप्राप्तोऽयमवयवः संभाव्यते।

* भाष्ये तु- कते पुण सव्वे वि, दुग तिग पण छक्क मेलिया संता। सोलस नयंतराइं इत्यपि। भा. गा. २२४१.

(२४-२५) इयाणिं जायमजायकप्पा समयं चेव जंति। जातो निष्पन्न इत्यर्थः। अहवा जायकप्पो संविग्गगीयत्थाणं। इयरेसिं संविग्गासंविग्गाणं अगीयत्थाणं अजायकप्पो। जइ जायकरणं जायकप्पो। असद्भूतमजातमित्यनर्थांतरं। अजातकरणं अजातकल्पः। जायकरणे वि दो[६] नरगति-रिक्खजोणियगइओ छिन्नाओ। अजायकरणे चउसु वि गईसु अन्नयरिं गइं गच्छइ। जायमजायकप्पा। [A] भा.गा. २२५२-५७।

(२६-२७) इयाणिं आइन्नमनाइन्नकप्पा समं चेव जंति -

गाहा - "आहारचउक्क"

आहारचतुक्के करण फासणे खेत्त काल उवगरणे।
आइण्णे आइण्णं तव्विवरीए अणाइण्णं ॥२२५८ भा.गा॥

आहारो चउव्विहो जत्थाइन्नो तत्थ नत्थि दोसो जहा सिंधूए पोग्गलं, उत्तरावहे वियडं तंबोलं दमिलेसु फासुओ। तत्था वि आइन्नमनाइन्ने। एवं खेत्त काले वि। ओमोयरियाए सव्वाइं आइन्नाइं। उवगरणे जहा सिंधूए आलाउओ, पुंडवद्धणे दुकुल्ला, सुरट्ठाए कालकंबलीओ, मरहट्ठाणं जलपुरगा। एवमाई जत्थाइन्नाणि तत्थ कप्पो। इयरत्थ अकारणे ण कप्पंति। [भा.गा. २२५९-२२६३]

गाहा - "आइन्ने चउ"

आइन्ने चतुवग्गे ण य पीलाकारओ पवयणस्स।
ण य मइलणा पवयणे, नाइण्णं आयरे कप्पं ॥२२६४॥ भा.गा.

आइन्नं पुण चउवग्गोत्ति असणाई। ण य पवयणपीला भवइ विप्परिणामणाइ।

अणाइन्ने पुण वियडाइसु अणुयाइसु[१] मइलणा। एए वियडमल्ला[२] गिहत्था वि वारेंति, अप्पणा अणिवित्ता।[३] तहा पोग्गले जत्थ नाचिन्नं तत्थ भणइ लोगो - एएसिं नडपढियं गिहत्थे वारेंति "मा पोग्गलं खाह अहिंसगा य होह"। सव्वं एएसिं कइयवं। असब्भावियाणं एसा पीला [भा.गा. २२६५]

गाहा -

चोदेइ का मइलणा ? भणति पडिसेहियाणि जं सेवे।
सो होति मइलणा तू जो पुण सुपरिट्ठिओ चरणे ॥२२६६॥ भा.गा.

---

६. जाते करणे गति तिहा छिन्ना इति भा.गा. २२५३.

१. अणुव्रतानि येषां ते अणुकास्ते आदौ येषां ते दानश्राद्ध भद्रकादयस्तेषु यद्वा अनुयायिषु यदिवा विकटादिषु स्वल्पादिष्वपि। ‖ २. चषकाणि ‖ ३. स्वयं अनिवृत्ताः।

A जघण्यतो वर्षासु सप्त साधवः ऋतुबद्धे च पञ्चेति जातकल्पः तद्विपरीतं अजातकल्पः "जायमजायकरणा" क्वचित्प्रतौ।

का मइलणा प्रवचने? उच्यते - सूत्रार्थप्रतिषिद्धमाचरति सा मइलणा | करणजुत्तेसु पुण वन्नो भवइ - अहो सुट्ठिओऽयं साहू | अकरणजुत्ते पुण संसओ भवइ किमेस अप्पछंदेन करेइ, उवएसो एरिसो? एवं संसओ भवइ | [भा. गा. २२६७ - ६८]

आह - जिणकप्पे वि किंचि आइन्नमत्थि? [भा. गा. २२६९]

गाहा - "आहारोवहि"

आहारोवहि देहे निरवेक्खो णवरि णिज्जरापेही |
संघयणविरियजुत्तो आइण्णं आयरति कप्पं ॥२२७०॥ भा. गा.

उच्यते - आहारोवहिदेहेसु सो भगवं निरवेक्खो, न[४] केवलनिज्जरामोक्खो, बलवीरियसंघयणजुत्तो आइन्नं कप्पमेव आयरइ | सइ वि आइन्ने जं जिणकप्पियपाउग्गं तं आयरइ | एस आइन्नकप्पो |

(२८) इयाणिं संधनाकप्पो | गाहा - "दंसणनाण"

दंसण णाण चरित्ते तवे य भावणासु समितिसु |
छण्हं पि तिप्पगारं सद्दहे संधाण साहणता ॥२२७१॥ भा. गा.

सो पुण दंसण नाणे चरित्ते तव भावनासमिइगुत्तिसु | एएसिं छण्हं पि तिहा संधणाकरणं करेइ - सद्दहणाए, आयरणाए, सम्मं परूवणाए | एक्केके तिन्नि तिन्नि पयाणि - नाणाइ | सम्मं सद्दहणं दंसणं, करेइ आयरइ | अणुपालणाए तिविहा - सद्दहइ करेइ अणुपालेइ एवं सव्वत्थ | एस संधणाकप्पो | [भा. गा. २२७२ - २२७३]

(२९) इयाणिं चयणाकप्पो | गाहा - "आहारोवहि"

आहारोवहिसेज्जा तिकरणसोहीए जाहिं परितंतो |
पग्गहितविहाराओ तो चवति विसयपडिबद्धो ॥२२७४॥ भा. गा.

जो आहारोवहि [१]निहिएत्ति सेज्जाए ताणाऽऽहाराईण[२] जाहे उग्गमाइसु सोहेउं परितंतो भवइ ताहे ताओ पग्गहिअविहाराओ-

४. न निरपेक्षः कैवल्यनिर्जरा मोक्षेष्वपित्यर्थः यदिवा नवरि केवलं निज्जरापेक्खी इति पाठः कल्प्यते |
१. आहारोपाधि स्निह्यति - आहारोपधिस्निहः इति [यदिवा.... निइए त्ति ख प्रतौ तथा च नित्यवासी
२. जाणाहाईणि ख प्रतौ |

पग्गहिओ नाम गीयत्थसंविग्गविहारो ताओ चवमाणो पासत्थाइसु गच्छ-इ जिब्भाइविसयपडिबद्धो। गाहा – "कोइ विसेसं"

कोति विसेसं बुज्झति पसत्थठाणा अहं परिभट्ठो।
अंधत्तेण कोई ण बुज्झए मंदधम्मत्ता ॥२२७५॥ भा.गा.॥

कोइ पुण पासत्थाइ गंतुं पि विसेसं जाणइ जहाऽहं मंदपुन्नो जाओ इहलोगपडिबद्धो परलोए निप्पिवासो किंवागफलोवमेसु विसएसु अभिलासं करेमि, साहुणो परक्कमंति, एस प्रसंसिओ। कोइ पुण अन्नाणभावंधत्तणेण न बुज्झइ मंदधम्मयाए वा किं वा ते अब्भ-हियं करेंति गीयत्थसंविग्गा? [भा.गा. २२७६] गाहा – "जुत्तो"

जुत्तो जुत्तविहारी तं चेव पसंसते सुलहबोही।
ओसण्णविहारं पुण पसंसए दीहसंसारी ॥भा.गा. २२७७॥

चुओ चुओ नाम प्रभ्रष्ट इत्यर्थः संविग्गविहाराओ तं[3] चेव पसंसए सुलभबोहिओ। जो पुण दीहसंसारो सो ओसन्न मेव पसंसइ। गाहा —

आहारोवहि सेज्जा णीयावासे वि तिकरणविसोही।
तह भावंधा केई इमं पहाणं ति घोसंति ॥२२७८॥ भा.गा.

आहारोवहिसेज्जाणं तिकरणसोहित्ति उग्गमुप्पायणेसणाइसु जा तिक-रण सोही[4] मणा[5] इ - करणं तहेव[1]। दुरणुचरं अचयंतो अणुपालेउं इमं[2] चेव पहाणं ति घोसइ। नवरि कसाया न कायव्वा तं मूलिया सोही असोही वा। भणंति च ^"बहुमोहे वि य पुव्विं विहरित्ता" नाणं[3]-संपन्ने नामेगे नो चरणे" जहा अट्ठमे सए। न एवं आलंबणं कायव्वं। [भा.गा. २२७९ - २२८२] किं पुण कायव्वं? गाहा – "तित्थयराणं चरियं-

तित्थगराणं चरितं चरितं कसिणंगपारगाणं च।
जो जाणति सद्दहति, ओसण्णं सो ण रोएति ॥२२८३॥ भा.गा.

---

३. संविग्गविहारं।
४. सा मनागिति।
५. वाक्यालङ्कारे।
१. करणसप्ततिरपि मनागिति। यदिवा पायच्छित्तकरणमपि।
२. ओसन्नविहारं।
३. श्रीभगवती अष्टमेशतके सू. ३५४ "सुयसंपन्ने नामं एगे नो सीलसंपन्ने देसविराहेत्ति।
४. प्राय आचाराङ्गप्रथमश्रुतस्कन्धे।

जहा भगवया अवस्स सिज्झियव्वे वि तवे उज्जमियं। किं पुण अवसेसएहिं साहूहिं सपच्चवाए माणुस्से? कसिणं गणधराणं चरियं चोद्दसपुव्वीण जो एएसिं विहारं सद्दहइ सो ओसन्नविहारं न रोएइ। [भा.गा. २२८४-२२८६]

गाहा-'सुत्तत्थ'

सुत्तत्थतदुभए अकडजोगी ओसण्णरोयओ होज्जा।
अहवा दुग्गहियत्थो अहवा वी मंदधम्मत्ता ॥२२८७॥ भा.गा.

को पुण ओसन्नविहारं रोएइ? जो सुत्तत्थतदुभयेसु अकडजोगी अज्ञ इत्यर्थः, सो ओसन्नं रोएज्जा। दुग्गहियत्थो जेण अववायपयाणि गहियाणि, न उस्सग्गो, पयइए मंदधम्मो वा सो रोएज्जा। एस चवणाकप्पो ॥ [भा.गा-२२८८-८९]

(३०) इयाणिं उववायकप्पो। गाहा-"पंचहिं ठाणेहिं"

पंचहिं ठाणेहिं वियट्टिऊण संविग्गसड्ढयाजुत्तो।
अब्भुज्जंत विहारं उवेइ उववायकप्पो सो ॥भा.गा.२२९०॥

सो पुण पासत्थाहिं अच्छिऊण वियट्टिऊण-विविधमनेकप्रकारं वा वर्तितुमित्यर्थः सद्धासंवेगजुत्तो संविग्गसकासं एइ संविग्ग विहारं उपपतति उपसंपद्यते। उपपातकल्पो भवति। एस उववायकप्पो॥ [भा.गा. २२९१-२२९२]

(३१) इयाणिं निसीहकप्पो। गाहा-"चउहा"

चउहा णिसीहकप्पो सद्दहणऽणुपालणा गहणसोही।
सद्दहणा वि य दुविहा ओहणिसीहे विभागे य ॥२२९३॥

सो निसीहकप्पो चउव्विहो-सद्दहणा, आयरणा, गहणविसोही, सोहिकप्पो य। सद्दहणाया दुविहा-ओहे, विभागे य। ओहेत्ति हत्थकम्मं करेमाणस्स रागनिप्फन्नो दोसो। विभागओ गेण्हादओ। अहवा ओहो उस्सग्गो, विभागो अववाओ। [भा.गा. २२९४-९५]

गाहा-"मिच्छत्तस्सुदया"

मिच्छत्तस्सुदएणं ओसण्णविहारलाए सद्दहणा।
गणहरमेरं ओहं ण सद्दहति जो णिसीहं तु ॥२२९६॥

जो पुण मिच्छत्तोदएण न सद्दहइ, ओसन्नविहारपसंगं चेव करेइ, तस्स दोससंकडया भवइ तेण बहुदोससंकडो। गणधर धार-

धरो[1]घो त्ति गणं धारयंतीति गणधरा, धारा- मेरा मर्यादा इत्यर्थः। मेराए ओघं तं गणधर मेरधरोघं न सद्दहइ जो निसीहं तु अणुपालणाए। [भा. गा. २२९७] गाहा - "जाइं भणियाइं"

जाणि भणिताणि सुत्ते पुव्वावरबाहिताणि वीसाए।
ताणि अणुपालयंतो सव्वाणि णिसीहकप्पो तु ॥२२९८॥ भा. गा.

जाणि भणिताणि वीसाए उद्देसएहिं निसीहस्स "पुव्वावर-बाहगाइं" त्ति अववादे न ऊसग्गो बाहओ, ताइ अणुपालयइ तेण अणु-पालणा। गाहा- "सुत्तत्थगहणविहि"

सुत्तत्थतदुभयाणं गहणं बहुमाणविणयमच्छेरं।
चोद्दसपुव्विणिबद्दो पकप्पगहियम्मि गणधारी ॥२२९९॥ भा. गा.

बहुमाणविणएण चोद्दसपुव्वनिबद्धं अच्छेरं ति मन्नमाणेण सो गणपरियट्टी भवइ।

गाहा-"तिविहो य"-

तिविहो य पकप्पधरो सुत्ते अत्थे य तदुभए चेव।
सुत्तधर मोत्तु तइओ बितिओ वा होति गणधारी ॥२३००॥ भा. गा.

सोही कप्पो त्ति तिविहो पकप्पधरो - सुत्तत्थतदुभयाइं सो गणपरियट्टी। तदुभवज्जगाणं पुण अत्थधरो गणपरियट्टी।

तिग पणग पणग छक्कं अट्ठग, णवगं च जस्स उवलद्धं।
ठवणाकरणं दाणं च सो हु सोही वियाणाहि ॥ भा. गा. २३०१॥

तिन्नि त्ति तिन्नि जो जाणइ नाणदंसणचरित्तं। पंच इति पंच महव्वयाणि अहवा पंचेंदियाणि- पायच्छित्तं जाव पंचिंदिया-णं। अहवा पणगं नाणदरिसणचरित्ततवसंजमाइं जो जाणइ सो गणप-रियट्टी। छक्क त्ति राइभोअणछट्ठाइं वयाइं। अट्ठ त्ति आलोयारिहाइं जा-व मूलं अट्ठविहं पायच्छित्तं। नव इति अणवट्ठप्पनवमाइं। एमाइं ठाणाइं-जस्स उवलद्धाणि सो जाणइ विसोही पायच्छित्तकरणं दाणं च।

गाहा "ओहेण तु" [भा. गा. २३०२-२३०६]

ओहेण तु सट्ठाणं सट्ठाणविभागताए पवित्थारो।
पच्छित्त पुरिसहेतू किंति ण संती चरणमादी ॥२३०७ भा. गा॥

ओहो नाम अविसेसियं तेण ओहेण सट्ठाणपायच्छित्तं जहा

---

१ धारा - मर्यादा तां धारयंतीति।

रायपिंडे चउगुरुगा, एअं सट्ठाणे त्ति। विभाएण ईसरतलवराई। अन्ने वि हों-ति दोसा- आकिन्ने गुम्माइ। पायच्छित्तकरणं पुण पुरिसजायं परिच्छि-ऊण हेउं च समिक्खिऊण किंनिमित्तं पडिसेवियं कारणे अकारणे त्ति। जयणा अजयणा वा समिक्खिऊण। किं निमित्तं पायच्छित्तं दिज्जइ? पायच्छित्तं सोहिकरणं। [भा.गा. २३०८-२३११] गाहा- "पायच्छित्तं"

पायच्छित्ते असंतंमि चरित्तं तु न चिट्ठए।
चरित्तंमि असंतंमि तित्थे णो सचरित्तया ॥२३१२॥ भा.गा.

पायच्छित्ते य असंते पढियसिद्धमेव। एस निसीहकप्पो। [भा.गा. -२३१३-२३१४]

(३२) इयाणिं ववहारकप्पो- गाहा "भिक्खू य मुसावाई"
भिक्खू य मुसावादी ववहारे तइयगंमि उद्देसे।
सुत्तं उच्चारेति अह बहुपक्खवा इमं होति ॥२३२६॥
रागेण व दोसेण व पक्खग्गहणंमि एक्कमिक्कस्स।
कज्जंमि कीरमाणे किं अच्छति संघमज्झत्थो ॥२३२७॥

एयाओ गाहाओ ववहारे सिद्धाओ। किंचि उल्लोयमेत्तं भन्नइ-कोइ बहुस्सुओ आयरिओ एगं नगरं गओ। तेण सम्मं ववहारो छिन्नो। सो तत्थ प्रमाणी कृतो। ताहे सो सच्चालियाणि काउमारद्धो। सच्चित्ते[1] त्ति खुड्डुओ वा से केणइ दिन्नो। निवाया वसही दिन्ना। मुहुराणि वा खंडाइं केणइ दिन्नानि। तेण सो वितहं ववहरिउमारद्धो। [भा.गा. २३१५-१८]

गाहा- "सोऊण"-

सोऊण संघसद्दं धूलीजंघे वि होति आगमणं।
धूलीजंघनिमित्तं ववहारो उट्ठिओ होति ॥भा.गा.॥२३२३॥

कुलसद्दं गणसद्दं वा सोऊण कहं पुण आणविज्जइ संघस-मवाओ वा आणत्तो इहरा वा? मिलिएसु सव्वेसु समत्ती① तिन्नि वेला उच्चा-रिज्जइ। [भा.गा. २३१९-२०]

गाहा -"सोऊण संघसद्दं धूली"

सोऊण संघसद्दं धूलीजंघो उ आगतो संतो।
वितहं ववहरमाणे साहू समएण वारेइ ॥२३२४॥

---

१ शोभनचित्त इति।

① सम्यग् आप्ति: सर्वे समागता इति।

तत्र कश्चित् धूलीजंघो न चेव रियावहियाए पडिक्कमइ तहेव तेण आगंतव्वं, कज्जे निच्छियकारी सुपरिच्छियकारओ त्ति | [भा.गा. २३२१-२२]

एक्कसिं पायट्टिए न एज्जा सो पच्चत्थी[2], बिइए वि जं किंचि कारणं अत्थि, तइए वा ताहे सक्खिणो घेत्तूण प्रत्यक्षीकृते एस णागच्छइ त्ति कोइ भणेज्जा - एस संघमेरं भंजइ, कोकिज्जंतो न एइ, उग्घाडिज्जइ |[3]

अह परिभवेण न एइ, तत्थ निच्छियकारी संघो भणइ न नज्जइ, किं कारणं न एइ, पुच्छिज्जउ अज्जो, जइ कारणं दीवेइ जं निमित्तं न एइ ताहे न उग्घाडिज्जइ |

अह परिभवेण न एइ ताहे तिन्नि वारा उच्चारिज्जइ एस अज्जो णागच्छइ, उवग्गववहारी[4] जाओ| भणउ वऽत्थ कोइ किंचि ताहे उग्घाडिज्जइ| एवं निच्छियकारी संघो |

एवं जाव न हु गारवेण सक्का | तत्थ भणिओ कोइ तुमं अमुगं मंतेसि | सो भणइ अम्हे ओमराइणिया | अन्नो भणइ अम्हे बहुपरिवारा | अन्नो भणइ - अम्हे तवस्सी | अन्नो भणइ अम्हे लोगाओ सक्कार सम्माणं लभामो, तुब्भे न लभामो उल्लावेउं | अन्नो भणइ - अहं प्रावचनी धर्मकही वादी एवमादि | [भा.गा. २३८०]

तत्थ राइणिओ भण्णइ - जया वंदणाएण पओयणं तया उवट्ठएज्ज--सि | परिवारइत्तो भण्णइ - जया किं चि परिवारेण कज्जं तया तुमं परिवारं दिज्जसि | तवस्सी भण्णइ तुमं जया किंचि पभावेयव्वं देवया वा आकंपे--यव्वा तया उवट्ठएज्जसि | जो भणइ लोगाओ हं सक्कारं लभामि, तुमं सगासे न लभामि ववहारउल्लावेउं सो वि भण्णइ - जया लोए किंचि पओयणं तया उवट्ठाएज्जासि | जो वादी सो भण्णइ - तुमं वादकाले सज्जो भवेज्जासि | इह गीयत्थ मज्झत्थाणं विसओ - अरहंतेहिं भणियं जं तं कायव्वं | [भा.गा.२३८१-२३८८]

जेसिं पारायणं समत्तं जे य थिरपरिवाडी पुणो य संविग्गा गुरुहिं य विइन्ना सो ववहारी | जेण सूयं हुंकारं वा जाव परिणिट्ठं सत्तमए[1] तेहिं भणियव्वं संघसमाए[2] | जेहि य सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्ती मीसओ भणिओ, तइओ य निरवसेसो | एस विही होइ अणुओगे, ते पमाणा ववहारे | जे पडिणीयादओ ते अप्पमाणा सेसं गाहासिद्धं | [भा.गा. २३७१-७५]

तगराए नगरीए एगस्स आयरियस्स सोलस सीसा | तत्थ अट्ठ ववहारी, अट्ठ अववहारी | [भा.गा. २३५८]

---

२. प्रतिपक्षी

३. बहिष्क्रियते |

४. अग्र्यव्यवहारयोग्यतां प्राप्त इति |

१. सात्त्विकः   ② संघसमवाये

गाहा— "मा किते"

मा किते कंकडुयं[1] कुणिमं[2] पक्कुत्तरं[3] [4]च वच्चाइं[5] |
बहिरं च गुंठसमणं अंबिलसमणं च निद्धम्मं ||२३५९||

(१) कंकडुयं- कंकडुओ नाम वल्लाईणं अग्गिणा वि न सिज्झइ, एवं तस्स वि ववहारो कंकडुयभूओ न सिज्झइ |
(२) कुणिमो नाम जहा कुणिमनहो[3] घडिज्जंतो वि निम्मलत्तं न जाइ एवं तस्स वि ववहारो कुणिमनहभूओ निम्मलत्तं न जाइ |
(३) पक्को नाम जहा महिसो पाणिये उइन्नो एवं सो वि महिसो विव आडुयालं[4] करेइ |
(४) उत्तरो नाम ववहारे छिन्ने उत्तरं भणाइ |
(५) वच्चाई[5] नाम ववहारं वच्चेंतो अच्छइ |
(६) बधिरो नाम छिन्ने ववहारे भणाइ- मया न चेव सुयं |
(७) गुंठसमाणो लाडगुंठाहिं[6] ववहारं ववहरइ |
(८) अंबिलसमाणो नाम अंबं[7] ववहारं करेइ | एमेव निद्धम्मो | [भा.गा. २६६०-२६६५] एए अव्ववहारी तगराए गाहासिद्धं | "इह लोए य अकित्ती"

इह लोगंमि अकित्ती परलोगे दुग्गती धुवा तेसिं |
अणाणाए जिणिंदाणं जे ववहारं च ववहरंति ||२३६६|| भा.गा ||

गाहासिद्धं | "इमे ववहारी पूसमित्ताइ"

कित्तेहं पूसमित्तं धीर सिवकोट्ठतिं च अज्जासं |
अरहण्णगं धम्मण्णग खंदिल गोविंद दत्तं च ||२३६८|| भा.गा.||
एते उ कज्जकारी तगराए आसि तंमि उ जुगंमि |
जेहिं कता ववहारा अक्खोभा अण्णरज्जेसु ||२३६९||
इहलोगंमि य कित्ती परलोए सुग्गती धुवा तेसिं |
आणाए जिणिंदाणं जे ववहारं ववहरंति ||२२७०|| भा.गा.|| गाहासिद्धं

सो पुणो दुविहो ववहारो- आभवणा य पायच्छित्ते य |
आभवणा ताव पंचविहा | पायच्छित्तो वि पंचविहो | सचित्ते ताव सेहाइ |

---

३. 'कुणिमनिहो' इति भाष्ये गा. २३६० |
४. असमञ्जसम् |
५. काङ्क्षी व्यवहारोमंथयन्नासते |
६. निरर्थकं विलंबयति |
७. आम्लम् |

अचित्ते वत्थाइ | मीसे सभंडोवगरणे सेहे | खेत्ते वसहिमाइ | काले उउवा-
-सासु | [भा.गा. २३९२-९५]

अहवा आभावणा इमा पंचविहा गाहा —

अहवाऽऽभवंतमण्णो उवसंपयखेत्तकालपव्वज्जा |
णाऊण संघमज्झे ववहरियव्वं अणिस्साणं ॥२३९६॥ भा.गा.॥

पंचविहं उवसंपय नाउं खेत्ताइं कालपव्वजंतो संघमज्झयारे ववहरियव्वं अणिस्साणं | गाहा— "सुय-सुहदुक्खाइ एसा पंचविहा"—

सुत सुहदुक्खे खेत्ते मग्गे विणए य पंचहा होति |
सव्वावि य एयाओ सुयणाणमणुप्पवत्तीओ ॥२३९७॥ भा.गा.॥

सा पुण उवसंपया सुयाई पंचविहा | सव्वा वेयाओ उव-संपयाओ सुयनाणे परूविज्जंति | अहवा सुयनाणे वा अणुप्पविसंति | अह-वा सुयउवसंपन्नस्स सव्वाओ वि उवसंपया भवंति | सो पुण सुयं गेण्हंतो सीसो वा होज्ज पडिच्छओ वा गाहा ॥ दोन्नि य सीसायरिया | तेसु पुण सीसपडिच्छएसु किं केण कायव्वमायरियस्स?

सीसेण ताव वेयावच्चे आहाराइसु गुरूणो कायव्वाणि | आयरि-एण वि तस्स सुत्तत्थाणि दायव्वाणि | जहिं गुरूणो गच्छंति पेसेंति वा तहिं गंतव्वं तेण | केचिरं कालं? जावज्जीवाए | आगए उट्ठेइ | जइ किंचि सच्चित्ताइ तं पि गुरुणो चेव |

इयाणिं पडिच्छएण किं कायव्वं? वेयावच्चं तहेव गुरुणो वा | तस्स गमणे तहेव | दो वि काले | जाव रोवइ[1]- जाव पढइ | [भा.गा. २३९८-२४०४] इयाणिं पडिच्छगलाभो सच्चित्ताइदव्वे, तत्थ गाहा—"जं होइ णालबद्धं"

जं होइ णालबद्धं अभिसंधारेंतगं तगं एति |
संदेसदिण्णगं वा णामे चिंधे य काले य ॥२४०५॥ भा.गा.॥

पडिच्छगस्स जइ तं चेव अभिधारयंति माय-पिय-भा-य-भगिणी-धीयं[2]-पुत्तो वा ताहे तस्सेव | अह आयरियं अभिधारेंति आ-यरियस्स | अहवा संगारदिन्नयं- जइ एताणि निवेएइ गुरुणो जहा-मम सेहाणि उवट्ठिएल्लयाणि | जाव न चेव तुज्झं पाया अभिधारेमि | ताणि एहिंति अमुयं अमुयं विधं अमुयकाले | जइ तंमि चेव काले आगया तस्सेव | अह कालविसंवाओ ताहे भणंति कीस न आगओ संगारका-ले? जइ किंचि कारणं निवेएइ गेलन्नाइ, तस्सेव ते |

अह विपरिणयभावो आसिज्जइ संगारकालस्सब्भंतरे पुणो वि प-व्वज्जापरिणामो उप्पन्नो पडिच्छयस्सेव | अह संगारकाले अइक्कंते

1. रोचयति |
2. दुहिता |

पच्छा भावो उप्पन्नो ताहे आयरियाण | एयं पडिच्छयस्स | सेसं सुयगुरुणो | [भा.गा. २४०६ - २४१३] [भा.गा. २४१४ पृ. १७० तमे]

[1]इयाणिं खेत्तोवसंपया - सकोसं जोयणं आयरिस्सोग्गहो वाघायरहिए | वाघाओ - अडवि - जल - सावय - तेणएहिं | एएण वाघाएणं अक्कोसं पि होज्जा अन्नयरिसु दिसासु | एवं वास - उउबद्धे | एवं ताव एगस्स खेत्तियस्स | जइ पुण बहुगा होज्जा एगंमि खेत्ते संनिवइया | [भा.गा.२४१५ २४१७] एत्थ मग्गणा - अंतरे पत्ता नाम - गाहा - [पश्चार्द्धं] "गेलन्नखमगपारण

पुर णिग्गता कहं पुण पच्छा पत्ता उ ते हवेज्जाहि ?
गेलन्न खमगपारणवाघातो अंतर हवेज्जा ||२४२३|| भा.गा.||

खेत्तोवग्गहो पुण वासावासे असाढमाससुद्धदसमीए | खेत्तपडिलेहया पयट्टेयव्वा | तेहिं पयट्टिएहिं खित्तं पडिलेहियं | विहिणा अणुन्नवित्ता - सारूविय सिद्धपुत्तय संनि भद्दयमहत्तर[2] गंडंन्हाविय धुवकम्मकराइणो धम्मिया वा जहा - अम्हं एयं खेत्तं रुचियं, अम्हे एहामो, जे अन्ने पव्वइया एज्जा, तेसिं कहेज्जाह जहा एयं पव्वइएहिं पडिलेहियं, तेसिं खेत्तं | जे अन्ने तेसिं ठियाण वा अट्ठियाण वा एंति ते खेत्तोवसंपन्नया |

ते खेत्तं पडिलेहेत्तु आगया आयरियसगासे | तेहिं आयरियाणं आलोइयं, जहा - सुंदरं खेत्तं गच्छपाउग्गं | तं चेव अन्नेण पाहुणएण सुयं | सो गंतूण अप्पणो आयरियाणं कहेइ - अमुयाणं आयरियाणं पव्वइएहिं पडिलेहियं तत्थ गच्छामो | आयरिया समत्थंति गंतव्वे भिन्नमासो | निम्मायह[3] वच्चामो मासलहुं | पत्थिया मासगुरूं | पंथे चउलहुं | पत्ताणं चउगुरुं | तत्थ गया सच्चित्ताइ दव्वं गेण्हंति | सच्चित्ते सेहाइ चउगुरुं | अचित्ते उवहिनिप्फन्नं | अहवा सच्चित्ते अणवट्ठप्पो | पच्छा आगएहिं निच्छुभंति | बलामोडिए कुलाइथेरेहिं निच्छुभंति चउगुरुयं दाऊणं |

अहवा खेत्तपडिलेहया पत्थिया - अमुगं खेत्तं वच्चामो | अन्नेसिं आयरियाणं पव्वइयगा तं चेव खेत्तं पडिलेहिउं पत्थिया, न पुण जाणंति जहा - अन्ने तत्थ पहाविया | दो वि समं पत्ता दोहिवि विहिणा सारूवियाइ अणुन्नविया | दोण्ह वि सामन्नं खेत्तं |

अह एगं खेत्तं पत्त त्ति काऊणं नाणुन्नवेंति | अन्नेहिं समं पत्तेहिं पच्छा वा आगएहिं विहिणा सारूवियाइ अणुन्नविया तेसिं खेत्तं जेहिं पुव्वं अणुन्नवियं |

---

1. सुहदृक्खसंपदाविषयकं भा.गा. २४१४ तोऽवसेयम् |
2. कोट्टवालम् |
3. सज्जत |

खेत्तं अह तेहिं समं पत्तेहिं तेसिं एगो गिलाणो जाओ तेण णाणुन्नवियं सामन्नं खेत्तं। अहवा खमगपारणाए वाउलएहिं णाणुन्नविया सामन्नं खेत्तं। अहवा कुलाइकज्जेहिं वावडेहिं णाणुन्नवियं, सामन्नं। पुव्वं पच्छा वा पत्ता हुंतु। अहवा दोहिं वग्गेहिं समीहियं खेत्तं। वग्गोत्ति दोण्ह आयरियाणं। तत्थेगो असढभावो सिग्घगई, तेहिं पत्तेहिं अणुन्नविया सारूवियाइ, तेसिं खेत्तं।

अहवा एगे आसन्ने, एगेसिं दूरमध्दाणं। जे पढम पत्ता बिहिणा य अणुन्नवियं। अहवा पुव्वं पच्छा वा आगयाणं आयरिया सुत्तत्थविसारया जप्पसरीरा[1] ते, अन्ने आयरिया दढसरीरा जप्प सरीराण खेत्तमणुजाणंति।

अहवा समं पि पत्ताणं जेसिं गिलाणो तेसिं अणुन्नवइ खेत्तं। आइग्गहणेण अभासाविसारया वा देसिगजुंगा वा समंपि उग्गहिए तेसिं अणुन्नवइ खेत्तं। [भा.गा.२४१८-२२] [२४२४-२८-२४३६-४०]

गाहा –

पुव्वगहिओ वि उग्गहो होति गिलाणट्ठताए जहियव्वो।
अह होज्जा संथरणं कालक्खेवो दुपक्खेवि ॥२४२९॥ भा.गा॥

'पुव्वगहिओ वि उग्गहो' त्ति पुव्वं ठिया खेत्तिया। अन्ने य तत्थ आगया गिलाणाइत्तौ[2] तत्थागयाणं वा जाओ गिलाणो ताहे पुव्वट्ठिया वच्चंति। अह दोण्ह वि संथरणं होज्जा ताहे दोहिं वि अच्छियव्वं। अहवा साहू साहूणीओ वा तत्थ वि साहू वच्चंति, साहूणीओ अच्छंति। [भा.गा. २४३०-३१-२४४१]

गाहा –"गिलाणोवहि"

गिलाणं उवही किच्चा, भत्तोवहि लध्दताऽविहिग्गहितं।
पेल्लंती परखेत्तं, साहम्मियतेणिया तिविहा ॥भा.गा. २४३२॥

जे पुण गिलाणोत्ति णियडिं काऊण अगिलाणपाउग्गाणि खेत्ताणि छड्डिऊण एंति, भत्ताइलोभेण परखेत्तं पेल्लंति। ते य पुंव्वट्ठिया गिलाणोत्ति काऊण निंति ताहे इयरेसिं जं सच्चित्ताइ उप्पज्जइ तं चोवजीवंति साहम्मियतेणिया - दुविहा - सच्चित्तऽच्चित्तं वा। किं च न वि य पुव्वट्ठिए वि भंडमच्छरियत्तणं कायव्वं। [भा.गा.२४३३-२४३५-२४४३]

गाहा -" अत्थि बहुवसभग्गामा"

अत्थि बहुवसभगामा कुदेसनगरोवमा सुहविहारा।
बहुगच्छुवग्गहकरा सीमच्छेदेण वसियव्वं ॥२४४४ भा.गा.॥

---

१. जप्पशरीराः दुर्बला इति। २. ग्लानाधीनाः।

जम्हा अत्थि वसभग्गामा महायणपाउग्गा[1] तत्थ महानिज्जरा पेहीहिं होयव्वं। न होइ अट्टं झाइयव्वं। नगरे वा बहवे साहू वसंति। सव्वत्थ सकोशं मंडलं जत्थ खेत्ते मूलनिबंधं अणुमुयंतेणं[2] सचित्ताचित्तमीसएण य अब्भुणुन्नाया। कालम्मि उउ वासासु वा अक्खेत्ते वसहीय मग्गणा। [भा.गा.२४४५-२४५४]

गाहा-"जइ होइ"

जदि होति खेत्तकप्पो असती खेत्ताण होज्ज बहुगावि।
खेत्तेण य कालेण य सव्वस्स वि उग्गहो णगरे ॥२४५५ भा.गा.॥

जइ पुण संबाहाणि[3] खेत्ताणि मासकप्पपाउग्गाणि न होंति ताहे एगम्मि चेव खेत्ते बहुया वि अच्छंति। तत्थ सव्वेसिं पि समं ठियाणं उग्गहो भवइ जहा नगरे। नवरि नगरे वसहीए उग्गहो खेत्तं न होइ। नगरं जत्थ वा इब्भट्ठाणं जत्थ वा राया। एस खेत्तोवसंपया। [भा.गा. २४५६-२४५७]

(१) सुओवसंपयाए गाहा-

एसा खेत्तुवसंपद पुरपच्छासंथुए लभति एत्थ।
तह मित्तवयंसा या जं च लभे सुत्तोवसंपन्नो ॥२४५८॥ भा.गा.॥

माया पिया जइ छ[5] नालबद्धाणि तं चेव अभिधारेंताणि एंति लभइ। गाहा॥

सुहदुक्खियस्स सुहदुक्खिओ मायापिइपक्खे अभिधारेंता य सासूससुरपक्खे य पुव्वुद्दिट्ठे य सव्वे वि लभइ। [भा.गा. २४१४] खेत्तोवसंपयाए मायापियाइ जाव मित्तवयंसे वि लभइ। [२४५८] मग्गोवसंपयाए पुण जे मग्गे निज्जंति देसिएणं ते मायापियाइ जाव सहदेसिए वि लभइ जइ तेसिं उवठंति। जं सेसं तं जो देसिओ सो लभइ जाव देसेइ जइ य नट्ठे मूढे[4] व गवेसइ। [भा.गा.२४५९] विणओवसंपयाए नवरि विणायं उपचारार्थं दर्शयति। विणओवसंपया नाम देसिया पव्वइया य अन्नविसयं जंति लाडविसयाइ तत्थ पुव्वट्ठियाणं आयरियाणं गीयत्थसंविग्गाणं अप्पं निवेएंति, जहा-अम्ह खेत्ताणि दरिसेह। ते दरिसयंति। तेसिं अणापुच्छाए, अपुव्वेसु खेत्तेसु न ठंति। तत्थ य ठिया जं पव्वावेंति तं तेसिं पुव्वट्ठियाणं निवेदयंति। एस विणओवसंपया। [भा.गा.२४६०] अहवा विणओवसंपया गीयत्थसंविग्गा परोप्परं संवच्छरियचाउम्मासिएसु आलोयणा विणयं पउंजंति। न पुण किंचि तर्क्कयंति परस्परतः।

---

१. गच्छप्रायोग्याः।
२. अणुम्मुयंतेणं भाष्ये गा. २४५०।
३. संकीर्णानि। प्रभूतजनाकीर्णा नगरविशेषाः।
४. 'मुट्ठे' क्वचित्।
५. माता-पिता, भ्राता, भगिनी, पुत्र दुहिता चैते षट्।

केइ पुण भणंति जाव आलोचयंति ताव जं लब्भइ सच्चित्ताइं मुत्तुं नालबध्दं, सेसं जस्सालोएइ तस्साभवइ। पायच्छित्ते ववहारो दशमे उद्देसे व्यवहारस्य वक्ष्यामः। [भा.गा.२४६३]

सव्वासु वि उवसंपयासु मायपियाइ नालबद्दाणि सो लब्भइ जस्स वा उवट्ठंतिसो लभइ। अन्नो वि एस ववहारकप्पो ॥

(३३) खेत्तकप्पो वि एत्थेव भणिओ ॥

(३४) कालकप्पो वि एत्थेव। नवरि कालकप्पस्स जं सेसं भन्नइ -

गाहा- 'दुविहे विहार'

दुविहे विहारकाले तिविहा सोही उ उवहिभत्ताणं।
दिण्णे जतंत सोही अविदिण्णट्ठाए आवण्णे ॥२४६५ भा.गा.॥

विहारकालो दुविहो- उउबध्दे वासासु य। दुविहे तिविहा सोही आहाराईणं उग्गमाइ। विइन्नो कालो नाम मासो चाउम्मासो य। उउवासासु एत्थ जयंता जइ आवज्जंति सुध्दा। अह मासाइयं चाउम्मासाइयं वा अच्छंति निक्कारणे जइ लग्गंति ताहे जयंता वि ण सुज्झंति, कारणे सुज्झंति। [भा.गा. २४६६-२४६८]

गाहा -"वासावास"

उउबध्द वासावासं अणुवसमाणो असुध्दभत्तुवही।
आयरियप्पमाणा गुणप्पमाणं च समणाणं ॥२४६९॥ भा.गा.॥

वासावासं पमाणं वा उउबध्दियं वा अतीतं अमुयंतो आयारकप्पे य पडिसिध्दं असुध्दं[1] भत्तोवही समाणो भवइ।

गाहा-"उग्गमदोसा"—

उग्गममादीदोसा असेवमाणो वि सो तु आवण्णो।
जम्हा दोसायतनं उरंमि थावेत्तु संवसति ॥२४७०॥ भा.गा.॥

सव्वे वि उग्गमाइदोसा आवज्जंति। दुविहकाले अतीयं अमुयंतो। कहिं एयं पमाणं भणियं उच्यते-आयारप्पकप्पे। आयारे वट्टंतो आयारे भवइ। आयारवान् गुणप्पमाणं ति। जइ गुणा अन्नत्थ न उस्सप्पंति ताहे अच्छेज्जा वि उभयकालाइयं। गुणवुड्ढी एत्थ कारणं। [भा.गा. २४७१-७३]

गाहा - "हंदि कालाइयं"

कालातीते दोसा दव्वक्खओ होति अच्छमाणाणं।
तम्हा उ ण चिट्ठेज्जा अतिरित्तं दुविहकालंमि ॥भा.गा.२४७४॥

---

१. अशुध्दभक्तोपधितुल्यो भवति क्वचिच्च 'समणो' इति तथा च अशुध्दभक्तोपधिः श्रमणो भवति।

आह- जइ कालाईए आहाराइसु सुज्झंतेसु वि न अच्छिज्जइ एग-खेत्ते नाम तुब्भे गिहत्थाणं धम्मो होहिइ त्ति काऊण तेण न अच्छइ,अहवा इहलोइयं अणुकंपह- मा दव्वक्खओ होहि इति गिहीणं? उच्यते- न एवं, मा समणाणं चरणभेओ होहिइ चिरं अच्छंताणं|उक्तं च- "न चिर जणे संवसे मुणी"| एस कालकप्पो | [भा.गा. २४७५- २४८०]

इयाणिं च उवहिकप्पो | [भा.गा. २४८१] गाहा- "जीवाणुग्गह"

जीवाणऽणुग्गहट्ठा एवं खलु वण्णितो इहं तित्थे |
कातूणऽणुग्गहपदं पडिणीयपदे अभावो तु ॥२४८२॥

उवही किं निमित्तं धरिज्जइ पायाइ? उच्यते- जीवाणुग्गहहेउ रसयाईणं सारक्खणनिमित्तं एयम्मि तित्थे वन्निओ उवही असहुत्तणेण य वत्थाईण गहणं|आह जइ असहुत्तणेण वत्थाइगहणं,तेण अविरइयाओ कम्हा नोवभुंजइ? उच्यते- क्वचित् प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिरित्यादि|संयमप्रत्यनीकाणि मैथुनादीनि |अतस्तेषामभावो भवतिआचरितव्ये[1]| [भा.गा. २४८३- ८४]

गाहा- "नाण चरणं"

नाणचरणट्ठिताणं उवग्गहं कुणति णाणचरणाणं |
आहार उवहि सेज्जा तेण उ उवहित्तण बेंति ॥२४८५॥ भा.गा.

किमुक्तं भवति उपधिरिति? उच्यते- ज्ञानदर्शनचारित्राणां उपकारं कुरुते- उपकारं करोतीत्यर्थः|उवही आहार सेज्जाओ य इत्यतोपधिरित्यपदिश्यते |

गाहा- "जस्स उ"

जस्स पुणोवहि गहिता उवघायकरी तु तस्स उवघातो |
कह उवघाय करेति अतिरित्त गहो य मुच्छा य ॥२४८६॥ भा.गा.

जो पुण संथरमाणो वि अइरित्तं उवहिं धरेइ तस्स स एव उवहिनिमित्तो उवघाओ|वन्नाइकारणेण वा आहारे वि रसहेउं वा भुंजइ रागदोसेहिं एयस्सोवघाओ भवइ| [भा.गा. २४८७- २४८८]

गाहा- "जो जत्थ"-

जो जत्थ जदा जहियं उवही परिभोगओ अणुन्नाओ |
सो तत्थ अणतिचारो अणणुण्णाए चरणभेदो ॥२४८९॥

उवही पुण जो जत्थ जया जंमि खेत्ते अणुन्नाओ,जहा सिंधूए उक्कोसयाणि णंतयाणि|जंमि वा काले अणुन्नाओ हेमंतकाले वासे वा तेणोवहिणा णाणाइअइयारो न भवइ|जो पुण खेत्तकालेसु अणणुन्नाओ

---

1. आचर्त्तव्ये इति रव प्रतौ |

गहो जो जत्थ उवही धरिज्जइ सो उवधाओ। एस उवहिकप्पो। [भा.गा. २४९०-९५]

इयाणिं (३६) संभोगकप्पो। तत्थ गाहा—"नवि रागता"

ण वि रागा ण वि दोसा संभोगविही तु वण्णितो सुत्ते।
णाणचरणट्ठिताणं भणियं सुतणाणपुरिसेहिं ॥२४९६॥ भा.गा.॥

रागेण ताव संभोगं एएण समं मम पिइत्ति। उक्तं च प्रीति-भोज्यानि अन्नानि। द्वेषे तु नाहमन्येन समं भोक्ष्यामि। किं निमित्तं खाइ? संभोगो? उच्यते—संगहोवग्गहट्ठयाए अणुन्नाओ। नाण-चरणाणं एवं परियड्ढी भविस्सइ त्ति परोप्परं साहारणाया व। एएण संभोगो अणुन्नाओ सुयनाण-निधसपुरिसेहिं। [भा.गा. २४९७-२५०१]

गाहा—"अत्थि पुण केइ"

अत्थि पुण केइ पुरिसा तिगं तिगेणं पमाय कुव्वंति।
आहार उवहि सेज्जा जत्तो संभुजणाबंधो ॥२५०२॥ भा.गा.

सन्ति केइ मन्दधम्मयाए पमाएंति ते सु आहाराइसु उग्गमाईहिं। ते संभुंजमाणस्स। समणुजाणणापच्चओ मा बंधो भविस्सतीति एएण कारणेण विसंभोगो कीरइ। ते विय चइयापच्छा आउट्टंति न प्पमायं-ति उग्गमाइसु। गाहा—संभुजणा पुण विसुद्धा नाणाईणं उवग्गहं करेइ। असुद्धा पुण उग्गमाइसु तेसिं चेव उवघायं करेइ। [भा.गा. २५०३-२५०७]

गाहा—"पूया रस"

पूया रस पडिबध्दो सुध्द असुध्दं करेति संभोगं।
अहवा वि अजाणंतो संभोगविहीए गुणदोसं ॥२५०८॥ भा.गा.

किं निमित्तं पुण विसंभोइओ कीरइ? उच्यते—पूयानिमित्तं किंचि पडिसेवइ रसनिमित्तं वा। एवं असुध्दं करेइ अप्पाणं। तेण न संभुजइ। अयाणंतो वा संभोगगुणदोसे जं किंचि आयरइ। तेण विसंभोइओ कीरइ। [भा.गा. २५०९] गाहा—"बारस मूल"

बारस मूलपदा खलु संभोगविहीय वण्णिता सुत्ते।
जत्तो पावादाणं भणितं दुट्ठाण उक्खेवो ॥२५१०॥ भा.गा.

उवहिमादओ मूलपया संभोगस्स जत्थ जेहिं पएहिं पावागमो भवइ उवहि-सुय-भत्तपाणाइ ताणि आयरमाणस्स उक्खेवो कीरइ विसंभोइओ इत्यर्थः। [भा.गा. २५११-२५१३] किं च-न वि एस संभोगो मंदधम्मे। गाहा—

ण वि एस मंदधम्मे ण गिहत्थेसुं ण चेव अज्जासु।
बावत्तरि विभत्तोऽवितरे पडिसेहणं जाणे ॥२५२४॥ भा.गा.

गीयत्थसंविग्गाण एस संभोगो न वि अ गिहत्थे, न वि य

---

१. वाक्यालङ्कारे पुनरर्थे च।

अज्जासु | बावत्तरिविभत्तो[1] संभोगविही गुणहीणेहिं पडिसेहो | अहवा इमेहिं कारणेहिं विसंभोइओ कीरइ | [भा.गा. २४१४-१५-२३]

गाहा - "उवरिम हेट्ठिम"

उवरिम मज्झिम हेट्ठिम संभोगट्ठाणगं तिहा विभए |
पडिसेहे पडिसेहो समणुण्णे होति समणुण्णो ||२५१६ भा.गा.||

उवरिमाणिं ति अहाकडाणि, मज्झिम अप्पपरिकम्माणि, सपरिकम्माणि हेट्ठिम संभोइयाणि[2] | तत्थोवरिमाणि सव्वत्थ संचरंति | अप्पपरिकम्म सपरिकम्मेसु | सपरिकम्मेगहीयमसणाइ उवरिमेहिं दोहिं वि न छुब्भइ | एवं हेट्ठिलाण उवरिमेसु पडिसेहो त्ति भणियं होइ | उवरिल्लाणं हेट्ठिल्लेसु अणुन्ना | [भा.गा. २५१७-२५२२] एस संभोग कप्पो |

(व्याख्यातप्राया भा.गा. २५२५-३० सप्तविधकल्पान्तर्गतसंभोग कल्पे)

(३७) इयाणिं लिंगकप्पो | तत्थ गाहा - "रूढ नह"

रूढणह-कक्ख-णिगिणो मुंडो दुविहोवही समासेणं |
एसो तु लिंगकप्पो कारण विवच्चा सियण्णतरो ||भा.गा. १४५७||

सो य रूढनहकक्ख जहा हेट्ठिल्ला दो लिंगकप्पा वन्निया तथा इहंपि [भा.गा. २५३१-३२]

(३८) इयाणिं पडिसेवणाकप्पो | तत्थ गाहा - "गहणपरिभुंजनाए"[3]

गहण परिभुंजणाए णिव्वाघाते तहेव वाघाते |
वाघाते दुयगहणं णिव्वाघाते य तियगहणं ||२५३३|| भा.गा.

पडिसेवणा पुण दुविहा - (१) गहणेन य भवइ, (२) परिभुंजमाणे य पडिसेवणा भवइ | एक्केक्का दुविहा - (१) निव्वाघाए य, (२) वाघाए य | वाघाए य दुविहं पि गेण्हंति - असिवाइम्मि सुध्दं च असुध्दं च | निव्वघाए तिविहंपि सुध्दं गेण्हंति आहाराइ उग्गमाइहिं तिहिं | असुध्दं पि कयाइ गिण्हंति | को य वाघाओ जत्थ असुध्दं घेप्पइ ? [भा.गा. २५३४-३६]

गाहा - "असिवोमे"

असिवे ओमोदरिए रायदुट्ठे भए व आगाढे |
छक्कायदुगमुवादाय वाघाते निव्वाघाते य ||२५३७|| भा.गा.

असिवाइसु कारणेसु छक्काओप्पायणं[4] पि कप्पइ | किमुक्तं भवति छक्कायमुप्पायणं ति सचित्तमीसयाणं वाघाए गहणं | निव्वाघाए पुण अचि

---

1. सप्तविधकल्पान्तर्गत संभोगविधिः द्वादशभेदो षट् स्थानैर्विभक्तो द्वासप्ततिभेदो भवति |
2. संभोज्यानि |
3. 'गहण पडिसेवणा' सर्व प्रतिषु तत्तु प्रमादतः संभाव्यते |
4. 'छक्काओघायणं पि' इति | जे.ख दे. प्रतिषु |

-ताणं छण्हं पि कायाणं गहणं। [भा.गा. २५३८-३९]

जोणिपाहुडियाइसु कुलगणाइकज्जेण, न पुण पडिसेवलेण करणिज्जं। कहं करेमि त्ति चिंतियव्वं-कुलगणसंघचेइयविणासाइसु कारणेसु नाणदंसण चरित्तट्ठा वा पडिसेवमाणो सुध्दो जयणाए। [भा.गा. २५४०-४२]

गाहा-"पूय रस"

पूजारसहेउं वा बेति जह किच्चमेव एयं नु।
मा मे ण देहिति पुणो जह एसोऽकिच्चकारीत्ति ॥२५४३॥

कोइ पुण मंदधम्मो पूयासक्कारहेउं किच्चमेयं ति भासइ। रसहेउं वा मा मे पुणो न दाहिंति। अहवा ओसन्नाण अणुयत्ती[1] य भणइ-को दोसो आहाकम्माइसु? उम्मग्गपडिवन्नोत्ति सो दट्ठव्वो। उम्मग्गो नाम नाणाइवइरित्तो जो चरणाईणि निगूहइ। [भा.गा. २५४४-२५४५]

गाहा-"निस्साणपयं"

णिस्साण पदं पीहति[2] अणिस्स विहरंतयं ण रोएति।
तं जाण मंदधम्मं इहलोगगवेसगं समणं ॥भा.गा. २५४६॥

गाहासिध्दमेव। [भा.गा. २५४७]

"पंचमहव्वयभेओ छक्कायवहो य तेणऽणुन्नाओ" गाहा-

पंचमहव्वतभेदो छक्कायवहो य तेणऽणुण्णाओ।
सुहसीलऽवियत्ताणं कहेइ जो पवयणरहस्सं ॥२५४८॥ भा.गा.

एस पडिसेवणाकप्पो। (भा.गा. २५४९)

(३९) इयाणिं अणुवासकप्पो। गाहा — "जिण थेर"

जिण थेर अहालंदे परिहरिते अज्ज मासकप्पो उ।
खेत्ते कालमुवस्सयपिंडग्गहणे य णाणत्तं ॥भा.गा. २५५०॥

सो पुण अणुवासकप्पो जिण-थेर-अहालंदिय-परिहारविसुध्दी य अज्जाणं ति। एगेगाओ एगस्स चउहिं ठाणेहिं खेत्त-काल-उवस्सय-पिंडग्गहणे य नाणत्तं। [भा.गा. २५५०]

जिणस्स ताव खेत्तं नत्थि। कालो उउबध्दे मासो, वासारत्ते चाउम्मासो। उवस्सओ अममत्तो अपडिकम्मो। भिक्खा अलेवाडा। [भा.गा. २५५१-५२]

खेत्तोग्गहो थेराणं अत्थि सक्कोसजोयणं। नगरे वसही उग्गहो तेसिं कालओ मासं वा मासाइयं वा उउम्मि कारणमकारणे। वासावासासु चाउम्मासं वा निक्कारणे, कारणे पुण ऊणाहियं। उवस्सओ उस्सग्गेण अममत्तो अपरिकम्मो य। अववाएण सममत्तो सपरिकम्मो य। पिंडोलेवाडो अलेवाडो य। [भा.गा. २५५३-५७]

---

1. अनुवर्तनशील:।
2. स्पृहयति।

(भा. गा. २५६३)

अहालंदियाणं गच्छे अपडिबध्दाणं जहा जिणाणं, नवरि काले छब्भागे गामो कीरइ | एगेगे भागे पंच दिवसं भिक्खं हिंडंति, तत्थेव वसंति | वासासु एग्गत्थ चाउम्मासो | [भा.गा. २५५८ - २५६०]

एवं परिहारियाण वि जहा जिणाणं | नवरि आयंबिलेण मासो | [भा.गा. २५६१] सो सव्वो वि दुविहो – जिणकप्पो थेरकप्पो य | जिण अहालंद परिहार विसुध्दियाणं जिणकप्पो | [भा.गा. २५६४]

गच्छपडिबध्दअहालंदियाणं आयरियाणं चेव सो खेत्तो वग्गहो | (भा.गा. २५५९)

संजईण गीयत्थपरिग्गहियाणं अत्थि खेत्तं सो आयरियाणं चेव | (भा.गा. २५६२)

जिणकप्पो निरणुग्गहो | असिवादओ कारणा नत्थि | (भा.गा. २५६५)

थेरकप्पो साणुग्गहो असिवाइसु कारणेसु |

कालाईए उउम्मि जिणाण गुरुमासो दिणे दिणे, थेराणं लहुओ मासो दिणे दिणे तम्मि खेत्ते अच्छंताणं | चाउम्मासाईयं जिणाणं तम्मि चेव खेत्ते दिणे दिणे चउगुरुं, ठेराणं दिणे दिणे चउलहुं | [भा.गा. २५६६]

गाहा –

तीसं पदावराहे पुट्ठो अणुवासियं अणुवसंतो |
जे जत्थ पदे दोसा ते तत्थयगो समावण्णे ॥२५६७॥

तीस पयावराहे, त्ति सोलस उग्गमदोसा, संजोयणाई पंच, दस एसणादोसा | लाडपरिवाडीए पन्नरस उग्गमदोसा, पंच संजोयणमाई तत्थ छूढा एसा वीसा, दस एसणदोसा, एए तीस पयावराहेंति तेसिं | अहवा दिवसे दिवसे अवराहो तीसदिणो मासो, जम्मि आवज्जइ जयमाणो वि अच्छंतो निक्कारणे तेण लग्गइ | गाहा ॥

वासावासप्पमाणं च एयं आयारप्पकप्पे भणियं | तम्मि अइक्कंते उग्गहकाले अणुवसंतस्स अणुवासिया भवइ | [भा.गा. २५६८ - २५७१]

गाहा – "दुविहे विहारकाले"

दुविहे विहारकाले वासावासे तहेव उउबध्दे |
मासातीते अणुवहि वासातीते भवे उवही ॥२५७२॥

अइक्कंते - अट्ठहिं मासेहिं अईएहिं वासं पडिवज्जइ | तत्थोवही न घेप्पइ | वासे अईए घेप्पइ (भा.गा. २५७३)

गाहा – "वास उउ"

वास उउ अहालंदे इत्तिरि साहारणे पुहुत्ते य |
उग्गह संकमणं वा अण्णोण्णसकासऽहिज्जंते ॥२५७४॥

एएसिं ठियाणं जइ बहुया एक्कम्मि खेत्ते ठिया होज्जा वासासु उउंमि वा | अहालंदं पंच दिवसा जाव | साहारणे पुहुत्ते वा | इत्ति-

इओ उत्तरज्झयणा वाएइ इओ अत्थं कहेइ अत्थइत्तो बलिओ|

सव्वत्थ पुव्वगाइत्तो बलिओ

-रिए वा रूक्खहेट्ठा[१] |

संकमणं-एगो एगस्स मूले दसवेयालियं उज्जुयारेइ तस्स पु वेयालियं उज्जुयारेंतस्स मूले अन्नो उत्तरज्झयणाणि पढइ |जं उत्तरज्झ -णाइत्तो सचित्ताइ लभइ तं दसवेयालियइत्तस्स देइ |जो सो उत्तरज्झ उज्जुयारेइ तस्स मूले अन्नो बंभचेरे उज्जुयारेइ जाव विवागसुयं| -रा बलिया सट्ठाणं चेव एइ |दसवेयालियइत्तस्स अत्थे पुण एगो एग मूले आवासगाहाओ पढइ |अन्नो पुण आवसगस्स अत्थं कहेइ |अ बलिओ |एगो दसवेयालियस्स सुत्तं वाएइ , एगो अत्थं कहेइ |अत्थइ बलिओ |एवं जाव विवागसुयं | सव्वत्थ अत्थो बलिओ |

एगो पन्नत्तिं वाएइ, एगो दसवेयालियाईण जाव कप्पववह अत्थ कहेइ |अत्थइत्तो बलिओ |एवं जाव विवागसुयं |

एगो कप्पव्ववहारे कहेइ, एगो दिट्ठिवायसुत्ते वाएइ |सुत्तइ बलिओ |जत्थ वा मंडली छिज्जइ हेट्ठिल्लाण तत्थ पावइ सचित्ताइ पुण एगाए वसहीए ठिया पुप्फावकिन्ना वा | (भा.गा. २५७५- २५८०)

गाहा- "सुत्तत्थ"

सुत्तत्थतदुभयविसारयाण थोवे अ संततीभेदे |
संकमणदव्वमंडलि आवलियाकप्पअणुवासा ॥२५८१॥

अहवा एगम्मि गामे एगो आयरिओ सुत्तत्थविस पुव्वट्ठिओ |तस्स अन्ने पासे पढंति |तं च खेत्तं थोवं| अपज्जते दो वि जणा पढंतए ठवेऊणं संजए विसज्जेंति अन्नं खेत्तं |ताहे तेसिं गामं गयाणं परोप्परस्स पढंताणं तहेव संकमणट्ठाणं सचित्ताइदव्वे आवलिया मंडलिया सट्ठाणं गय त्ति | गाहा- (भा.गा. २५७९- २५८२- २५८

एसो उ कालकप्पो निव्वाघाएण वासासु चाउम्मासे,उउ -ट्ठमासे|कारणे पुण थेराणं आहे अणुवासो भवइ जाव तं कारणं समत्त -वाई ताव अणुवासंता वि जयंता सुद्धा| एस अणुवासणाकप्पो ॥ (भा.गा २५८६)

(४०) इयाणिं अणुवालणाकप्पो | तत्थ गाहा-" आयरिया णट्ठे वेए"

मोहतिगिच्छाए गते णट्ठे खित्तादि अहव कालगते |
आयरिए तंमि गणे पीलादिक्खणट्ठाए ॥२५८७॥ भा.गा.

आयरिए णट्ठे वा मोहतिगिच्छाए वा गए खित्तचित्ते गए वा |तस्स य बालवुड्ढाउलस्स गच्छस्स को गणधारी कायव्वो? तत्थ गाहा —"पव्वज्जा"

गुरु गुरुगुरुणं तू वा गुरूसज्झिलओ व्व तस्स सीसो वा|
पव्वज्ज एगपक्खी एमादी होइ णायव्वो ॥२५९०॥ भा.ग

---

१. वीसमणट्ठा ठिताणं तु भगा. २५७५

जो तस्स सीसो निम्माइल्लओ | तस्सऽसइ जो पव्वज्जेगपक्खिओ पित्तियओ पित्तियपुत्तो वा | तस्सऽसइ कुलिच्चओ | तस्सऽसइ नाणेगपक्खि-ओ एगवायणिओ | तस्सऽसइ जो तम्मि खेत्ते उवसंपन्नओ आयरिओ सुहदुक्खिओ वा सुयनिमित्तं वा जो तत्थ गएल्लओ पडिच्छओ | (भा.गा. २५८८-८९- २५९१-९२)

एएसिं ठवियाणं अहिज्जंताणं कस्स किमाभवइ ? सीसे ताव ठवियल्लए का कहा ? सेसेसु अणहिज्जंतेसु पडिच्छए ठविए आयरिएण निम्मविएल्लओ कुलगणसंघच्चिए वा जो सो आयरिएण ठविओ नाऊण य वोच्छेयं | सो कुलिच्चयाइ, तम्मि अच्छंते चेव आयरिया कालगया ते वि आयरिएण तं निमित्तं चेव सीसा बद्धा वरं तम्मि ममत्तं करेंता एस अम्हं सज्झंतिओ, सो वि एए मम सज्झंतिए त्ति काऊण ममत्तं करेइ | एवं सो निम्माओ | आयरिया कालगया | सो तं गच्छं न मुयइ |

एत्थाऽऽभवंतं - अन्ने हि तत्थ जे ताव आयरियस्स पडिच्छया तेसिं तद्दिवसमेव गेण्हइ सचित्ताई (भा.गा. २६०३- २६०४) जे आयरिय-सीसा ते न सज्झायंति तस्स सगासे, तेण चोइयव्वा | तेसु अणहिज्जंते-सु जं तत्थ लब्भइ सचित्ताइ तं सामन्नं पढमवरिसे | बिइए खेत्तोवसं-पन्नओ जं लभइ ते तं लभंति | खेत्तोवसंपयाए नाइवग्गं दुविहं मित्तवयं-सए य लभंति | तइए वरिसे जं सुहदुक्खोवसंपन्नओ लभइ तं तेसिं ला-भं | सुहदुक्खियस्स लाभो - पुव्वसंथवो पच्छासंथवो य | चउत्थे वरिसे सव्वं गेण्हइ | एवं अणहिज्जंते | अहिज्जंते पुण इमे एक्कारस विभागा -

(१) तस्स आयरियस्स सीसा सीसयाओ पडिच्छया पडिच्छियाओ जं जीवंतेणायरियस्स उद्दिट्ठं ते य अज्झायंतस्स पढमवरिसे सचित्तं अचित्तं वा लभइ तं सव्वं गुरुणो कालगयस्स वि एगो विभागो |

(२) अह इमेणुद्दिट्ठं पढमवरिसे तो *पव्वावयंतस्स | बिइओ विभागो ||

(३) बिइए वरिसे पुव्वं उद्दिट्ठं पच्छोवदिट्ठं वा सव्वं *पव्वावयंतस्स | तइओ विभागो ||

(४) एवं पडिच्छए सीसस्स पढमवरिसे आयरिएण वा उद्दिट्ठं तेण वा पडि-च्छएण उद्दिट्ठं तं सव्वं गुरुणो[1] विभागो (चउत्थो)

(५) बिइए वरिसे आयरिएण उद्दिट्ठं पढंतस्स सचित्तासचित्तं वा लभइ तं सव्वं गुरुणो | विभागो पंचमो |

(६) इमेण उद्दिट्ठं तं *पव्वायंतस्स | छट्ठो विभागो |

(७) तइए वरिसे आयरिएण वा उद्दिट्ठं इमेण वा सव्वं पव्वाययंतो गे-ण्हइ वाययंतो य | इमो विभागो सत्तमो |

(८)(९)(१०) सीसिणियाए जहा पडिच्छयस्स तिन्नि[2] गमा | एए दस गमा |

कालगताचार्यस्येत्यर्थः २. प्रथमाद्वितियतृतिय रूपाणि |

१ प्रतीच्छकेण | * प्रवाचयत इति गुरुतत्त्वविनिश्चय तृतीयोल्लास गाथा २६ वृत्तौ |

(११) पडिच्छयाए आयरिएण वा उद्दिट्ठं इमेण वा पढमवरिसे चेव गेण्हइ वाययंतो। एए एक्कारस विभागा। एवं ओहेण भणियं। इमोत्ति विभगादेसो। (भा.गा. २५९१-२६०२)

गाहा—"तत्थे य निम्माए अणिग्गए"

तत्थेव य णिम्माए अणिग्गहे निग्गए इमा मेरा।
सकुले तिण्णि तियाइं गणदुग संवच्छरं संघे ॥२६०५॥

जइ सो निम्मविएल्लओ आयरियगच्छाओ निग्गओ। पच्छा आयरिया कालगया। ते सीसा निम्मविएल्लयस्स सकासं गया, अम्हं सज्झंतिया सिओत्ति[१] कुलिच्चओ एगवायणियो निम्मविओ तेण ते पाढेयव्वा, ताहे तेण तिन्नि वरिसाणि न किंचि घेत्तव्वं सीसस्स, पडिच्छयस्स उ तद्दिवसमेव गेण्हइ।

अह गणिच्चओ ताहे संवच्छरं न घेप्पइ। अह संघिच्चओ ताहे छम्मासा न घेप्पइ। एवं ता अनिग्गए गच्छाओ। (भा.गा. २६०३-२६०४)

अह निग्गओ तत्थिमा मेरा मर्यादा इत्यर्थः। सकुले णव संवच्छराणि। कुलसमवायं काऊण नव वरिसाणि पाढिज्जंति। न य एहं[२] किंचि घेप्पइ जइ तेण कालेण निम्माया विहरंतु। अह न निम्माओ एगो वि ताहे गणसमवायं काऊण गणिच्चया दो वरिसे पाढेंति। न गिण्हंति जइ एगो वि निम्माओ विहरतु। एहिं बारसवरिसेहिं सुंदरं।

अह न निम्माओ ताहे पुणो वि कुले तत्तियाणि चेव वरिसाणि। न य गेण्हंति जाव संघपत्तो। एवं च जइ वि चउवीसाए वरिसेहिं निम्माओ ताहे सुंदरं। अह न निम्माओ ताहे पुणो वि तइयं परिवाडिं-कुले-णव गणे दोन्नि, संवच्छरं संघे। न य गेण्हंति सच्चित्ताइ। एवं तिन्नि बारस य छत्तीसा। छत्तीसाए वरिसेहिं निम्माओ एगो वि सुंदरो। [भा.गा. २६०६-२६१०]

अह न निम्माओ एवइएण कालेण ताहे पंचविहाए उवसंपयाए अण्णयरीए उवसंपज्जंति। सुय-सुहदुक्खे-खित्ते-मग्गे-विणए य। सुओवसंपया दुविहा-अभिधारेंताए पढंतए य सुओवसंपया। एत्थ नालबद्धाइं तेसिं परंपरएण बावीसं[३] लभइ-माउ मायरं पियरं भायरं[४] भइणिं[५], पिउणो वि एयाणि चेव, भाउ पुत्तं धूयं च, एवं भइणीए वि पुत्तस्स धूयाए य दुविहं मग्गे दिट्ठाऽऽभट्ठाणिं विलभइ।

विणयोवसंपयाए नवरि विणयं दाएइ सव्वं लभइ। जो य पवज्जाए सुएण य एगपक्खिओ तस्स पढमं उवसंपज्जइ। पच्छा कुले गणे एग-

---

१. -अस्माकं स्वाध्यायिक आसीदिति 'सिउत्ति

२. वाक्यालङ्कारे

माता, मातुर्मात्रादयश्च चत्वारीति सर्वे पञ्च, एवं पित्रादयः पञ्च, भ्राता तत्पुत्रः पुत्रीः चत्रीणि एव भगिन्यादयस्त्रीणि, एवमेव पुत्रादयस्त्रीणि पुत्र्यादयस्त्रीणि सर्व संख्यया द्वाविंशतिरिति।

४. दृष्टा आभाषिताश्च।

-पक्खियस्स वि। पच्छा सुए एगपक्खियस्स वि। पच्छा चउत्थे वि भंगे उव-संपयं पत्तो। सए ठाणे उवाया एय गेण्हंति। एस अणुवालणाकप्पो। [भा.गा. २६११-२६१४]

(४१) इयाणिं अणुन्नाकप्पो। गाहा- "किमणुन्ना"

किमणुण्णा कस्सऽणुण्णा केवतिकालं पवत्तियाऽणुण्णा।
आयरियत्त सुतं वा अणुण्णवइ जं तु साऽणुण्णा ॥२६१५॥

आइकर पुरिमताले पवत्तिया- रिसहसामिणा उसभसेण-स्स गणहरअणुन्ना प्रवर्तितवान् जहा नंदीए। नवरि अक्खरत्थो - अणुजाणन-मनुज्ञा[1] गणहरत्थाई। ऊर्ध्वं नमनं उन्नमनं।[2] प्रणिपातो नमना[3]। स्थापना[4] आ-चार्यत्वे। प्रभवः[5] प्रसूतिरित्यर्थः। प्रभावना[6] "भा दीप्तौ" प्रकटीकरणमित्यर्थः। वितरणं[7] वितारः तदुभय-सूत्रार्थानुज्ञाइत्यर्थः। एहिकामुष्मिकं हितं[8]। मर्यादा सीमा इत्यर्थः।[10] कल्पो नीतिरित्यर्थः।[11] मार्गः। संग्रहणं संग्रहः[12]। संवरणं संवरः[13]। निर्जरणं निर्जरा[14]। वरणं वृत्तिः[15]। अव्युच्छेदः[16]। जीतमाचीर्णं[17]। वृद्धपदेत्येकोऽर्थः[18] अमात्यपुत्रोदाहरणं। परममुत्तममित्यर्थः[19]। पदं स्थानं[20] य। एते विंशति अनुज्ञाया नामानि भवंति। [भा.गा. २६१६-२६३३] एस अणुन्नाकप्पो।

(४२) इयाणिं ठवणाकप्पो बायालीसमो। सो तिविहो कुल-गण-संघठवणा-कप्पो। गाहाओ —

तिविहो ठवणाकप्पो कुले गणे चेव तह य संघे य।
एतेसिं परूवणयं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥२६३४॥
कुलथेरेण गणेण व जा मेरा ठविता भवे नियमा।
सो कुलठवणाकप्पो एवं गणे होति संघे य ॥२६३५॥ भा.गा.

पयडत्थाओ। किंचि सूयणामेत्तं- कुलेण वा कयं जं कुलथे-रेहिं वा एसा कुलठवणा स्थापना नीति मर्यादा इत्यर्थः। एवं गण संघे वि।

जे ते थेरा भगवंता कप्पाकप्पविहिन्नू। कल्पः नीतिमर्यादाविधिः सामाचारित्यर्थः। कल्पस्य वा कल्पनीयस्य च विधिज्ञा जानका इत्यर्थः। चर-णे आउत्ता पुण भइयव्वा। चरणं चरित्तं संयमः अशबलता इत्यर्थः। शुद्धनया-णं ठविज्जइ। शुद्धनया निश्चयनया इत्यर्थः। तेषां शुद्धनयानां ये चरण संपन्नाः सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रतपःसंपन्नाः स्वसमयपरसमयविशारदाः क्षीराश्रवादि-लब्धिसंपन्नाः गाम्भीर्यौदार्यधैर्यवीर्यदाक्षिण्यसत्यसोचदयासीतघरसमाः यमलमा-तासदृशाः एवमादिगुणैर्युक्ताः कुलस्थविरादि स्थाप्यंते नाणदंसणट्ठाए। पुणरवि कप्पाकप्प जे चरणाइजुत्ते ते सुद्धनयाणं सव्वेसिं पि पमाणं। [भा.गा. २६३६-२६३९] कहं पुण ठविज्जंति?

कुलसमायं[1] काऊण इच्छाकारेण तुब्भे कुल गण संघथेरा वा होज्जा-ह। तिण्हं पि य कुलगणसंघिच्चयाणं जाणंति चरियं जाव कुले कुलमज्जाया

---

१. कुलसमवायं।

गणे गणमज्जाया, संघे संघमज्जायं। [भा.गा. २६४०-२६४४]

पासत्थोसण्ण-कुसीलठाणपरिक्खवतो दुपक्खे वि।
सो होति तिगत्थेरो तिगथेरगुणेहिं उववुत्तो ॥२३४५॥ भा.गा.

एगो चेव पासत्थोसन्नाइठाणाणि तेसु पासत्थाइसु ठाणेसु न वट्टइ। जे वा तेसु वट्टंति ते परिच्छंति। अहवा इमो अन्नो अत्थो-पासत्थाई विक्किरंति[1] ते वि तस्स भगवओ चिंतणिज्जा। दुपक्खो नाम समणा समणीओ य। सो वि य थेरो होइ तिगथेरगुणेहिं उववेओ।

इयाणिं एगेगस्स वीसुं वीसुं गुणा भन्नंति। कुलगणसंपउत्तो पुण सो कुलथेरो होइ। चरणकरण समग्गो। समग्र उपपेत इत्यर्थः। अहवा चरणकरणानां सामग्री। यो यदा यस्मिन् कुले प्रधानः। एवं गुणसमन्वागतः स भगवान् कुलस्थविरो भवति। कुलचरियविहिन्नू पासत्थाइगणपरिक्खओ अप्पाणं परं च परिरक्खइ सो कुलथेरो भवइ। कुलथेरो गुणेहिं उववेओ। एवं गणसंघथेरो वि। संघथेरो नियमा जुगप्पहाणो होइ। इयरे भइया। सो पुण एक्केक्को सीयघरसमाणो। [भा.गा. २६४६-२६५३]

एस मूलसंघोत्ति कुलथेरेण कयं कुलं नाइक्कमइ, गणथेरेण कयं गणं नाइक्कमइ। संघथेरेण कयं संघो नाइक्कमइ। कुलकज्जे कुलथेरं चेव पुच्छिउं गम्मइ कज्जइ वा। गणकज्जे गणथेरं आपुच्छिउं गम्मइ। संघकज्जे संघथेरं आपुच्छिउं कज्जइ। ते पुण भट्टारया सएसु सएसु ठाणेसु वा न स्वहानिं कुर्वंति अप्पणो य अन्नाण य।

गाहा- "दंसण नाणाई"

दंसणणाणचरित्ते जा पुव्वपरूवणाऽऽयरणा य।
एसो तु मूलसंघो तिविहा थेरा करणजुत्ता ॥२६५५॥

पुव्वपरूवणा आयरियाइसु वन्निया। तत्थ ठिया आयरंति य सो मूलसंघो भवइ। एवं थेराण वि तेसु चेव पुव्वपरूविएसु ठाणट्ठिया य। जो सो हेट्ठा भणिओ सुद्धनयाण वत्तव्वएण भइओ त्ति सो जइ ओसन्नो वि सुद्धचरणं परूवेइ गीयत्थो य ताहे ठविज्जइ तिथेराइ अन्नो य बहुस्सुओ गीयत्थसंविग्गो नत्थि। इयाणिं कप्पप्पकप्पस्स गाहाओ वि भाणियव्वाओ। (भा.गा. २६५६-२६६०)

कप्पपणयस्स भेदा, सोच्चा णच्चा तहेव घेत्तूणं।
चरणकरणे विसुद्धे, आयरणपरूवणं कुणह ॥भा.गा. २६६१॥
कप्पपणगस्स भेदो, परूविओ मोक्खसाहणट्ठाए।
जं चरिऊण सुविहिता, करेंति दुक्खक्खयं धीरा ॥२६६२॥भा.गा.

---

१. प्रसरन्ति

श्री पञ्चकल्पभाष्यचूर्णि शुद्धि-पत्रकम्

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	१२	महानिंति	महानिति
८	१६	विसुएण	वि सुएण
१०	२१	संझागतं	संझागतं
१४	१४	नाउं	नाउं।
१७	टीप्पण १	सेवते ।	शोफं प्राप्तुतः
२०	३	आसाइ	आसाइ ।
२६	१४	परित्तवणस्सइ काइए	परित्तवणस्सइ- -काइए
३१	२१	आयट्ठाए,	आयट्ठाए
३४	१७	तथादि	तथापि
३५	२६	वा ।	वा
४०	१३	गुरुमाइ	गुरुमाइ -
४४	२२	ताव	ताव ।
४४	२३	लब्भइ।....कज्जे,	लब्भइ.....कज्जे।
४६	४	पुरिसवार	पुरिसकार
५०	२७	दिट्ठे, छग्गुरुं	दिट्ठे छग्गुरुं,
५१	२२	सबंधओ	स बंधओ
५५	२२	कहते	कइते
५६	२४	मज्झ.	बज्झ.
५७	५	आचार्य विशेषं	आचार्यविशेषं
५९	२१	साए	सए
६१	२२	–तणयं विशेषं	–तणयं विशेषं ।
६५	१६	अकप्प ठवणाकप्पो	अकप्पठवणाकप्पो
६५	१६	सेह ठवणाकप्पो	सेहठवणाकप्पो
६५	२३	चरित्त मंतेहिं	चरित्तमंतेहिं
६५	२४	तुल्लं चरित्ता	तुल्लचरित्ता
६६	२८	गच्छामि	गच्छम्मि
७४	१२	अजीरए	अ. जीरए
७५	७	जम्मणे ण	जम्मणेण
७८	३-४	पश्चार्थं	पश्चार्धं
८०	२५	एगो	एक्कारस-एगो
८१	टीप्पण १	—यदिवा	वस्त्रविशेष इति।
८६	३	विसंभोगो वा	विसंभोगो वा।
८७	२८	अणायरियस्स	अण्णायरियस्स
९०	२४	अणामवयं	अणाभवयं
९५	१५	जिब्भादंडेण । पच्छा	जिब्भादंडेण पच्छा।
९९	२६	अभिओ गिज्झइ	अभिओगिज्झइ
१०३	१	अणुवासोमासं	अणुवासों मासं
१०५	१०	रोद्दाडडहव्वण	रोद्दाइद्धण
१२०	टीप्पण २		आख्येयः पदार्थ विशेष इति।
१२१	१६	अरिओ	अरिहो
१२६	६	मतिसयओ	मतिसूयओ१
१३०	२६	सुद्ध संजोगेण	सुद्धसंजोगेण
१३३	२१	सोहिं	विसोहिं
१३७	२३	६गण चिंता१० इड्ढी	गणचिंता६ इड्ढी१०
१३८	१७	वा हेइ	वाहेइ
१४६	१८	वच्चेज्जा	वच्चेज्जा ।
१५२	१२	अवट्ठमाणस्स	अवट्टमाणस्स
१५३	२०	हत्तरागदोसा	हतरागदोसा
१५७	१०	एत्तेण	एतेण
१६०	७	निखेक्खो	निरवेक्खो
१७१	३	वक्ष्याम्: ।	वक्ष्यामः ।
१७३	१५	संभुंजमाणस्स ।	संभुंजमाणस्स
१७६	१	अपडिबद्धाणं	अ पडिबद्धाणं
१७८	२७	उद्दिट्ठंतेणं वा	उद्दिट्ठं तेणं वा
१७९	१२	संधिच्चओ	संधिच्चओ
१८२	१४	०सूरीशः पट्ट०	०सूरीशपट्ट०

नोंट :–प्रस्तावना पत्र (v) पंक्ति ३१ के अनुसंधानमें इतना अधिक—"अथवा (१) स्थविर कल्प, (२) परिहार विशुद्धिकल्प, (३) जिन कल्प, (४) प्रतिमा कल्प एवं (५) यथालन्द कल्प। इस प्रकार से भी पांच कल्पों का उल्लेख है।"

प्रशस्तिः

श्रीमद्वीरजिनेशस्य श्री सुधर्मा गणाधिपः ।
तपागच्छतरोर्मूलं श्री गणिपिटकस्य च ॥१॥

तस्य परम्पराऽऽयातः प्रवचनप्रभावकः ।
श्रीमद्विजयसिंहाख्यः सिंहो दुर्वादिकुम्भिषु ॥२॥

तस्य पट्टाम्बरे सूर्यः, शैथिल्यध्वान्तशोषणः ।
श्री सत्यविजयोऽभूच्च सत्यनिष्ठशिरोमणिः ॥३॥

तन्मूलशाख संवेगी, तदाद्याचार्यनायकः ।
अभूच्छ्रीविजयानन्दो, जगदानन्ददायकः ॥४॥

स्मारको जिनकल्पस्य, स्वचारित्रेण साम्प्रतम् ।
श्रीमान् कमलसूरीशः पट्टेऽभूत्तस्य कर्मठः ॥५॥

शिष्यः श्री विजयानन्दसूरेर्बभूव सिद्धवाक् ।
श्री वीरविजयः पूज्यो वाचकवर वीरभूः ॥६॥

विजयदानसूरीशः शिष्यस्तस्य बुधाग्रणीः ।
श्रीमत्कमलसूरीशः पट्ट प्रभावकोऽभवत् ॥७॥

तस्याऽभूदभिजः प्रशस्तचरणः शिष्य समेषां मतः ।
सेव्यः सार्धचतुः शताधिकमुनिव्रातेन वात्सल्यभूः ।
स्रष्टा बन्धविधान - कर्मविवृतेः सिद्धान्तपारङ्गतः,
कर्मव्रातविदारणैकसुभटः श्री प्रेमसूरीश्वरः ॥८॥

तस्य शिष्य लवेनैषा, चूर्णि संपादिताऽलेखि ।
श्री जयघोषसूरीणां, सम्मत्या टीप्पणं स्फुटम् ॥९॥

प्रज्ञांशकुलचन्द्रेण, संपादने सहायकाः ।
श्री हेमचन्द्रसूरीणां, शिष्याः कल्याणबोधयः ॥१०॥ युग्मम् ॥